॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

उपन्यास

दूसरा खण्ड

(भाग ४ से ६ तक)

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

—०— Rs 8 - P 00

प्रकाशक—
कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी ।

मूल्य :—
बिना जिल्द—५/५० प्रति खण्ड
जिल्ददार— ७/- प्रति खण्ड

मुद्रक—
लहरी प्रेस,
वाराणसी ।

।। श्रीः ।।



भूतनाथ

चौथा भाग

पहिला बयान

दारोगा के चले जाने बाद थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा, इसके बाद उन तीनों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

जमना० । देखो बहिन, किस्मत ने कैसा पलटा खाया है !

सर० । बहिन, किस्मत ने तो बहुत दिनों से पलटा खाया हुआ है, यह कहो कि उतना दुःख देकर भी विधाता को चैन न पड़ा और अब वह अपनी निर्दय आँखों के सामने एक दम से ही हम लोगों का निपटारा किया चाहता है ! दुनिया में लोग किस तरह कहा करते हैं कि धर्म की सदा जय रहती है ?

जमना० । हाय, अब मैं क्या करूं ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता। (इन्दुमति से) बहिन, तुम चुप क्यों हो ? तुम ही कुछ बताओ कि अब क्या किया जाय ? इस कैदखाने से छुटकारा मिलना तो बड़ा कठिन जान पड़ता है।

इन्दु० । बहिन, मैं क्या कहूं ? मेरी किस्मत तो बिल्कुल ही फूटी हुई है, मैं इस योग्य कहाँ हूं कि कुछ राय दूं ?

जमना० । नहीं बहिन, तुम्हारी किस्मत फूटी हुई नहीं थी बल्कि मेरे

साथ आ रहने ही से तुम्हारी भी किस्मत फूट गई ! बदकिस्मतों के साथ रहने वाला भी कुछ दिन में बदकिस्मत हो जाता है, मेरी ही संगत ने तुम्हें भी बर्बाद कर दिया। आह, हम दोनों बहिनें वास्तव में........

सर०। अब इन सब बातों के सोचने विचारने का यह समय नहीं है इस समय अपना कर्तव्य सोचना और बहुत जल्द निश्चय करना चाहिये कि जब थोड़ी देर में दारोगा आवेगा तो उसे क्या जवाब दिया जायगा। हाय हम लोगों की नादानी और जल्दबाजी ही के सबब से यह बुरा दिन देखना नसीब हुआ, नहीं तो बड़े मजे में उस घाटी के अन्दर हम लोग पड़े हुए थे अगर थोड़े दिन और प्रगट न होते तो अच्छा था, शीघ्रता से उछल पड़े यही बुरा हुआ।

जमना०। (ऊंची सांस लेकर) खैर जो हुआ सो हुआ !

सर०। मेरी राय में तो अब दारोगा की बात मान ही लेनी चाहिये।

जमना०। वह जरूर कहेगा कि तुम एक चिट्ठी लिख दो कि भूतनाथ बेकसूर है इत्यादि इत्यादि।

सरस्वती०। बेशक ऐसा लिखने के लिये कहेगा परन्तु यह बताओ कि इस कैद में पड़े पड़े सड़ने से ही लाभ क्या है! हां, कुछ उम्मीद हो तो कहो?

जमना०। उम्मीद तो कुछ भी नहीं है।

सरस्वती०। बस फिर, जो कुछ दारोगा कहे सो लिख दो और भुतनाथ से सुलह करके बखेड़ा तै करो, अपने साथ क्यों बेचारी इन्दुमति और प्रभाकरसिंहजी को भी जहन्नुम में मिला रही हो?

जमना०। और अगर उसकी इच्छानुसार लिख देने पर भी वह बदल जाय अर्थात् अपना काम पूरा करके हम लोगों को मार डाले तब?

सरस्वती०। तब क्या? जो होगा सो होगा, उसकी बात न मानने से तो निश्चय है कि वह हम लोगों को कभी भी जीता न छोड़ेगा, और लिख देने पर आशा होती है कि शायद वह अपने कौल का सच्चा निकले और हम लोगों पर रहम करे?

जमना०। हां, सो हो सकता है। (कुछ गहरी चिन्ता करके) अच्छा निश्चय हो गया कि ऐसा ही किया जायगा अर्थात् जो कुछ दारोगा कहेगा उसे मंजूर कर लेंगे।

सरस्वती०। (ऊपर की तरफ हाथ उठा कर) हे ईश्वर! क्या हम लोगों के पाप का प्रायश्चित नहीं है? क्या हम लोग इस योग्य नहीं हैं की तू हम लोगों पर दया करे? तू तो बड़ा दयालु कहलाती है! क्या इस समय हमारे लिये यहां कोई मददगार नहीं भेज सकता?

कुछ देर तक जमना और सरस्वती में इसी तरह की और भी बातें होती रहीं, इसके बाद समय पूरा हो जाने पर कैदखाने का दर्वाजा खुला और तिलिस्मी दारोगा किवाड़ बन्द करता हुआ आकर उन तीनों के सामने खड़ा हो गया।

दारोगा०। कहो क्या निश्चय किया?

जमना०। हम लोगों को क्या निश्चय करना है, जो कुछ कहोगे करने के लिये तैयार हैं।

दारोगा०। शाबाश, यही बुद्धिमानी है, अच्छा तो तुम अपने हाथ से एक चीठी भूतनाथ के नाम की लिख दो जिसमें यह मजमून होना चाहिये :—

"मेरे प्यारे गदाधरसिंह,

बड़े अफसोस की बात है कि तुम अभी तक हमारे पति के घातक का पता लगा कर वादा पूरा न कर सके। मुझे पता लग चुका है कि दलीपशाह मेरे पति का घातक है, इसके लिये मुझे कई सबूत मिल चुके हैं, अब तुम शीघ्र मेरे पास आओ तो मैं वह सबूत तुम्हें दिखाऊं। आशा है कि उसके सहारे तुम बहुत जल्द असली बात का पता लगा लोगे।"

बस इसी मजमून का पत्र लिख दो और तुम दोनों बहिनें उस पर अपना हस्ताक्षर भी कर दो, कलम दावात और कागज मैं अपने साथ लेता आया हूं।

जमना०। (कुछ बिगड़ कर) वाह वाह, क्या खूब? तुम तो ऐसी बात लिखाना चाहते हो जिससे कि मैं जीती रह कर भी किसी के आगे मुंह न

दिखा सकूं ! इससे तो साफ जाहिर होता है कि ये बातें लिखने के बाद तुम हम लोगों को मार डालोगे। बेशक ऐसी ही बात है ! दलीपशाह बेचारे ने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं उसे इस तरह हलाल करूं ?

दारोगा०। ऐसा लिखने में तुम्हारा कोई भी नुकसान नहीं है, और विना इस तरह पर लिखे तुम्हें छुटकारा भी नहीं मिल सकता।

जमना०। चाहे जो हो, मगर मैं दलीपशाह के बारे में कदापि ऐसा न लिखूंगी, वह बेचारा बिल्कुल निर्दोष है।

दारोगा०। देखो नादानी मत करो और मुफ्त में अपने साथ इन्दुमति और प्रभाकरसिंह की भी जान मत लो !

जमना०। अब जो कुछ किस्मत में लिखा है सो होगा मगर मैं ऐसा अन्धेर नहीं कर सकती।

दारोगा०। खैर जब तुम्हें यही धुन समाई हुई है तो देखो तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जाता है ! अच्छा मैं जाता हूं, थोड़ी देर में बन्दोबस्त करके पुनः आऊंगा।

इतना कह कर दारोगा वहां से चला गया और आधे घण्टे के बाद पुनः लौट आया, अबकी दफे और भी दो आदमी उसके साथ थे जिनके चेहरों पर स्याह नकाब और हाथ में नंगी तलवारें थीं।

दारोगा ने पुनः उसी सुरंग का दरवाजा खोला जिसमें जमना सरस्वती इन्दुमति को कैद की अवस्था दिखाने के लिए ले गया था, इसके बाद दोनों नकाबपोशों से कुछ कहा जिसे सुनते ही वे जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास चले गये और उन तीनों को खम्भे से खोल कर उसी सुरंग में ले गये। वह खिड़की खोल दी गई थी जिसमें से पहिले दफे उन तीनों ने झांक कर प्रभाकरसिंह को देखा था। दारोगा की आज्ञानुसार दोनों नकाबपोशों ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को उस खिड़की के पास खड़ा कर दिया और स्वयं नंगी तलवार लिए उनके पीछे खड़े हो गये। उस समय दारोगा ने पुनः उन तीनों से कहा, "एक दफे फिर नीचे की तरफ

झांक कर अपने प्रभाकरसिंह की दुर्दशा देखो, मैं उनके पास जाता हूं और तुम्हारे देखते ही देखते उनका काम तमाम करता हूं।"

इतना कह दारोगा वहां से चला गया और वे तीनों बड़ी ही बेचैनी के साथ नीचे की तरफ देखने और रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं।

हथकड़ी बेड़ी से मजबूर और पेड़ के साथ बंधे हुए प्रभाकरसिंह सिर झुकाए जमीन की तरफ देख रहे थे जिस समय हाथ में नंगी तलवार लिए दारोगा उनके पास पहुंचा

दूसरा बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति डबडबाई हुई आंखों से झांकती हुई देख रही थीं कि प्रभाकरसिंह हथकड़ी बेड़ी से मजबूर पेड़ के साथ बंधे हुए हैं और दारोगा नंगी तलवार लिए उनके सामने खड़ा है। अब दारोगा और प्रभाकरसिंह में कुछ बातें होने लगीं जो कि उन दोनों की आकृति और हाव भाव से मालूम होता था मगर दूर होने के कारण उनके शब्द जमना सरस्वती और इन्दुमति को सुनाई नहीं देते थे, फिर कुछ देर बाद मालूम हुआ कि दारोगा उन्हें किसी काम के लिए मजबूर किया चाहता है मगर प्रभाकरसिंह लापरवाही के साथ इनकार कर रहे हैं और दारोगा की धमकियों तथा क्रोध में आकर उसके दांत पीसने पर कुछ भी खयाल नहीं करते।

इसी समय इन्दुमति की निगाह एक मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ के नीचे पड़ी जो बहुत ही बड़ा और घतनार था, तथा उसके ऊपर मालती की लता चढ़े रहने के कारण अवस्था घने कुंज की सी हो रही थी। वह पेड़ वहां से थोड़ी दूर पर था जहां दारोगा खड़ा प्रभाकरसिंह से बातें कर रहा था।

इन्दु ने देखा कि उस कुंज के अन्दर से एक नकाबपोश झांक कर दारोगा और प्रभाकरसिंह की तरफ देख रहा है। इन्दु ने जमना और सरस्वती को भी उसी तरफ देखने का इशारा किया और वे भी बड़े गौर

से उस नकाबपोश की तरफ देखने लगीं जिसका बदन धीरे धीरे पत्तों की झुरमुट में से बाहर निकलता आ रहा था यहाँ तक कि अब उसका आधा बदन और दाहिना हाथ जिसमें नंगी तलवार थी नजरों के सामने आ चुका था।

मौत के पंजे में फंसे हुए बेचारे प्रभाकरसिंह की अवस्था की तरफ से ध्यान हटा कर उस नकाबपोश की तरफ देखने का कारण है। इन्दुमति को और साथ ही उसके जमना सरस्वती को भी विश्वास हो गया कि यह नकाबपोश जो पत्तों की आड़ में से ताक झांक कर रहा है जरूर दारोगा का दुश्मन है और प्रभाकरसिंह की मदद के लिए आया है। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। जिस समय अपनी बात न मानने के कारण झुंझला कर दारोगा ने प्रभाकरसिंह को मारने के लिए तलवार वाला हाथ उठाया उसी समय वह नकाबपोश जो दूर न था दारोगा पर झपट पड़ा और उसके पीछे पहुंच कर उसने दारोगा का तलवार वाला उठा हुआ हाथ पकड़ लिया। दारोगा ने घबड़ा कर पीछे की तरफ देखा मगर चेहरे पर नकाब पड़े रहने के कारण इसे पहिचान न सका। झटका देकर हाथ छुड़ाना और घूम जाना चाहा मगर ऐसा भी न कर सका। मालूम होता था कि किसी फौलादी पंजे ने उसकी कलाई पकड़ ली है। कुछ देर तक दोनों की हालत एक तस्वीर की सी बनी रही और इसके बाद नकाबपोश ने डपट कर दारोगा से कहा, "क्यों बे कम्बख्त बेईमान! यहां के सीधे सादे राजा ने क्या इसी लिए तुझे इतना अधिकार दे रक्खा है कि तू अपने स्वार्थ के लिए अन्धा होकर उनके रिश्तेदारों पर और गरीबों पर हद दर्जे का जुल्म करे और उनकी जान तक ले लेना खिलवाड़ समझे? अफसोस, उस बेचारे सीधे राजा को तेरी करतूतों की कुछ भी खबर नहीं है! वह तेरी खुशामद से अन्धा हो रहा है, और नहीं जानता कि एक दिन तू इसी तरह उसके ऊपर भी बेईमानी और नमकहरामी का हाथ साफ करेगा, बल्कि यों कहना चाहिये कि एक दिन तू उसे और उसके खानदान को मिट्टी में मिला देगा और स्वयं राजा बन बैठेगा! (कुछ रुक कर और दारोगा की तरफ कड़ी

निगाह से घूर कर) नहीं नहीं, मैं तुझे ऐसा न करने दूंगा ! (दारोगा का हाथ झटक कर और उसे एक लात मार कर) तुफ है तेरी औकात पर, निस्सन्देह तेरी पैदाइश में फर्क है और अवश्य तू हरामी का पिल्ला है !!"

इस आदमी के चेहरे पर यद्यपि नकाब पड़ी हुई थी मगर सिर्फ आवाज ही सुन कर दारोगा ने इसे पहिचान लिया और डर तथा ताज्जुब की निगाहों से इसको देखने लगा। उधर खिड़की से झांकती हुई जमना सरस्वती और इन्दुमति ने भी पहिचान लिया कि यही बहादुर हमारा तिलिस्मी मददगार नारायण है।

नारायण की डपट और बातों ने दारोगा का कलेजा हिला दिया। डर के मारे उसका दिल बेतरह उछलने लगा क्योंकि उसके खयाल से नारायण ने नहीं बल्कि यमराज ने अपने पंजे में उसे दबा लिया था, उसमें इतनी ताकत न रह गई थी कि नारायण की बातों का जवाब देता या उसका मुकाबला करता और अगर ताकत होती भी तो उसके हाथ नारायण से मुकाबला करने के लिए तैयार न होते।

यहां पर हम अपने पाठकों को इस नारायण का कुछ परिचय दे देना उचित समझते हैं।

हमारे पाठक जमानिया के राजा गोपालसिंह को बखूबी जानते हैं तथा इन्दिरा के बयान में उनके पिता राजा गिरधरसिंह का भी कुछ जिक्र सुन चुके हैं। इस समय वही राजा गिरधरसिंह जमानिया का राज्य कर रहे हैं और यह कम्बख्त तिलिस्मी दारोगा उन्हीं का प्यारा मुसाहब है, तथा यह नकाबपोश जिसे हम नारायण के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं राजा गिरधरसिंह के छोटे भाई शंकरसिंह हैं।

राजा गिरधरसिंह बिल्कुल ही सीधे सादे और सरल स्वभाव के आदमी हैं। छल प्रपंच को यह लेश मात्र भी नहीं जानते तथा राज काज के मामलों और बारीकियों को भी वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते, परन्तु उनके छोटे भाई शंकरसिंह बड़े बुद्धिमान तेज समझदार और बहादुर आदमी हैं।

हिम्मत उत्साह और जवांमर्दी इनके रग रग में भरी हुई है तथा दुष्टों को सजा देने और सज्जनों को प्रसन्न करने में भी वे वैसे ही दत्तचित्त रहते हैं जैसा कि राजा लोगों का धर्म है। उनकी रियाया का कथन है कि यदि शंकरसिंहजी हमारे जमानिया के राजा हुए होते तो बहुत ही अच्छा था परन्तु नियमानुसार बड़े भाई होने के कारण गिरधरसिंहजी ही जमानिया के राजा हुए और वहां की प्रजा बल्कि स्वयं राजा गिरधरसिंह को इच्छा होने पर भी शंकरसिंह ने धर्म विरुद्ध कार्य करना और बड़े भाई के रहते राजा बनना स्वीकार नहीं किया। फिर भी राजा हो जाने पर भी गिरधरसिंह अपने छोटे भाई शंकरसिंह की इज्जत करते हैं और एक तोर पर इनसे दबते ही रहते हैं तथा तिलिस्मी मामले में भी ज्यादे जानकारी शंकरसिंह ही को है।

यह तिलिस्मी दारोगा जिसका असल नाम यदुनाथ शर्मा था इस राज्य के गुरु तथा पुरोहित खानदान का लड़का था अर्थात् इसके बुजुर्ग लोग राजा साहब के बुजुर्गों के गुरु और पुरोहित होते आये हैं और सदैव से इन लोगों को मुसाहिब की इज्जत मिलती आई है। आज भी उसी पुराने सम्बन्ध से राजा गिरधरसिंह इसे मानते और इसकी इज्जत करते हैं।

मगर इस दारोगा के बुजुर्ग लोग चाहे जैसे भी नेक और ईमानदार होते आये हों फिर भी यह बड़े ही दुष्ट प्रकृति का आदमी है। लालची बेईमानी नमकहरामी बदमाशी ऐयाशी और दगाबाजी का तो इसे पुतला ही समझना चाहिये, मगर यह अपने भेद और भाव को ऐसा छिपाये और बनाये रहता है कि किसी को इसके ऊपर बदगुमान होने का जरा भी मौका नहीं मिलता। अपनी चापलूसियों से यह राजा गिरधरसिंह को अपना आशिक बनाये हुए था मगर शंकरसिंह इस पर विश्वास नहीं करते और हमेशा इसके भेदों की खोज में लगे रहते हैं, और इसी तरह दारोगा भी इनसे हमेशा चौकन्ना बना रहता है।

शंकरसिंह को किसी तरह इस बात का भी पता लग गया था कि

दारोगा ने कोई गुप्त कमेटी* बनाई हुई है जिसके सभासद लोग इसी शहर के रहने वाले तथा इसी दरबार के बड़े बड़े ओहदेदार लोग हैं, यद्यपि उसका ठीक ठीक पता शंकरसिंह को अभी तक मालूम नहीं हुआ था, तथापि उन्होंने अपने बड़े भाई राजा साहब से इसका जिक्र कर दिया था जिस पर उन्होंने यह कह कर बात टाल दी थी कि यह खबर बेबुनियाद है, हमारा दारोगा ऐसा बेईमान नहीं है बल्कि जती सती और महात्मा आदमी है।

शंकरसिंह की तरह दारोगा भी इनसे चौकन्ना बना रहता और इनको अपना जानी दुश्मन समझता हुआ बराबर इस बात की धुन में लगा रहता था कि किसी तरह इन्हें इस दुनिया से उठा दिया जाय, मगर बात यह था कि जमानिया के सभी आदमी बल्कि दारोगा वाली गुप्त कमेटी के मेम्बर लोग भी शंकरसिंह को दिल से प्यार करते थे और इसलिए बेईमान दारोगा की इच्छा पूरी नहीं होती थी।

अब हम अपने किस्से की तरफ झुकते हैं।

शंकरसिंह ने दारोगा को कई कदम पीछे हटा कर उसका हाथ छोड़ दिया और कहा, "दारोगा साहब, यह तो बताइये कि इन बेचारे प्रभाकरसिंह ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप इनकी जान लेने के लिए तैयार हो रहे हैं ?"

दारोगा ने तलवार जमीन पर फेंक दी और हाथ जोड़ कर शंकरसिंह के सामने खड़ा होकर बोला, "यद्यपि आपके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है मगर मैं आपको पहिचान गया, मेरा दिल गवाही देता है कि आप मेरे मालिक भैयाराजा हैं।† अगर मेरा विचार ठीक है तो कृपा करके चेहरे पर से नकाब हटा दीजिये जिसमें मेरी दिलजमयी हो जाय और मैं जो खोल कर

---

* इस कमेटी का खुलासा हाल (इन्दिरा के बयान में) चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है इसलिये इस ग्रन्थ में इसका जिक्र जरूरत के माफिक ही किया गया है ज्यादे नहीं।

† शंकरसिंह को लोग भैयाराजा कहते थे।

जो कुछ कहना है कहूं, मेरी बातें सुनने के बाद आप मेरे विषय में फैसला करें।

शंकर०। (नकाब उलट कर) लो मुझे अच्छी तरह पहिचान लो कि मैं कौन हूं। मैं तुम्हारी सभी बातें सुनने के लिए भी तैयार हूं मगर पहिले उस बात का जवाब दो जो मैं पूछ चुका हूं अर्थात् प्रभाकरसिंह ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो उन्हें कत्ल किया चाहते थे ?

दारोगा०। (हाथ जोड़े हुए) प्रभाकरसिंह ने मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ा है मगर हमारे महाराज के साथ और इस राज्य के साथ उन्होंने बहुत बुरा बर्ताव किया है। आपको कदाचित् मालूम नहीं है कि जमानिया तिलिस्म के अन्दर घुस कर उन्होंने बहुत उपद्रव मचाया और बहुत कुछ नियम विरुद्ध काम किया है, जिसकी सजा ही यह है कि ये कत्ल किये जाय। आप खूब जानते हैं कि तिलिस्मी नियम कैसे कड़े हैं।

शंकर०। तिलिस्मी नियमों को जो मैं जानता हूं वह तुम क्या तुम्हारे बाप भी नहीं जानते होंगे और प्रभाकरसिंह ने तिलिस्म के अन्दर जो कुछ खराबी की है उसे भी मैं खूब जानता हूँ। यह कोई भी नहीं कह सकता कि प्रभाकरसिंह किसी बदनीयती से या अपने किसी फायदे के लिए तिलिस्म के अन्दर आये हों। वास्तव में उन्हें तिलिस्म के अन्दर लाने वाला या लाने का कारण भूतनाथ ही है जो तुम्हारा दोस्त है और जिसकी प्रसन्नता के लिये इस समय तुम अनुचित से अनुचित कार्य करने के लिये तैयार हो गये हो। अगर जमना सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ धोखा देकर तिलिस्म में फंसा न देता तो प्रभाकरसिंह भी कदापि तिलिस्म के अन्दर न आते। कहो इसके विपरीत कोई बात साबित करने के लिए तुम्हारे पास क्या मसाला है ?

दारोगा०। आप बड़े हैं और मालिक हैं, मैं आपका गुलाम हूं, अतएव मुझे उचित नहीं है कि मैं आपसे बहस करूं। मुझे इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि प्रभाकरसिंह इस तिलिस्म के अन्दर क्यों आए ? मुझे तो इस बात की खबर लगी कि प्रभाकरसिंह कई औरतों को साथ लेकर तिलिस्म के अन्दर विचर रहे हैं अस्तु मैंने अपने मालिक की भलाई सोच

कर इन्हें गिरफ्तार कर लिया...

शंकर०। (बात काट कर) भला यह भी कोई समझाने की बात है? तुम्हें इसके विषय में क्योंकर खबर लगी? क्या तुम्हारे जासूस तिलिस्म के अन्दर घूमा करते हैं? या तिलिस्म का कोई खास शैतान तुम्हें रोज रोज की खबर सुना जाता है? या खुद तुम ही नियमित रूप से रोज तिलिस्म के अन्दर घूम घूम कर उसके दरोदीवार तथा पेड़ पत्तों की खबरदारी किया करते हो और ऐसा करने के लिए महाराज ने तुम्हें ताकीद की है?

दारोगा०। (कुछ लाजवाब सा होकर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूं कि आप से बहस करने को मेरी नीयत नहीं है और न ऐसा करना मेरे लिये उचित ही है।

शंकर०। यह कोई बहस की बात नहीं है। मैं तो सिर्फ इतना तुमसे पूछता हूं कि इनके विषय में तुम्हें किसने खबर दी और किसने कहा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर ऊधम मचा रहे हैं।

दारोगा०। (कुछ घबड़ाना सा हो कर) जी ई... ई... ई... मुझे कुछ यों ही सा खुटका हो गया, और मैं....

शंकर०। (रोक कर) बस बस बस, खबर्दार, झूठ बोलना तुम्हारे हक में अच्छा न होगा, तुम ठीक ठीक जवाब देने के लिए तैयार हो जाओ! (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) अच्छा कृपा कर आप ही कह जाइये कि इसके फन्दे में आप क्योंकर फंस गये;

मगर प्रभाकरसिंह ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया जिस पर शंकरसिंह ने फिर पूछा, "आप मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते? (कुछ आगे बढ़ कर) आपका चुप रहना मुझे ताज्जुब में डालता है। (और आगे बढ़ कर और उनके चेहरे की तरफ गौर से देख कर) क्या आपके चुप रहने की कोई खास वजह है? हैं यह क्या? आपका शरीर कांपता क्यों है? बस ठीक ठीक बोल! मैं समझ गया, ओ बेईमान, तू कभी भी प्रभाकरसिंह नहीं है, सच बता तू कौन है? अच्छा मैं तेरे हाथ पैर खोले देता हूं!"

इतना कह कर शंकरसिंह ने नकली प्रभाकरसिंह के हाथ पैर खोल दिये और कहा, "ले अब ठीक ठीक बोल कि तू कौन है और प्रभाकरसिंह की सूरत बनने की तुझे क्या जरूरत पड़ी ! यह क्या, तू दारोगा की तरफ क्यों देखता है ? क्या इशारे ही इशारे में उससे सलाह करना चाहता है ? खबर्दार, जल्द बोल तू कौन है !"

जब शंकरसिंह ने देखा कि नकली प्रभाकरसिंह बातों का कुछ जवाब नहीं देता तब उन्होंने पीछे की तरफ घूम कर देखा और जोर से चार दफे सीटी बजाई, सीटी की आवाज के साथ ही चार आदमी उसी झाड़ी के अन्दर से निकल कर शंकरसिंह के पास चले आये जिसमें से स्वयं शंकरसिंह प्रकट हुए थे। शंकरसिंह की आज्ञा पा दो आदमी तो दारोगा के पास खड़े हो गये, एक आदमी नकली प्रभाकरसिंह के पास जा खड़ा हुआ, और एक आदमी पानी लेने के लिए कहीं चला गया जो बात की बात में पानी से भरी हुई गगरी लेकर वहाँ आ मौजूद हुआ।

शंकरसिंह ने आज्ञा दी कि नकली प्रभाकरसिंह का चेहरा पानी से साफ किया जाय। उसी समय उसका चेहरा साफ किया गया और असली सूरत पर निगाह पड़ते ही आश्चर्य में आकर शंकरसिंह बोल उठे, "अख्वाह ! आप जयपालसिंह हैं !!"

शंकर०। (दारोगा की तरफ देख कर) जब अपने दोस्त जयपाल को तूने प्रभाकरसिंह बना रक्खा है तो इसमें कोई खास बात जरूर है और निश्चय है कि तेरा तलवार का हाथ उठाना इसे मारने के लिए न था बल्कि किसी को धोखा देने के लिए था। (कुछ सोच कर और इधर उधर देख कर) तुम जिसको धोखा दे रहे थे वह जरूर इसी जगह कहीं पास ही में होगा।

ऊपर की दरीची में से जमना सरस्वती और इन्दुमति बड़ी दिलचस्पी के साथ यह तमाशा देख रही थीं, इस बात का पता लग जाने पर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रभाकरसिंह वास्तव में प्रभाकरसिंह न थे बल्कि दारोगा का कोई दोस्त था और हम लोगों को धोखे में डालने के लिए यह ढंग रचा

गया था, अस्तु उन्होंने जब शंकरसिंह को किसी की खोज में चारों तरफ निगाह दौड़ाते देखा तो जमना के हाथ उठाया। उसी समय शंकरसिंह की भी निगाह उन तीनों पर जा पड़ी, उन्होंने बड़ी खुशी के साथ अपना हाथ उठा कर जवाब दिया और तब यह भी कहा, "घबड़ाना नहीं, अब मैं आ पहुंचा हूं।"

इसके बाद शंकरसिंह ने पुनः दारोगा की तरफ देख कर कहा, "देखते हो उस (ऊपर की तरफ हाथ का इशारा करके) दरीची में से कौन झांक रहा है? भला इन तीनों औरतों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम साफ साफ क्यों नहीं कहते कि यह सब कार्रवाई केवल गदाधरसिंह की मदद के लिये की गई है! बोलो बोलो, वास्तव में यही बात है या नहीं?"

दारोगा ने शंकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया और सिर नीचा करके जमीन की तरफ देखने लगा। शंकरसिंह ने क्षणमात्र तक कुछ विचार किया और इसके बाद पुनः दारोगा से कहा, "अच्छा मैं इस समय तुम दोनों को छोड़ देता हूं, इस मामले का फैसला भाई साहब (महाराज) के सामने ही किया जायगा, और इस समय तुम मुझे अपने साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास ले चलो जो उस दरीची में से झांक कर तुम्हारी बेईमानी का तमाशा देख रही हैं।"

"चलिये मैं आपको ले चलता हूं।" कह कर दारोगा मकान की तरफ रवाना हुआ और शंकरसिंह उसके साथ साथ चलने लगे।

यह दारोगा का मकान कुछ अजीब ढंग का बना हुआ था, देखने वाला यही कहता कि इस मकान का भी किसी तिलिस्म से सम्बन्ध है मगर ऐसी बात न थी। दारोगा ने सिर्फ अपनी ही कारीगरी और बुद्धिमानी से इस मकान को तैयार कराया था। इस मकान में कई दालान, कई कमरे, कई कोठरियां, कई तहखाने और कई सुरंगें बनी हुई थीं। एक एक कमरे और कोठरी में जाने के लिए कई कई रास्ते थे। किसी अनजान आदमी को यदि अकेले उस मकान में छोड़ दिया जाय तो वह घूमता ही घूमता परे-

शान हो जाय और घबड़ा जाय तथा उससे बाहर निकलने के लिए रास्ते का पता न लगे। शंकरसिंह को आज के पहिले इस मकान में आने का कभी इत्तिफाक न पड़ा था, अस्तु वे इस मकान की कैफियत को देख कर आश्चर्य करने लगे। जैसे जैसे दारोगा उन्हें कोठरियों कमरों और दालानों में घुमाता था तैसे ही तैसे उन्हें उसकी चालबाजी और बदनियती का ख्याल बढ़ता जाता था। दारोगा यह नहीं चाहता था कि शंकरसिंह को जमना सरस्वती और इन्दुमति के सामने ले जाय और इसलिये वह उन्हें अन्दाज से ज्यादा घुमाता और चक्कर दिलाता हुआ धीरे धीरे ऊपर की तरफ लिये जा रहा था।

इसी तरह घूमते फिरते वे एक ऐसे दर्वाजे के पास पहुँचे जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा हुआ था और उसी के बगल में एक और भी छोटा सा दरवाजा था जिसके दोनों पल्ले खुले हुए थे। वहां पर दारोगा रुक गया और उसने शंकरसिंह की तरफ देख कर कहा, "जरा सा आप यहां पर खड़े रहने की तकलीफ गवारा कीजिये तो मैं जाकर इस दर्वाजे को खोलने के लिये ताली ले आऊं क्योंकि वे तीनों औरतें इसी के अन्दर हैं।"

इसके जवाब में शंकरसिंह न मालूम क्या सोच कर कुछ क्षण तक तो दारोगा का मुंह देखते रहे और तब बोले, "खैर कोई चिन्ता नहीं, आप जाइये और ताली लेकर जल्द आइये।"

दारोगा फुरती के साथ उस दूसरे छोटे दरवाजे के अन्दर घुस गया और शंकरसिंह वहां खड़े रह कर उसके आने का इन्तजार करने लगे। ज्यों ज्यों दारोगा के आने में देर होती थी त्यों त्यों शंकरसिंह का क्रोध बढ़ता जाता था और इस बात का भी शक हो रहा था कि वह हमें धोखा देकर यहां से निकल भागा।

घण्टे भर तक शंकरसिंह चुपचाप वहां खड़े रह गए और दारोगा लौट कर नहीं आया, अन्त में वे बहुत ही झुंझलाये और वहां से दारोगा की खोज में चल खड़े हुए। जिस छोटे दर्वाजे के अन्दर दारोगा घुस गया था उसी दर्वाजे के अन्दर शंकरसिंह भी चले गये मगर आगे जाने के लिए उन्हें कोई

रास्ता न मिला, क्योंकि उस दर्वाजे के अन्दर घुसने के बाद वे एक ऐसी कोठरी में पहुँचे जिसके दोनों बगल और भी दर्वाजे थे मगर वे सभी इस समय बन्द थे। शंकरसिंह झुँझलाते हुए उस कोठरी में से बाहर निकले और मकान के बाहर हो जाने के लिये उद्योग करने लगे।

मगर यह मकान वास्तव में पूरा भूलभुलैयां था। शंकरसिंह को घूमते हुए कई घण्टे बीत गये, यहां तक कि सूर्यभगवान अस्ताचल की तरफ चले गये और उस मकान के अन्दर अन्धकार ने धीरे धीरे अपना दखल जमाना शुरू कर दिया।

घूमते फिरते उन्हें कई बन्द दरवाजे भी मिले जिन्हें देख उन्होंने समझा कि यह दारोगा की शैतानी है, भागती समय उसने उन दरवाजों को बन्द कर दिया जिनके जरिये से बाहर हो जाने की उम्मीद हो सकती थी। अस्तु उन्होंने पुनः घूमना आरम्भ किया मगर जब कोठरियों और कमरों में पूरा अन्धकार छा गया तब लाचार होकर एक ठिकाने बैठ गये और चिन्ता करने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

तीसरा बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति उस दरीची में से झाँक कर देख रही थीं और इस आशा में थीं कि अब शंकरसिंह शीघ्र यहां आकर हम लोगों को इस कैद से छुटकारा देंगे। जब शंकरसिंह दारोगा को साथ लिये हुए उस मकान की तरफ बढ़े तब उन तीनों औरतों ने अपने विचार की पुष्टि समझी और जमना के मुँह से निकल पड़ा, "लो अब तो वे हमारी तरफ चले आ रहे हैं!"

हम ऊपर लिख आये हैं कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के पीछे दारोगा के दो आदमी नंगी तलवार लिये खड़े हो गये थे जब कि वे तीनों खिड़की के नीचे झांक रही थीं। अस्तु उन दोनों नकाबपोशों ने भी झांक कर नीचे की अवस्था देख ली थी। दारोगा का दिल चाहे कैसा ही मजबूत

हो परन्तु उन दोनों नकाबपोशों के कलेजे हिल गये और उन दोनों ने निश्चय कर लिया कि अगर शंकरसिंहजी हम दोनों को यहां देख लेंगे तो निश्चय ही हम जान से मारे जाएँगे, यह विचार उनका मजबूत हो होता चला गया और जब उन दोनों ने देखा कि दारोगा को साथ लिये हुए शंकरसिंह इसी तरफ चले आ रहे हैं तब तो वे दोनों एकदम से ही भाग खड़े हुए। जमना सरस्वती और इन्दुमति को मालूम भी न हुआ कि हमारे निगहबान कब और कहां भाग गये, शंकरसिंह को अपनी तरफ आते देख प्रसन्नता के साथ घूम कर जब जमना ने इन्दुमति से कुछ कहने के लिये पीछे की तरफ देखा तब मालूम हुआ कि वे दोनों नकाबपोश गायब हो गये। तीनों को आश्चर्य हुआ मगर साथ ही यह विश्वास भी हो गया कि शंकरसिंह के डर से वे दोनों भाग गये।

कई क्षण तक आश्चर्य करने के बाद जमना ने इन्दुमति और सरस्वती की तरफ देख कर कहा—

जमना०। क्या हम लोगों को इसी जगह खड़े रहना चाहिये ?

सरस्वती०। फिर और क्या किया जायगा ?

जमना०। अगर उस कमरे में जहां हम लोग कैद थे चलें तो क्या हर्ज है ? शायद हमारे नारायणजी उसी तरफ आवें।

इन्दु०। इसका कौन ठिकाना है ? देखो इधर भी तो एक दरवाजा है, शायद इसी राह से आवें, इसके अतिरिक्त उन्होंने इस ठिकाने हम लोगों को देख लिया है इसलिये उनका सबसे ज्यादा विचार इसी स्थान पर आने का होगा, दूसरी जगह चले जाने से कदाचित् मुलाकात में देर हो।

सरस्वती०। तुम्हारा विचार बहुत ठीक है।

जमना०। बेशक हम लोगों को इसी जगह अटकना चाहिए। (रुक कर और किसी आहट की तरफ ध्यान देकर) मालूम नहीं क्या बात है, उन्हें आने में इतनी देर क्यों हुई !!

इन्दु०। हां बेशक देर तो जरूर हुई, कहीं दारोगा को साथ लिये दूसरी

तरफ तो नहीं चले गये !

सरस्वती०। ईश्वर ही जाने !

इसी तरह के विचारों के साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति को इन्तजार करते हुए कई घंटे बीत गये मगर शंकरसिंह उनके पास न आये। अंत में पहर भर से ज्यादे रात बीत जाने बाद लाचार होकर वे तीनों वहाँ से हटीं और धीरे धीरे उस कमरे की तरफ रवाना हुईं जिसमें कैद थीं मगर उसी समय पीछे की तरफ से किवाड़ खुलने की आवाज आई और जब घूम कर पीछे की तरफ देखा तो दो नकाबपोशों पर निगाह पड़ी।

बात की बात में वे दोनों नकाबपोश जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास जा पहुंचे। बिना कुछ कहे सुने उन दोनों ने अपनी अपनी कमर से एक एक चादर खोल कर उन तीनों औरतों के ऊपर फेंक दी और चेहरे पर दो तीन दफे लपेट कर हाथ से कुछ क्षण के लिए थाम लिया। उन चादरों में से एक तरह की बहुत तेज खुशबू आ रही थी जो बेहोशी पैदा करने वाली थी, अस्तु उसकी खुशबू से बहुत जल्द बेहोश होकर जमना सरस्वती और इन्दुमति जमीन पर गिर पड़ीं और जब कई पहर बीत जाने के बाद उनकी बेहोशी दूर हुई और उन्होंने आंखें खोल कर आश्चर्य से चारो तरफ देखा तो अपने को एक भयानक जंगल में पड़े और भूतनाथ को अपने सामने खड़े पाया। अनुमान से इस समय दिन एक पहर से ज्यादा चढ़ चुका था।

चौथा बयान

आंख खुलने के साथ ही भूतनाथ को सामने देख कर जमना सरस्वती और इन्दुमति चौंक पड़ीं और घबड़ा कर अपनी अवस्था की तरफ देखने लगीं। कपड़े से उन तीनों के हाथ पैर बंधे हुए थे और कलम दावात तथा कागज का एक सादा टुकड़ा जमना के सामने पड़ा हुआ था।

भूत०। (तीनों की तरफ देख के) बस मुझे विशेष कहने की कोई जरूरत नहीं, जितना ही तुम लोगों का मुलाहिजा किया गया उतना ही

तुम लोग शेर होती गईं, अस्तु अब तुम लोगों के साथ अन्तिम व्यवहार किया जाता है। यह कलम दावात और कागज का टुकड़ा तुम लोगों के सामने पड़ा हुआ है, तुम तीनों में से कोई एक इस कागज पर जो कुछ मैं कहूं सीधी तरह लिख दो तब तो तुम लोगों को छोड़ दूंगा नहीं तो खूब समझ रखना कि बेंत और कमचियों से मार मार कर तुम लोगों की खाल उड़वा दूंगा और तड़पा तड़पा कर तुम लोगों की आत्मा को उस दुनिया की तरफ रवाना कर दूंगा जहाँ को जाने वाला फिर इस सूरत में लौट कर नही आता......

जमना०। बस बस, अपना लम्बा चौड़ा व्याख्यान रहने दे, हम लोगों को तेरे हाथ से जान बचाने की अब कोई जरूरत नहीं।

सर०। चाहे किसी तरह की मौत मिले हम लोगों को वह जरूर प्यारी होगी।

इन्दु०। हम लोग इस दुनिया को छोड़ जाना ही पसन्द करती हैं, इस दुनिया से कूच कर जायंगे मगर तुझे खुश करने के लिए पूरा सामान छोड़ जायंगे।

जमना०। हम लोगों के साथ वैसा ही सलूक कर जैसा कि तू बर्दाश्त कर सके, उतना ही मार जितना कि तेरा शरीर सह सके, और उसी जगह भेज जहां जाना तू पसन्द करे।

भूत०। (क्रोध से दांत पीस कर) मालूम होता है कि तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है, तुम लोगों को......

भूतनाथ और कुछ कहा ही चाहता था कि पीछे की तरफ से आवाज आई, "जरा ठहरना, जल्दी न करना!" भूतनाथ ने पीछे फिर कर देखा तो दारोगा साहब के प्यारे दोस्त जैपालसिंह पर निगाह पड़ी। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर जैपाल रुक गया और उसने हाथ का इशारा करके भूतनाथ को अपने पास बुलाया।

भूतनाथ ने समझा कि वह कोई ऐसा सन्देश कहने के लिए आया है जो

जमना सरस्वती और इन्दुमति के सुनने लायक नहीं है और इसीलिए वह इन लोगों के पास से हटा कर मुझे अलग बुला रहा है, अस्तु वह तेजी के साथ जैपाल* के पास चला गया और बोला, "कहो क्या बात है ?"

जैपाल० । मैं दारोगा साहब का भेजा हुआ आपके पास आया हूं ।

भूत० । क्या उनके पास कोई और आदमी उस वक्त न था जो उन्होंने आपको परेशान किया ?

जैपाल० । आदमी तो बहुत थे मगर मामला कैसा नाजुक है इसे भी तो सोचिये ?

भूत० । बेशक इस मौके पर दूसरे आदमी का आना अच्छा न होता ! जमना सरस्वती और इन्दुमति पर किसी की भी निगाह न पड़नी चाहिये।

जैपाल० । आप समझते हैं तो फिर ऐसा सवाल क्यों करते हैं ?

भूत० । (मुस्कुराता हुआ) बेशक मेरी भूल थी जो मैंने ऐसा पूछा, अच्छा बताइये आपका आना किस लिए हुआ ? क्या कोई पत्र लाये हैं ?

जैपाल० । नहीं पत्र तो नहीं लाया हूं परन्तु जुबानी सन्देशे के साथ साथ एक डिबिया है जिसके विषय में दारोगा साहब ने कहा है कि इसे खोल कर जमना सरस्वती और इन्दुमति को दिखा देना और अगर इस पर भी वे तुम्हारी बात न मानें तो उन्हें अवश्य कत्ल कर डालना । इसके अतिरिक्त यह भी कहा है कि 'सन्ध्या के समय मुझसे 'बसन्त बाग' में जरूर मिलना ।'

इतना कह कर जैपाल ने अपनी कमर से चांदी की एक डिबिया निकाली और भूतनाथ के हाथ में दी । डिबिया का ढकना बहुत सख्त बैठा हुआ था परन्तु भूतनाथ ने जोर करके उसको खोला, देखा कि उसके अंदर मरहम की तरह का जंगारी रंग का कोई जमाया हुआ पदार्थ है जिसके बीचोबीच में रक्खा हुआ एक हीरे का टुकड़ा अपनी तड़प दिखा रहा है । यह मरहम निहायत ही खुशबूदार था, बिना नाक के साथ लगाये ही उसकी खुशबू से दिमाग मुअत्तर हो रहा था और खुशबू भी ऐसी प्यारी थी कि

* जैपाल का कुछ परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति में दिया जा चुका है ।

बिना सूंघे भूतनाथ से रहा न गया। उसने नाक के साथ डिबिया लगा कर उसको सूंघा और साथ ही चक्कर खाकर जमीन पर गिर के बेहोश हो गया।

भूतनाथ यदि नाक लगा कर उस मरहम को न भी सूंघता तो भी बेहोश हो जाता, परन्तु कुछ सायत के बाद, क्योंकि बेहोश करने वाली उस मरहम की खुशबू से उसका दिमाग मुअत्तर हो चुका था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति दूर से इस तमाशे को देख रही थीं। बेहोश भूतनाथ को उसी जगह छोड़ जैपाल जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास गया और बोला, "मैं हूं आदित्य-मंडल!" यह अनूठा शब्द सुनते ही वे तीनों प्रसन्न हो गईं, उनकी आँखें डबडबा आईं और तीनों ने सर झुका कर नकली जैपाल को प्रणाम किया। इस जैपाल ने फुरती के साथ उनके हाथ पैर खोल दिये और तीनों को साथ लिए हुए घने जंगल में घुस कर बात की बात में नजरों से गायब हो गया।

इस वारदात को दो घण्टे गुजर गये, भूतनाथ अभी तक बेहोश पड़ा हुआ है। यद्यपि दोपहर की करारी धूप बड़ी ही दुःखदायी हो रही थी परन्तु बेहोश भूतनाथ एक घने पेड़ के नीचे है जहां और भी घंटे दो घंटे तक धूप के आने की उम्मीद नहीं। पाठक महाशय, देखिए अब एक बार पुनः जमना सरस्वती और इन्दुमति उसी स्थान की तरफ़ आ रही हैं जहां उनकी बेहोशी दूर हुई थी या जहां आँख खुलने के साथ ही उन्होंने अपने सामने भूतनाथ को मौजूद पाया था।

मगर ये जमना सरस्वती और इन्दुमति अपनी खुशी से वहां नहीं आ रही हैं बल्कि जबर्दस्ती के साथ लाई जा रही हैं। तीन आदमी मजबूती के साथ पकड़े हुए उन्हें उसी स्थान पर ले आये तथा पहिले की तरह मज-बूती के साथ फिर उनके हाथ पैर बांध कर उसी तरह जमीन पर बैठा दिया, उसी समय एक चौथा आदमी भी आया जो अपनी पीठ पर बेहोश जैपाल को लादे हुए था। इसने भूतनाथ के पास पहुंच कर अपनी गठरी

उतारी और जैपाल को जमीन पर सुला जिधर से आया था उधर ही चला गया। ये तीनों आदमी भी जो जमना सरस्वती और इन्दुमति को गिरफ्तार कर लाये थे अपना काम पूरा करके चले गये और फिर लौट कर न आये।

कुछ देर और बीतने बाद भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई, उसने करवट बदली और दो चार दफे अँगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। थोड़ा विचार करते ही उसे विश्वास हो गया कि जरूर उसके साथ चालाकी खेली गई और जैपाल की सूरत बन कर जरूर कोई ऐयार आया जो उसको धोखा दे कर बेहोश करने बाद अपना काम कर गया, परन्तु उसी समय उसकी निगाह बेहोश जैपाल पर पड़ी और साथ ही इसके जमना सरस्वती और इन्दुमति को भी उसने देखा जो हाथ पैर बंधे रहने के कारण ज्यों की त्यों बैठी हुई लम्बी सांसें ले रही थीं, अस्तु उसका विचार पलट गया और अब वह सोचने लगा कि 'नहीं, जैपाल ने मुझे कोई धोखा नहीं दिया, अगर वह कोई ऐयार होता तो जरूर अपना काम कर यहाँ से चला जाता, मगर मैं देखता हूं कि उसके साथ साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति भी ज्यों की त्यों मौजूद हैं और मेरी अवस्था में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा है यहां तक कि ऐयारी का बटुआ भी कमर में मौजूद है, साथ ही इसके जैपाल भी इसी जगह बेहोश पड़ा हुआ है जिससे मालूम होता है कि जिस डिबिया को सूँघ कर मैं बेहोश हो गया उसी की खुशबू ने जैपाल को भी बेहोश कर दिया है। (कुछ सोच कर और चौंक कर) मगर आश्चर्य की बात है कि वह डिबिया दिखाई नहीं देती! शायद जैपाल ने उठा कर अपने पास रख ली हो, अब इसे होश में लाया जाय तो पता लगे।' इत्यादि बातें सोच कर भूतनाथ जैपाल के पास गया और अपने बटुए में से लखलखा निकाल कर उसे सुंघाने लगा मगर वह होश में न आया। भूतनाथ बोल उठा, "ओफ, बड़ी कड़ी बेहोशी है! ईश्वर ही की कृपा थी कि मैं इतनी जल्दी होश में आ गया।"

दो तीन बार लखलखा सुंघाने पर भी जब जैपाल होश में न आया

तो भूतनाथ ने उसे छोड़ दिया और जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास आकर क्रोध भरी निगाहों से उनकी तरफ देख के बोला, "बस अब मैं ज्यादे इन्तजार नहीं कर सकता, साफ जवाब दो कि जो कुछ मैंने कहा था वह लिख देने के लिए तुम तैयार हो या नहीं !"

इसके जवाब में उन औरतों ने मुंह से कुछ नहीं कहा मगर हाथ से जरूर कुछ इशारा किया जिसे भूतनाथ कुछ समझ न सका, उसे विश्वास हो गया कि मेरे कहे मुताबिक ये औरतें कदापि न लिखेंगी अस्तु उसने चिन्ता और क्रोध से व्याकुल होकर तलवार खैंच ली और यह कह कर कि 'अच्छा फिर जो कुछ होगा देखा जायगा' एक ही वार में जमना का सर अलग कर दिया, इतने पर भी भूतनाथ को सब्र न हुआ और लगे हाथ सरस्वती और इन्दुमति को भी मार कर अपने हिसाब से निश्चिन्त और बेफिक्र हो गया।

हाय हाय, भूतनाथ ने कैसी संगदिली का काम किया ! कैसी बेदर्दी के साथ उन बेचारियों पर तलवार का वार किया। उसका कलेजा कैसा पत्थर का सा था कि ऐसा अंधेर करते समय भी जरा न हिला और मामूली ढंग पर बकरी या भेंड़ समझ कर उसने उन्हें लापरवाही के साथ मार डाला ! आह भूतनाथ, तूने यह काम अच्छा नहीं किया, निःसन्देह इसका बहुत बुरा नतीजा तुझको भोगना पड़ेगा !!

उस भयानक जंगल मे इन लोगों को गाड़ने के लिये एक गड़हा भी भूतनाथ ने पहिले ही से तजवीज कर रक्खा था जो उस स्थान से थोड़ी ही दूर पड़ता था। तीनों लाशों को उसी गड़हे में फेंक कर भूतनाथ ने ऊपर से मिट्टी और कतवार वगैरह डाल कर अच्छी तरह ढंक दिया और तब जहां जहाँ पर उनका खून गिरा था वहां की मिट्टी रगड़ कर उसका निशान भी मिटा दिया।

इन सब बातों से निश्चिन्त होकर भूतनाथ पुनः जैपाल के पास आया। उसे उसी तरह से बेहोश पाया, पुनः लखलखा सुंघाया मगर कुछ भी फायदा

न हुआ। नब्ज पर हाथ रख कर देखा तो नब्ज बहुत बारीक और सुस्त चल रही थी जिससे भूतनाथ को गुमान हुआ कि कहीं इस बेहोशी के कारण यह मर ही न जाय, मगर ऐसा नहीं हुआ और कुछ देर बाद दो चार करवटें बदल कर जैपाल उठ बैठा। अपने सामने भूतनाथ को देख उसने सलाम किया। भूतनाथ ने उससे मिजाज का हाल पूछा मगर उसने कुछ जवाब न दिया, भूतनाथ ने समझा कि अभी इसका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ, कुछ देर और ठहर जाने पर यह इस लायक हो जायगा कि मेरी बातों का जवाब दे, अस्तु कुछ समय और ठहर जाने के बाद पुनः उसने उसके मिजाज का हाल पूछा, इस बार वह कुछ इशारा करके उठ खड़ा हुआ और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देखने लगा। उसी समय दूर से कई सवारों के आने की आहट मिली कुछ ही देर बाद जिन्हें भूतनाथ ने भी देखा और तुरत वहाँ से हट जाने का इरादा किया। जैपाल से इशारे में और जुबानी भी यह कह कर कि 'खैर तुम दारोगा साहब के पास लौट जाओ, मैं कल उनसे मिलूंगा।' भूतनाथ ने एक तरफ का रास्ता लिया और उसका इशारा समझ जैपाल भी वहां से कहीं हट गया।

पांचवां बयान

शंकरसिंह को धोखा देकर दारोगा निकल गया और उन्हें उसी भूल-भुलैये में उलझा हुआ छोड़ गया जिसका कारण यह था कि इनका वह किसी तरह भी मुकाबला नहीं कर सकता था और उसका भेद इन पर प्रगट हो जाने से उसे विश्वास हो गया कि ये अब मुझे सताये बिना न रहेंगे। यदि ये महाराज से इन बातों की शिकायत कर देंगे तो उनके दिल से तो मैं उतर ही जाऊंगा और ताज्जुब नहीं कि फिर मुझे जन्म भर के लिए कैदखाने की अंधेरी कोठरी नसीब हो!

दारोगा कम्बख्त बड़ा ही बेरहम आदमी था, किसी की जान ले लेना तो उसके लिये एक अदनी बात थी, अस्तु बहुत कुछ सोच विचार कर शंकरसिंह के विषय में भी उसने यही मुनासिब समझा कि इन्हें गुप्त रीति से मार कर

बखेड़ा तय किया जाय क्योंकि तब किसी को इस मामले की खबर ही न होगी। यही सबब था कि वह अब शंकरसिंह की जान लेने की फिक्र करने लगा।

आखिर दारोगा अपने उस कमरे में गया जो उसका गुप्त घर था और जिसमें वह तरह तरह की दवाइयां, ऐयारी का सामान, अजीब अजीब ढंग की पोशाकें, तरह तरह के औजार और हर्बे तथा इसी तरह के और बहुत से सामान रक्खा करता था। यद्यपि वह घबड़ाया हुआ था परन्तु फिर भी यहां एकान्त में आकर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। बहुत जल्द उसने यह निश्चय कर लिया कि फलाने ढंग से शंकर-सिंह को मार कर बखेड़ा तै कर डालना ही अब सबसे अच्छा है, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। ऐसा निश्चय करने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ, जो कपड़े पहिरे हुए था उन्हें उतार कर दूसरी स्याह पोशाक पहिनी और मामूली तौर पर अपना चेहरा रंग कर ऊपर से स्याह नकाब डाली इसके बाद एक छूरा एक खंजर और एक तमंचा तथा एक चोर-लालटेन लेकर वह कमरे के बाहर निकला और अपने विचित्र मकान की कोठड़ियों में घूम घूम कर शंकरसिंह को खोजने लगा। उसके दोनाली तमँचे में गोलियाँ भरी हुई थीं और रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी।

शंकरसिंह घूमते फिरते किस जगह तक पहुंचे होंगे या किस अवस्था में होंगे इसे वह नहीं कह सकता था, अस्तु उनका पता लगाने के लिये दारोगा विचित्र ढंग से उन्हें खोजने लगा। उस मकान की बहुत सी कोठ-रियां और दालानों में कोई न कोई सूराख दरीची रौशनदान या बालाखाना जरूर था, जिसमें से झाँक कर दारोगा उन कोठड़ियों और कमरों की अवस्था दूर ही से देख रहा था। इस समय उसने निश्चय किया कि पहिले उन्हीं कोठड़ियों और कमरों में देखना चाहिये जिनमें मैं दूर से देख सकता हूं, अगर वहां पता न लगेगा तब बाकी कोठड़ियों में घूम कर देखा जायगा।

आखिर उस अंधकार के समय में भी घूम फिर कर दारोगा ने थोड़ी ही देर की मेहनत में शंकरसिंह को खोज निकाला। ऊपर ही ऊपर वह

एक ऐसे बालाखाने में पहुंचा जिसके नीचे की तरफ एक छोटा सा चौखूटा कमरा बना हुआ था, चोर लालटेन के जरिये से देखने पर मालूम हुआ कि इसी कमरे में शंकरसिंह जमीन के ऊपर बेहोश पड़े हुए हैं। दारोगा ने उनके चेहरे पर लालटेन की रोशनी डाली परन्तु शंकरसिंह की निद्रा भंग नहीं हुई, साथ ही इसके यह भी दिखाई दिया कि उनका दाहिना हाथ छाती के ऊपर है और वहाँ से निकला हुआ बहुत सा खून चारो तरफ फैल रहा है। शंकरसिंह की ऐसी अवस्था देखते ही दारोगा चौंक पड़ा और बोल उठा, "मालूम होता है कि इन्होंने आत्महत्या कर ली ? घूमते घूमते जब निकल जाने के लिए कहीं रास्ता न मिला तब घबड़ा कर ऐसा किया होगा। खैर यह भी अच्छा हुआ, मुझे इनके खून से अपना हाथ रंगना न पड़ा।"

जिस जगह पर दारोगा खड़ा होकर शंकरसिंह को देख रहा था उसके दोनों बगल दो छोटे छोटे दरवाजे थे। एक दरवाजा जिसमें से होकर दारोगा यहां आया था खुला हुआ था मगर दूसरा बन्द था। दारोगा ने उस बन्द दरवाजे को खोला और अन्दर जाकर एक सुरंग में पहुंचा जो दस बारह हाथ से ज्यादे लम्बी न थी। इस सुरंग के अन्त में भी एक दरवाजा था जिसे दारोगा ने खोला। यहां पर नीचे उतर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। उन्हीं की राह से नीचे उतर कर दारोगा उस कमरे में पहुंचा जिसमें शंकरसिंह पड़े हुए थे। दारोगा को इस बात का निश्चय नहीं था कि वे मर गये या जीते हैं इसलिये एकाएक पास जाते वह डरा और दूर ही से कुछ सायत तक देखता रहा, इसके बाद हाथ में भरा हुआ तमंचा लिए आगे बढ़ा, कुछ देर लालटेन की रोशनी उनके चेहरे पर डाल कर गौर से देखता रहा, अन्त में उसे निश्चय हो गया कि ये जीते नहीं बल्कि मरे हुए हैं, तब पास गया और नब्ज पर हाथ रख कर अपना शक मिटाने बाद देखा कि दाहिने हाथ में छूरे का कब्जा है और छूरा कलेजे के अन्दर घुसा हुआ है।

"अब इन्हें ठिकाने पहुँचाना चाहिये।" कह कर दारोगा वहाँ से लौट

पड़ा और थोड़ी देर में और दो आदमियों को साथ लिए पुनः शंकरसिंह की लाश के पास पहुँचा। इन दोनों के चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी। दारोगा की आज्ञानुसार दोनों नकाबपोशों ने शंकरसिंह की लाश उठाई और दारोगा के पीछे रवाना हुए। इस कमरे में तीन दरवाजे थे, एक तो वह जिस राह से दारोगा आया था, दूसरा दरवाजा वह था जिस राह से शंकरसिंह आये थे, और तीसरा दर्वाजा इस समय बन्द था। उसी तीसरे दर्वाजे को खोल कर दारोगा उसके अन्दर गया और लाश उठाये हुए दोनों नकाबपोश भी उसके पीछे पीछे चले गए। यह भी पहिले कमरे की तरह का ही एक चौखूटा कमरा था पर उसके चारो तरफ दीवार में चार बड़ी बड़ी आलमारियाँ थीं जिन्हें खोलने या बन्द करने के लिए कोई खास खटका बना हुआ था। दारोगा ने एक आलमारी का पल्ला खोला, उसमें किसी तरह का कोई सामान न था और न वह वास्तव में आलमारी ही थी बल्कि उसके अन्दर एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें मुश्किल से चार या पांच आदमी खड़े हो सकते थे। कोठड़ी में से ही नीचे उतर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं। शंकरसिंह की लाश उठवाये हुए दारोगा नीचे तहखाने में उतर गया जो एक गोल कमरे के ढंग का बना हुआ था। इस कमरे के नीचे एक और तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिए कमरे के बीचोबीच में रास्ता बना हुआ था और उसका मुंह लकड़ी के तख्ते से ढंका हुआ था। दारोगा ने तख्ता उठाया और शंकरसिंह की लाश उसके अन्दर फेंक देने के लिये अपने दोनों आदमियों को कहा।

शंकरसिंह की लाश उसके अंदर फेंक दी गई, तख्ता गिरा कर तहखाने का मुंह ढंक दिया गया और तीनों आदमी नाक दबाये हुए जल्दी जल्दी ऊपर की तरफ रवाना हुए क्योंकि तख्ता खोलने के साथ ही उसके अन्दर से बदहवास कर देने वाली ऐसी सड़ी बदबू निकली कि जिससे वे तीनों ही आदमी परेशान हो गये थे।

अपने पीछे के सब दरवाजे बन्द करते हुए तीनों आदमी ऊपर चले

आये जहाँ दारोगा ने अपने दोनों साथियों को बिदा किया और तब अपने गुप्त कैदखाने में चला गया जहां पहिले ही से भूतनाथ बैठा हुआ उसका इन्तजार कर रहा था। दारोगा वहाँ ठहरा नहीं बल्कि भूतनाथ को लेकर उसी तरफ पलट पड़ा जहां जमुना सरस्वती और इन्दुमति शंकरसिंह के आने का इन्तजार कर रही थीं और उन तीनों औरतों के साथ जो कुछ सलूक इन दोनों ने किया वह पहिले के बयान में लिखा जा चुका है, मतलब यह कि दारोगा ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ के हवाले कर दिया।

छठवां बयान

आधी रात का समय है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिर्फ गली कूचों में कभी कभी पहरा देने वालों की आवाज 'जागते रहियो, होशियार रहियो' सुनाई दे जाती है। जमानिया तिलिस्म के दारोगा साहब भी जिनका दिमाग तरह तरह के तरद्दुदों का शिकार हो रहा है बहुत देर तक जाग कर और सैकड़ों करवटें बदल कर अब सो गये हैं मगर थोड़ी थोड़ी देर में उनका शरीर चौंक जाता और क्षण भर के लिए निद्रा भंग हो जाती है।

जिस कमरे में दारोगा साहब सो रहे हैं, वह बहुत ही खूबसूरती के साथ बेशकीमत सामान से सजा हुआ है। चारो तरफ की दीवारों पर बहुत अच्छा रँगसाजी का काम किया हुआ है, दरवाजों पर किमख्वाब के पर्दे पड़े हुए हैं, मौके मौके पर दीवारों के साथ बिल्लौरी दीवारगीरें लगी हुई हैं, तथा छत के साथ बेशकीमत कन्दीलें और झाड़ लटक रहे हैं। आलों पर सुंदर जड़ाऊ गुलदस्ते सजाये हुए हैं जिनमें रक्खे हुए खुशबूदार फूल पत्तों के गुच्छे तमाम कमरे को मुअत्तर कर रहे हैं। इस समय यहां रोशनी बहुत कम है क्योंकि सिर्फ दो ही तीन दीवारगीरों में काफूरी मोमबत्ती जल रही है।

कई घण्टे तक बेआरामी की नींद लेने के बाद दारोगा चौंक कर जाग पड़ा और उठ कर चारपाई के ऊपर बैठ गया। उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उसके पैर में किसी जानवर ने काट लिया परन्तु उठ कर बैठ जाने

पर उस कमरे की अवस्था देख कर वह घबड़ा गया और आँखें फाड़ फाड़ चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा कि जिन दीवारगीरों में काफूरी बत्तियां जल रही थीं वे बुझी हुई हैं और सिर्फ एक बत्ती जल रही है मगर उस पर भी किसी ने स्याह चादर या इसी तरह की कोई चीज डाल दी है जिससे रोशनी बहुत गंदली हो रही है यहां तक कि कमरे की चीजें भी साफ नहीं दिखाई देतीं।

दारोगा के दिल में एक प्रकार का डर पैदा हो गया और उस समय तो उसका कलेजा और भी उछलने लग गया जब उसे कमरे के कोने में कोई स्याह रंग की मूरत धुंधली सी दिखाई दी।

निःसन्देह पापियों का हृदय बड़ा ही छोटा बहुत ही कमजोर और अत्यन्त डरपोक होता है। दारोगा कोई बहादुर आदमी नहीं था, बहादुर लोग ऐसे नीच कामों को पसन्द नहीं करते जिन्हें दारोगा ने अपना नित्यकर्म ही समझ रक्खा था। दारोगा केवल चालाकी और दगाबाजी से अपना काम निकालता था। यद्यपि किसी की जान लेने के विषय में वह बड़ा ही निर्दय था परन्तु इस काम में उसका दिल उन बहादुरों का सा न था जो लड़ाई के मैदान में खुल्लमखुल्ला लड़ कर दुश्मनों का सिर काटते हैं बल्कि उसका दिल उन पापियों का सा था जो केवल लाभ के लिए निर्दोष पुरुषों को अंधकार के समय छिप कर मारते हैं या जहर से किसी की जान लेकर छिपे फिरते हैं और डरते हैं कि हमारा यह भेद किसी पर खुल न जाय। इन दोनों दिलों में जमीन आसमान का फर्क है, मगर इससे भी बढ़ कर उस आदमी का दिल पापमय और कमीना है जो अपने मालिक के साथ नमकहरामी और अपने राजा के साथ दगाबाजी करता है। शंकरसिंह के साथ दगाबाजी करके और उनको जमीन के अन्दर दफन करके दारोगा का दिल बहुत ही घबड़ाया और बेचैन हुआ। उसे दिन रात की साठ घड़ियों में से कोई भी घड़ी बेफिक्री की नसीब नहीं होती थी। शंकरसिंह की लाश को जमीन के अन्दर पहुंचाने के बाद दूसरे दिन वह दरबार में

राजा साहब के पास गया परन्तु उसके दिल ने घण्टे भर भी उसे बैठने को इजाजत न दी। राजा साहब के मुँह से एक दफे केवल इतना ही निकल गया—"आज भैयाराजा नहीं दिखाई दिये, क्या मामला है!" बस दारोगा के हवास जाते रहे और वह सरदर्द तथा बीमारी का बहाना करके वहाँ से चलता बना। घर आने पर भी उसका दिन बड़ी बेचैनी के साथ गुजरा और रात को जब वह खा पी कर सोने के लिए अपने पलंग पर गया तो बड़ी मुश्किल से उसे नींद आई। दूसरा दिन भी उसका उसी तरह बेचैनी के साथ गुजरा और वह राजा साहब के पास दरबार में न जा सका, सिर्फ अपनी बीमारी का सन्देशा कहला भेजा। वहाँ आज भी शँकरसिंह के न होने से बड़ी बेचैनी फैली हुई थी और सैकड़ों आदमी उनकी खोज में चारो तरफ भेजे जा चुके थे। रात्रि के समय आज भी दारोगा की वही दशा रही अर्थात् बड़ी कठिनता से नींद आई और किसी कारण से जब उसकी आंख खुली तो उसने वही कैफियत देखी जो हम ऊपर कह चुके हैं।

धुंधली सी स्याह रंग की मूरत देख कर वह डर गया। अपने सिरहाने से उसने तलवार उठा ली और कुछ देर तक एकटक उस मूरत की तरफ देखता रहा। अब वह सूरत हिलती हुई दिखाई दी और फिर धीरे धीरे दारोगा की तरफ बढ़ने लगी यहां तक कि चारपाई के पास आकर खड़ी हो गई। इस बीच में दारोगा ने कई दफे उठ कर चारपाई के नीचे खड़े होने की कोशिश की मगर कृतकार्य न हुआ, अर्थात् उसके पैरों ने उसे हिलने की इजाजत न दी, मालूम हुआ कि जैसे पैरों में कुछ भी दम नहीं रह गया है। इस कैफियत से दारोगा का डर और भी बढ़ गया तथा वह घबड़ाया सा होकर एकटक उस मूरत की तरफ देखने लगा क्योंकि उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कोई आदमी सिर से पैर तक काला कपड़ा ओढ़े सामने खड़ा है।

कुछ सायत के बाद उस मूरत ने अपने चेहरे पर से स्याह कपड़ा हटा दिया, अब दारोगा को ठीक शँकरसिंह की सूरत दिखाई दी जिसे देखने के साथ ही वह चिल्ला उठा, उसके सर में चक्कर आने लगे और वह घूम

कर चारपाई पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

अबकी दफे जब दारोगा होश में आया अर्थात् उसकी आंख खुली तो उसने देखा कि सवेरा हो चुका है और कमरे के अन्दर कुदरती रोशनी पहुंच कर वहां की हर एक चीज को अच्छी तरह दिखा रही है मगर वह सूरत वहां नहीं दिखाई देती और न किसी दीवारगीर के ऊपर स्याह कपड़ा ही दिखाई पड़ता है। दीवारगीरों के ऊपर निगाह डालने से यह भी मालूम होता था कि सभी बत्तियां जो संध्या के समय जलाई गई थीं रात भर जल कर बुझी हैं क्योंकि कोई काफूरी बत्ती का टुकड़ा इतना बड़ा नहीं दिखाई देता था जिससे यह समझा जाय कि वह थोड़ी देर तक जलने के वाद बुझा दी गई थी।

कमरे की ऐसी अवस्था देख कर दारोगा तरह तरह की बातें सोचने लगा, "क्या मैंने कोई स्वप्न देखा है? नहीं नहीं, यह स्वप्न नहीं हो सकता! वह स्याह मूरत मैंने स्वप्न में नहीं देखी थी! जरूर वह कोई आदमी था, साथ ही इसके मैंने यह भी देखा था कि दीवारगीरों की मोमबत्तियां एक को छोड़ कर बाकी की सभी बुझा दी गई हैं, परन्तु अब उन बचे हुए टुकड़ों पर ध्यान देने से जाना जाता है कि सभी वत्तियाँ एक सां रात भर जली हैं, इससे विश्वास होता है कि मैंने जरूर कोई स्वप्न देखा है। मगर नही देखो यह तलवार जो कि मेरे सिरहाने थी इस समय बगल में पड़ी हुई है क्योंकि मैंने उस स्याह मूरत को देख कर सिरहाने से तलवार उठा ली थी, तो क्या वास्तव में वह बात सच थी? लेकिन सच भी क्योंकर हो सकती है? शंकरसिंह को मैं अपने हाथ से जमीन के अन्दर दफन कर आया हूं, अब वह मेरे सामने क्योंकर आ सकते हैं? तो क्या कोई ऐयार उनकी सूरत बन कर आया? नहीं किसी ऐयार को यह बात मालूम ही कैसे हो सकती है जो वह मुझे डराने के लिए शंकरसिंह की सूरत बन कर आवेगा! तब क्या मेरे दोनों साथी ऐसा कर सकते हैं? नहीं नहीं, राम राम! उन वेचारों पर किसी तरह का शक करना अपने ही ऊपर शक करने के बराबर

है, फिर क्या शंकरसिंह भूत बन कर मेरे कमरे में आये थे ? छि: छि:, भला भूत प्रेत का शक करने से हम लोगों का काम कैसे चल सकता है ? भूत कोई पदार्थ नहीं है, और जरूर वह स्वप्न था जो कि मैंने देखा।"

दारोगा चारपाई के ऊपर बैठा हुआ बड़ी देर तक इसी प्रकार की चिन्ताएं करता रहा और आखिर उसने निश्चय कर लिया कि जो कुछ उसने देखा वह जरूर स्वप्न था।

आखिर आंखें मलता हुआ दारोगा चारपाई के नीचे उतरा और धीरे धीरे चल कमरे के बाहर आया जहाँ कई खिदमतगार खड़े उसके आने का इन्तजार कर रहे थे। हाथ मुंह धोने के बाद कुर्सी पर बैठा ही था कि राजा साहब का एक चोबदार आ पहुँचा जिसने उससे कहा कि 'महाराज ने आपको याद किया है।'

दारोगा०। (चोबदार से) क्यों क्यों ? आज यह गैरमामूली बात कैसी ! खैरियत तो है ?

चोब०। सो तो मुझे कुछ मालूम नहीं, सिर्फ यही हुक्म हुआ है कि आपको जल्द हाजिर होने के लिए इत्तिला दी जाय ! मगर हां, आज महाराज कुछ चिन्तित से जरूर दिखलाई देते हैं। वे सूर्योदय के पहिले ही स्नान तथा सन्ध्योपासन से निवृत्त हो जाया करते थे परन्तु आज उन्होंने चारपाई से उठ कर मुंह तक नहीं धोया है, चारपाई से उठ कर सीधे 'मुक्ता-भवन' में चले आये हैं और वहीं आपको भी याद किया है। आज्ञा है कि विना कुछ विलम्ब किये शीघ्र उनके पास पहुँचें।

दारोगा०। नि:सन्देह कोई बात जरूर है ?

चोब०। जी हाँ, तभी तो यह अवस्था है।

चोबदार की बातें सुन दारोगा साहब और परेशान हुए। महाराज के पास जाने की इच्छा तो नहीं होती थी परन्तु लाचार थे, बिना वहाँ गये रह भी नहीं सकते थे। कई क्षण तक चिन्ता करने के बाद वे उठे और अपने तोशेखाने वाले कमरे में चले गये। कुछ देर बाद मरीजों की सी सूरत

बनाये हुए दारोगा साहब कमरे के बाहर निकले और चोबदार के साथ महाराज की तरफ रवाना हुए।

सातवां बयान

जमानिया के राजा गिरधरसिंह अपने मुक्ता-भवन में चाँदी की एक आरामकुर्सी पर बैठे हुए दारोगा के आने का इन्तजार कर रहे हैं। यह स्थान खास महाराज के रहने का है, जनाना महल या दर्बार अथवा खास बाग से इसका कोई सम्बन्ध नहीं हाँ जनाना महल इस मकान के साथ ही सटा हुआ है तथा खास बाग में जाने का एक रास्ता भी इस मकान में से है।

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा सा नजरबाग तथा एक सुन्दर बारहदरी है। इसी बारहदरी में इस समय महाराज उदास और विषण्ण बदन बैठे न मालूम किस विषय की चिन्ता कर रहे हैं। उनके पास किसी तरह की भीड़ भाड़ नहीं है, केवल खास खास चार पांच आदमी और पांच सात खिदमतगार नजर आते हैं और वे सब भी महाराज की उदासी के कारण उदास हो रहे हैं।

कुछ देर बाद दारोगा साहब आ पहुँचे। महाराज से कुछ हट कर एक कुर्सी रक्खी हुई थी जिस पर बैठने के लिए महाराज ने इशारा किया और दारोगा साहब बैठ गये। महाराज ने कहा, "आपको कुछ भैयाराजा की खबर है?"

दारोगा०। जी मुझे तो कुछ खबर नहीं, क्या उनका पता नहीं लगता?

महाराज०। हाँ दो दिन से पता नहीं लगता, मगर क्या आपको किसी ने खबर नहीं दी? आश्चर्य है कि आप हम लोगों की तरफ से इस तरह बेखबर रहते हैं!!

दारोगा०। (हाथ जोड़ कर) महाराज मैं सरकार की तरफ से बेफिक्र नहीं रह सकता परन्तु यह एक साधारण सी बात थी जिसके विषय में मैंने कुछ विचार नहीं किया। इसके अतिरिक्त मुझे किसी ने इस मामले की खबर

भी नहीं दी। शायद इसका यह सबब हो कि मैं दो दिन से सख्त बीमार हूँ, सर और पेट दर्द ने मुझे अधमूआ कर डाला है। मगर महाराज भैया-राजा के लिए आपको इतनी अधिक चिन्ता करनी नहीं चाहिये। आप जानते ही हैं कि वे प्रायः ही गायब रहा करते हैं और जब जाते हैं तो दस दस पन्द्रह पन्द्रह दिन तक घर की खबर नहीं लेते...

महा०। ठीक है मगर वे ऐसा कभी नहीं करते कि मुझसे आज्ञा लिए बिना या मुझे इत्तिला दिये बिना कहीं चले जाते हों, अगर कभी ऐसा मौका पड़ भी गया है कि दो एक दिन के लिए कह कर कहीं गये हैं और कई दिन लग गये हैं तो बाहर रहने पर भी नित्य अपने कुशल मंगल का समाचार भेजते रहे हैं, परन्तु अबकी दफे इनका गायब होना मामूल के खिलाफ है...

महाराज ने इतना ही कहा था कि बाहर से एक चोबदार आया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया, जब महाराज ने उसकी तरफ देखा और इशारे में इजाजत दी तब उसने अर्ज किया कि इन्द्रदेवजी आये हैं और सरकार में हाजिर हुआ चाहते हैं।

इस समय इन्द्रदेव के आने से महाराज खुश हुए और उन्हें बहुत जल्द ले आने के लिए चोबदार से कहा। खिदमतगार ने महाराज की मर्जी समझ कर एक कुर्सी वहाँ लाकर रख दी और जब इन्द्रदेव हाजिर हुए तो सलाम करने के बाद इशारा पाकर उसी कुर्सी पर बैठ गये।

मामूली कुशल मंगल पूछने के बाद महाराज ने प्रश्न किया—

महा०। अबकी तो बहुत दिनों बाद तुम्हारा आना हुआ!

इन्द्रदेव०। जी हां, कई झंझटों में फँसे रहने के कारण मैं बहुत दिनों तक हाजिर न हो सका, इधर कई दिनों से मेरे श्वसुर किसी कार्यवश मुझे बुला रहे थे, कल उनका बहुत शिकायत भरा हुआ पत्र पहुँचा तो लाचार होकर आना पड़ा, सब से पहिले महाराज का दर्शन करना फर्ज था इसलिए हाजिर हुआ हूँ, परन्तु महाराज कुछ खिन्न से दिखाई पड़ते हैं जिससे आश्चर्य होता है......

महा०। हाँ ठीक है, मैं जरूर उदास और दुःखी हो रहा हूँ और इसका

कारण यह है कि आज तीन दिन से भैयाराजा का कहीं पता नहीं लगता। उनकी यह आदत नहीं थी कि बिना मुझसे पूछे एक दिन से ज्यादे के लिये कहीं जाते !

इन्द्रदेव०। निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है, परन्तु महाराज, वे कुछ नादान बालक तो हैं ही नहीं, होशियार हैं, बुद्धिमान हैं, बहादुर तथा नीति-कुशल हैं, अतएव उनका गायब होना जरूर किसी खास कारण से होगा।

महाराज०। खयाल तो मेरा भी ऐसा ही है परन्तु न मालूम क्यों उनके लिए मेरा जी बहुत बेचैन हो रहा है।

इन्द्रदेव०। यह केवल सच्चे प्रेम के कारण है।

महाराज०। इसके अतिरिक्त एक बात और भी है।

इन्द्रदेव०। वह क्या ?

महाराज०। तुम लड़के हो, दामोदरसिंह के लेहाज तथा तुम्हारी लेयाकत हमदर्दी और प्रेम के कारण मैं तुम्हें अपने लड़के के बराबर ही समझता हूं, इसके अतिरिक्त मेरे लड़के के तुम मित्र भी हो इसलिए भी तुम लड़के के बराबर ही हुए अतएव तुमसे कोई बात छिपाना पसन्द नहीं करता। आज रात को जब कि मैं अपने सोने के कमरे में बेखबर सो रहा था एक अजीब घटना देखने में आई।

इन्द्र०। (आश्चर्य प्रकाश करता हुआ) वह क्या महाराज ?

महाराज०। (कुछ सोच कर) मैं चाहता हूं कि गोपाल भी आ जाय तो मैं इस किस्से को बयान करूँ।

इन्द्रदेव०। क्या चिन्ता है जरा देर के लिए ठहर जाइये, गोपालसिंह जी भी आते ही होंगे, मैं यहां ड्योढ़ी तक उनके साथ ही साथ आया था, किसी कार्यवश वे महल में चले गये और मुझसे कह गये कि तुम महाराज के पास चलो मैं अभी आता हूँ। (चौंक कर) वह देखिये वे भी आ गए।

इतने में ही गोपालसिंह भी आ गए, उनके लिए भी कुर्सी लाई गई और वे महाराज को प्रणाम करके कुर्सी पर बैठ गये।

महाराज०। (गोपालसिंह से) तुम तो जानते ही हो कि आज तीन

दिन से भैयाराजा गायब हैं।

गोपाल०। (हाथ जोड़ के) जी हाँ आज तीसरा दिन है। बिना इत्तिला किये कहीं चले जाने की आदत तो चाचाजी में नहीं थी। यह बड़े आश्चर्य की बात है ! उनका पता लगाने के लिए मैं बहुत उद्योग कर रहा हूं परन्तु अभी तक मेरी मेहनत का कोई नतीजा नहीं निकला !

महाराज०। इसके अतिरिक्त मैं रात की एक अजीब घटना का बयान करने वाला हूँ जिसके लिये तुम्हारा इन्तजार कर रहा था।

गोपाल०। आज्ञा !

महाराज०। रात को भैयाराजा की चिन्ता में डूबा हुआ मैं समय के कुछ पहिले ही सोने के लिये अपने कमरे में चला गया था, बहुत देर तक पड़ा तरह तरह की बातें सोचता रहा पर अन्त में नींद आ गई और मैं बेखबर सो गया, दो पहर रात बीत जाने के बाद मेरी आँख खुली तो सोने वाले कमरे में अन्धकार पाया, सिर्फ पूरब तरफ वाली खिड़की खुली हुई थी और उसमें से आती हुई चन्द्रमा की चाँदनी फर्श के ऊपर पड़ रही थी जिससे कमरे के अन्दर इतना उजाला हो रहा था कि नित्य मिलने जुलने वाले आदमी को मैं पहिचान सकता था। उसी चाँदनी के पास खड़ा मुझे एक आदमी दिखाई पड़ा। मुझे आश्चर्य हुआ कि इस समय छिप कर मेरे कमरे में कौन आया, अस्तु मैं बगल से तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ और धीरे धीरे उस आदमी की तरफ बढ़ने लगा। मुझे अपनी तरफ बढ़ते देख वह आदमी चन्द्रमा की रोशनी में चला गया और इस ढंग से खड़ा हो गया कि चन्द्रमा की रोशनी बखूबी उसके चेहरे पर पड़ने लगी। मैंने साफ साफ पहिचाना कि यह भैयाराजा हैं।

भैयाराजा को देख कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ, मगर जब उनके पास जाने लगा तो उन्होंने हाथ के इशारे से मुझे मना किया और जब मैंने इसका सबब पूछा तो उन्होंने अपनी उँगली से फर्श के ऊपर लिख कर जवाब दिया, चाँदनी में काले हरूफ बहुत अच्छी तरह पढ़े जाते थे—मैंने पढ़ा, यह लिखा हुआ था; 'मैं जीता नहीं हूं, मुझे दारोगा ने मार कर

अपने मकान में गाड़ दिया है।"

बस इतना लिख कर वह खिड़की के बाहर कूद गये। मैं बड़ी देर तक खड़ा खड़ा उन बड़े बड़े हरूफों को देखता रहा, इसके बाद झांक कर खिड़की के बाहर देख तो किसी की सूरत दिखाई नहीं पड़ी। मैं घबड़ाता हुआ चारपाई पर जाकर लेट रहा और इस खयाल से खिड़की की तरफ देखने लगा कि शायद वह सूरत पुनः दिखाई दे मगर फिर कुछ दिखाई न दिया और बहुत जल्द मुझे नींद आ गई। फिर जब आंख खुली सवेरा हो चुका था। जहां पर वे अक्षर लिखे गये थे वहाँ जाकर देखा तो फर्श पर एक अक्षर भी दिखाई न पड़ा मगर तभी से इस समय तक मेरे दिल की विचित्र अवस्था हो रही है।

इस किस्से को सुन कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ मगर जब गोपालसिंह की निगाह दारोगा पर पड़ी तो उन्होंने देखा कि उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और बदन काँप रहा है। महाराज ने भी दारोगा की यह अवस्था देख आश्चर्य में आकर पूछा, "यह क्या, आपका शरीर इतना काँप क्यों रहा है ?"

दारोगा०। मैं निवेदन कर चुका हूं कि दो तीन दिन से बुखार ने मुझे पीड़ित कर रक्खा है, मैं यहाँ आने के योग्य नहीं था परन्तु महाराज की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था इसीलिए किसी तरह उठता बैठता चला आया, इस समय पुनः सर्दी मालूम हो रही है जान पड़ता है फिर बुखार चढ़ेगा।

महाराज०। ठीक है, अच्छा तो इस समय आप घर जाइये, जब आपकी तबीयत ही ठीक नहीं है तो मेरे इस तरद्दुद में आप किस तरह शरीक हो सकते हैं।

दारोगा०। (हाथ जोड़ता हुआ) जो आज्ञा, मैं बिदा होता हूँ, जी ठिकाने होने पर पुनः हाजिर हो जाऊँगा, मगर आपने जो कुछ रात का हाल बयान किया है उसे सुन कर तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ! मैं वास्तव में इस समय कुछ भी निश्चय नहीं कर सकता कि यह क्या मामला

है। आश्चर्य नहीं कि यह किसी ऐयार की ऐयारी हो और वह आपको अथवा भैयाराजा को धोखे में डालने के इरादे से से किसी विशेष घटना की भूमिका बांध रहा हो अथवा किसी ढंग का स्वप्न आपने देखा हो जो कि......मैं क्या कहूं कुछ समझ में नहीं आता। आश्चर्य तो यह है कि उसने बदनाम करने के लिए मुझी को ताका!

महाराज०। आपको भला कोई क्या बदनाम करेगा! मुझे कब विश्वास हो सकता है कि आप हम ही लोगों की जान के ग्राहक हो जायंगे! नहीं नहीं, मुझे ऐसा खयाल कभी नहीं हो सकता परन्तु यह मामला क्या है इसका पता जरूर लगाना चाहिये।

दारोगा०। (जोर देने के ढङ्ग पर) जरूर इसका पता लगाया जायगा, जरा मेरी तबीयत ठिकाने हो जाय तो मैं उद्योग करूँ!

महाराज०। (इन्द्रदेव से) कहो बेटा, तुम इस बारे में क्या खयाल करते हो?

इन्द्र०। महाराज, मैं इस विषय में यकायक अपनी राय नहीं दे सकता हूं, पर दुनिया में भूत प्रेत तथा आत्मा के विषय में जो कुछ कहानियां लोग कहते है मैं उन्हें अवश्य मानता हूं, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आदमी मरने के बाद नाश नहीं होता, इस पंचभौतिक स्थूल शरीर को छोड़ने के साथ ही आत्मा को जो अविनाशी और अमर है एक दूसरा सूक्ष्म शरीर मिल जाता है जिसे पाकर वह जीव इधर उधर घूमा या उड़ा करता है अथवा अपने कर्मानुसार तब तक दु ख सुख का भोग करता है जब तक वह किसी ऊंचे पद को प्राप्त न करे अथवा पुनः पंचभौतिक शरीर में प्रवेश न करे अर्थात् जब तक उसका पुनर्जन्म न हो! जब तक जीवात्मा का पुनर्जन्म नहीं होता तब तक उसकी वासनानुसार उसको तरह तरह के तमाशे दिखाई दे सकते हैं और यदि मरती समय कोई प्रबल वासना उसके अन्दर रह गई हो तो निश्चय रूप से किसी के शरीर में प्रवेश करके अथवा यों ही छाया की तरह वह लोगों को दिखाई भी दे जाता है अथवा इसी ढंग पर कभी कभी अपनी थोड़ी बहुत वासना भी पूरी कर लेता है। इस विषय

में मेरे पिताजी ने मुझे बड़े बड़े तमाशे दिखलाये हैं और बहुत सी बातें सिखलाई भी हैं जिनको खयाल में रखते हुए मैं निश्चय रूप से कह सकता हूँ कि ईश्वर न करे यदि चाचाजी (भैयाराजा) की अकाल मृत्यु हुई है और किसी ने धोखा देकर उन्हें मार डाला है तो उनकी आत्मा बदला लेने की नीयत से इस रूप में जरूर दिखाई दे सकती है जैसा कि आपने रात को देखा। अगर वह वास्तव में भैयाराजाजी की आत्मा है तो कम से कम एक दो दफे आपको और जरूर दिखाई देगी क्योंकि भूत प्रेत जब दिखाई देता है तब केवल एक ही दफे नहीं दिखाई देता, और अगर वह भैयाराजा की आत्मा नहीं किसी ऐयार की ऐयारी है तो मैं बहुत जल्द इसका पता लगा कर आप से निवेदन करूँगा।

महा०। (आश्चर्य से) क्या तुम भूत-प्रेतादि का होना मानते हो ?

इन्द्र०। निःसन्देह ! जैसा कि मैं अर्ज कर चुका हूँ उन पर मेरा दृढ़ विश्वास है और मैंने इस सम्बन्ध के बहुत से खेल देखे भी हैं। यही नहीं, यदि महाराज देखा चाहेंगे तो मैं इस विषय के अपूर्व तमाशे दिखा भी सकूँगा।

महाराज०। तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारे खयाल से भैयाराजा का मारा जाना सम्भव है !

इन्द्रदेव०। जी सम्भव भी है असम्भव भी है, दोनों बातों में से किसी पर मैं जोर नहीं दे सकता, दो दिन की मोहलत मुझे मिले इसके बाद मैं निश्चय करके जवाब दूंगा। (दारोगा की तरफ देख कर) भाई साहब आपकी तबीयत अब बहुत खराब होती जाती है, आप अब पधारिये।

महा०। (दारोगा से) हां हां अब आप जाइये, फिर देखा जायगा।

दारोगा उठ खड़ा हुआ और सलाम करके धीरे धीरे बीमारी की सी नकल करता हुआ वहाँ से रवाना हुआ। उसके चले जाने के बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "महाराज, यदि पुनः आपको वह जीव दिखाई पड़े तो आप उससे बातचीत चाहे जिस तरह की करें परन्तु उसे छूने या पकड़ने का उद्योग न करें यही मेरी प्रार्थना है।"

महाराज०। क्यों ?

इन्द्र० । सम्भव है कि वह कोई प्रेत हो और आपको धोखा देने के लिए भैयाराजा की सूरत बन कर आपके पास आया हो या पुनः भी आवे। जो लोग उपासक होते हैं और सन्ध्योपासन से विमुख नहीं होते उनके शरीर को प्रेत स्पर्श नहीं कर सकता और ऐसी अवस्था में अपने को भी उसे स्पर्श करने का उद्योग न करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उसके पुनः आने की आशा नहीं रहती।

महाराज० । हाय, भैयाराजा के विषय में कोई भी निश्चय नहीं कर सकता और कोई भी पता नहीं लगा सकता ! जरूर यह हमारे मन्द भाग्य की निशानी है......

इतना कहते कहते उनकी आंखें डबडबा आईं और आंसू की बूंदें टपाटप गिरने लगीं।

इन्द्रदेव० । महाराज, आप हताश क्यों होते हैं ! मैं कह चुका हूं कि दो तीन दिन के अन्दर ही उनका ठीक ठीक पता लगा कर आपको समाचार दूँगा, मुझे विश्वास है और मैं जोर देकर कहता हूँ कि भैयाराजा जीते हैं परन्तु किसी कष्ट में पड़ गये हैं।

महाराज० । (रूमाल से आंसू पोंछते हुए) अच्छा मैं तुम्हारे भरोसे पर और भी दो तीन दिन किसी तरह बिताऊँगा......

इन्द्रदेव ने महाराज को बहुत कुछ समझाया और हर तरह पर दिलजमई करा कर वहां से बिदा हुए। जाते समय वे कुँअर गोपालसिंह को भी अपने साथ लेते गये।

आठवाँ बयान

जमानिया राजमहल में भी शंकरसिंह के गायब होने से बड़ा ही कोलाहल मच गया था। उन्हें लड़के लड़कियां औरत मर्द सभी कोई मुहब्बत की निगाह से देखते थे और इसीलिये औरतों को भी उनके गायब होने का बड़ा ही दुःख था, परन्तु उनकी स्त्री के चेहरे पर विशेष दुःख की कोई निशानी नहीं पाई जाती थी और इसका औरतों को बड़ा ही आश्चर्य था।

यह नहीं कहा जा सकता कि शंकरसिंह की स्त्री रोती या कलपती न थीं। नहीं, उनका रोना धोना और बावेला मचाना बहुत चढ़ा बढ़ा था, मगर लोगों का ख्याल यही था कि यह सब बनावटी है क्योंकि जब कोई औरत कभी धोखे या एकान्त में उन्हें देख लेती थी तब उनके चेहरे पर कोई गम की निशानी नहीं पाती थी बल्कि कई दफे तो लोगों ने उन्हें एकान्त में मुस्कुराते हुए देखा था, इसीलिए औरतें खयाल करती थीं कि शंकरसिंह के गायब होने का उनकी स्त्री को कोई दुःख नहीं है, परन्तु ऐसा क्यों है इसके विषय में निश्चय रूप से कोई भी कुछ नहीं कह सकती थी हाँ ताक झाँक में सभी कोई लगे रहते थे और सभी औरतों की निगाहों में वे चढ़ गई थीं।

राजा गिरधरसिंह की एक विधवा साली थी, वह यद्यपि बहुत नेक थी और सनातन धर्म के ऊपर उसका बहुत बड़ा विश्वास था तथा दिन रात का बहुत बड़ा हिस्सा उसका पूजा पाठ में ही बीतता भी था परन्तु उसमें एक दोष बहुत बड़ा था अर्थात् वह लोगों का ऐब ढूंढ़ने में बड़ी ही निपुण थी और छोटी सी बात को भी झूठ सच के सहारे बड़ी खूबी के साथ बढ़ा कर बयान करती थी। नाम उसका द्रौपदी था।

एक दिन आधी रात के समय राजा गिरधरसिंह की स्त्री अकेली अपने कमरे में पलंग पर लेटी हुई तरह तरह की बातें सोच रही थीं, चिन्ता के कारण निद्रादेवी ने उनका साथ छोड़ दिया और इसीलिये वे करवटें बदल बदल कर समय बिता रही थीं, कमरे के अन्दर एक बहुत बड़ा फर्राशी पंखा चल रहा था जिसकी डोरी कमरे के बाहर बैठी हुई एक लौंडी के हाथ में थी।

करवटें बदलते बदलते एक दफे राजरानी की निगाह दरवाजे पर जा पड़ी, देखा कि बीबी द्रौपदी खड़ी एकटक उनकी तरफ देख रही हैं। हाथ के इशारे से उन्होंने बीबी द्रौपदी को कमरे के अन्दर आने की इजाजत दी और जब वे उनके पास आईं तब पूछा, "क्या है जो तुम इस समय यहाँ ताक झाँक लगा रही हो?"

द्रौपदी०। कुछ नहीं यों ही, मैं इस तरफ चली आई तो कमरे का दरवाजा खुला देख कर ठहर गई।

रानी०। फिर भी कोई न कोई बात जरूर है, आओ मेरे पास बैठ जाओ।

द्रौपदी०। (रानी साहेबा के पास बैठ कर) अभी तक आपको नींद नहीं आई, क्या बात है ?

रानी०। मुझे तो तरह तरह की चिन्ताओं ने दबा रक्खा है अस्तु नींद न आवे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, परन्तु तुम अभी तक जाग और इधर-उधर घूम रही हो यह बेशक आश्चर्य की बात है !

द्रौपदी०। क्या आपकी चिन्ता से मुझे चिन्ता नहीं है ? क्या मैं आपके सुख दुःख की साथी नहीं हूँ ?

रानी०। क्यों नहीं, क्यों नहीं, जरूर हो।

द्रौपदी०। तो बस फिर समझ लीजिये कि जिस चिन्ता के कारण आप अभी तक जाग रही हैं उसी चिन्ता ने मेरी नींद भी उड़ा दी है। हाँ भेद इतना है कि आप चुपचाप पड़ी सोचा करती हैं और मैं इधर-उधर घूम फिर कर समय बिताती हूँ और इससे बहुत सा काम भी चल जाता है, कई छिपे हुए भेद भी खुल जाते हैं।

रानी०। (आश्चर्य से) क्या आज भी कोई भेद की बात तुम्हें मालूम हुई ?

दौपदी०। हाँ आज एक अनूठी बात जरूर मेरे देखने में आई।

रानी०। वह क्या !

दौपदी०। नींद न आने के कारण मैं चारपाई पर न ठहर सकी और उठ कर इधर उधर घूमने लगी, अकस्मात् छोटी भाभी (भैयाराजा की स्त्री) के कमरे की तरफ जा निकली। देखा तो दरवाजा बन्द था जिससे मुझको बड़ा आश्चर्य हुआ। कान लगा कर इस बात की आहट लेने लगी कि देखें वे सोती हैं या जागती मगर कमरे के अन्दर किसी मर्द की आवाज सुन कर चौंक पड़ी, मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि उनके एकान्त के कमरे में इस आधी रात के समय कौन मर्द आया और किस राह से आया !

रानी०। (बात काट कर) मर्द की आवाज !

द्रौपदी०। जी हाँ मर्द की आवाज, पहिले तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ मगर जब अच्छी तरह ध्यान देकर सुना तो शक जाता रहा क्योंकि

उसे छोटी भाभी से बातें करते हुए मैंने सुना।

रानी०। और वे बातें क्या थीं ?

द्रौपदी०। सो तो मैं साफ साफ न समझ सकी, हाँ कई छोटे छोटे शब्द सुनने में आए और वे ये थे—"देखो मेरा भेद किसी पर खुलने न पावे—" "तुम किसी तरह की चिन्ता न करना, मैं तुम्हारे पास बराबर आया जाया करूँगा—" इत्यादि कई बातें मेरी समझ में आईं। जब मैंने उस मर्द को यह कहते सुना कि 'कल मैं फिर इसी समय आऊँगा, तुम खिड़की खुली रखना !' तब मुझे विश्वास हो गया कि जरूर वह बाहर से कमन्द लगा कर खिड़की की राह से आया है। फिर मेरे जी में आया कि किसी तरह इस मर्द को देखना चाहिए। यह सोचते ही मैं वहाँ से चल पड़ी और घूमती हुई भण्डार के पीछे वाले उस कमरे के पास चली गई जिसमें ठाकुरजी के जन्माष्टमी का सामान रहता है। वहाँ बारामदे में खड़े होकर देखें तो छोटी भाभी की खिड़की साफ साफ दिखाई देती है।

रानी०। हाँ वहाँ से बखूबी दिखाई देती है, अच्छा तब क्या हुआ ?

द्रौपदी०। थोड़ी देर बाद मैंने एक आदमी को उस खिड़की की राह कमन्द लगा कर नीचे उतरते देखा। नीचे और भी दो आदमी उसके साथी खड़े थे जिन्हें लेकर वह बाग में घुस गया, फिर न मालूम कहाँ गया और क्या हुआ। उसके बाद मैं घूमती फिरती तुम्हारे पास चली आई।

बीबी द्रौपदी की अनहोनी बातें सुन रानी साहेबा उठ कर बैठ गईं और आश्चर्य के साथ द्रौपदी का मुंह देखने लगीं। कुछ देर के बाद वे फिर बोलीं—

रानी०। यह तुम सच कह रही हो या किसी स्वप्न की बातें मुझे सुनाती हो ? भला भैयाराजा की स्त्री और किसी गैर आदमी से बातें करे, सो भी अकेले कमरे में और दरवाजा बन्द करके ! बेशक वह कोई गैर आदमी था तभी तो कमन्द लगा कर चोरी से आया और गया।

द्रौपदी०। (रानी का पैर छू कर) मैं तुम्हारी ही शपथ खाकर कहती हूँ कि मैंने एक शब्द भी तुमसे झूठ नहीं कहा।

रानी०। अच्छा तो मैं महाराज से इसका जिक्र करूँ? मुझे झूठा तो नहीं बनना पड़ेगा?

द्रौपदी०। अगर वह मर्द जो कह गया है कि कल मैं इसी समय फिर आऊँगा अपने कौल का सच्चा निकला तो तुमको कदापि झूठा न बनना पड़ेगा।

रानी०। इसका क्या मतलब?

द्रौपदी०। यही कि अगर कल वह न आया तो आज जो कुछ मैंने सुना है उसकी सचाई के लिए मैं किसकी गवाही दे सकूंगी!

रानी०। (कुछ सोच कर) खैर देखा जायगा, तुम बाहर से किसी लौंडी को तो बुलाओ।

सुनते ही द्रौपदी बाहर चली गई और एक लौंडी को बुला लाई, रानी साहेबा ने उसे आज्ञा दी कि 'तू महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से निवेदन कर कि मैं इसी समय महाराज का दर्शन किया चाहती हूँ। अगर वे निद्रा में हों तो किसी अच्छे ढंग से उन्हें जगा दीजियो।'

"जो आज्ञा" कह कर लौंडी वहाँ से चली गई और उसके बाद रानी साहेबा की आज्ञानुसार द्रौपदी भी सोने के लिए अपने कमरे में चली गई।

थोड़ी देर के बाद महाराज महल में आये और दो घण्टे तक रानी साहेबा के पास बैठे, इस बीच में क्या क्या बातें हुईं सो कोई नहीं जानता हाँ दूसरे दिन इस बात की तैयारी जरूर हुई कि भैयाराजा की स्त्री के पास जो आदमी आने वाला है उसकी बातें सुननी चाहिये और उसे गिरफ्तार भी करना चाहिए।

नौवां बयान

आधी रात का समय है और चारो तरफ अंधकार छाया हुआ है। शहर के गली कूचों में अच्छी तरह सन्नाटा हो रहा है और सिवाय पहरा देने वालों के और किसी आने जाने वाले की सूरत दिखाई नहीं पड़ती। निश्चय है कि मकानों के अन्दर रहने वाले भी गहरी नींद में पड़े हुए खुर्राटा भर रहे होंगे, मगर तिलिस्मी दारोगा की आँखों में नींद नहीं है,

वह अपने खास कमरे में एक गावतकिये के सहारे बैठा हुआ तरह तरह की चिन्ता कर रहा है। सामने एक मोमी शमादान जल रहा है और लिखे तथा सादे बहुत से कागज फैल रहे हैं, कभी कभी वह उठा कर किसी कागज को देख लेता है और फिर जमीन पर रख तकिये के सहारे लुढ़क जाता है। इसी समय दरबान ने आकर इत्तिला दी की 'गदाधरसिंह आये हैं और आपसे मिला चाहते हैं।'

"उन्हें मेरे पास ले आओ" कह कर दारोगा चैतन्य हो के बैठ गया, फैले हुए कागजों में से कई कागज उठा कर उसने गद्दी के नीचे दबा दिये और भूतनाथ के आने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी देर में भूतनाथ भी आ पहुंचा जिसे देखते ही दारोगा साहब उठ खड़े हुए, साहब सलामत के बाद बड़ी खातिर से भूतनाथ को अपने पास बैठाया और बातचीत करने लगे।

भूत०। आपने मुझे 'बसन्त बाग' में बुलाया था मगर बुखार आ जाने के कारण मैं समय पर न आ सका क्षमा कीजियेगा। कहिये क्या काम था?

दारोगा०। (आश्चर्य से) मैंने तो आपको बसन्त बाग में नहीं बुलाया था!

भूत०। तो क्या जैपाल ने अपनी तरफ से यह बात कहीं थी?

दारोगा०। जैपाल ने! मगर जैपाल आपके पास क्यों गया?

भूत०। (मुस्कुराता हुआ) वही बेहोशी की दवा से भरी हुई अनूठी डिबिया सुंघाने के लिए! मगर यह आपको भला क्या सूझी? वह डिबिया किस मतलब से आपने भेजी थी?

दारोगा०। (आश्चर्य से) आप क्या कह रहे हैं सो कुछ भी मेरी समझ में नहीं आता! न मैंने जैपाल को आपके पास भेजा और न कोई डिबिया ही भेजी! यह कब की बात है?

भूत०। यह अभी परसों का जिक्र मैं कर रहा हूँ, जब यहां से जमना सरस्वती और इन्दुमति को ले गया था।

दारोगा०। नहीं कदापि नहीं!

भूत०। (घबराहट के साथ) तब मालूम होता है किसी ऐयार ने

मुझे धोखे में डाला या खुद जैपाल ने मुझसे छेड़खानी आरम्भ की है।

दारोगा०। पहिले आप अपना खुलासा हाल बयान कर जाइये तब मैं कुछ सोचूँ और राय दूँ।

दारोगा की बात सुन भूतनाथ ने वह कुल हाल बयान कर दिया जो कि हम ऊपर लिख आये हैं अर्थात् जमना सरस्वती और इन्दुमति को मारते समय यकायक जैपाल का जा पहुँचना और भूतनाथ को खून करने से रोक दारोगा की तरफ से संदेशा और बेहोशी की डिबिया देना जिसे सूँघ कर भूतनाथ का बेहोश हो जाना और होश में आने के बाद जमना सरस्वती और इन्दुमति को मार कर गड़हे में दबा देना और फिर यकायक कई सवार आते हुए दिखाई देने के कारण खुद भाग जाना और जैपाल को भी भगा देना इत्यादि जिसे सुन कर दारोगा घबड़ा गया और कांपती हुई आवाज में भूतनाथ से बोला, "यह बड़ा ही गजब हुआ। किसी गहरे ऐयार ने तुम्हें धोखा दिया और ताज्जुब नहीं कि जमना सरस्वती तथा इन्दुमति का भेद भी उसने मालूम कर लिया हो! (ऊँची साँस लेकर) हाय, मैं बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं। भूतनाथ बेशक तुम्हारी बदौलत मैं मुसीबत का शिकार हुआ चाहता हूँ। यहाँ जो कुछ दुर्घटना हो गई है वह तुम्हारी घटना से भी बढ़कर भयानक है। मालूम होता है कि हम और तुम दोनों ही किसी मुसीबत में फँसा चाहते हैं और निःसन्देह यह सब तुम्हारी ही बदौलत है!"

दारोगा का यह कहना कि 'यह सब तुम्हारी ही बदौलत है' भूतनाथ को बहुत ही बुरा मालूम हुआ मगर अभी बिगड़ने का मौका न देख कर वह तरह दे गया और बोला, "भला कहिए तो सही यहां क्या मामला हुआ?"

दारोगा०। जब तुम जमना सरस्वती और इन्दुमति को ले गये तो मैंने भैयाराजा को मार डालना तय किया परन्तु जब मैंने उन्हें उस मकान में ढूंढ़ा तो एक ठिकाने मुर्दा पाया। उन्होंने अपने हाथ से कलेजे में छुरी मार कर जान दे दी थी। खैर मैं उन्हें वहाँ से उठा कर ले गया और एक ठिकाने जमीन के अन्दर गाड़ कर निश्चिन्त हो गया। उसके बाद रात को मैंने उन्हें भूत की सूरत में देखा और उसी रात हमारे महाराज को भी वे

दिखाई दिये।

भूत०। अरे तह तो आश्चर्य की बात आप कह रहे हैं !!

दारोगा०। हाँ मैं खुलासा कहता हूँ सुनो।

इतना कह कर दारोगा ने जो कुछ रात के समय खुद देखा था और महाराज ने उन्हें बुला कर जो कुछ कहा था वह सब पूरा पूरा बयान किया जिसे बड़े आश्चर्य के साथ भूतनाथ ने सुना और अन्त में कहा।

भूत०। दारोगा साहब, कम से मुझे तो इस बात का विश्वास नहीं होता कि भैयाराजा ने भूत होकर आप लोगों के साथ यह दिल्लगी की है।

दारोगा०। तो क्या मैं झूठ कह रहा हूँ ?

भूत०। यह तो मैं नहीं कह सकता कि आप झूठ कर रहे हैं मगर...

दारोगा०। मगर क्या ?

भूत०। अच्छा आप पहिले यह बतलाइये कि आपने भैयाराजा को कहाँ गाड़ा था ?

दारोगा०। सो तो मैं नहीं बता सकता, क्योंकि यह बड़ा हो नाजुक मामला है।

भूत०। ऐसा, मगर इससे तो मालूम होता है कि आप मुझसे कपट रखते हैं।

दारोगा०। नहीं नहीं, सो बात नहीं है सिर्फ इतना ही है कि ऐसे नाजुक मामले को मैं किसो दूसरे पर प्रगट नहीं किया चाहता।

भूत०। ठीक ही है, खैर जब मुझे गैर की पदवी मिली तो मुझे भी आपसे हर वक्त चौकन्ना ही रहना चाहिये, अच्छा तो अब आप जैपाल को बुलवाइये ताकि मैं अपने विषय में आपके सामने ही उससे बातचीत करूँ।

इसी समय आहट देता हुआ दरबान हाजिर हुआ और बोला, "जैपाल-सिंहजी आये हैं और हाजिर हुआ चाहते हैं !"

दारोगा०। लो जैपाल भी आ ही गया, अच्छा उसे जल्दी आने दो।

बात की बात में जैपाल आ पहुँचा और दारोगा तथा भूतनाथ को सलाम कर बैठ गया।

भूत० । (जैपाल से) कहिए मिजाज तो अच्छा है ?

जैपाल० । ईश्वर की कृपा से सब अच्छा हूँ ।

भूत० । उस दिन तो तुमने मुझे अच्छा धोखा दिया, डिबिया सुंघा कर सब चौपट ही कर चुके थे ।

जैपाल० । (आश्चर्य से) कैसी डिबिया !!

भूत० । वही जो दारोगा साहब की तरफ से तुम मेरे पास ले गये थे, जिसे सूंघ कर हम दोनों बेहोश हो गये थे ।

जैपाल० । मेरी समझ में नहीं आता कि आप क्या कह रहे हैं ! मैं कोई डिबिया ले के आपके पास नहीं गया ! (दारोगा की तरफ देख कर) ये क्या कह रहे हैं आपने कुछ समझा ?

दारोगा० । मैं सब कुछ सुन चुका हूँ, इनको किसी ऐयार ने उल्लू बनाया है और उसकी जलन ये हम लोगों पर निकाला चाहते हैं ।

इतना कह दारोगा ने वह सब हाल बयान किया जो भूतनाथ ने जैपाल के विषय में उससे बयान किया था । जैपाल को सुन कर बड़ा ही दुःख हुआ और उसने झुंझला कर कहा, "उस कम्बख्त ऐयार को मेरी ही सूरत बन कर गदाधरसिंह को धोखा देना था ! फिर जहाँ तक मैं समझता हूँ उसने इतना ही नहीं किया होगा कि गदाधरसिंह को सिर्फ बेहोश करके चला जाय, बल्कि उसने और भी कोई गहरी कार्रवाई जरूर की होगी ।"

भूत० । अब तो मुझे भी ऐसा ही खयाल होता है ।

इसके बाद बहुत देर तक उन तीनों में बातचीत होती रही और अन्त में दारोगा साहब ने चोबदार को हुक्म दिया कि अस्तबल में से तीन घोड़े तैयार करा कर बहुत जल्द मँगावे । थोड़ी ही देर में घोड़े भी आ गये और दारोगा साहब जैपाल तथा भूतनाथ उन घोड़ों पर सवार होकर उत्तर की तरफ रवाना हुए । उस समय रात अनुमान घंटे भर के बाकी रह गई थी ।

शहर से बाहर निकल जाने के बाद तीनों ने अपने अपने घोड़ों की

चाल बढ़ाई और बड़ी तेजी के साथ जंगल की तरफ जाने लगे, यहां तक कि सवेरा होते होते तीनों आदमी वहाँ जा पहुँचे जहां भूतनाथ ने जमना सरस्वती और इन्दुमति का खून किया था या जहाँ पर नकली जैपाल भूतनाथ से जाकर मिला था।

तीनों आदमी घोड़े से नीचे उतर पड़े और अपने अपने घोड़े लम्बी बागडोरों के सहारे पेड़ों के साथ बाँध कर चलाने के लिये छोड़ दिये। इसके बाद भूतनाथ दारोगा और जैपाल को साथ लिये हुए उस जगह पहुँचा जहां उसने जमना सरस्वती और इन्दुमति की लाश गड़हे के अन्दर डाल कर मिट्टी और कतवार से ढांक दी थी। तीनों ने मेहनत कर मिट्टी हटाई और उसके अन्दर से उन तीनों लाशों को निकाल कर बाहर किया। यद्यपि वे लाशें अभी तक सड़ी न थीं तथापि फूल गई थी और उनमें बू पैदा हो गई थी। उन तीनों लाशों के सर भी जो उन्हीं के साथ गाड़ दिए गये थे और अब लाशों के साथ बाहर निकाले गये थे अपनी असली हालत में न थे अर्थात् चेहरे पर का रंग रोगन जो ऐयारी के ढंग पर चढ़ाया हुआ था जगह जगह से बिगड़ कर नीचे से असली रंग झलक मार रहा था जिसे देखते ही भूतनाथ चौंका और उसके मुंह से बेतहाशा ये शब्द निकल पड़े, "हाय, क्या गजब हो गया !!"

तीनों घोड़ों के तोशेदान में पानी की बोतल भरी हुई मौजूद थी जिसे भूतनाथ ने निकाला और उससे तीनों मुर्दों के चेहरे साफ करने के बाद एक लम्बी सांस के साथ दारोगा की तरफ देख कर कहा, "ये ही जमना सरस्वती और इन्दुमति तुमने मेरे हवाले की थीं ?"

दारोगा०। (घबराहट और आश्चर्य के साथ) मैं खुद ताज्जुब कर रहा हूँ कि यह क्या मामला है। मैंने जो कुछ किया उसमें तो बराबर तुम भी शरीक ही थे।

भूत०। हाय हाय, मेरे इन होनहार नौजवान शागिर्दों को तुम्हें मेरे ही हाथ से मरवाना था !

दारोगा० । इसमें मेरा क्या कसूर है ? मुझे तुम क्यों बदनाम करते हो ?

भूतनाथ० । तुम्हारा नहीं तो और किसका कसूर है ? तुम्हीं ने तो जमना सरस्वती और इन्दुमती को मेरे हवाले किया !!

दारोगा० । अगर इस बारे में मैंने धोखा खाया तो तुमने क्यों नहीं पहिचान लिया कि ये वास्तव में जमना सरस्वती और इन्दुमति नहीं हैं बल्कि तुम्हारे ही शागिर्द हैं । इसके अतिरिक्त इस बात को सोचो कि तुम्हारे इन शागिर्दों को जमना सरस्वती और इन्दुमति बनने की क्या जरूरत थी ? और अगर उन्होंने ऐसा किया भी था तो तुम पर यह भेद क्यों नहीं खोल दिया ? या जिस समय तुम इनका सर काटने लगे थे उस समय ही तुमको क्यों नहीं कह दिया कि हम लोगों को मत मारो हम लोग तुम्हारे ही शागिर्द हैं !

भूत० । मेरी समझ में नहीं आता कि उन लोगों ने ऐसा क्यों नहीं किया, मगर सम्भव है कि इसमें भी कुछ तुम्हारी ही कारीगरी हो !!

दारोगा० । बड़े अफसोस की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार ऐयार होकर ऐसी बात जुबान से निकलते हो !

भूत० । (अपना माथा पीट कर) हाय, मैं क्या कहूँ और क्या करूं ! मैं तो बर्बाद हो गया ! इन बेचारे नौजवान शागिर्दों का मुझे बड़ा ही भरोसा था । अच्छा खैर तुमने नहीं तो इस मामले में इस (उंगली से इशारा करके) जैपाल ने जरूर कोई कारंवाई की है !

जैपाल० । ठीक है, तुम्हें अपनी बेवकूफी की झुंझलाहट निकालने के लिए मैं तो मौजूद ही हूं !

भूतनाथ ने जैपाल की बात का कुछ भी जवाब न दिया और उन लाशों के पास बैठ सर पर हाथ रख के कुछ सोचने लगा । इस समय उसकी आंखों से आंसू की बूंदें टपाटप गिर रही थीं ।

बहुत देर तक सोचने और गौर करने बाद भूतनाथ ने सर उठाया और रूमाल से आंखें पोंछने के बाद दारोगा की तरफ देख कर कहा,

"हां, कुछ कुछ बात समझ में आती है।"

दारोगा०। (उत्कंठा के साथ) सो क्या ? जरा मैं भी सुनूं !

भूत०। सो अभी मैं कुछ भी न कहूंगा।

दारोगा०। तब कब कहोगे ?

भूत०। जब मैं भैयाराजा के लाश की जांच करके देख लूंगा कि उसमें भी तो धोखा नहीं है।

भूतनाथ की बात ने दारोगा के होश उड़ा दिए। इन शब्दों ने कि 'उसमें भी तो धोखा नहीं है' दारोगा के दिल और दिमाग में खलबली पैदा कर दी और वह सोचने लगा कि ईश्वर न करे अगर उस लाश में भी कहीं इसी तरह का धोखा निकला तो बड़ा ही अन्धेर हो जायगा।

भूतनाथ ने दारोगा के चेहरे का रंग उड़ा हुआ और उसे कुछ सोचते हुए देख कर फिर कहा, "दारोगा साहब, आश्चर्य नहीं कि भैयाराजा की लाश में भी इसी तरह का धोखा हो, और अगर वास्तव में ऐसा ही निकला तब मैं आप को बताऊंगा कि इस समय क्या सोचता था और क्या निश्चय किया। अब मैं अपने दिल पर पत्थर रख कर इन लाशों को गाड़ देता हूँ पर फिर देख लूंगा, जिसने मेरे साथ ऐसी चालाकी की है उसे मैं छठी का दूध न याद दिला दूँ तो मेरा नाम गदाधरसिंह नहीं !!"

इतना कह कर भूतनाथ ने दारोगा और जैपाल की मदद लेकर उन लाशों को पुन: उसी गड़हे में दबा दिया और ऊपर से अच्छी तरह मिट्टी वगैरह डाल कर दारोगा से कहा, "अब चलिए मैं भी आपके साथ आपके घर चलता हूं जहां मुझे आप भैयाराजा की लाश दिखाइये।"

दारोगा०। घर चलने में तो कोई हर्ज नहीं, आप उसे भी अपना ही घर समझ कर खुशी से चल सकते हैं, मगर मैं फिर कहता हूं कि आपको उस जगह नहीं ले जा सकता जहां भैयाराजा को गाड़ा है।

भूत०। जैपाल को आप उस जगह ले जा सकते हैं ?

दारोगा०। हां, क्योंकि जैपाल को मैं अपने गुप्त कार्यों में बराबर साथ

रखता हूं। मगर आप इसके लिए तरद्दुद न कीजिए, बेहतर होगा कि आप आज का दिन किसी दूसरे काम में बिताइये और कल मेरे पास आइये, इसी बीच मैं भैयाराजा की लाश को अच्छी तरह देख और जांच लूंगा।

दारोगा की बात से भूतनाथ बहुत ही चिढ़ गया मगर उसने अपने दिल का भाव प्रगट न किया, फिर भी उसमें और दारोगा में जो दोस्ती थी आज एक मामूली पेंच पड़ जाने के कारण जाती रही और दोनों ही के दिल में एक तरह की गाँठ पड़ गई। भूतनाथ ने मान लिया कि इस धोखेबाजी के मामले में दारोगा जरूर शरीक है या यह बिल्कुल ही दारोगा का काम है, और इसी तरह दारोगा समझने लगा कि भूतनाथ हमसे चालवाजी खेल कर अपना कोई काम निकाला चाहता है या ताज्जुब नहीं कि इसी कारण मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव करके मेरा भेद खोल दे। खैर वह सब जो कुछ भी हो इस समय तो भूतनाथ ने अपने दिली जोश को दबा कर दारोगा की बात मान ली और उसका घोड़ा छोड़ कर पैदल ही उत्तर की ओर रवाना हो गया। दारोगा और जैपाल भी घोड़े पर सवार हो कर शहर की तरफ चले और खाली घोड़े की लगाम थामे हुए जैपाल उसे अपने घोड़े के साथ ले चला।

दसवां बयान

संध्या का समय है : सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं, हवा में किसी कदर खुनकी है तो सही परन्तु वह भली मालूम होती है। ऐसे समय में हम नहीं कह सकते कि तिलिस्मी दारोगा साहब किस नीयत से अपने मकान के पीछे वाले नजरबाग में टहल रहे हैं, मगर इनकी ऐसी आदत न थी और इन्हें लोगों ने संध्या के समय दिल बहलाने के लिए किसी बाग में टहलते हुए बहुत कम ही देखा होगा। पर आज गैरमामूली तौर पर उसका टहलना बेसबब नहीं है, उसका घड़ी घड़ी ठण्डी सांसें खींचना और घबराहट

के साथ इधर उधर देखना कहे देता है कि इस समय वह किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो रहा है, साथ ही इसके बीच बीच में उसके बदन में कम्प तथा रोमांच के हो आने से यह भी विश्वास होता है कि वह किसी कारण से भयभीत हो रहा है। केवल इतना ही नहीं, एक दफे उसने बड़ी बेचैनी के साथ दाहिने हाथ से अपना माथा भी ठोंका जिससे जाना जाता है कि उसने जरूर कोई बुराई का काम किया है जिसके लिये अब पछताता और दिल में कहता है कि कहां की शामत आई थी जो मैंने यह काम किया !!

इसी तरह के बहुत से परेशानी और घबराहट के चिन्ह प्रगट करता हुआ दारोगा बड़ी देर तक बेचैनी से कदम उठाता अपने बाग में टहलता और थोड़ी थोड़ी देर में सर उठा कर फाटक की तरफ देखता रहा। लगभग आधे घंटे के बाद जैपालसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कदम बढ़ाये हुए उसी की तरफ आ रहा था। उसके नजदीक पहुँचते ही दारोगा ने उससे कहा, "ओफ, तुमने आने में बहुत विलम्ब कर दिया !"

जैपाल०। (गौर से दारोगा के चेहरे की तरफ देख के) नहीं तो, मगर क्यों ? और इस समय आप बहुत ही उदास और दुःखित भी जान पड़ते हैं !

दारोगा०। मेरे प्यारे दोस्त, इस समय मेरी अवस्था बहुत ही बुरी हो रही है और मैं अपने किये पर बहुत पछता रहा हूं। सच तो यह है कि आज मैं अपनी जिन्दगी से निराश हो बैठा हूं जिसके अंधकारमय कैदखाने में केवल तुम ही एक टिमटिमाते हुए चिराग हो, टिमटिमाते हुए मैं इस लिये कह रहा हूं कि मेरी जिन्दगी के साथ तुम्हारी जान का भी बहुत बड़ा सम्बन्ध है।

जैपाल०। बेशक ऐसा तो है ही।

दारोगा०। और मुझे इस समय केवल एक तुम्हारा ही भरोसा रह गया है।

जैपाल०। आखिर मामला क्या है सो तो कहिये ? क्या भैयाराजा की लाश में कुछ धोखा निकला ?

दारोगा०। कुछ क्या बिल्कुल ही धोखा निकला, जिसे मैंने भैयाराजा की लाश समझ जमीन के अन्दर गाड़ दिया था वह वास्तव में मेरे ही एक ऐयार की लाश निकली और मैं कुछ नहीं कह सकता कि कब और किस ढंग से उनकी बदली हुई, क्योंकि मैं यह भी नहीं कह सकता कि वे भैयाराजा वास्तव में भैयाराजा थे या नहीं जिन्हें मैंने अपने मकान में लाकर फंसाया था !

जैपाल०। और फिर यह भी कोई बात है कि आप ही का ऐयार भैयाराजा बन कर आवे और आपको ही डाँट बतावे !!

दारोगा०। हाँ यह भी कदापि नहीं हो सकता !

जैपाल०। मगर यह बात वास्तव में बहुत ही बुरी हुई ! उधर जमना सरस्वती और इन्दुमति के मामले में किसी ने धोखा दिया और इधर भैयाराजा के बारे में...

दारोगा०। मेरी कुछ समझ ही में नहीं आ रहा है कि यह बात क्यों हुई ! क्या मेरा कोई दुश्मन मेरे घर में घुस आया और मेरे ही घर में से उन सभों को बदल कर ले गया ? मगर यह भी एक असम्भव सी बात है, मेरे भुलभुलैये मकान की किसी दुश्मन को खबर ही क्या हो सकती है !

जैपाल०। अब यह तो न कहिये, आपके मकान को एक ही रात में कुछ विश्वकर्मा ने तो बना ही नहीं दिया है, आखिर राज मजदूरों ही ने तो बनाया है।

दारोगा०। हाँ ठीक कहते हो। खैर, परन्तु यह बताओ कि अब किस तरह जान बचे, किस तरह दुश्मन का पता लगे, और किस तरह इस मामले का सच्चा सच्चा हाल मालूम हो ?

जैपाल०। यह कोई मामूली बात नहीं है, इसके लिए बहुत कुछ मेहनत करनी पड़ेगी तब कहीं दुश्मन का पता लगेगा, खैर इस काम को तो

पीछे रखिये पहिले अपने को इलजाम से बचाने की फिक्र करिये, मेरा तो अब खयाल हो रहा है कि महाराज ने जो सूरत देखी थी वह भूत न था बल्कि वास्तव में भैयाराजा ही थे और आपको जहन्नुम में मिलाने के लिए वे कोई नाटक तैयार कर रहे हैं !

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है और मुझे भी जो भूत दिखाई दिया था वे जरूर असली भैयाराजा ही होंगे ।

जैपाल० । बेशक वह भी भैयाराजा ही होंगे, अपना नाटक दिखा कर किसी अनूठे ढंग से प्रकट हुआ चाहते हैं ।

दारोगा० । फिर अब क्या किया जाय ?

जैपाल० । मैं क्या बताऊं, आपसे ज्यादे इस विषय में और कौन सोच सकता है ? हां यह कह सकता हूं कि मुझे जो कुछ आज्ञा दीजिये उसे करने के लिए मैं तैयार हूं

दारोगा० । (कुछ सोच कर) चाहे जो कुछ भी हो मगर भैयाराजा मुझे महाराज के सामने दोषी नहीं ठहरा सकते । यों उन्हें अख्तियार है चाहे स्वयं अपने हाथ से मेरा सर काट डालें मगर जबर्दस्ती के सिवाय इन्साफ का काम यह कदापि न कहला सकेगा, और हमारे महाराज जो इन्साफ के लिए जान देते हैं, बेइन्साफी का काम कदापि न होने देंगे !

जैपाल० । (आश्चर्य से) क्यों साहब यह क्या बात आपने कही ? भैयाराजा अगर जीते हैं तो आपको दोषी क्यों न ठहरा सकेंगे ?

दारोगा० । भैयाराजा को यह मालूम ही नहीं होगा कि मैंने उन्हें मुर्दा समझ कर बदनीयती के साथ जमीन के अन्दर गाड़ दिया है ।

जैपाल० । हाँ ठीक है, यह बात उन्हें भला कैसे मालूम हो सकती है ! मगर हां इस बात का सवाल जरूर हो सकता है कि आखिर उस लाश को जो उन्हीं की सूरत की सी थी आपने क्या किया ? अगर आपकी नीयत ठीक थी तो आपने हल्ला क्यों न मचाया, प्रकट क्यों नहीं किया, और महा-राज से यह हाल क्यों नहीं कहा, उस बात को छिपाया क्यों ?

दारोगा० । ओफ यह दूसरी बात है, इसके लिए समय पर काफी जवाब हो सकता है, और इसके लिए मैं इनकार कर सकता हूं कि वहां अर्थात् मेरे घर में कोई भी लाश नहीं पाई गई, भैयाराजा स्वयं भाग के चले गये । दूसरे की तो बात ही दूर है खुद भैयाराजा ही मुझे किसी तरह कायल नहीं कर सकते और न वे यही बता सकते हैं कि मैंने उनके साथ किसी तरह की बेअदबी की । हाँ एक बात जरूर है, वे इतना कह सकते हैं कि उन्हें उस भूलभुलैया मकान में फंसा कर हम चले गये और फिर लौट कर नहीं आये ! सो खैर इसके लिए भी मैं कोई जवाब सोच लूंगा ।

जैपाल० । अगर यही बात है तो फिर आप इतना डरते क्यों हैं ?

दारोगा० । हां डरता जरूर हूं, मेरी हिम्मत टूटी जाती और है भैयाराजा के नाम ही मात्र से मेरा कलेजा उछलने लगता है ।

जैपाल० । जिसका सबब जरूर यही होगा कि आप किसी न किसी बात में जरूर लाजवाब हो जायेंगे, और नहीं तो सिर्फ इन्हीं बातों का जवाब देना आपके लिए कठिन हो जायगा कि आपने भैयाराजा के असली मामले की महाराज को खबर क्यों नहीं की ? यह क्यों नहीं जाहिर किया कि वे आप के बाग में आये थे और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को आपके कैद से छुड़ाने की उन्होंने फिक्र की थी— इत्यादि ।

दारोगा० । हां यह बात जरूर खुटके की है ! (कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी राय हो तो राजा साहब को मैं इस मामले की खबर कर दूं और कुछ अपनी तरफ से भी समझा बुझा दूं । तुम जानते ही हो कि वे निरे भोलेनाथ हैं । (रुक कर और चौंक कर) हां एक बात तो मैंने तुमसे कही ही नहीं ।

जैपाल० । वह क्या ?

दारोगा० । मुझे खबर मिली है कि आज जनाने महल के पीछे वाले नजरबाग में गुप्त रीति पर सख्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है, पहरा देने वाले इस तरह छिप कर पेड़ों की आड़ में बैठेंगे कि बाग के अन्दर आने

वाला कोई आदमी उन्हें देख न सकेगा पर वे बाग के अन्दर आने वाले को बखूबी देख और गिरफ्तार कर सकेंगे।

जैपाल०। यह खबर आपको किसने दी !

दारोगा०। उन्हीं पहरे पर मुकर्रर किये गये हुए आदमियों में से एक ने मुझे यह खबर सुनाई है।

जैपाल०। हाँ वे सब तो आपके हितैषी ही हैं, मगर यह भी कुछ मालूम हुआ कि ऐसा इन्तजाम करने का सबब क्या है ?

दारोगा०। सो तो ठीक मालूम नहीं हुआ मगर अन्दाज से हम समझते हैं कि जिस तरह भैयाराजा भूत वन कर मुझे और महाराज को दिखाई दिये हैं उसी तरह भूत वन कर शायद महल में भी गये होंगे और यकायक भूत की तरह गायब न हो सके होंगे, किती ने भागते हुए देख लिया होगा और समझा होगा कि यह कोई आदमी है, या इसी तरह की कोई बात भई होगी जिस पर महाराज ने यह समझ कर कि आज पुनः वह आवेगा गिरफ्तार करने के लिए ऐसा इन्तजाम किया होगा।

जैपाल०। हां जरूर कोई ऐसी ही बात हुई होगी और ऐसी अवस्था में आपको ऐसा इन्तजाम करना चाहिये कि जब वह आदमी गिरफ्तार हो (ईश्वर करे वह भैयाराजा ही हों) तो उसे महाराज के पास पहुँचाने के बदले गिरफ्तार करने वाले सीधे आप ही के पास पहुँचा दें, अगर वह वास्तव में भैयाराजा निकले तो फिर कहना ही क्या है, आपके पौ बारह हैं !!

दारोगा०। हां यह तुमने अच्छी सलाह बताई और इस काम को मैं बखूबी कर भी सकूँगा। इस तरह पर अगर भैयाराजा हाथ में आ गये तब तो मेरे समान इस दुनिया में कोई नहीं, लेकिन अगर ऐसा न हुआ तो फिर अपने लिये वहुत कुछ चिन्ता करनी पड़ेगी। अच्छा अब मैं तुमसे थोड़ी सी बातें और करूंगा मगर यहां नहीं।

इतना कह कर दारोगा ने जैपाल का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने साथ लिये हुए मकान की तरफ चला।

ग्यारहवां बयान

जनाने महल के पीछे वाले नजरबाग में आज दिन ही से गुप्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है। महारानी ने भैयाराजा की स्त्री के विषय में जो कुछ महाराज को इत्तिला दी थी उसके लिये महाराज को बड़ी चिन्ता हो गई थी और उन्हें इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उनके महल में कोई गैर आदमी आ घुसे और फिर अछूता चला जाय। उन्होंने अपने दिल में इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि चाहे जिस तरह भी हो उस आदमी को जरूर गिरफ्तार करना चाहिए जो महल के अन्दर भैयाराजा की स्त्री के पास गया था, सम्भव है कि उसके गिरफ्तार हो जाने से भैयाराजा का भी कुछ पता चल जाय। अस्तु इस काम के लिए उन्होंने कई दिलावर और होशियार आदमी पहरे पर मुकर्रर कर दिये और उन्हें ताकीद कर दिया कि वे बहुत ही गुप्त ढंग पर तथा पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में छिप कर पहरा दें तथा बाग या महल के अन्दर आते समय तो किसी को न रोकें परन्तु लौट कर जाते समय अवश्य गिरफ्तार कर लें।

इसके अतिरिक्त महाराज ने खुद भी उसी बाग में एक खास जगह पर रह कर रात बिताने का इरादा कर लिया था जिसकी खबर किसी को भी नहीं दी गई थी, यहां तक कि उस बाग में पहरा देने वालों से भी यह भेद छिपाया गया था।

यह तो महाराज का इन्तजाम था, अब दारोगा साहब ने क्या किया सो भी सुनिये। दारोगा को इस बात की पूरी पूरी खबर लग गई कि बाग में पहरे पर कौन कौन आदमी मुकर्रर किए गये हैं और उन्हें क्या समझाया गया है क्योंकि राजकर्मचारियों में से बहुत से आदमी दारोगा से मिले हुए थे जिसका सबब यह था कि एक तो दारोगा रिश्वत के ढंग पर बहुत सा रुपया उन लोगों में बाँटा करता था दूसरे जमानिया राज्य का बड़ा अफसर होने के कारण लोग उससे डरते भी थे। आज भी दारोगा ने अपना काम निकालने के लिए उन लोगों में बहुत सा रुपया बाँटा

ग्रौर काम हो जाने के बाद ग्रौर भी इनाम देने का वादा किया। काम उन लोगों के जिम्मे यह सुपुर्द किया कि जब कोई ग्रादमी उस बाग में गिरफ्तार हो तो उसे महाराज के पास न ले जाकर सीधे दारोगा के पास पहुंचा दें ग्रौर महाराज से कह दें कि चोर भाग गया या गिरफ्तार ही नहीं हुग्रा, यानी जैसा मौका हो वैसा बहाना कर दें। केवल इतना ही नहीं बल्कि दारोगा ने ग्रपने कई ग्रादमी भी रात के समय उस बाग में काम करने के लिए तैनात कर दिये जिस बात की खबर महाराज को कुछ भी न थी।

दिन बीत गया ग्रौर रात हुई। नजरबाग में पहरा देने वाले बड़ी मुस्तैदी के साथ नजर दौड़ाने टोह लेने ग्रौर इधर उधर घूमने लगे। ग्राधी रात जाते तक तो किसी को किसी तरह का खटका न हुग्रा मगर इसके बाद पहरे वालों ने एक नकाबपोश को दीवार फाँद कर बाग के ग्रन्दर ग्राते हुए देखा।

सभी पहरे वाले उसे देखते ही चैतन्य हो गये ग्रौर सभों ने इस तौर पर उसका मुहाना रोकने की तैयारी कर ली जिसमें वह लौट कर किसी तरह भी भागने न पाए। सभों के देखते देखते वह नकाबपोश जनाने महल की पिछली दीवार के पास जाकर खड़ा हो गया ग्रौर उस खिड़की की तरफ देखने लगा जो भैयाराजा के खास महल में पड़ती थी। थोड़ी देर तक वह उसी जगह खड़ा खड़ा देखता रहा ग्रौर इसके बाद उसने ऊपर की तरफ कमन्द फेंकी। जब कमन्द ग्रड़ गई तो उसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया ग्रौर ग्राधे घंटे तक लौट कर नहीं ग्राया। पहरे वालों ने चाहा कि वह कमन्द जिसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया था खींच ली जाय जिसमें वह इस रास्ते से उतर न सके ग्रौर महल में ही गिरफ्तार कर लिया जाय परन्तु दारोगा साहब के ग्रादमियों ने उन लोगों को ऐसा करने से रोका ग्रौर कहा कि ग्रगर यह कैदी इस राह से नहीं लौटेगा ग्रौर महल में गिरफ्तार हो जायगा तो जरूर महाराज के पास भेज दिया जायगा या

खुद महाराज महल में पहुँच कर उसे अपने कब्जे में कर लेंगे, ऐसी अवस्था में हम लोगों के हाथ वह न आवेगा और दारोगा साहब का काम भी न निकलेगा, अस्तु यही अच्छा होगा कि मुजरिम को इसी राह से उतरने दिया जाय।

महाराज के सिपाहियों ने इस बात को कबूल कर लिया और वह कमन्द ज्यों का त्यों छोड़ दिया गया। आधे घण्टे के बाद वह आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और तुरत ही सब सिपाहियों ने उसे घेर लिया मगर गिरफ्तार न कर सके क्योंकि वह बड़ा ही मजबूत दिलावर और फुर्तीला साबित हुआ, इसके अतिरिक्त महाराज का यह भी हुक्म था कि उसके ऊपर कोई हर्बा न चलाया जाय। अगर हर्बा चालाया जाता तब तो बेशक इतने आदमियों की भीड़ में से निकल भागना उसके लिये कठिन हो जाता लेकिन बिना हर्बा चलाये उसको गिरफ्तार कर लेना भी कठिन हो गया। महाराज के सिपाहियों को किसी हर्बे से लड़ते हुए न देख कर उस बहादुर ने भी किसी सिपाही पर हर्बे का वार न किया और लड़ता भिड़ता महल के नीचे से चल कर बाग के किनारे अर्थात् दीवार के पास पहुँच गया। वहाँ से उसके लिये दीवार फाँद कर निकल जाना कोई बड़ी बात न थी मगर उसने न जाने क्यों बाहर निकल जाने का उद्योग न किया और लोमड़ी की तरह चक्कर काटता हुआ उन सिपाहियों के कब्जे से निकल पेड़ों की झुरमुट में जा घुसा जहाँ पहुँचते ही वह सभों की नजरों से गायब हो गया।

महाराज के सिपाहियों ने उसे मशाल की रोशनी के सहारे खोजना शुरू किया और आधे घंटे के बाद एक चमेली की झाड़ी में उसे बेहोश पड़े हुए पाया। उसी समय दारोगा साहब के आदमियों ने उस पर कब्जा कर लिया और उठा कर बाग के बाहर ले गये जहां से उसे दारोगा साहब के पास पहुँचा दिया गया।

बारहवां बयान

पाठकों को याद होगा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर फँसे हुए हैं जहां उन्होंने एक अनूठे दीवानखाने की दरीची से एक हसीन औरत को देखा तथा इससे वे बहुत ही हैरान हुए और आश्चर्य करने लगे।

थोड़ी देर के बाद जब प्रभाकरसिंह का जी ठिकाने हुआ तब उन्होंने पुनः उस औरत से कहा, "क्या तुम्हारा नाम मालती है या मैं धोखा खाता हूं!"

औरत०। नहीं आप धोखा नहीं खाते और बेशक मेरा नाम मालती है, किस्मत ने मुझे बेतरह यहां ला फंसाया है। यद्यपि मुझे यहां किसी तरह की तकलीफ नहीं है बल्कि मैं बहुत सुख के साथ अपने दिन बिता रही हूं परन्तु अपने बन्धु बान्धवों को न देखने से चित्त में दुःख अवश्य बना रहता है, इसके अतिरिक्त इस तिलिस्म के अन्दर रहते रहते अब जी ऊब गया है और यहां के अलौकिक पदार्थ चित्त को प्रसन्न नहीं करते। पहिले मैंने आपको अच्छी तरह पहिचाना नहीं था और इसीलिये अपना ठीक ठीक परिचय भी न देकर बहकाने के लिये कह दिया था कि मैं एक राजा की लड़की हूं इत्यादि, परन्तु जब मैंने आपकी पीठ पर का निशान देख लिया तब साफ साफ बयान कर दिया कि मैं मालती हूं, इसके अतिरिक्त आपने स्वयं भी मुझे पहिचान लिया।

प्रभा०। यह तो तुमने और भी आश्चर्य की बात सुनाई! खैर बताओ कि तुम यहां क्योंकर आई और इस तिलिस्म के अन्दर फंसे रहने का कारण क्या है? मैं मुद्दत से तुम्हारी खोज में हूं मगर हजार कोशिश करने पर भी तुम्हारी पता न लगा पाया।

मालती०। अब आप यहां आ गये हैं तो कोई बात आपसे छिपी न रहेगी धीरे धीरे सब कुछ मालूम हो ही जायगा, ठहरिये मैं आपके पास आती हूं।

इतना कह कर मालती खिड़की में से उठ गई और थोड़ी ही देर में किसी दूसरी राह से दीवानखाने में प्रभाकरसिंह के पास पहुँच उनका हाथ पकड़ कर बोली, "चलिये अब महल में चल कर ही मुझसे और आपसे बातें होंगी। मैं इस समय जिस तरह बेहयाई के साथ आपसे मिलती और बातचीत करती हूँ उसके लिये क्षमा कीजियेगा। इस जगह मेरा कोई बड़ा या सम्बन्धी नहीं जिसका कि मुझे लेहाज हो, इसके अतिरिक्त आप चाहे जो कुछ समझते हों परन्तु मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्मपत्नी अपने देव-तुल्य पति को देखती है।"

प्रभाकरसिंह ने उसकी बातों का कुछ भी जवाब न दिया और चुपचाप उसके पीछे पीछे चल खड़े हुए। मालती उनको लिए हुए दीवानखाने के दाहिने बगल वाली बारहदरी में चली गई जहाँ प्रभाकरसिंह ने देखा कि सामने ही दीवार के साथ सटा हुआ चाँदी का एक सिंहासन रक्खा हुआ है जिस पर कम से कम आठ दस आदमियों के बैठने की जगह है और उस सिंहासन के चारो तरफ हाथ भर ऊँची खूबसूरत अड़ानी बनी हुई है जो सिंहासन पर बैठे हुए आदमी को नीचे की तरफ लुढ़कने से बचाने के लिए काफी है। ऊपर की तरफ निगाह करके देखा तो इस बारहदरी की छत अन्दाज से बहुत ज्यादे ऊँची दिखाई दी और उस सिंहासन के ठीक ऊपर एक बहुत बड़ा सूराख भी नजर पड़ा।

प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए मालती उस सिंहासन पर चढ़ गई। और उस पर प्रभाकरसिंह को बैठा कर आप भी उनके पास बैठ गई। बैठने के साथ ही वह सिंहासन ऊपर की तरफ उठने लगा यहां तक कि उसका पेंदा ऊपर वाली छत के बराबर जा लगा और ऐसा मालूम होने लगा कि यह सिंहासन ऊपर वाले कमरे के फर्श पर रक्खा हुआ है। समझ लेना चाहिये कि ऊपर वाले कमरे में जाने का यही रास्ता था।

ऊपर वाला कमरा बहुत खूबसूरती के साथ सजा हुआ तो न था परन्तु उसकी बनावट बहुत ही सुन्दर थी और उसमें हर तरह का जरूरी सामान

मौजूद था। जमीन पर फर्श लगा हुआ था और उसके ऊपर दो पलंग बिछे हुए थे। एक पलंग पर का बिछावन उम्दा था और दूसरे पर केवल एक गालीचा बिछा था। इस कमरे की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई बीस हाथ के लगभग होगी। दीवारों में बहुत सी खूंटियाँ लगी हुई थीं और उन पर तरह तरह के जनाने कपड़े लटक रहे थे और जमीन पर संगमर्मर की दो चौकियों के ऊपर कुछ खाने पीने का सामान भी रक्खा हुआ था।

इस कमरे में बाग की तरफ झाँकने और देखने के लिए पांच दरवाजे थे और दो दरवाजे भीतर की तरफ ऐसे थे जिनकी राह से महल के अन्दर अथवा दूसरे कमरों में जा सकते थे।

मालती ने प्रभाकरसिंह को ले जाकर पलंग के ऊपर बैठाया और आप भी उनके पास बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगी:—

प्रभाकर०। क्या तुम अकेली ही इस मकान में रहती हो ?

मालती०। जी नहीं, कई लौंडियां और एक ब्राह्मणी भी यहां मेरे साथ रहती है। वे सब इस समय अपने काम में लगी हुई हैं, मगर सिवाय इन औरतों के कोई मर्द यहाँ नहीं रहता।

प्रभाकर०। तुमको किसने इस तिलिस्म के अन्दर लाकर रक्खा है ?

मालती०। कुँअर गोपालसिंह ने।

प्रभा०। (आश्चर्य और कुछ क्रोध के साथ) कितने दिनों से ?

मालती०। कई वर्षों से, जब से मैं अपने मकान से गायब हुई थी तभी से यहाँ पर हूं, बीच में साल भर दूसरी जगह थी।

प्रभा०। किस नीयत से उन्होंने तुम्हें यहां लाकर रक्खा है ?

मालती०। अपनी स्त्री बनाने की नीयत से।

प्रभा०। फिर क्या हुआ ? आखिर तुम उनकी स्त्री बनीं या नहीं ?

मालती०। (लज्जा से सिर नीचा करके) जी हां आखिर क्या करती !

प्रभा०। कोई औलाद भी उनसे तुम्हें हुई ?

मालती०। जी हां साल भर का एक बच्चा है।

प्रभाकर०। (चारपाई पर से उठ कर) फिर तुम मुझे इस तरह पर क्यों अपने पास बैठाती हो ? तुम्हें ऐसा करना कदापि उचित नहीं है।

मालती०। (प्रभाकरसिंह का हाथ पकड़ के) ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि मेरी पहली शादी आप ही के साथ हुई थी।

प्रभाकर०। मेरे साथ तुम्हारी शादी नहीं हुई थी, हाँ बारात लेकर तुम्हारे पिता के दरवाजे तक मैं जरूर गया था, जब यह सुना गया कि तुम मकान के अन्दर से गायब हो गईं तब लौट आया क्योंकि उस समय तुम्हारे पिता के मकान में बड़ा ही हाहाकार मच गया था। उसी के दूसरे ही दिन बन्दोबस्त हो जाने के कारण मेरा शादी इन्दुमति के साथ हो गई। (एक लम्बी साँस लेकर) तुम्हारी बातों से मुझे खयाल हुआ था कि तुम अभी तक कुआँरी ही हो मगर अब तुम्हारा ढंग देख कर तुम्हारे इस कथन पर मुझे बड़ा ही खेद होता है कि 'मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्मपत्नी अपने देवतुल्य पति को देखती हो'। जब तुम एक आदमी के साथ ब्याही जा चुकीं और उससे एक औलाद भी तुम्हें हो चुकी तब तुमको मेरे साथ अर्थात् किसी दूसरे पुरुष के साथ ऐसा बर्ताव न करना चाहिये, ऐसे धर्म-विरुद्ध कार्य का नतीजा अच्छा नहीं होता।

मालती०। (प्रभाकरसिंह का हाथ छोड़ कर) आपकी आज्ञा मेरे लिये शिरोधार्य है परन्तु मैं फिर भी यही कहती हूं कि इस जबर्दस्ती की शादी को मैं धर्म-विवाह नहीं समझती, अब भी मैं यही चाहती हूं कि आपके घर चल कर रहूं और बहिन इन्दुमति की सेवा करूं, मैं उनसे मिल चुकी हूं और उनकी बातों से मुझे विश्वास हो चुका है कि यह बात उन्हें मंजूर है और वह मुझ पर सदैव कृपा रक्खेंगी।

इन्दुमति का नाम सुन कर प्रभाकरसिंह की आँखें डबडबा आईं और उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर मालती से कहा, "इस मनमोदक में कोई भी स्वाद नहीं है। हाय, अब तो इन्दु भी इस दुनिया में नहीं रही, व्यर्थ ही उसने अपनी जान दे दी !"

मालती० । (आश्चर्य से) हैं, यह आप क्या कह रहे हैं ? आज ही रात को तो मुझसे और उनसे तीन घण्टे तक बातें होती रही हैं ।

प्रभा० । क्या खूब, उसे मरे हुए दो दिन हो चुके हैं !!

मालती० । (चारपाई पर से उठ कर मुस्कुराती हुई) जी नहीं, क्षमा कीजियेगा, आप धोखे में पड़ गये हैं । जमना सरस्वती और इन्दुमति तीनों बहिनें कल ही से मेरे यहां मेहमान हैं और मैं आपको उनसे मिला सकती हूँ । पर आप मेरा तिरस्कार न करें, मैं फिर भी यही कहती हूँ कि मैं आपको अपना पति समझ कर आपकी मदद कर रही हूं और करूंगी, फिर भी मैं इतना जरूर कहूंगी कि आपने जो कुछ बर्ताव इन्दु बहिन के साथ किया वह आपको उचित न था ।

मालती की बातें सुन कर प्रभाकरसिंह आश्चर्य से उसका मुहं देखने और सोचने लगे कि यह क्या कह रही है ? जब कि मैं स्वयं इन्दु की धधकती हुई चिता देख चुका हूं तब क्योंकर इसकी बात मान सकता हूं ? इसके अतिरिक्त जब यह हमारी और इन्दुमति की बातों को जानती थी तो मुझे पहिचानने में इसने धोखा क्यों खाया और पीठ पर का निशान देखने की जरूरत ही इसे क्यों पड़ी ? मालूम होता है कि मेरे यहाँ तक पहुँचने का कारण भी यही है ।

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुनः मालती से कहा, "तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता !"

मालती० । मैं आपसे कह चुकी हूँ कि वे तीनों कल ही से मेरे यहां मेहमान हैं और मैं उनसे आपकी मुलाकात करा सकती हूं, फिर आप शक क्यों करते हैं ?

प्रभा० । हां, अगर ऐसा हो तो जरूर मैं तुम्हें सच्चा समझ सकता हूं ।

मालती० । बेशक ऐसा ही होगा ।

प्रभा० । तो अब विलम्ब क्या है ? तुम मुझे उनके पास ले चलो ।

मालती० । मैं आपको उनके पास इसी समय ले चलती मगर इस

वात से डरती हूं कि कहीं इन्दुमति खफा न हो जांय क्योंकि आपकी बेमुरौवती और बुरे बर्ताव से बहुत चिढ़ गई हैं, मुझसे आपका नाम लेकर कहती थीं कि मैं उनसे कदापि न मिलूँगी। ऐसी अवस्था में उचित यही जान पड़ता है कि पहिले उन्हें समझा कर आपसे मिलने के लिए राजी कर लूँ तब आपको उनके पास ले चलूँ।

प्रभाकर०। (कुछ सोच कर) खैर, मुलाकात न सही दिखा देने में तो कोई हर्ज नहीं है !

मालती०। अच्छा मैं उन्हें दूर से आपको दिखा दूँगी।

इतना कह मालती ने प्रभाकरसिंह को पलंग पर बैठने के लिए पुनः जोर दिया और प्रभाकरसिंह भी यह विचार कर मालती के पास पलंग पर बैठ गये कि 'यह मौका जिद्द करने का नहीं है, इसकी बात मान लेने ही से इस समय अपना काम निकालेगा'।

मालती ने प्रभाकरसिंह की बड़ी खातिरदारी की और प्रभाकरसिंह ने भी अपने दिल का भाव प्रकट न होने दिया। देर तक वे उससे मीठी मीठी बातें करते रहे, इसके बाद यह कह कर उठ खड़े हुए कि 'अब दिन बहुत ज्यादे चढ़ आया है, स्नान सन्ध्या इत्यादि का बन्दोवस्त होना चाहिए।'

प्रभाकरसिंह की यह बात सुन कर मालती भी उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई एक दरवाजे से कमरे के बाहर हो गई कि 'जरा सा ठहरिये, मैं अभी इन्तजाम करके आती हूँ तो आपको ले चलती हूं।

मालती कमरे के बाहर हो गई और प्रभाकरसिंह पलंग पर बैठ कर देर तक उसके आने का इन्तजार करते रहे। आधे घण्टे के बाद लौट कर मालती पुनः प्रभाकरसिंह के पास गई और बोली, "चलिए सब सामान तैयार है।"

अबकी दफे मालती प्रभाकरसिंह को दूसरी ही राह से अर्थात् ऊपर ही ऊपर एक दूसरे मकान में ले गई और वहाँ से घुमाती हुई एक ऐसे बाग में पहुँची जो प्रभाकरसिंह के लिए बिल्कुल ही नया था अर्थात् अभी

तक इस बाग को उन्होंने देखा न था। बनिस्बत पहिले बाग के जिसमें प्रभाकरसिंह आये थे इस बाग में फूल पत्तों की अपेक्षा फल और मेवों के दरख्त बहुत ज्यादे थे तथा अमरूद सेव अंगूर और बादाम वगैरह बहुतायत के साथ लगे हुए थे तथा बाग के बीच में एक सुन्दर बावली भी थी जिसमें मीठा और बिल्लौर की तरह साफ जल भरा हुआ था। उसी बावली के ऊपर एक पत्थर की चौकी पर लोटा गिलास, धोती, गमछा, आसन तथा संध्या पूजा का सब सामान मौजूद था और खिदमत के लिये दो लौंडियाँ भी हाजिर थीं।

इस बाग को अपने मतलब का देख कर प्रभाकरसिंह बहुत खुश हुए और कपड़े उतार कर एक पेड़ के नीचे रख देने के बाद अपने जरूरी कामों की फिक्र में लगे। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में जल का भरा हुआ लोटा लेकर वे बाग के पूरब तरफ बढ़े और एक घनी झाड़ी में, घुस कर नजरों से ओझल हो गये।

प्रभाकरसिंह के चले जाने के बाद मालती और उसकी दोनों लौंडियों में इस तरह बातचीत होने लगी—

मालती०। (एक लौंडी से) भोजन की चीजें सब तैयार हो गईं या अभी कुछ बाकी हैं?

लौंडी०। करीब करीब सभी चीजें तैयार हो गई हैं, केवल तरकारी और दो तीन तरह की चटनी बाकी है।

मालती०। बेहोशी की दवा किस किस चीज में मिलाई गई है?

लौंडी०। केवल कचौरी और तरकारी में।

मालती०। ठीक है, लेकिन अगर चटनी में भी दवा मिला दी होती तो अच्छा था।

दूसरी लौंडी०। आज्ञा हो तो अब मिला दी जाय।

मालती०। खैर रहने दो, कोई चिन्ता नहीं, जो कुछ हुआ वही बहुत है।

लौंडी०। मगर मुझे आश्चर्य इस बात का होता है कि अकेले

प्रभाकरसिंह के लिये आप इतना बन्दोबस्त क्यों कर रही हैं ! क्या हम लोग मिलजुल कर इन्हें बाँध नहीं सकतीं ?

मालती० । तुम्हें इनकी ताकत का हाल मालूम नहीं है, अगर मालूम होता तो ऐसा न कहतीं। इसके अतिरिक्त इन्हें तिलिस्म की बहुत सी बातें भी मालूम हैं जिसके लिए भुलावा देने की जरूरत है क्योंकि किसी तरह का शक हो जाने से ताज्जुब नहीं कि ये निकल भागें।

लौंडी० । अगर यही बात है तो दारोगा साहब को चाहिये था कि दो चार बहादुर सिपाही यहाँ भेजे देते जिसमें इन्हें गिरफ्तार करने के लिये ज्यादे बखेड़ा न करना पड़ता ।

मालती० । दारोगा साहब ने हम लोगों को यहाँ भेज दिया यही बहुत है नहीं तो तिलिस्म के अन्दर किसी को भेजना यह बिलकुल ही नियम के विरुद्ध है, मुझे दारोगा साहब चाहते हैं और मुझ पर बिश्वास रखते हैं इसी लिये मुझे यहां भेजा भी, और मैं तुम लोगों को यहाँ ले आई ।

लौंडी० । ठीक है, असल मतलब मेरी समझ में आ गया । मगर अब मैं यह सोचती हूं कि अगर प्रभाकरसिंह ने तुम्हारे यहां की कोई चीज नहीं खाई और बेहोश न हुए तब तुम क्या करोगी ?

मालती० । तुम्हारा यह सोचना बिल्कुल ही लड़कपन है, भला यहां रह कर वे कै दिन भूखे रहेंगे ? साथ ही इसके तुम यह भी जानती हो कि इस तिलिस्म से निकल भागना उनके लिए बिल्कुल ही असम्भव है, हाँ इतना मैं जरूर कहूंगी कि वे सहज ही में हम लोगों का विश्वास कदापि न करेंगे, परन्तु मैंने तो यहाँ तक निश्चय कर रखा है कि यदि इस कारीगरी से काम न निकला तो जिस समम वे घोर निद्रा में बेखबर पड़े होंगे उस समय अपनी भुजाली और भुजा को काम में लाकर किस्मत को आजमाऊंगी ।

दूसरी लौंडी० । ऐसा नहीं हो सकता है क्योंकि इस बाग में फलों और मेवों की बहुतायत होने से...

मालती० । (कुछ सोच कर) हाँ बेशक यह मुझसे भूल हुई कि मैं उन्हें

इस बाग में ले आई और यहाँ आने का रास्ता भी दिखा दिया। यहाँ के फलों और मेवों से वे कई दिनों तक गुजारा कर सकते हैं, अगर किसी दूसरे बाग में ले गई होता जहां फलों के दरख्त न होते तो जरूर भूख से व्याकुल होकर वे मेरी बात मानते और सहज ही में मेरे यहाँ का भोजन भी करते। खैर कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा, मैंने कई तरह के जाल फैलाये हुए हैं, किसी न किसी जाल में यह शिकार जरूर ही फँसेगा।

मालती और दोनों लौंडियों में देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं और वे सब प्रभाकरसिंह के आने का इन्तजार करती रहीं।

एक घंटे से ज्यादे समय बीत गया और प्रभाकरसिंह लौट कर न आये। इस बात से मालती और उसकी लौंडियों को आश्चर्य होने लगा, मगर मालती को यह भी विश्वास था कि जिस तरफ प्रभाकरसिंह गये हैं उस तरफ कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिसके जरिये वे इस बाग के बाहर हो जायँ, और बाग की दीवार भी ऐसे ढंग की बनी हुई है कि उसके ऊपर कोई चढ़ नहीं सकता। यही सबब था कि मालती को धीरज बँधा हुआ था और उसने फिर भी कुछ देर तक और इन्तजार करना मुनासिब समझा।

और भी आधा घण्टा बीत जाने के बाद प्रभाकरसिंह घोड़े पर सवार सामने से आते हुए दिखाई पड़े। हम ऊपर लिखे आये हैं कि प्रभाकरसिंह कपड़े उतार कर मैदान के लिये गये थे परन्तु इस समय केवल घोड़े पर सवार ही नहीं बल्कि सुन्दर फौजी पोशाक पहिरे हुए तथा कई तरह के हर्बे भी लगाये हुए वे दिखाई पड़े जो मालती और उसकी लौंडियों के लिये कम आश्चर्य की बात न थी और इसी कारण वे आश्चर्य के साथ सोचने लगीं कि क्या वास्तव में ये प्रभाकरसिंह ही हैं ?

निःसन्देह वे प्रभाकरसिंह ही थे मगर मालती को तब तक इस का विश्वास न हुआ जब तक कि वे मालती के पास न आये और छेड़खानी के तौर पर खुद ही बातचीत करना आरम्भ न किया।

प्रभाकर०। (मालती के पास आकर मुस्कुराते हुए) कहो बीबी

मालती, अब तो मुझे यहां से चले जाने की इजाजत देती हो न ?

मालती० । (कुछ घवड़ानी सी होकर) सो क्यों ? अभी तो आप इन्दुमति से न मिलने वाले हैं ?

प्रभाकर० । नहीं अब मुझे उससे मुलाकात करने की कोई जरूरत नहीं रही ।

मालती० । आखिर ऐसी घबड़ाहट आपको क्या हो गई ? और यह घोड़ा आपने कहां से पाया सो तो बताइये ?

प्रभाकर० । (हँस कर) जमानिया के दारोगा साहब यह घोड़ा तुम्हारे वास्ते लिए आ रहे थे सो मैंने छीन लिया और पौशाक भी उन्हीं के बदन से उतार ली !! अच्छा बीबी मनोरमा, अब मैं आपको आशीर्वाद देता और जाता हूं ।

इतना कहते हुए प्रभाकरसिंह तेजी के साथ उसी तरफ लौट गये जिधर से आये थे । मालती को विश्वास न हुआ कि वे वास्तव में प्रभाकरसिंह थे, और इसी से यह घोड़ा इस बाग में क्योंकर आया, यह पोशाक इन्होंने कहां से पाई, और घोड़े पर सवार ये क्योंकर यहाँ से बाहर निकल जाँयगे, इत्यादि बातों को सोचती हुई वह भी अपनी लौंडियों को साथ लिये उन्हीं के पीछे पीछे चल पड़ी ।

तेरहवां बयान

महाराज के बाग में चोर गिरफतार तो हुआ मगर महाराज के पास न पहुँचाया जाकर सीधे दारोगा साहब के पास पहुँचा दिया गया । महाराज के सिपाहियों ने दारोगा साहब की यहां तक खातिर की कि उस चोर को पहिचानना तो दूर रहा, आंख से अच्छी तरह देखा भी नहीं और बड़े अफसोस के साथ महाराज से कह दिया कि चोर निकल भागा, बहुत उद्योग करने पर भी गिरफ्तार न हो सका । महाराज को इस बात का बहुत ही दुःख हुआ फिर भी उन्होंने पहरे का इन्तजाम ज्यों का त्यों कायम रक्खा,

इस ख्याल से कि कदाचित् एक दो दिन बाद धोखा देकर पुन: वह चोर आवे।

उधर दारोगा अपने सोने वाले कमरे में चारपाई पर बैठा हुआ बड़ी बेचैनी के साथ इस बात का इन्तजार कर रहा था कि महाराज के बाग में चोर गिरफ्तार हो और सीधे मेरे पास चला आवे क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि हो न हो वह चोर भैयाराजा अर्थात् शंकरसिंह ही हैं। वह दरवाजे की तरफ आंख लगाये बैठा अपने दिल से भैयाराजा के बारे में बातें कर रहा था और साथ ही यह भी सोच रहा था कि 'आज नि:सन्देह भैयाराजा गिरफ्तार होकर मेरे पास लाये जांयगे और अगर ऐसा हुआ तो मैं उनको बिना मारे कभी न रहूँगा, किसी तरह की मुरौवत न करूंगा, आंखें चार होने पर लज्जा तथा भय को पास फटकने न दूंगा। आज मैं पूरा बेमुरौवत पूरा निर्लज्ज, पूरा बेदर्द और पूरा अत्याचारी बन जाऊँगा मगर उन्हें कदापि जीता न छोड़ूंगा चाहे जो हो' इत्यादि इसी ढंग की बातें विचारता और खयाली पुलाव पकाता हुआ वह दरवाजे की तरफ देख रहा था कि यकायक दरवाजा खुला और तीन आदमी बेहोश भैयाराजा को उठाये कमरे के अन्दर दाखिल हुए। बड़ी फुर्ती के साथ दारोगा ने उठ कर चोर के चेहरे पर निगाह डाली और यह जान कर बहुत ही प्रसन्न हुआ कि वह चोर वास्तव में भैयाराजा ही हैं।

बेहोश भैयाराजा दारोगा साहब के सामने डाल दिये गये। पहिले तो दारोगा के दिल में आया कि भैयाराजा को होश में लाने के पहिले ही कत्ल कर डाले जिसमें चार आंखें न होने पावें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गया क्योंकि आज उसने पूरी बेहयाई पर कमर बांध ली थी और इसके अलावे कई भेद की बातें भी उनसे दरियाफ्त करनी थीं।

बेईमान दारोगा ने पहिले तो उन तीनों आदमियों की बड़ी तारीफ की और शाबाशी दी और इसके बाद आज्ञा दी कि भैयाराजा को उठा कर दूसरे कमरे में पहुँचा दें जहाँ इसी तरह के निर्दयता के काम किये जाते थे और जो एक तरह पर कैदखाने का काम भी दिया करता था। वहां पहुं-

चाने के वाद भैयाराजा की मुश्कें बाँधी गईं और तीनों आदमियों को बिदा कर दारोगा ने उन्हें लखलखा सुंघाया। होश में आने पर उस कैदी ने घबड़ा कर चारो तरफ देखा और जब हाथ में नंगी तलवार लिए दारोगा पर उसकी निगाह पड़ी तो उसे और भी आश्चर्य हुआ। उसने बड़ी बेचैनी के साथ दारोगा की तरफ देखा और तब उससे पूछा, "मैं कहाँ पर हूं और यह मकान किसका है ?"

दारोगा०। तुम मौत के पंजे में हो और यह मकान यमराज का है।

कैदी०। (पुनः अच्छी तरह चारो तरफ देख कर) नहीं नहीं, मैं अच्छी तरह समझ गया कि यह घर आप ही का है, मगर आश्चर्य है कि आप मुझी से दिल्लगी करते हैं !

दारोगा०। इसमें दिल्लगी की क्या बात है ? मान लो कि यह मेरा ही घर है मगर क्या तुम यह नहीं देखते कि मैं नंगी तलवार लिये तुम्हारा सर काटने को तैयार हूँ ?

कैदी०। हां देखता हूँ मगर यह मुझे कब विश्वास होने लगा कि आप मेरे ही साथ ऐसा बर्ताव करेंगे !!

दारोगा०। मैं जरूर ऐसा करूंगा क्योंकि तुम्हारी बदौलत मैं बेतरह संकट में पड़ गया था !

कैदी०। ठीक है, लेकिन तब इससे यह जाहिर होता है कि तुम्हारी ही बदौलत इस समय मैं अपने को रस्सियों से जकड़ा हुआ देख रहा हूँ।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है। मैंने ही तुम्हें गिरफ्तार कराया है, मैंने ही तुम्हारी मुश्कें कसवाई हैं, और मैं ही अब अपने हाथ से तुम्हारा सर काट हमेशा के लिए बेफिक्र हो जाना चाहता हूं।

कैदी०। (क्रोध में आकर) तो क्या तू मुझे मारेगा ?

दारोगा०। हां हां जरूर मारूंगा, कई दफे तो कह चुका अब कैसे कहूँ ?

कैदी०। अफसोस, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस खुदगरज बेमुरौवत और दुष्ट भाई का साथ देने से मुझे यह दिन देखना

नसीब होगा। अगर ऐसी खबर होती तो तुझ बेईमान को कई दफे गहरी आफतों से कदापि न बचाता और अपना धन दौलत तेरे हवाले करके तेरे घर का भिखमँगा न बन जाता। अफसोस, अफसोस, मैं यह नहीं जानता था कि भाई की सूरत में एक दुष्ट चाण्डाल की आत्मा घुसी हुई है। मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं ऐसा कमजोर भी नहीं हूँ कि इन पतली डोरियों से बेबस रह कर तेरे नापाक हाथों से मारा जाऊँ !!

इतना कहते कहते उस कैदी को जोश चढ़ आया। उस बहादुर ने झटका देकर हाथ पैर की रस्सियाँ तोड़ डालीं और ताल ठोंक कर दारोगा साहब के सामने खड़ा होकर बोला, "हां देखें तो सही तू किस तरह मुझे मारता है ! तेरे हाथ में तलवार है और मैं खालीं हाथ तेरे सामने खड़ा हूं, देखना तो यह है कि तू मुझे मारता है या मैं ही तेरा खून चूस कर इस बेइज्जती का बदला चुका लेता हूं !!"

चौदहवां बयान

दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका है। धूप में बहुत तेजी और गर्मी है। मुसाफिरों को इस समय राह चलना बहुत ही बुरा मालूम होगा मगर जंगल में रास्ता चलने वालों को इस धूप की गरमी किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकती। घने जंगलों का तो कहना ही क्या है जहाँ बड़े बड़े साखू, शीशम और सलई के दरख्तों की छाया में बैठने से बड़ा ही आनन्द मिलता है, खास करके किसी नाले के किनारे पर जहाँ घने दरख्त हों तो वहां के आनन्द का कहना ही क्या है। गर्मी के दिनों में ऐसा स्थान बहुत ही प्यारा मालूम होता है, परन्तु शेर भी ऐसा ही स्थान पसन्द करता है और प्रायः शिकार के लिए भी ऐसा ही स्थान चुना जाता है।

इस समय हम ऐसे ही घने जंगल में एक नाले के किनारे पत्थर की चट्टान पर दो आदमियों को बैठे आनन्द से बातचीत करते हुए देख रहे हैं। इनमें एक तो इन्द्रदेव हैं और दूसरे उनके प्यारे दोस्त

बलभद्रसिंह। इस समय ये दोनों आदमी शिकारी पोशाक तथा हर्बों से अपने को सजाये हुए हैं और इन दोनों के शेरदिल घोड़े भी पास ही पेड़ों के साथ लम्बी बागडोर से बंधे हुए नर्म घास चर रहे हैं। सुनना चाहिये कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

इन्द्रदेव०। आपका कहना बहुत ही ठीक है। गदाधरसिंह की चाल चलन आज कल बहुत ही खराब है। ऐसे ही लोग ऐयारों के नाम को कलंकित करके अपने साथ ही साथ भले लोगों को भी बदनाम करते हैं। मैं उस खोटे समय को रोता हूँ जिस समय उसे अपनी जुबान से मैंने दोस्त कहा था, फिर भी चाहे उसके शरीर से मुझे कितना ही कष्ट पहुँचे परन्तु मैं अपनी तरफ से उसे कुछ भी कष्ट न पहुँचाऊँगा। केवल इतना ही नहीं बल्कि जिन्दगी भर इस बात का उद्योग करता रहूंगा कि उसकी चाल चलन सुधरे और वह नेकनामी के साथ दुनिया में जिन्दगी बिताने का प्रयत्न करे। बदनाम आदमी का दुनिया में करोड़पति होकर भी जीते रहना वृथा है, जिन्दगी उस गरीब की ही सराहने योग्य है जिससे लोगों का उपकार हो और जिसे लोग भली जुबान से नेकनामी के साथ याद करते हों। मेरे प्यारे दोस्त! मैं सच कहता हूँ और तुमसे भी कुछ छिपा हुआ नहीं है कि बड़े बड़े राजा महाराजा और सौदागरों से भी मेरे पास बढ़ कर दौलत है जिसे मैं इस जिन्दगी में किसी तरह भी खर्च नहीं कर सकता मगर मैं उस दौलत पर कुछ भी भरोसा नहीं करता और नेक-नामी के सामने उसे कंकड़ पत्थर से भी तुच्छ समझता हूं। इसका एक सबब यह भी है कि वह दूसरे की थाती है जो ईमानदारी के साथ मेरे सुपुर्द की गई है और मैं उसे देवता के समान केवल पूजा ही करने के लायक समझता हूँ तथापि जो कुछ उसमें से मेरे लिए हिस्सा लगाया गया है वही इतना ज्यादा और काफी है जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ। यह बात गदाधरसिंह को भी कुछ कुछ मालूम है और मैं उसे कई दफे कह भी चुका हूँ कि—दो चार लाख रुपये जब चाहो मुझसे ले लो

श्रौर अपनी तृष्णा को तिलांजलि दे दो, परन्तु उसके दिल में यह बात विल्कुल ही नहीं बैठती। न मालूम लालच ने उसे किस तरह अपने काबू में कर रक्खा है कि जिसके सबब से वह बड़े बड़े उग्र पाप करने के लिए भी तैयार हो जाता है !

बलभद्र०। मेरे प्यारे दोस्त, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारे नेक मिजाज की तारीफ कर सकूं। तुम ही ऐसे हो कि गदाधरसिंह के कसूरों को बराबर माफ किये चले जा रहे हो, दूसरा मामूली दर्जे का कोई आदमी तो उसका मुँह भी न देखता। फिर भी इतना मैं जरूर कहूँगा कि यद्यपि वह ऐयारी के फन में बहुत ही तेज है श्रौर उसे बहुत दूर की सूझा भी करती है परन्तु वह अपने कलंक को धोने की कोशिश करता हुआ श्रौर भी कलंकित होता जा रहा है, ताज्जुब नहीं कि वह कलंकों के मारे कुछ ही दिनों में सिर से पैर तक इन्द्र का रूप हो जाय।

इन्द्र०। बेशक ऐसा हो सकता है। मैं जानता हूं कि दयाराम के विषय में वह बिल्कुल निर्दोष है श्रौर इसी लिए मैं उसे कई दफे समझा भी चुका हूं कि तुम उस भेद को छिपाने के लिए कुछ उद्योग मत करो, मैं तुम्हारी वह भूल दुनिया में किसी पर भी प्रकट न होने दूँगा, परन्तु यह बात उसके दिल में वैठती ही नहीं, सच तो यों है कि उसे मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता।

बलभद्र०। यही बात है, वह सोचता है कि बिना जमना श्रौर सरस्वती को मारे वह बात छिप नहीं सकती इसलिए जमना श्रौर सरस्वती को मार कर ही मैं निश्चिन्त हो सकूंगा क्योंकि उसके बाद किसी को मुझ पर कलंक लगाने के लिए कोई सबूत न मिल सकेगा।

इन्द्रदेव०। केवल जमना श्रौर सरस्वती ही को नहीं बल्कि वह प्रभाकरसिंह श्रौर इन्दुमति को भी मारने की फिक्र में है क्योंकि उसे विश्वास हो रहा है कि ये दोनों भी उस भेद को जान गये श्रौर जमना तथा सरस्वती को मदद कर रहे हैं श्रौर वास्तव में बात भी ऐसी ही है।

बलभद्र० । मगर मैं समझता हूँ कि अब भूतनाथ इस काम में कृतकार्य नहीं हो सकेगा ।

इन्द्रदेव० । (मुस्कुरा कर) सो कैसे कहूं ! वह बड़ा ही धूर्त है, कौवे गिद्ध और कुत्ते से अगर उसकी उपमा दी जाय तो हो सकता है । मैं अपने घर के रास्ते तक को उससे छिपाये रहता हूँ और जब कभी वह मुझसे मिलने के लिये आता है तो मैं बाहरी दरजे में ही उससे मुलाकात करता हूं । (हंस कर) लेकिन यह मामला भी बड़ा ही विचित्र है, मैं यद्यपि उसके काम में बाधा डाल रहा हूँ मगर उससे दुश्मनी नहीं करता, और वह यद्यपि बराबर मेरे हाथों से छकाया जाता है फिर भी मुझ पर किसी तरह का शक नहीं करता । मगर मुझे इस बात का जरूर दुःख है कि मेरे गुरुभाई साहब (जमानिया तिलिस्म के दारोगा) ने भी आज कल उसी का रंग पकड़ा है और दोनों खुदगरजों की दोस्ती बेतरह बढ़ रही है...

बलभद्र० । (बात काट कर) भला खुदगरजों की दोस्ती भी कहीं कायम रही है ?

इन्द्र० । कभी नहीं खुदगरजों की दोस्ती और पानी पर तैरते हुए बताशे की जिन्दगी की कोई तायदाद नहीं, तथापि मुझे दारोगा साहब की तरफ से बड़ा ही रंज है, मैंने उनसे मिलना जुलना भी एक तौर पर छोड़ दिया है यद्यपि अपने दिल का भाव प्रगट नहीं किया, साथ ही इसके इस बात का भी उद्योग कर रहा हूँ कि उसमें और गदाधरसिंह में दुश्मनी पैदा हो जाय ।

बल० । दुश्मनी पैदा होने में अब क्या कसर रह गई है ? गदाधरसिंह को इस बात का विश्वास हो गया है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के बारे में दारोगा ही ने उससे चालाकी खेली है ।

इन्द्रदेव० । बेशक यही बात है और अब ईश्वर ने चाहा तो दारोगा की और उसकी दुश्मनी दिनों दिन बढ़ती ही जायगी ।

बलभद्र० । आपकी कार्रवाई ही ऐसी हो रही है, मगर भैयाराजा

के विषय में जो कुछ चाल चली जा रही है वह मुझे पसन्द नहीं है।

इन्द्रदेव०। मुझे भी पसन्द नहीं है, मैंने उन्हें कहा कहा था कि इस ढंग को छोड़ दें और एक दम से प्रकट होकर जो कुछ करना हो खुले आम करें, मगर उन्हें तो मसखरापन सूझ रहा है, देखो मैं आज तुम्हारे सामने हो उन्हें फिर समझाऊँगा।

बलभद्र०। अगर वे न मानेंगे तो ताज्जुब नहीं कि एक दिन गदाधरसिंह या दारोगा साहब के हाथ में फंस जाँय।

इन्द्रदेव०। गदाधरसिंह को तो मैं साफ साफ कह दूंगा कि भैयाराजा के साथ दुश्मनी का बर्ताव न करे और मेरी यह बात शायद वह मान भी जायगा।

बलभद्र०। मगर गदाधरसिंह को अगर यह मालूम होगा कि भैयाराजा को दारोगा के फन्दे से तुम्हीं ने निकाला है तो जरूर उसे इस बात का भी शक हो जाएगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को भी दारोगा के जाल से तुम ही ने निकाल लिया होगा।

इन्द्रदेव०। कोई पर्वाह नहीं, अगर उसे इस बात का शक हो भी जायगा तो कोई चिन्ता नहीं, मेरे साथ गदाधरसिंह कदापि दुश्मनी का बर्ताव नहीं करेगा।

बलभद्र०। इस बात को तो मैं भी मानता हूं, दारोगा और गदाधरसिंह दोनों ही तुमसे डरते हैं और जानते हैं कि इन्द्रदेव का बिगड़ना किसी के लिए भी अच्छा न होगा, हाँ एक बात तो मैं आपसे कहना भूल ही गया !!

इन्द्रदेव०। वह क्या ?

बलभद्र०। वे दोनों कारीगर जिन्होंने दारोगा का अद्भुत मकान बनाया था और जिन्हें आजकल आपने अपने पास रख छोड़ा है, खुले मैदान बाजार में घूमा करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि उन पर निगाह

पड़ते ही दारोगा का खयाल ठिकाने पहुँच जाय और वह समझ जाय कि इन्हीं दोनों की बदौलत हमारे मकान का भेद खुल गया है।

इन्द्र०। (लम्बी साँस लेकर) अफसोस, वे दोनों कल रात को दारोगा के फन्दे में फंस गये, जैसा कि तुम सोचते हो वही बात हुई अर्थात् दारोगा ने उन्हें देख लिया और ऐसे ढंग से उन्हें गिरफ्तार कर लिया कि किसी को पता न लगा। मुझे उनके बारे में बड़ा ही दुःख है, यद्यपि मैंने अपने दो शागिर्द उनको छुड़ाने के लिए छोड़े हुए हैं मगर फिर भी उनकी खैरियत नजर नहीं आती।

बलभद्र०। यह तो बहुत ही बुरा हुआ। और एक बात की खबर आपको हुई है या नहीं?

इन्द्रदेव०। वह क्या?

बल०। मेरी लड़की लक्ष्मीदेवी की शादी जो कुंअर गोपालसिंह के साथ ठहरी हुई है वह दारोगा साहब को बिल्कुल ही नापसन्द है, अगर प्रकट नहीं होते तो छिपा कर निशाना लगा रहे हैं।

इन्द्र०। मुझे इस बात का पता लग चुका है। अफसोस इस बात का है कि राजा गिरधरसिंह निरे मिट्टी के पुतले ही हैं और दारोगा साहब का रंग उन पर बेतरह चढ़ा हुआ है, मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, गोपालसिंह को मैं इस विषय में खूब समझा चुका हूं और वह कसम खाकर प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि मेरी आज्ञा के विरुद्ध इस विषय में कोई काम न करेंगे। होनहार गोपालसिंह बात के धनी हैं और मुझे उन पर बड़ा भरोसा है।

बलभद्र०। खैर आप जानिये मुझे केवल खबर देने से मतलब था, और यह तो आप ठीक कहते हैं कि राजा साहब पर दारोगा का रंग चढ़ा हुआ है। अभी उसी दिन की बात है जिस दिन भैयाराजा ने भूत होकर राजा साहब को दर्शन दिया था। आप ही कहते थे कि 'सुबह को राजा साहब ने दारोगा को बुला कर रात का हाल कहा जिसके सुनते ही दारोगा

के बदन में थरथरी पैदा हो गई, मगर राजा साहब को इसका कुछ ख्याल न हुआ' इत्यादि।

इन्द्रदेव०। हाँ मैंने सब हाल तुमसे कहा ही था, इसी से तो मैं कहता हूँ कि राजा साहब बिल्कुल बेकार हैं, मगर सीधे और धर्मात्मा हैं, इसी से बचे जाते हैं। (चौंक कर) देखो वह सामने से घोड़े पर सवार कौन आ रहा है! पहिचानते हो?

बलभद्र०। (गौर से देख कर) नहीं शायद नजदीक आने से पहिचान सकूँ...नहीं नहीं, मैंने इन्हें आज के पहिले शायद कभी भी नहीं देखा।

देखते ही देखते वह सवार इन दोनों के पास आ पहुँचा। दोनों ही से साहब सलामत करने बाद वह घोड़े पर से नीचे उतर पड़ा और एक पेड़ के साथ लम्बी बागडोर के सहारे घोड़े को बाँध कर चरने के लिए ढीला छोड़ दिया।

इन्द्रदेव का इशारा पाकर वह सवार भी उनके पास बैठ गया और उन तीनों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। (सवार की तरफ देख कर) कोई भी ऐयार इस समय आपको नहीं पहचान सकता, खूब ही सूरत बदली है। (बलभद्रसिंह से) क्यों भाई कैसी सूरत हो रही है? यह तुम्हारे रोज के मुलाकाती हैं और इशारा कर देने पर भी तुम इन्हें नहीं पहिचान सकते!

बलभद्र०। (आश्चर्य से आगन्तुक की तरफ देख कर) बेशक, बिना चेहरा धोये इन्हें कोई भी नहीं पहिचान सकता।

इन्द्रदेव०। (मुस्कुरा कर) यही तो बात है कि चेहरा धोने पर भी इनकी सूरत में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इस चेहरे पर किसी तरह का रंग रोगन नहीं चढ़ाया हुआ है बल्कि यह एक प्रकार की बनावटी झिल्ली है जो चेहरे पर चढ़ाई हुई है, इस पर पानी का कुछ असर नहीं होता और इस तरह चमड़े के साथ चपक कर बैठती है कि जरा भी पता नहीं लगता।

आगन्तुक०। (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके बलभद्रसिंह से) यह आपकी कारीगरी का नमूना है, वास्तव में यह बहुत ही अच्छी चीज है, सूरत बदलने में जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता।

इन्द्रदेव०। इसी तरह की दो झिल्लियां मैंने जमना और सरस्वती को दी हुई थीं, अफसोस कि वह इस समय गदाधरसिंह के पास होंगी जिनसे वह बड़ा ही उत्पात मचा सकता है। मुझे तो इस बात का डर ही लगा रहता है कि कहीं गदाधरसिंह उन झिल्लियों की बदौलत मुझी को धोखा न दे।

आगन्तुक०। नहीं नहीं, गदाधरसिंह आपको कदापि धोखा न देगा, उसकी प्रतिज्ञा है कि इन्द्रदेव मेरे टुकड़े टुकड़े कर डालें तो भी मुझे मंजूर है परन्तु उनका मुकाबिला कदापि न करूंगा।

इन्द्र०। ठीक है, मैंने भी ऐसा सुना है, और आप यह भी जानते ही हैं कि मैं गदाधरसिंह के साथ कैसा बर्ताव करता हूं। हजार कसूर करने पर भी उसे सजा देने की नीयत नहीं करता और यही चाहता रहता हूं कि वह अच्छी राह पर चले और परमात्मा उसका भला करे।

बलभद्र०। बेशक, आप अपनी दोस्ती का पूरा पूरा हक निबाह रहे हैं। (आगन्तुक की तरफ इशारा करके) अच्छा यह तो बताइए कि यह कौन साहब हैं और आपको खोजते हुए यहां किस तरह आ गये ?

इन्द्रदेव०। ये भैयाराजा हैं, छिप कर रहना पसंद नहीं करते और बराबर इधर उधर घूमने की इच्छा करते हैं, इसीलिए सूरत बदलने वाली यह झिल्ली मैंने इन्हें दे रक्खी है। मैं यहां आते समय अपने शागिर्द को समझा आया था कि इस सूरत में भैयाराजा अगर यहां आवें तो उन्हें फलानी जगह भेज देना, यही सबब है कि ये यहां तक आ पहुंचे।

आगन्तुक०। (अथवा भैयाराजा) बेशक यही बात है, आपके शागिर्द लक्ष्मण ने मुझे यहां का पता दिया था, अच्छा तो बताइये कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

इन्द्रदेव०। मैं तो यही कहूंगा कि आप खुल्लमखुल्ला जाकर अपने

भाई राजा साहब से मिलें और इन खेल तमाशों को जाने दें, नहीं तो एक न एक दिन दारोगा के फन्दे में फंस ही जायंगे।

आगन्तुक०। तो क्या तुम नहीं जानते कि हमारे भाई साहब दारोगा के कैसे गुलाम हो रहे हैं! उस कम्बख्त के सामने भला मेरी बातों का उनके दिल पर कोई असर होगा? मेरे इस कथन को क्या वे मान जायंगे कि दारोगा ने मुझको मार डालने का इरादा किया था? मैं समझता हूं कि वे मुझी को झूठा बनावेंगे और दारोगा कोई न कोई बहाना करके निकल जायगा।

इन्द्रदेव०। अगर ऐसा हो तो कोई ताज्जुब नहीं है।

आगन्तुक०। वह तुम्हारा गुरुभाई है, तुम उसे समझाते क्यों नहीं! ऐसे आदमी को तो दुनिया से उठा ही देना चाहिये।

इन्द्रदेव०। वह मेरा गुरुभाई है तो क्या हुआ, जैसा करेगा वैसा भोगेगा। मैं न तो उसका दोस्त बनता हूं और न दुश्मन, अगर आप लोगों की मदद करने की जरूरत न आ पड़े तो मैं उसका मुंह देखना भी पसन्द नहीं करता, उसके घर में जाना तो दूसरी बात है।

बलभद्र०। अगर आप भैयाराजा को उसके पंजे से न छुड़ाते तो इनकी जान जा ही चुकी थी।

इन्द्रदेव०। अब भी अगर ये खुल्लमखुल्ला अपने को प्रगट न कर देंगे तो इनके लिये मुझे चिन्ता बनी ही रहेगी, वह तो कहो इतना अच्छा हुआ कि दारोगा और गदाधरसिंह में जो दोस्ती थी वह जाती रही, नहीं तो दोनों मिल कर बड़ा ही उपद्रव मचाते।

बलभद्र०। गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में दारोगा ने उसके साथ दगाबाजी की।

आगन्तुक०। मगर वास्तव में बात दूसरी ही थी, अच्छा यह तो बताइए कि प्रभाकरसिंह का क्या हाल है और वे अब कहां हैं?

इन्द्रदेव०। ईश्वर की कृपा से प्रभाकरसिंह भी दारोगा के पंजे से

निकल गए, उन्हें दारोगा ने तिलिस्म के अन्दर ही फंसा लिया था मगर कल मैं उन्हें छुड़ा कर अपने घर ले आया, उनके छुड़ाने में भी बड़ी विचित्र दिल्लगी हुई।

आगन्तुक०। सो क्या ?

इन्द्र०। यह किस्सा उन्हीं की जुबान से आप सुनेंगे तो मजा आवेगा, मैं स्वयं कुछ भी न कहूंगा।

आगन्तुक०। उनसे मुलाकात कब होगी !

इन्द्रदेव०। जब आप चाहेंगे।

आगन्तुक०। अच्छा तो मैं तुम्हारे साथ ही तुम्हारे घर चलूंगा और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति से भी मुलाकात करूंगा।

इन्द्र०। बहुत अच्छी बात है।

आगन्तुक०। अच्छा यह तो कहो कि जमानिया तिलिस्म का भेद तुमको क्योंकर मालूम हुआ ? वह तो बहुत ही गुप्त है और सिवाय हम लोगों के दूसरा कोई भी उसको नहीं जान सकता क्योंकि नियमानुसार तिलिस्मी किताब हम ही लोगों के पास रहा करती है और आज भी हमारे भाई साहब ही के कब्जे में है।

इन्द्रदेव०। (मुस्कुरा कर) इसके विषय में तो मैं कुछ भी न कहूंगा।

आगन्तुक०। मैं समझता हूं कि दारोगा के गुरुजी ने तुमसे वहां का कुछ हाल कहा होगा, क्योंकि वह तुम्हारे भी गुरू थे और वहां का बहुत ज्यादे हाल जानते थे।

इन्द्रदेव०। जो कुछ हो !

आगन्तुक०। खैर इस मामले को जाने दो और अब यह राय दो कि मैं क्या करूं ?

इन्द्रदेव०। मुझे जो कुछ कहना था मैं कह चुका।

आगन्तुक०। अच्छा एक दिल्लगी मुझे और कर लेने दो फिर जो कुछ तुम कहोगे मैं वही करूंगा।

इन्द्रदेव०। वह क्या ?

आगन्तुक०। इस समय कहने से मजा न मिलेगा, कल परसों में आपसे आप मालूम हो जायगा। अच्छा यह बताओ कि इस समय तुम्हारे साथ चलने से क्या प्रभाकरसिंह तथा इन्दुमति इत्यादि से मुलाकात हो सकेगी ?

इन्द्रदेव०। (कुछ सोच कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूं कि आप जब चाहे मुलाकात कर सकते हैं।

आग०। तो यहां से चलने में क्या विलम्ब है ?

इन्द्रदेव०। कुछ भी नहीं, मैं चलने को तैयार हूं।

आग०। बस तो जय गणेश करो।

इन्द्रदेव०। चलिये, (बलभद्रसिंह की तरफ देख कर) यदि कुछ हर्ज न हो आप भी मेरे साथ चलिये।

ये तीनों आदमी वहां से उठ खड़े हुए और अपने अपने घोड़ों पर सवार हो तेजी के साथ चल पड़े।

बलभद्रसिंह और आगन्तुक को साथ लिए हुए इन्द्रदेव अपने मकान की तरफ रवाना तो हुए मगर अफसोस उन्हें इस बात की कुछ खबर नहीं है कि जिस आगन्तुक को वह भैयाराजा समझे हुए हैं वह वास्तव में भैयाराजा नहीं है बल्कि भूतनाथ है जो प्रभाकरसिंह जमना सरस्वती और इन्दुमति का पता लगाने के लिए जमना और सरस्वती से पाई हुई झिल्ली अपने चेहरे पर लगा कर और इस प्रकार अपना भेष बदल कर इन्द्रदेव के घर गया था। वहां इन्द्रदेव के शागिर्द ने उसे भैयाराजा समझा और इन्द्रदेव का सन्देशा दिया कि वे फलाने जंगल में गये हैं और आपको भी उसी जगह बुलाया है, इसी सन्देश को पाकर भूतनाथ वहां पहुंचा था जहां इन्द्रदेव और बलभद्रसिंह से मुलाकात हुई थी।

अस्तु धोखे में पड़े हुए इन्द्रदेव नकली भैयाराजा और बलभद्रसिंह को लिए हुए अपने घर की तरफ रवाना हुए। इस जगह यह समझ रखना चाहिये और पहिले भी किसी जगह पर हम लिख आये हैं कि इन्द्रदेव का असली मकान तिलिस्मी इलाके के अन्दर है जहां किसी अनजान आदमी का जाना बिल्कुल ही असम्भव है परन्तु उनका एक दूसरा मकान भी था जिसका नाम 'कैलाश' था और जिसका कुछ हाल हम इसके पहिले भी लिख आये हैं। इस समय अपने दोनों साथियों को लिए हुए इन्द्रदेव इसी मकान (कैलाश) की तरफ रवाना हुए क्योंकि जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को उन्होंने इसी मकान में छिपा कर रक्खा हुआ था।

दो घण्टे तक तेजी के साथ सफर करके तीनों आदमी कैलाश भवन पहुंचे। इन्द्रदेव की बातचीत से भूतनाथ को यह मालूम हो गया था कि भैयाराजा भी इन्द्रदेव के मकान में आने वाले हैं, इसीलिए इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द से कह दिया था कि वे आवें तो उन्हें फलाने जंगल में हमारे पास भेज देना, और इसी कारण इन्द्रदेव के शागिर्द ने भूतनाथ को भैयाराजा समझ कर उसी जंगल में इन्द्रदेव के पास भेजा भी था, धोखा होने का सबब यही था कि भैयाराजा को भी इन्द्रदेव ने वैसी ही झिल्ली चेहरे पर चढ़ाने के लिए दी थी जैसी जमना और सरस्वती को दी थीं अथवा जो इस समय भूतनाथ अपने चेहरे पर चढ़ाये हुए था, अस्तु अब भूतनाथ को यह फिक्र हुई कि कहीं वादे के मुताबिक भैयाराजा भी इस समय यहीं न आ जायं, क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो उसका भण्डा फूट जायगा और बना बनाया काम चौपट हो जायगा। इन सब बातों को सोच कर भूतनाथ ने इरादा कर लिया कि जहां तक जल्द हो सके प्रभाकरसिंह, जमना और सरस्वती को देख कर इन्द्रदेव के मकान से बाहर ही नहीं हो जाना चाहिये बल्कि जिस तरह सम्भव हो भैयाराजा को गिरफ्तार भी कर लेना चाहिये, जिसमें उनकी सूरत बन कर अपना काम निकाला जा सके।

भूतनाथ और बलभद्रसिंह को साथ लिये हुए इन्द्रदेव मकान के अन्दर

गये और कई कमरों में घूमते फिरते वहां पहुँचे जहाँ प्रभाकरसिंह बैठे हुए जमना सरस्वती और इन्दुमति से मीठी मीठी बातें कर रहे थे। आज बहुत दिनों के बाद हम इन बिछड़े हुओं को मिल कर बैठे और बातें करते देख रहे हैं, निःसन्देह इन सभों में शिकवे और शिकायत भरी बातें हो रही होंगी, बदकिस्मती से जो तकलीफें इन लोगों ने उठाई हैं उनके लिए एक दूसरे को दोषी ठहराता होगा, एक दूसरे की भूल साबित करके स्वयं बुद्धिमान बनने की कोशिश करता होगा तथा बीच बीच में कोई इन्द्रदेव की तारीफ करता होगा, तथा कोई बेईमान दारोगा को गालियां देता और भूतनाथ की शिकायत करता हुआ यह भी कहता होगा कि अभी तक भूतनाथ का डर हम लोगों के दिल में बना ही हुआ है, ईश्वर उस कम्बख्त से किसी तरह पीछा छुड़ाये या हमारी ऐसी मदद करे कि जिससे हम लोग भूतनाथ को नीचा दिखावें। खैर हमे इस जगह पर इतनी फुरसत नहीं है कि इन लोगों की बातचीत या हंसी दिल्लगी का हाल खुलासे तौर पर लिख सकें क्योंकि भूतनाथ इन लोगों के सामने पहुंच कर भी जल्दी से जल्दी भाग निकलने की तैयारी कर रहा है और दिल में तरह तरह की ऐयारियों का बांधनू बांधता हुआ भी डर रहा है कि कहीं असली भैयाराजा यहां न आ पहुंचें, और इसीलिए हम भी इस दृश्य को संक्षेप ही में लिखना पसन्द करते हैं।

जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह ने इन्द्रदेव के साथ आये हुए बलभद्रसिंह को तो पहिचाना परन्तु नकली भैयाराजा को न पहिचान सके, लेकिन इन्द्रदेव ने यहां पहुँचते ही उन सभी की तरफ देख कर कहा, "आप लोग इनको (नकली भैयाराजा की तरफ इशारा करके) न पहिचान सके होंगे क्योंकि तिलिस्मी ढंग पर इनकी सूरत बदली हुई है इसलिए मैं इनका परिचय देता हुआ आप लोगों से कहता हूं कि ये ही वे भैयाराजा हैं जो मेरी मदद करते हुए आप लोगों को छुड़ाने के लिए दिलोजान से उद्योग कर रहे थे।"

जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह इतना सुनते ही उठ कर खड़े हो गए और उन तीनों से साहब सलामत करने बाद सच्चे दिल से सभों का शुक्रिया अदा करने लगे। इसके बाद सब कोई उसी जगह फर्श पर बैठ गये और बातचीत करने लगे। मगर भूतनाथ के दिल की इस समय विचित्र हालत हो रही थी, वह मजबूरी के साथ बातें तो कर रहा था मगर बार बार यह सोचता जा रहा था कि भैयाराजा के आने में देर क्यों हुई ? ईश्वर करे उन पर कोई ऐसी आफत आ जाय कि अभी कुछ देर तक वे यहां न पहुंचने पावें।

भूतनाथ ने जाहिरदारी के साथ उन सभों से बातें करना शुरू किया।

भूत०। (प्रभाकरसिंह से) ईश्वर ही ने आपकी रक्षा की नहीं तो आप बड़े ही झंझट में फंस गये थे।

प्रभाकर०। निःसन्देह ऐसा ही है, ईश्वर ही ने (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हें मेरी सहायता के लिए खड़ा किया। मैं इनकी कृपा का कदापि बदला नहीं चुका सकता और न बदला चुकाने की इच्छा ही रखता हूं क्योंकि मेरे और इनके बीच में बराबर के लेन देन अथवा रोजगार का सा व्यवहार नहीं है, बदला चुकाने का ख्याल तो एक प्रकार का रोजगार ठहरा और मैं इनको पिता के समान मानता हूं अस्तु बड़ों का अहसान बच्चों पर हुआ ही करता है जिसका बदला चुकाने का विचार करना भी मूर्खता है। इसी तरह मैं अपने एक मित्र के अहसान से भी दबा जाता हूं परन्तु मित्रता की सीमा को उल्लंघन करके व्यवहार या रोजगार न समझा जाय इसलिए मैं उनके लिये भी बदला चुकाने का विचार नहीं कर सकता, फिर भी यह बात जरूर है कि आपको मेरे लिये बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी और इसके लिये मैं....

भूत०। (बात काट कर) आप तो व्याख्यान ही देने लग गये, मैं व्याख्यान सुनने के लिये नहीं आया हूं और न यह जानने के लिये आया हूं कि आप किस किस का शुक्रिया अदा कर रहे हैं। मैं तो केवल आप

लोगों को खुश देख कर खुश होने के लिए आया हूं और यह पूछा चाहता हूं कि यदि मेरे किये आप लोगों का उपकार हो सके तो आज्ञा करें, मैं आप लोगों के लिये दिलोजान से उद्योग करने को तैयार हूं।

प्रभाकर०। आपकी कृपा से अब मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं रह गई और न किसी बात की लालसा ही है।

भूत०। बड़ी खुशी की बात है कि अब आपको किसी तरह की लालसा नहीं रह गई। (जमना इत्यादि की तरफ देख कर) और मैं समझता हूं कि ईश्वर की कृपा से अब आप लोगों के चित्त में भी शान्ति....

जमना०। (बात काट कर) नहीं नहीं कदापि नहीं, मेरे चित्त में तब तक शान्ति नहीं हो सकती जब तक कि कम्बख्त भूतनाथ इस दुनिया में जीता जागता मौजूद है।

भूत०। (अपने दिली जोश और गुस्से को दबाता हुआ) ठीक है मेरा भी यही ख्याल है, मगर जब कि इन्द्रदेव ऐसे लासानी ऐयार और सामर्थी लोग तुम्हारे मददगार हो रहे हैं तब भूतनाथ की जिन्दगी कब तक कायम रह सकती है और वह तुम्हारा कर ही क्या सकता है ?

जमना इस बात का कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि इन्द्रदेव ने इशारे में ही उसे कुछ कहा जिससे उसने अपने जोश को रोक लिया और कुछ सोच कर धीरे से जवाब दिया, "सो तो मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि भूतनाथ चाचाजी* (इन्द्रदेव) का दोस्त है।"

जमना की आखिरी बात सुन कर भैयाराजा अर्थात् भूतनाथ ने इन्द्रदेव की तरफ देखा और कहा, "मगर मैं नहीं समझ सकता कि इतना कसूर करने पर भी आप भूतनाथ को क्योंकर माफ कर सकेंगे।"

इन्द्रदेव०। (बड़ी गम्भीरता के साथ) अगर अब भी भूतनाथ अपनी शैतानी से बाज आवेगा और अपने किये पर पछतावेगा तो मेरे

---

* जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव को चाचा कह कर सम्बोधन करने लगे थे।

ऐसे आदमी की तो हकीकत ही क्या ईश्वर भी उसे माफ करेगा।

भूतनाथ ने इसका कुछ जवाब न दिया और बात का रुख दूसरी तरफ फेरने की कोशिश करता हुआ बोला—

भूतनाथ०। सो तो ठीक ही है, जो जैसा करेगा वैसा पावेगा, खैर जाने दीजिये भविष्य में जो होगा देखा जायगा, इस समय तो हम लोग प्रसन्न हैं और ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने बड़े संकट से तुम लोगों की रक्षा की, अब तुम लोग भूतनाथ को छकाने की कोशिश करो और मैं कम्बख्त दारोगा से बदला लेने की फिक्र करता हूं। (इन्द्रदेव से) मैं तुम्हारे पास से जाने के लिए जल्दी न करता यदि बेफिक्र होता और दारोगा से बदला लेने का ख्याल मेरे दिल में भरा हुआ न होता, तथापि मैं कल अवश्य मिलूंगा और तब बहुत सी और बातें भी कहूंगा।

इन्द्रदेव०। आपकी जल्दी पर मुझे आश्चर्य होता है। (मुस्कुरा कर) कहिये तो मैं आपको आपके डेरे तक पहुँचा दूं क्योंकि अभी तक आपसे अच्छी तरह बातचीत नहीं हुई है।

भूत०। (घबड़ाना सा होकर मगर अपने भाव को छिपा कर) नहीं नहीं, इतनी तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं। इस समय मेरा कोई ठिकाना नहीं कि कहां जाऊं और क्या करूंगा क्योंकि अपने दिल में एक विचित्र ख्याल लिए जा रहा हूं, हाँ कल मैं जरूर मिलूंगा और तभी अन्य बातों के साथ ही अपनी जल्दीबाजी का सबब भी बयान करूंगा।

इन्द्र०। जैसी मर्जी।

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और जल्दी के साथ कदम बढ़ाता हुआ कैलाश भवन के बाहर निकला। इन्द्रदेव दरवाजे तक उसके साथ आए और जब वह घोड़े पर सवार होकर चला गया तब धीरे से यह कहते हुए घर के अन्दर लौटे—"ईश्वर ही कुशल करे!"

पन्द्रहवां बयान

भूतनाथ को इस बात की फिक्र लगी हुई थी कि भैयाराजा इन्द्रदेव के घर आते ही होंगे और जिस तरह हो सके उन्हें फांसना चाहिये मगर बेचारे भैयाराजा को इस बात की कुछ भी खबर न थी।

भूतनाथ के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद भैयाराजा घोड़े पर सवार कैलाश भवन के दर्वाजे पर पहुंचे। खबर पाते ही इन्द्रदेव घर के बाहर निकले जिन्हें देखते ही भैयाराजा घोड़े पर से उतर पड़े और बड़े तपाक से इन्द्रदेव के साथ गले मिलने के बाद बोले, "कहो भाई सब खैरियत तो है? मेरे यहां आने में बहुत देर हो गई, क्षमा करना।"

इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "ईश्वर की कृपा से सब कुशल है, चलिए घर के अन्दर चलिये जहां बैठे हुए बहुत से आदमी आपका आश्चर्य के साथ इन्तजार कर रहे हैं।"

भैया०। (इन्द्रदेव का हाथ पकड़े घर के अन्दर जाते हुए) आश्चर्य के साथ क्यों इन्तजार कर रहे हैं?

इन्द्र०। सो भी अभी ही आपको मालूम हो जायेगा।

बात की बात में ये दोनों वहां जा पहुँचे जहां जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह बैठे हुए आपुस में बातें कर रहे थे। इन्द्रदेव के साथ भैयाराजा को (जो कि इस समय अपनी असली सूरत में थे क्योंकि घर के अन्दर घुसते ही उन्होंने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार कर हाथ में ले ली थी) आते हुए देख कर सब उठ खड़े हुए। जमना सरस्वती और इन्दुमति ने सिर झुकाया, बलभद्रसिंह ने हाथ जोड़ा, और प्रभाकरसिंह ने सलाम करके कहा, "आपके पुनः लौट आने से आश्चर्य होता है!"

भैया०। पुनः लौट आना कैसा?

प्रभा०। अभी आपको यहां से गये आधे घन्टे से कुछ ही ज्यादे हुआ होगा।

भैया० । (आश्चर्य से इन्द्रदेव की तरफ देख कर) मालूम होता है कि कोई ऐयार मेरी सूरत में यहां आकर आप लोगों को धोखा दे गया है।

इन्द्र० । बेशक ऐसी ही बात है, आप बैठ जायं तो खुलासा हाल बयान करूं।

भैया० । (स्वयं बैठ जाने और सभों को बैठाने के बाद) हां कहो तो सही मामला क्या है ? तुमको धोखा देने की हिम्मत करना किसी मामूली ऐयार का काम नहीं है।

इन्द्र० । बात यह है कि मैं आज किसी कार्यवश 'देवबन्द' के जंगल में गया था । यद्यपि आप कह गये थे कि मैं तीसरे पहर यहां आऊंगा और इसलिए मुझे यहीं मौजूद रहना वाजिब था तथापि मैं अपने शागिर्द को इस बात की ताकीद करके कि आप आवें तो आपको मेरे पास 'देवबन्द' के जंगल में फलाने ठिकाने भेज दे मैं वहां चला गया । कुछ देर के बाद बलभद्रसिंहजी मुझसे मिलने के लिए आये, मेरे शागिर्द ने उन्हें उसी जंगल में भेज दिया । इसके कुछ देर बाद आप ही की तरह का एक आदमी घोड़े पर सवार और ठीक वैसी ही झिल्ली चेहरे पर लगाए हुए आया जैसी झिल्ली मैंने आपको अपने चेहरे पर लगाने के लिए दी थी, मेरे शागिर्द ने समझा कि ये भैयाराजा ही हैं इसलिए उसे भी 'देवबन्द' के जंगल में मेरा पता बता कर मेरे पास भेज दिया, हम दोनों ही धोखे में पड़ गए और उसे भैयाराजा समझ खुले दिल से बातचीत करने लगे क्योंकि चेहरे पर की झिल्ली ने मुझे उस पर शक करने का मौका न दिया, मैं समझे हुए था कि सिवाय आपके और किसी के पास यह झिल्ली नहीं है क्योंकि मैंने सिर्फ आप ही को यह झिल्ली दी थी । एक बात और भी है, इस झिल्ली को लगा कर चाहे आप जमाने भर को धोखा दे दें और कोई भी यह न समझे कि आपके चेहरे पर किसी प्रकार की झिल्ली लगी हुई है परन्तु मैं देखने के साथ ही समझ जाऊंगा कि चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली लगी हुई है परन्तु दूर ही से मैंने उस झिल्ली को समझ कर मान लिया कि भैयाराजा

आ गए, बलभद्रसिंह को भी यही कह कर उसका परिचय दिया, और बातचीत करने लगा। कुछ देर बाद उस ऐयार ने जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह से मिलने की इच्छा प्रकट की और मैं उसे अपने साथ यहाँ घर पर ले आया. परन्तु जब वह प्रभाकरसिंह तथा जमना सरस्वती इत्यादि से बातचीत करने लगा तब उसकी बातों में कई शब्द बेमौके के आ पड़ने के कारण मुझे शक पड़ गया और मैं सोचने लगा कि हो न हो यह कोई ऐयार है, मगर तब इसके पास यह झिल्ली कहां से आई! कुछ ही देर बाद मुझे याद आ गया कि इसी ढंग की दो झिल्लियां मैंने जमना और सरस्वती को दी हुई थीं जो कि आजकल भूतनाथ के कब्जे में होंगी। यह याद आने के साथ ही मैं चौंक पड़ा और उसे भूतनाथ की निगाह से देखने लगा। यद्यपि इसके पहिले बहुत सी बातें जो भूतनाथ के सामने मुंह से निकलने योग्य न थीं निकाली जा चुकी थीं परन्तु भूतनाथ का खयाल आ जाने के साथ ही मैंने इशारे से सभों को उस ढंग की बातें करने से रोक दिया। उस नकली भैयाराजा को हम लोगों की बातों से यह निश्चय हो ही चुका था कि इस समय भैयाराजा यहां आने वाले थे और इसी सबब से सभों ने उसे भैयाराजा मान लिया था अस्तु वह यह सोच यहां से शीघ्र निकल जाने के लिए जल्दी करने लगा कि अगर कहीं भैयाराजा यहां आ गए तो झगडा फूट जायगा। वह अपनी खुशकिस्मती समझता होगा कि आपके यहां आने में देर हो गई। खैर मुख्तसर यह कि वह बहुत जल्दी मचाता हुआ यहां से चला गया और उसके थोड़ी देर बाद आप आ पहुँचे।

भैया०। (कुछ देर तक सोच कर) भूतनाथ को यह कैसे मालूम हुआ कि मैं तिलिस्मी झिल्ली लगा कर यहां आऊंगा!

इन्द्रदेव०। सम्भव है कि उसे इस बात की खबर न हो तथा वह भैयाराजा बनने के लिए यहां आया भी न हो, सिर्फ मामूली ढंग पर मुझसे मिलने के लिये ही आया हो।

भैया०। हां यह हो सकता है, और जब लोगों ने बिना परिश्रम ही उसे भैयाराजा मान लिया तो वह भी क्यों न भैयाराजा बन कर अपना काम निकालता!

इन्द्र० यही तो बात है।

भैया०। मगर यह बात बहुत बुरी हुई! अगर वह वास्तव में भूतनाथ था तो समझ रखिए कि बहुत बुरी तरह से हमलोगों का भण्डा फूट गया और अब दारोगा को भी बहुत सहज ही में असली भेद मालुम हो जायगा!

इन्द्र०। जरूर ऐसा होगा, और अब मुझे जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह की विशेष हिफाजत करनी पड़ेगी।

भैया०। बेशक और अगर तुम ऐसा न करोगे तो बेढब धोखा खाओगे और पछताओगे। भूतनाथ* मामूली आदमी नहीं है। हां यह तो बताओ कि जब तुमने उसे भूतनाथ समझ ही लिया तो गिरफ्तार क्यों नहीं किया?

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) इसका जवाब मैं क्या दूं? आप मेरी प्रतिज्ञा तो जानते ही हैं कि मैं अपने हाथ से उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुंचाऊंगा क्योंकि अपनी जुबान से उसे 'मित्र' कह चुका हूं।

भैया०। मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा को जानता हूं मगर तुम प्रभाकरसिंह इत्यादि किसी दूसरे के हाथ से उसका भण्डा फोड़ सकते थे।

इन्द्र०। ठीक है, मगर मैं अपने मकान के अन्दर किस तरह ऐसा कर सकता था! यों तो प्रभाकरसिंह तथा जमना और सरस्वती वगैरह सभी कोई उससे बदला लेने की कोशिश कर रहे हैं और मैं उन सभों की मदद भी कर रहा हूं मगर फिर भी........

---

* पाठकों के सुभीते के लिए हम गदाधरसिंह को सब जगह भूतनाथ के नाम से लिख रहे हैं मगर समझ रखना चाहिए कि अभी तक लोग उसे गदाधरसिंह ही के नाम से सम्बोधन कर रहे हैं और उसने भी अभी अपना नाम भूतनाथ नहीं रक्खा है।

भैया० । तुम समर्थ हो और जो चाहो कर सकते हो मगर अब मेरी यह तिलिस्मी झिल्ली भी बेकार हो गई जिसके सबब से पुनः धोखा ही नहीं होगा बल्कि भूतनाथ भी देखते ही मुझे पहिचान लेगा ।

इन्द्र० । नहीं ऐसा न होगा, मैं इसके लिए दूसरा प्रबन्ध करूंगा और आपको दूसरे प्रकार की झिल्ली दूंगा । खैर, यह तो बताइये कि जमानिया महल के अन्दर आप अपनी स्त्री से मिलने के लिये गए थे या नहीं और अगर गए तो वहां क्या कैफियत हुई तथा मेरा शागिर्द आपकी कुछ मदद कर सका या नहीं ?

भैया० । तुम्हारे शागिर्द परमानन्द ने मेरी बड़ी मदद की और अभी तक भी मेरे ही काम में लगा हुआ है । पहिले दिन जब मैं अपनी स्त्री के पास गया तब जान बूझ कर ऐसी कार्रवाई की कि महल की औरतों को इस बात का शक पड़ गया कि यहां कोई गैर आदमी आया अथवा आता है । धीरे धीरे यह बात भाई साहब के कान तक पहुँची और चोर को अर्थात् मेरी गिरफ्तारी का प्रबन्ध किया गया तथा चारो तरफ पहरा बैठाया गया । दारोगा को विश्वास हो गया कि महल के अन्दर भैयाराजा ही छिप कर गया था और फिर भी जायगा अस्तु उसने भी ऐसा प्रबन्ध किया कि अगर मैं गिरफ्तार होऊं तो सीधे दारोगा के पास पहुंचाया जाऊं।

इन्द्र० । (मुस्कुराते हुए) यह कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वहां का सभी आदमी अदने से लेकर आला तक दारोगा का ताबेदार बना हुआ है।

भैया० । ठीक है, अस्तु मैंने परमानन्द से सलाह करके एक विचित्र कार्रवाई की और अपनी स्त्री को भी इस कार्रवाई से होशियार कर दिया जिसमें समय पर वह किसी बात की चिन्ता न करे ।

इन्द्र० । वह क्या कार्रवाई हुई ?

भैया० । दारोगा के एक आदमी को जिसका नाम हरी था परमानन्द ने धोखा देकर गिरफ्तार किया और बेहोशी की हालत में उसे मेरी सूरत का बनाया, इसके बाद स्वयं वह (परमानन्द) मेरी सूरत बन कर हरी की

गठरी पीठ पर लादे रात के समय मेरे साथ महल वाले नजरबाग के अन्दर पहुंचा। यह काम बड़ी आसानी से हो गया क्योंकि वहां के पहरे पर जो लोग मुकर्रर किये गये थे उनमें मेरे पक्षपाती भी कई आदमी थे जिनसे परमानन्द ने पहिले ही बातचीत करके केवल सब बातें ही नहीं तै कर रक्खी थीं बल्कि मेरी तरफ से उन लोगों को बहुत कुछ इनाम भी दिया था। खैर, बेहोश हरी तो पेड़ों को एक झुरमुट में डाल दिया गया और मैं कमन्द लगा कर महल के ऊपर चढ़ गया। दारोगा के पक्षपातियों को यह कब मंजूर हो सकता था कि मैं ऊपर महल ही में गिरफ्तार होकर राजा साहब के पास पहुंचा दिया जाऊं, वे लोग तो यही चाहते थे कि मैं बाग में गिरफ्तार होऊं और सीधे दारोगा के पास पहुंचा दिया जाऊं अस्तु वे सब चुप रहे और मेरे लौट आने का इन्तजार करने लगे। थोड़ी देर के बाद जब मैं पलट कर नीचे आया तब उन लोगों ने हल्ला मचाया और मुझे गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगे। ऐसे समय में क्या करना होगा सो पहिले ही से परमानन्द ने मुझे समझा रक्खा था और मैंने उसी के कहे मुताबिक काम भी किया। मुख्तसर यह कि मैं उन सभों से लड़ता हुआ एक आड़ की जगह में चला गया जहां परमानंद छिपा हुआ था और वहां से परमानंद बड़ी चालाकी से निकल कर मेरे बदले में उन लोगों से लड़ने लगा। दुश्मनों को इस बात का कुछ भी पता न लगा, मैं बड़ी आसानी के साथ बाग के बाहर निकल कर आड़ में हो गया और परमानन्द के आने का इन्तजार करने लगा, उधर परमानंद ने यह किया कि लड़ते लड़ते भाग कर उस झाड़ी के अन्दर घुसा और तब कहीं और निकल गया जिसमें बेहोश हरी को छोड़ आया था। दुश्मन लोग जब वहां पहुंचे तो हरी को देख कर खुश हो गये और उसी को भैयाराजा मान कर उठा ले गये, इसके बाद परमानन्द भी बाग के बाहर निकला और मेरे पास आ पहुंचा, इसके आगे क्या हुआ सो मैं नहीं कह सकता कि दारोगा ने मेरे धोखे में हरी को मार डाला या और कुछ किया।

भैयाराजा की कथा सुन सब कोई हंसने लगे और तब देर तक दारोगा के बेवकूफ बनने की बातें करते रहे जिसके बाद पुनः भूतनाथ के विषय में बातें आरम्भ हुईं।

भैया०। अब तो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह तथा जमना इत्यादि को आपके यहां देख ही लिया है जिससे वह यह भी समझ ही गया होगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को उसके कब्जे से छुड़ा कर उसी के शागिर्दों को फंसाने वाले इन्द्रदेव ही थे.......

इन्द्र०। (बात काट कर) नहीं नहीं, इस बात का निश्चय उसे नहीं होगा, हां भ्रम बना रहे तो नहीं कह सकता, और अगर वह ऐसा मान भी ले तो मैं कुछ परवाह नहीं करता क्योंकि उसके और दारोगा के बीच में अब सुलह नहीं हो सकती।

भैया०। सो ठीक है मगर......

इन्द्र०। इसके अतिरिक्त जमना सरस्वती और इन्दुमति के लिए भी मैं दूसरा प्रबंध करूंगा, हां प्रभाकरसिंह जरूर अब स्वतंत्र होना चाहते हैं और इनका इरादा है कि ये स्वयं भी भूतनाथ का मुकाबला करें।

प्रभाकर०। बेशक मेरा यही इरादा।

भैया०। (इन्द्रदेव से) कोई चिन्ता नहीं, इन्हें किसी तरह की मदद देकर छोड़ दो। तुमने इन्हें कुछ ऐयारी भी तो सिखाई है, देखना चाहिये उस मेहनत का क्या फल लाते हैं।

इन्द्र०। मेरी भी यही राय है; परंतु यह तो बताइये कि आप अब क्या कीजियेगा ? भूतनाथ पर आपका भेद खुल गया है, अब वह निःसंदेह आपका पीछा करेगा और चाहेगा कि आपकी सूरत बन कर अपना काम निकाले, इसलिये मैं तो यही राय दूंगा कि अब आप प्रगट हो जाइये, कहीं ऐसा न हो कि धोखे में आपको नुकसान पहुंच जाय।

भैया०। नहीं मैं अभी प्रगट न होऊंगा और मुझे भूतनाथ का

कोई खौफ हो, फिर भी मैं तुमसे कहूंगा कि मैंने अपने लिये क्या सोच रक्खा है और इस बारे में राय भी लूंगा।

इसके बाद बहुत देर तक उन सभों में बातें होती रहीं जिसे इस जगह बयान करने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती। संध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब भैयाराजा घोड़े पर सवार हो इन्द्रदेव के कैलाश-भवन से निकले और बाहर की तरफ रवाना हुए। इस समय उनका चेहरा किसी और ही ढंग का बना हुआ था। देखा चाहिए कि अब इनसे और भूतनाथ से कैसी बनती है जो बड़ी देर से घात में बैठा हुआ इनके लौटने का इन्तजार कर रहा है।

भैयाराजा जब इन्द्रदेव के कैलाश-भवन से निकल कर रवाना हुए तो उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि भूतनाथ मेरी ताक में लगा हुआ है और आज ही हमला करेगा, अस्तु वे बेफिक्री के साथ धीरे धीरे अपने नियत स्थान की तरफ जाने लगे। कैलाश-भवन से बाहर निकलने में भूतनाथ का और इनका कई घण्टे का फासला पड़ चुका था जिससे इस बीच में भूतनाथ को कई तरह की कार्रवाइयां करने का मौका मिल गया और उसने बड़े विचित्र ढंग का जाल इनको फँसाने के लिए फैला डाला।

सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे और उनकी चलाचली के कारण आसमान के पश्चिम तरफ यद्यपि गहरी लालिमा छा रही थी तथापि बादल के छोटे बड़े टुकड़े पूरब की तरफ से उमड़ कर हवा की मदद पा आकाश में दौड़ लगाते हुए पश्चिम की तरफ इस तरह धावा कर रहे थे मानो उस गहरी लालिमा को बात की बात में अपनी स्याह चादर के अन्दर छिपा लेंगे और फिर इस बात का पता भी न लगने देंगे कि भगवान अस्ताचल को प्राप्त कर चुके या नहीं अथवा उनको इस अनित्य संसार से मुंह फेरे कितनी देर हो गई जिसे लोग नित्य कह कर भी मानते हैं और जिसमें स्वयं भगवान ही के अस्तित्व में बाधा डालने वाले तरह तरह का रूप धारण किए हुए बहुत से दल अपने कच्चे सूत का बनाया हुआ जाल पक्का समझ कर फैलाने

की कोशिश कर रहे हैं तथा भविष्य में भी जाल बनाने के लिए धूल की रस्सियां बट रहे हैं और यह नही समझते कि उनकी यह निर्वीर्य रस्सियां उस सगुण के अटूट गुण (डोरी) के आगे कुछ भी हकीकत नहीं रखतीं जिसमें गुथे सैकड़ों हजारों बल्कि लाखों ब्रह्माण्ड इस तरह ठीक रास्ते पर घूम रहे हैं कि सूत बराबर भी इधर उधर हटने की हिम्मत नहीं कर सकते।

थोड़ी ही देर बाद हवा तेजी के साथ चलने लगी और धीरे धीरे उसका जोर बढ़ता ही गया। क्या पत्थरों के बड़े बड़े कुदरती ढेर अर्थात् पहाड़ अपनी छाती पर टक्कर लेकर उसका जोर तोड़ नहीं सकते हैं? नहीं, बल्कि उनके इस काम से हवा को और मदद मिलती है और वह पहाड़ों से टक्कर खाकर और भी नाचने लगती है जिससे पथिकों के पथ में बेतरह बाधा पड़ जाती है और धूल से आंखें बन्द हो जाने के कारण उन्हें एक कदम भी आगे चलना कठिन हो जाता है।

मौसिम के यकायक इस तरह पर पलट जाने से भैयाराजा को बड़ा ही कष्ट हुआ और वे सोचने लगे—"अगर इस तरह शीघ्र ही मौसिम के बिगड़ जाने की मुझे खबर होती तो कदापि कैलाश-भवन के बाहर पैर न निकालता।" मगर अब पलट कर पुनः इन्द्रदेव के घर जाना भी उन्हें उचित नहीं जान पड़ता था क्योंकि अपने खयाल से वे आधा रास्ता तै कर चुके थे।

अब गहरे बादलों के छा जाने से बिल्कुल अन्धकार हो गया, यहां तक कि उस चन्द्रमा की रोशनी का भी लेशमात्र पता नहीं लगता था जिसके भरोसे पर बिना रोशनी का कोई इन्तजाम किये ही भैयाराजा चल खड़े हुए थे और समझ चुके थे कि रास्ते में किसी तरह की बाधा न पड़ेगी, मगर अब वे कर ही क्या सकते थे। लाचार तरह तरह की बातें सोचते हुए वे धीरे धीरे जाने लगे परन्तु इस विचार में भी थे कि कहीं ठिकाना मिले तो थोड़ी देर के लिये ठहर जांय।

किसी कवि ने सच कहा है कि 'अन्धेरी रात चोरों ऐयारों बदमाशों और लुच्चों की सहायक होती है।' अस्तु भूतनाथ को भी यह मुफ्त की

सहायता मिल गई जिससे उसने सहज ही में अपने दिल का अरमान निकाल लिया।

धीरे धीरे पानी बरसने लग गया और हवा की सहायता पाकर क्रमशः उसका जोर बढ़ने लगा जिससे भैयाराजा को चलने में और भी कठिनता हो गई। अन्धकारमय रात, हवा का सन्नाटा, पानी का बरसना और पहाड़ी रास्ता जहां दिन को भी आदमी धोखा खाकर रास्ता भूल सकता है ऐसे दुःखदायी समय का तो कहना ही क्या है! भैयाराजा दुःखित होकर एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। अगर कहीं फूस की कुटिया भी मिल जाती तो उसे हम आनन्द-भवन समझ लेते और इस समय प्राण बचा कर किसी तरह ग्रहदशा के कई घण्टे बिता अपने घर का रास्ता लेते, परन्तु उस बीहड़ स्थान में आराम लेने के लिए कुटिया या झोपड़ी कहां, और अगर कहीं हो भी तो दिखाई देना उसका कठिन था, अस्तु लाचार उसी पेड़ के नीचे पानी की बौछार और हवा के थपेड़े खाते हुए भैयाराजा कुछ देर तक खड़े रह कर तरह तरह की बातें सोचते रहे। इसी बीच में उन्हें किसी सवार के आने की आहट मालूम हुई। कुछ दिखाई न देने पर भी उन्होंने उस तरफ देखा और कान लगा कर उस आहट का अन्दाज लेने लगे। मालूम होता था कि हवा और पानी से दुःखी होकर वह सवार भी अपनी इच्छानुसार घोड़े को नहीं चला पाता मगर फिर भी बनिस्बत भैयाराजा के तेजी के साथ ही चला आ रहा है, हां थोड़ी थोड़ी दूर पर ठहर जाता है और जब बिजली चमकती है तो उसकी रोशनी में चारो तरफ देख कर फिर आगे बढ़ रहा है।

कुछ ही देर में वह सवार भी उसी पेड़ के पास आकर खड़ा हो गया जिसके नीचे भैयाराजा ठहरे हुए थे। जब बिजली चमकी तो उसकी रोशनी में उसने भैयाराजा को देखा और शीघ्रता से उनके पास आकर बोला, "मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि आपको आज के सफर में बेहिसाब तकलीफ उठानी पड़ी। अगर मुझे इसका कुछ भी अन्दाजा मिला

होता तो आज मैं आपको अपने घर से कदापि बिदा न करता !"

भैया०। कौन है, इन्द्रदेव ?

सवार०। जी हां मैं इसीलिए दौड़ा चला आ रहा हूं कि आपको वापस ले जाऊं या फिर इसी रास्ते में कोई ऐसी जगह बता दूं जहां आप आराम से कई घण्टे रह कर इस बुरे मौसिम को टाल सकें, क्योंकि यह रास्ता मेरा अच्छी तरह देखा हुआ है और पास की पहाड़ियों की कई गुफा और कन्दराओं को भी मैं अच्छी तरह जानता हूं तथा एक ऐसे मकान का भी मुझे पता है जो यहां थोड़ी ही दूर पर उजाड़ पड़ा हुआ है और कई जगह से टूट फूट जाने पर भी इस समय हमलोगों की बखूबी रक्षा कर सकता है।

भैया०। (प्रसन्न होकर) अगर ऐसी बात है तो शीघ्र उसी मकान की तरफ चलो, इस आंधी और पानी से मैं बेतरह दुःखी हो रहा हूं और सर्दी से कांप रहा हूं।

सवार०। (अपने चारजामे के पास से एक दुशाला उठा कर और भैयाराजा को देकर) लीजिए इसे ओढ़ लीजिए, यह आपकी पूरी तरह से रक्षा करेगा, आप ही के लिए मैं इसे घर से लिए आ रहा हूं।

खुशी खुशी भैयाराजा ने वह दुशाला ले लिया और ओढ़ कर उस सवार के साथ चलने के लिए तैयार हो गये। सवार उनको लिए हुए उत्तर की तरफ रवाना हुआ और बहुत जल्दी एक चहारदीवारी के फाटक पर जा पहुंचा। इस समय इस स्थानका नक्शा खींचना बहुत ही कठिन होगा क्योंकि अन्धकार के कारण कुछ भी मालूम नहीं होता कि यह चाहारदीवारी कैसी है, हर तरह से दुरुस्त है या टूटी फूटी है, अथवा इसके अन्दर बिल्कुल ही उजाड़ खण्डहर है या कुछ कोठरियां या दालान इत्यादि भी मौजूद हैं।

फाटक पर घोड़ा रोक कर सवार ने भैयाराजा से कहा, "अब आप यहां पर उतर पड़िये, इस फाटक के अन्दर चलने पर आपको बहुत आराम मिलेगा !"

भैया०। (धीमे स्वर में) अच्छा मैं उतरने की कोशिश करता हूं,

तुम्हारे इस दुशाले ने यद्यपि मुझे सर्दी से बचाया मगर मेरे दिमाग को खराब कर दिया। इसमें से एक विचित्र प्रकार की सुगंध आ रही है जिससे बेहोशी की दवा का असर हो रहा है। मालूम होता है कि मैं बहुत जल्द बेहोश हुआ चाहता हूं, घोड़े से उतरने की भी ताकत मुझ में नहीं है, लेकिन क्या तुम वास्तव में इन्द्रदेव हो? (और धीरे से) नहीं नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इन्द्रदेव हो, अफसोस......

सवार०। आपका खयाल बहुत दुरुस्त है, मैं वास्तव में इन्द्रदेव नहीं हूं, ऐसी अवस्था में मैं आपसे अपना नाम छिपाना पसन्द नहीं कर सकता अस्तु ठीक ठीक बता देता हूं कि मैं गदाधरसिंह हूं और आप अब मेरे कब्जे में आ चुके हैं।

भैया०। अफसोस, अफसोस, दिल की दिल ही... में.... रह....!

इतना कहते कहते भैयाराजा घोड़े पर से नीचे भुक पड़े। भूतनाथ ने जो पहिले ही घोड़े पर से उतर चुका था हाथ के सहारे से उन्हें सम्हाला और अपने कब्जे में कर लिया। इसके बाद उसने जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कर कुछ आदमी वहां आ पहुंचे और सब कोई मिल जुल कर भैयाराजा को खण्डहर के अन्दर ले गये।

सोलहवां बयान

भैयाराजा को अब जिस स्थान में भूतनाथ ले गया वह यद्यपि खंडहर कहा जाता था परन्तु उसमें दो दालान और तीन चार कोठरियां ऐसी थीं कि जिनकी मजबूती में अभी तक किसी तरह का खलल नहीं आया था, तथा उस इमारत की चारदीवारी भी अभी तक अपनी आधी हैसियत के साथ मौजूद थी जिसमें लगा हुआ बिना दरवाजे का फाटक दिखाई दे रहा था।

भूतनाथ ने भैयाराजा को एक कोठरी के अन्दर ले जाकर लिटा दिया और शागिर्दों सहित स्वयम् बाहर वाले दालान में बैठ कर अपने अनूठे मामलों पर विचार करने लगा। कदाचित् उसने निश्चय कर लिया था कि

जब आप से आप भैयाराजा की बेहोशी दूर होगी तभी उनसे बातचीत करेगा क्योंकि इस समय उनकी बेहोशी दूर करने के लिए उसने कोई कार्रवाई नहीं की।

हम ऊपर लिख आये हैं कि भैयाराजा की सूरत ऐयारी ढंग पर बदली हुई थी फिर भी भूतनाथ ने उन्हें अच्छी तरह पहिचान लिया। यद्यपि बेहोश करके भूतनाथ ने उन पर कब्ज कर लिया है, परन्तु उनके हाथ पैर खुले ही छोड़ दिये हैं।

तमाम रात बीत जाने के बाद जब भैयाराजा की बेहोशी दूर हुई तो उन्होंने अपने को एक मामूली कोठरी में पड़े हुए पाया। चूंकि बेहोश होने के पहिले ही उन्हें मालूम हो चुका था कि भूतनाथ ने ही धोखा देकर उन्हें अपने कब्जे में किया है इसलिये इस समय बेहोशी दूर होने के साथ ही उन्हें वह बात याद आ गई और वह आश्चर्य के साथ इधर उधर आंखें दौड़ा कर भूतनाथ को खोजने लगे। भूतनाथ यह देखते ही फौरन उनके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "शायद आप मुझे खोज रहे हैं?" हम यह लिखना भूल गये कि भूतनाथ ने उनके चेहरे पर से वह नवीन झिल्ली भी उतार ली थी।

भैया०। हां बेशक ऐसा ही है, और सब से पहिले मैं तुमसे यही पूछा चाहता हूं कि तुमने मुझे कैद कर के भी खुला क्यों छोड़ रक्खा है तथा मेरे साथ दुश्मनी करने पर क्यों कमर बांधी है?

भूत०। खुला इसलिये छोड़ा है कि मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी नहीं है और सिर्फ अपना एक छोटा सा काम निकालने के लिये ही मैं आपको यहां ले आया हूं।

भैया०। वह कौन सा काम है जो मुझे सता कर तुम निकाल सकते हो?

भूत०। नहीं नहीं, मैं आपको जरा भी सताना नहीं चाहता बल्कि सिर्फ इतना ही चाहता हूं कि आप किसी एक ठिकाने बैठे रहें और मैं आपकी सूरत बन कर अपना काम निकाल लूं।

भैया० । (कुछ सोच कर) खैर कम से कम यह तो मालूम होना चाहिए कि वह काम कौन सा है ?

भूत० । जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को इस दुनिया से उठा देना यही एक काम है जिसके लिये मैं तरह तरह की तकलीफें उठा रहा हूं और मुझे दारोगा ऐसे कमीने आदमी की खुशामद करनी पड़ती है।

भैया० । दारोगा तुम्हारा दोस्त है, वह अपनी जान पर खेल कर तुम्हारी मदद करता है, उसी ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को तिलिस्म से निकाल कर तुम्हारे हवाले किया, उसी ने तुम्हारी इच्छानुसार सब कार्रवाइयां कीं, यहां तक कि तुम्हारे ही सबब से मुझे मारने के लिए तैयार हो गया, फिर भी तुम उसे कमीना क्यों कहते हो ?

भूत० । आपका कहना ठीक है मगर मेरे काम के लिए उसने आपको मारना नहीं चाहा था बल्कि अपनी भलाई के लिए ऐसा किया था और जो आदमी अपने मालिक को मारने में संकोच न करे उसे कमीना नहीं तो और क्या कहा जाय ?

भैया० । (मुस्कुरा कर) इस इल्जाम से तो तुम भी नहीं बच सकते, दयाराम के साज जो कुछ सलूक तुमने किया सो तो जाहिर ही है और अब उनकी औरतों के साथ जो कुछ किया चाहते हो वह भी मालूम हो गया । बात यह है कि तुम और दारोगा दोनों एक ही मिट्टी के बने हुए हो, तुमसे बढ़ कर वह और उससे बढ़ कर तुम हो !

भैयाराजा की बातें सुन कर भूतनाथ लाजवाब तो हो गया मगर क्रोध से उसकी आंखें सुर्ख हो आईं, कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला—

भूत० । आप इस वक्त हर तरह से मेरे कब्जे में होकर भी ऐसी कड़वी बातें कहते हैं कि मुझे ताज्जुब होता है।

भैया० । बात जो कुछ थी वह मैंने सच सच कह दी, अब चाहे तुम्हें कड़वी मालूम पड़े या मीठी । खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, तुम और दारोगा जैसे हो उसे मैं खूब पहिचानता हूं, अब जो कुछ तुम्हारे जी

में आवे करो और मेरी सूरत बन कर जो कुछ काम निकाला चाहते हो निकालो, देखूं तुम अपने काम में क्योंकर कृतकार्य होते हो।

भूत०। खैर जैसा होगा देखा जायगा, अगर आप सीधी तरह से तीन चार दिन तक मेरे कब्जे में रहना पसन्द करेंगे तो आपको बड़ी स्वतन्त्रता के साथ रखूंगा, नहीं तो आपको हथकड़ी और बेड़ी की तकलीफ उठानी पड़ेगी।

भैया०। जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूंगा, मगर यह तो बता दो कि मुझे कहां कैद करोगे, इसी मकान में या किसी और जगह?

भूत०। आज दिन भर तो आपको इसी मकान में रहना पड़ेगा मगर रात होने पर मैं आपको एक दूसरे मकान में ले चलूंगा।

भैया०। बहुत अच्छा, तो अब मेरे नहाने धोने का बन्दोबस्त होना चाहिये, मैं समझता हूं कि मैदान जाने के लिए आप मुझे इस चहार-दीवारी से बाहर तो जाने ही न देंगे?

भूत०। नहीं।

भैया०। अच्छा तो इस खण्डहर की कोठरियों में घूमने की तो इजा-जत मिलेगी?

भूत०। इस खण्डहर के अन्दर आप जो चाहे कर सकते है, कूआं और पानी खींचने का सामान भी यहां मौजूद है।

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया। भैयाराजा अपनी जगह से उठ खड़े हुए और उस खण्डहर में जो कुछ कोठरियां थीं उन्हें अच्छी तरह से घूम घूम कर देखने लगे। भूतनाथ और उसके दो तीन साथी भी भैया-राजा के पीछे पीछे फिरते रहे। इसी तरह घूमते हुए भैयाराजा एक ऐसी कोठरी में पहुंचे जिसमें अभी तक लोहे का दर्वाजा मौजूद था। यहां पर उन्होंने भूतनाथ से कहा, "अगर आप आधे घण्टे के लिए मुझे इस कोठरी में अकेले छोड़ दें तो बड़ी मेहरबानी होगी।" भूतनाथ ने भैयाराजा को यह बात मंजूर कर ली और कहा, "आप जितनी देर तक चाहें इसमें बैठ

सकते हैं, मगर मैं खूब जानता हूं कि अन्दर से किवाड़ बन्द करके आप बहुत देर तक इसमें आराम न कर सकेंगे।"

इतना कह कर भूतनाथ अपने दो साथियों को दर्वाजे के बाहर बैठने का इशारा करके वहां से चला गया और भैयाराजा ने उस कोठरी के अंदर जाकर मामूली तौर पर उसका दर्वाजा भिड़का दिया।

दो घण्टे के बाद भूतनाथ अपने जरूरी कामों से छुट्टी पाकर उस कोठरी के दर्वाजे पर आया और भैयाराजा को होशियार करने की नीयत से नाखून से दर्वाजे को खटखटाया, जब कुछ जवाब न मिला तो दर्वाजे को धक्का दिया। भूतनाथ का खयाल था कि दर्वाजा अन्दर से बन्द होगा मगर ऐसा न था, धक्का देने के साथ ही दर्वाजा खुल गया मगर भैयाराजा पर निगाह न पड़ी जिसके कारण भूतनाथ कोठरी के अन्दर चला गया और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

यह कोठरी बहुत बड़ी न थी। इसकी दीवार और जमीन एक किस्म के सुर्ख पत्थर से बनी हुई थी, दीवारों में आले या आलमारी का कोई निशान तक न था। भूतनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी कोठरी में से भैयाराजा यकायक क्योंकर गायब हो गये। बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद भूतनाथ ने कमर से खञ्जर निकाला और उसके कब्जे से हर तरफ की दीवार ठोंक ठोंक कर टोह लेने लगा कि कहीं से दीवार पोली तो नहीं है।

भूतनाथ का यह काम पूरा नहीं होने पाया था कि यकायक कोठरी का दर्वाजा बन्द हो गया और अन्दर बिलकुल अन्धकार हो जाने के कारण भूतनाथ घबड़ा उठा, टटोलता हुआ दर्वाजे के पास आया और खोलने की कोशिश करने लगा। अन्दर से भूतनाथ दर्वाजे को जंजीर पकड़ कर खींचता था और बाहर से उसके शागिर्द लोग धक्का देकर दर्वाजा खोला चाहते थे मगर किसी की भी मेहनत ठिकाने न लगी और अन्त में भूतनाथ दुःखी होकर जमीन पर बैठ कर तरह तरह की बातें सोचने लगा। "क्या यह

कोठरी किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखती है, या यह टूटा फूटा मकान ही कोई तिलिस्म है ? अगर ऐसा है तो जरूर भैयाराजा को इसके भेद मालूम है। अफसोस, मुझसे बड़ी भूल हुई जो भैयाराजा को इस खंडहर में ले आया ! तो क्या अब मैं इस कोठरी में अकाल-मृत्यु का शिकार बनूंगा ? नहीं नहीं, मेरे पास खंजर है जिससे इस कोठरी की दीवार में सूराख कर सकता हूं, यद्यपि इस लोहे के दर्वाजे को खोलना असम्भव है।"

इतना सोच कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और खंजर से दीवार में संध लगाने की कोशिश करने लगा। मगर लगातार दो घण्टे मेहनत करने बाद उसे निश्चय हो गया कि यह काम किसी तरह भी पूरा न हो सकेगा क्योंकि कुछ पत्थर और ईंट के टुकड़े निकालने के बाद मालूम हुआ कि दीवार में लोहे की फौलादी चादर लगी हुई है जिस पर खंजर का कुछ भी असर नहीं हो सकता था। पुनः हताश होकर भूतनाथ जमीन पर बैठ गया और अपनी बेवकूफी पर अफसोस करने लगा।

बाहर भी उसके शागिर्दों ने अपने उस्ताद को इस कैद से छुड़ाने के लिए कोशिश करने में कोई बात उठा न रक्खी, दीवार तोड़ने के लिए कोशिश की और छत तोड़ने के लिए भी बेहिसाब पसीना बहाया मगर सफल मनोरथ न हुए और अन्त में लाचार होकर दर्वाजे के साथ मुंह लगा कर भूतनाथ से बातचीत करने लगे।

दुनिया में लालची लोभी पापी और ऐयाश आदमियों को अपनी जान बहुत प्यारी होती है। जिन्हें लालच नहीं है और जो दुनियादारी में अपने को नहीं फंसाये रहते उनको अपनी जान की कुछ भी परवाह नहीं रहती। मौत से डर उन्हीं को लगता है जिनके काम खोटे रहते हैं और जिनको मालूम होता है कि हमने अपनी जिन्दगी में कोई काम अच्छा नहीं किया, न तो किसी के साथ उपकार किया और न किसी के आड़े वक्त में काम आये। इसी तरह भूतनाथ की जिन्दगी की बही में पापों की रोकड़ जैसे बढ़ती जाती है तैसे तैसे उसे अपनी जान प्यारी होती जाती है, इसके विपरीत

दूसरों की जान को वह मच्छड़ और खटमल की जान के समान समझता जाता है। एक पाप को छिपाने के लिए उसे दूसरे पाप की जरूरत पड़ी और दूसरे के लिए तीसरे की। अस्तु समझ लेना चाहिए कि इस कोठरी में बन्द हर तरह से लाचार भूतनाथ कैसी बातें सोच रहा होगा।

दिन बीत गया और आधी रात भी गुजरने पर आ गई। उस समय भूतनाथ अपनी जिन्दगी से एक दम हताश होकर उच्च स्वर में ईश्वर से प्रार्थना करने और कहने लगा, "हे जगन्नियन्ता जगदीश्वर जगदीश्वर, मेरे अपराधों को क्षमा कर क्योंकि तू दीनानाथ दीनबन्धु और दयालु है। मैं निश्चित रूप से प्रतिज्ञा करता हूं कि भविष्य में किसी की आत्मा दुखी न करूंगा और न कोई ऐसा काम करूंगा कि जिससे लोग मुझे प्रयश्चित्ती कहें या मैं समाज में मुंह दिखाने के लायक न रहूं। जो कुछ अपराध मैं कर चुका हूं अब न तो उसके छिपाने की कोशिश करूंगा और न निरपराधिनी अबला जमना सरस्वती और इन्दुमति के खून का ग्राहक ही बनूंगा तथा......"

भूतनाथ और कुछ कहा ही चाहता था कि उस कोठरी के एक कोने में से आवाज आई, "ओ दुष्ट, चुप रह! क्या तू ईश्वर को भी धोखे में डाला चाहता है!"

इस आवाज ने भूतनाथ को चौंका दिया और वह आंखें फाड़ फाड़ कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी, मगर अन्धकार इतना ज्यादा था कि उसकी तेज आंखें भी कुछ काम न कर सकीं। अफसोस कि इस वक्त ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था, नहीं तो वह जरूर सामान निकाल कर रोशनी करता और देखता कि उसकी बातों का जवाब देने वाला कौन है। भूतनाथ ने उठ कर टटोलना और उस तरफ जाना भी मुनासिब न समझा जिधर से आवाज आई थी अस्तु उसने गुप्त मनुष्य की बात का इस तरह उत्तर दिया—

भूत०। नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सच्चाई में किसी तरह भी

फर्क नहीं पड़ सकता । मैं यहां तक तैयार हो चुका हूं कि अपने ऐयारी के फन को भी तिलांजुली दे दूंगा और दुनिया से एकदम किनारे हो जाऊंगा।

गुप्त० । नेकी और नेकनीयती के साथ रहने वाले को दुनिया छोड़ने को कोई जरूरत नहीं। अच्छा तेरी इस समय की प्रार्थना स्वीकार की जायगी अगर तू आजमाने में सच्चा ठहरेगा, देख मेरी तरफ !!

इसी समय कोठरी में चांदना हो गया और साक्षात् शिव की तरह त्रिशूल और डमरू लिये एक अपूर्व मूर्ति का भूतनाथ को दर्शन हुआ। भूतनाथ ने मुश्किल से देखा कि उस त्रिशूल में से बेहिसाब रोशनी निकल रही है और वह रोशनी इतनी कड़ी और तेज है कि उसकी तरफ आंख नहीं ठहरती। शिवरूपी महात्मा ने आगे बढ़ कर भूतनाथ के बदन से वह त्रिशूल लगा दिया जिससे भूतनाथ कांप उठा और एक दम बेहोश होकर जमीन पर लेट गया।

सत्रहवां बयान

भूतनाथ को बेहोशी जब दूर हुई तो उसने अपने को एक हरे भरे सुन्दर बाग में नर्म नर्म घास के ऊपर पड़े पाया। फूलों की मीठी मीठी खुशबू उसके दिमाग को मुअत्तर कर रही थी और पश्चिम तरफ आसमान पर अस्त होते हुए सूर्य भगवान की लालिमा कह रही थी कि भूतनाथ अब उठ बैठो, अब यह गलफल की नींद सोने का समय नहीं है। भूतनाथ घबड़ा कर उठ बैठा और आश्चर्य की निगाह से चारो तरफ देखने लगा।

इस छोटे से बाग के तीन तरफ ऊंची दीवारें थीं और चौथी तरफ दोमंजिला बहुत खुबसूरत एक मकान बना हुआ था। बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा संगमर्मर का चबूतरा था जिस पर चार पांच औरतें बैठी हुई दिखाई दे रही थीं।

भूतनाथ की निगाह सब तरफ से घूमती हुई उस चबूतरे पर जा पड़ी जिस पर कई औरतें बैठी हुई थीं। भूतनाथ ने बारीक निगाह से उनकी

तरफ देखा और बोल उठा, "इनको तो मैं पहिचान गया हूं !" यह कहते ही वह उस चबूतरे के पास जा पहुंचा और देखा कि जमना सरस्वती इन्दुमति तथा हाथों में नंगी तलवार लिए और भी दो औरतें वहां बैठी हुई आपुस में कुछ बातें कर रही हैं। यद्यपि थोड़ी ही देर पहिले ईश्वर की प्रार्थना करता हुआ भूतनाथ कसम खा चुका था कि किसी को दुःख न देगा, मगर इस समय एकान्त में जमना सरस्वती और इन्दुमति को देख उसके मुंह में पानी भर आया और वह अपनी प्रतिज्ञा को एक दम भूल गया।

जमना सरस्वती और इन्दुमति ने भी भूतनाथ को देखा। चमक कर उठ खड़ी हुईं और आश्चर्य करती हुई भूतनाथ से पूछने लगीं —

जमना०। क्यों जो गदाधरसिंह, तुम यकायक यहां कैसे आ पहुंचे?

भूत०। इस बात को तो मैं खुद ही नहीं जानता !

जमना०। मगर मैंने तो सुना था कि तुम्हें भैयाराजा ने कैद कर लिया है और तुमने ईश्वर को साक्षी देकर कसम खाई है कि अब किसी के साथ भी बुराई न करोगे।

भूत०। (दबी जुबान से) हां सो तो ठीक है, मगर तुमने सुना नहीं कि बुद्धिमानों कथन है कि हजार कसम खा कर भी अगर दुश्मन को मार सके तो जरूर मारे।

सरस्वती०। ठीक है, कम हिम्मत बुजदिल और नामर्द बुद्धिमानों का जरूर यही कौल है।

भूत०। खैर मैं तुम्हारी बातों का जवाब देना मुनासिब नहीं समझता क्योंकि तुम मेरे मित्र और मालिक की स्त्री हो और मै तुमको भी मालिक ही के समान मानता हूं।

जमना०। (मुस्कुरा कर) ठीक है, तब ही तो तुमने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था और एकदम जहन्नुम में मिला देने के लिए तैयार हो गये थे।

भूत०। इस बिषय में तुम कोई भी सबूत नहीं दे सकती हो बलिक मैं

इस बात का सबूत दे सकता हूं कि तुमने मुझे सताने के लिए कैसे कैसे ढंग रचे थे जिनसे कि ईश्वर ही ने मुझे बचाया।

जमना०। हां इस बात से तो मैं किसी तरह भी इनकार नहीं कर सकती क्योंकि तू मेरे पति का घातक है।

भूत०। (क्रोध के साथ) बस यही बात तो मेरे कलेजे में खटकती है अगर तुम अपनी जुबान से ऐसा न कहा करती और तुम्हें इस बात का शक न होता तो मुझे तुम्हारे साथ दुश्मनी करने की कोई जरूरत ही न थी। तुम ही मुझे दुनिया में मुफ्त बदनाम और बर्बाद किया चाहती हो और सिवाय तुम्हारे और कोई भी मेरे माथे में कलंक का टीका नहीं लगा सकता क्योंकि वास्तव में मैं तुम्हारे पति का घातक नहीं हूँ। तुम मुझे मुफ्त में बदनाम करती हो और इसी बदनामी को दूर करने के लिए मुझे मजबूर होकर तुम्हारे साथ दुश्मनी करनी पड़ती है।

जमना०। अगर तुम इस बात का सबूत दे दो कि तुम वास्तव में मेरे पति के घातक नहीं हो तो मैं आज ही से तुम्हारे साथ दुश्मनी करने का ख्याल एक दम छोड़ दूं, मगर साथ ही इसके तुमको भी मेरे साथ का अपना बर्ताव बदल देना अर्थात दुश्मनी का ध्यान छोड़ देना पड़ेगा।

भूत०। मैं यह काम करने के लिए तैयार हूं।

सरस्वती०। बस तो सबूत देने में देर क्या है ?

भूत०। इतना ही कि मेरा ऐयारी का बटुआ मुझे मिल जाय।

जमना०। तुम्हारे ऐयारी के बटुए में कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम अपनी सफाई के सबूत में पेश कर सको।

भूत०। (आश्चर्य से) यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

जमना०। तुम्हारा बटुआ मेरे कब्जे में है, मैं उसे अच्छी तरह देख चुकी हूं।

भूत०। यह तो तुमने अच्छा नहीं किया !

जमना०। (मुस्कुरा कर) तुम दूसरे का सर्वस्व नाश कर दो तो कोई हर्ज नहीं मगर कोई दूसरा तुम्हारा ऐयारी का बटुआ किसी तरह ले ले तो

कहो 'बहुत बुरा किया' ! जिन भैयाराजा को तुमने धोखा देकर फंसाया था उन्होंने ही तुम्हारे बटुए पर कब्जा कर लिया था और अब वह मेरे पास मौजूद है।

जमना की बातें सुनते सुनते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने बिना इस बात का विचार किये ही कि मैं कहां हूं, किसके कब्जे में हूं और क्या कर रहा हूं उन तीनों पर हमला किया अर्थात् खंजर निकाल कर वार करने के लिए उन पर झपटा।

अठारहवां बयान

सुबह होने में अभी दो घन्टे की देर है। कृष्णपक्ष की दशमी है इस लिए अंधेरी रात का दौर बीत गया है और इस समय मन्द रोशनी फैलाते हुए चन्द्रमा आसमान पर दिखाई दे रहे हैं। काशी से तीन कोस की दूरी पर सारनाथ नाम का एक स्थान है और वहां दो ढाई सौ घरों की एक खासी बस्ती है। बस्ती के दाहिने किनारे एक साफ सुथरी सड़क है जो कि पटने से होती हुई बराबर काशी तक चली गई है। इसी सड़क पर से एक रथ जिसमें सुन्दर बैलों की जोड़ी लगी हुई है धीरे धीरे काशी की तरफ चला जा रहा है। मालूम होता है कि रथ बहुत देर से आ रहा है क्योंकि इसका हांकने वाला और इसके सवार अभी मीठी मीठी नींद में मस्त हो रहे हैं, यद्यपि आदत और नियम के अनुसार बैल बेचारे सीधी राह चले जा रहे हैं मगर हांकने वाले को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि सवारी अब कहां आ पहुंची है और जिस मुकाम पर हम जाने वाले हैं वह कितनी दूर रह गया है।

रथ हांकने वाले की उम्र कम से कम चालीस वर्ष की होगी। वह कद्दावर और हृष्ट पुष्ट आदमी था, घनी दाढ़ी ऊपर की तरफ चढ़ी हुई थी और स्याह मूछों ने उसका चेहरा रोआबदार बना रक्खा था। मोटा गज्जी का दोहरा अंगरखा और चुस्त पायजामा पहिने हुए था जिसके ऊपर

सुर्ख कपड़े का कमरबन्द कसा हुआ था और उसमें एक वजनी तथा चौड़े पाड़ का तेगा लटक रहा था।

जब यह रथ सारनाथ की बस्ती के पास पहुँचा तो एक चौकीदार ने हांकने वाले को आवाज देकर रोका और कहा, "ठहरो ठहरो, बताओ यह रथ कहां से आता है और कहां जायेगा ?"

हांकने वाले की पिनिक टूटी और उसने बैलों की रास खींच कर कहा, "भाई यह रथ काशी जायगा। तुम कौन हो (चारो तरफ देख कर) और इस बस्ती का क्या नाम है ?"

चौकीदार०। इस बस्ती का नाम सारनाथ है और हम यहां के चौकीदार हैं।

हांकने वाला०। (चौंक कर) वाह वाह तो हम सारनाथ पहुंच गए ! तो अब काशी यहां से थोड़ी ही दूर होगी ?

चौकीदार०। बस तीन ही कोस तो।

हांकने वाला०। (चन्द्रमा की तरफ देख कर) रात भी थोड़ी ही रह गई है, अच्छा अब हम तेज हांकते हैं जिसमें सवेरा होने के पहिले ही ठिकाने पहुँच जांय।

इतना कह कर उसने रथ हांकने की चेष्टा की मगर चौकीदार ने रोका और कहा—

चौकीदार०। ठहरो, पहिले यह बता दो कि इसमें सवार कौन कहां के रहने वाले और किस घराने के आदमी हैं ?

हांकने वाला०। इससे तुम्हें क्या मतलब ?

चौकीदार०। मतलब नहीं तो पूछते क्यों हैं !

हांकने वाला०। हम यह नहीं बता सकते कि इसमें कौन है।

चौकीदार०। (जोर से जफील बजा कर और कुछ ठहर कर) बिना बताए तुम यहां से कदापि आगे जाने न पाओगे।

हांकने वाला०। आखिर रोकने का कुछ सबब भी बताओगे या यों

ही जबर्दस्ती करोगे।

चौकीदार०। सबब तो हम नहीं कह सकते मगर इतना जरूर बता देंगे कि इस गांव के मालिक की यही आज्ञा है कि रात के समय बिना जांच किये कोई सवारी यहां से आगे न जाने पावे।

हांकने वाला०। इसमें जनानी सवारी है, इसलिए हम इसकी जांच नहीं करने देंगे ?

इतना कह हांकने वाले ने बैलों को चाबुक मारा और वहां से निकाल ले जाने की इच्छा की, मगर इस बीच चौकीदार की बजाई जफील की आवाज सुन कई आदमियों ने आकर उस रथ को घेर लिया था। इनमें आगे के लोग तो यद्यपि बैलों के खौफ से हट गये परन्तु सभों ने मिल कर बैल और हांकने वाले पर हमला किया और जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर लट्ठ चलाने लगे। हांकने वाले ने मजबूर होकर रथ को रोक लिया और हाथ में तेगा लेकर रथ के नीचे कूद दुश्मनों का मुकाबला बड़ी दिलावरी और बहादुरी के साथ करने लगा। थोड़ी ही देर में लोगों को मालूम हो गया कि यह रथ हांकने वाला मामूली आदमी नहीं है क्योंकि बात की बात में उसने कइयों के हाथ का लट्ठ बेकार कर दिया, कइयों की कलाई काट डाली, और कइयों को ऐसा जख्मी किया कि उनमें उठने की शक्ति न रही। परन्तु वह बलवान भी बेतरह चुटीला हो गया, उसकी बाईं कलाई लट्ठ की चोट से बेकार हो गई उसके मोढ़े जख्मी हो गये, और उसके सिर पर एक लट्ठ ऐसा बैठा कि सिर फट जाने के कारण खून का तरारा बह चला। इतने पर भी वह हिम्मत न हारता मगर दुश्मनों के चिल्लाने से वहां और भी कई आदमी लाठी लेकर आ पहुंचे और चौकीदार तथा उसके पक्षपातियों की मदद करने लगे, जिसे देख बहलवान हताश हो गया। वह पैतरा बदलता हुआ एक किनारे हो गया और तब लोगों को ऊंची आवाज में पुकार कर लड़ाई बन्द करने के लिए कहा, परन्तु वहां पर कुछ ऐसा हुल्लड़ मच गया था कि उसकी आवाज बड़ी मुश्किल से

लोगों ने सुनी और तब लड़ाई बन्द हुई, इस बीच वह इधर उधर चक्कर काटता हुआ अपने को बचाता रहा।

लड़ाई बन्द हो जाने पर एक आदमी ने कुछ आगे बढ़ कर रथ हांकने वाले से कहा, "तुमने हमारे कई आदमियों को व्यर्थ जख्मी कर दिया है तिस पर भी हम तुम्हारा कसूर माफ कर देंगे यदि अब भी तुम अपना और अपनी सवारी का ठीक ठीक परिचय दे दो!"

हांकने वाला०। इस रथ पर औरतें सवार हैं इसलिए हम इनका नाम बताने से हिचकते हैं।

आदमी०। आखिर इन औरतों का कोई मर्द तो होगा। तुम उन्हीं का नाम बताओ और मकान का पता दो तथा यह कहो कि रात के समय सफर करने का क्या कारण है?

हांकने वाला०। पटने के रईस सेठ ताराचन्द की स्त्री और लड़की इस रथ पर सवार हैं, कई कारणों से उन्होंने इन औरतों को अपने भाई के पास काशी भेजा है।

आदमी०। इतने बड़े रईस की औरतों को इस तरह अकेले सफर करते देख कर हम लोगों को आश्चर्य मालूम होता है तथापि थोड़ी देर के लिए हम तुम्हारी बात सच मानते हैं। परन्तु जब तक सूर्य उदय न हो ले तब तक के लिए तुम्हें यहां रुके रहना पड़ेगा।

हांकने वाला०। ऐसा क्यों?

आदमी०। यहां का यही नियम है।

हांकने वाला०। यहां रुकने से तो हमारा बड़ा हर्ज होगा और ऊपर से हमारे दुश्मन सर पर आ जायंगे जो हमारा पीछा कर रहे हैं और जिनके खौफ से हम रातो रात भागे जा रहे हैं।

चौकीदार०। (आगे बढ़ कर) इनकी यह बात मानने के लायक नहीं है, क्योंकि अगर इनको पीछा करने वाले दुश्मनों का खौफ होता तो ये बड़ी होशियारी और तेजी के साथ रथ को भगा कर लिए जाते मगर मैंने अच्छी

तरह देखा है कि रथ बहुत धीरे धीरे जा रहा था और ये (हांकने वाले) मीठी नींद सो रहे थे, या यों कह सकते हैं कि पिनिक ले रहे थे।

आदमी०। (चौकीदार को बोलने से रोक कर) खैर जाने दो, हम इस समय इन्हीं की बात मान लेते हैं और जवाब में यह कहते हैं कि अगर तुम्हारे दुश्मन पीछा करते हुए यहाँ आ जायंगे तो हम लोग तुम्हारी मदद करेंगे और उनसे लड़ेंगे, परन्तु सवेरा होने के पहिले तुम्हें यहां से आगे न जाने देंगे।

हांकने वाला०। खैर जब तुम ऐसा कहते हो तो हम रुक जाते हैं, मगर यह तो बताओ कि हमें रोक लेने से तुम्हें फायदा क्या होगा?

आदमी०। सो तुम्हें पीछे मालूम हो जायगा, इस समय हम इस बात का जवाब नहीं दे सकते।

हांकने वाला०। यह तो खासी जबर्दस्ती है।

आदमी०। जो समझो।

मजबूर होकर रथ रोक लेना पड़ा मगर बहुत कहने पर भी हांकने वाले ने रथ को नीचे नहीं उतारा, सड़क ही पर एक किनारे खड़ा कर दिया और बैलों को भी रथ से अलग नहीं किया। उधर गांव वालों ने (जो लड़े थे) धीरे धीरे अपने आदमियों को सम्हालना शुरू किया अर्थात् चुटीले और जख्मी आदमियों को जिस तरह बन पड़ा उठा उठा कर ले जाने लगे। इसी बीच में रथ हांकने वाले ने रथ के परदे के अन्दर सिर ले जाकर उसमें बैठी हुई सवारी से कुछ बातें कीं। वास्तव में रथ के अन्दर तीन औरतें बैठी हुई थीं जिनमें से दो के हाथों में इस समय एक एक दोनाली तमन्चा भरा हुआ मौजूद था तथा वे इसलिए तैयार बैठी थीं कि अगर कोई जबर्दस्ती रथ का पर्दा हटावेगा तो उसे गोली मार देंगे।

बातचीत करने के बाद हांकने वाला पुनः रथ के ऊपर अपने स्थान पर जा बैठा। यह बात उसके विपक्षियों को बहुत बुरी मालूम हुई अतएव उन्होंने उसे रोका और कहा, "जब कि तुमने इस बात का निश्चय कर लिया कि

सवेरा होने तक रथ इसी जगह रुका रहेगा तब हांकने वाली गद्दी पर जाकर बैठने की तुम्हें क्या जरूरत थी ? मुनासिब तो यही था कि बैल खोल दिए जाते और तुम जमीन पर ही कम्बल बिछा कर बैठते, पर तुमने ऐसा नहीं किया खैर हमने भी जोर नहीं दिया, मगर तुम्हारा अपनी जगह पर जाकर बैठना हमें शक दिलाता है कि तुम वादे के खिलाफ बेईमानी पर कमर बांधे हो और भागने के लिए तैयार होकर मौके का इन्तजार कर रहे हो।"

हांकने वाला०। नहीं नहीं, मेरा ऐसा इरादा नहीं है, यहां पर बैठने से मुझे आराम मिलेगा और अफीम घोल कर पीने में सुभीता होगा यही सोच कर मैं यहां आ बैठा हूं।

इस समय विपक्षियों के कई आदमी अपने जख्मी साथियों को सम्हालने के फेर में पड़ गये थे और रथ का सामना खाली हो गया था, सिर्फ रुकावट के लिए दो चार आदमी रथ के पास खड़े थे। यकायक रथ का पर्दा उठा और तमंचा छूटने की आवाज आई, एक आदमी जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़ा और बाकी में खलबली पड़ गई तथा डर के मारे सभी इधर उधर हट गये। उसी समय मौका देख कर बहलवान ने बैलों को चाबुक मारा और रथ को तेजी के साथ भगा ले चला। इसी समय तमंचे की पुनः आवाज आई और विपक्षियों का दूसरा आदमी जमीन पर लुढ़क गया। ऐसी अवस्था में उन लोगों के लिए रथ का पीछा करना मुश्किल हो गया और रथ तेजी के साथ कुछ दूर निकल गया। मगर इस बात की खबर रथ हांकने वाले को तथा उसकी सवारी को कुछ भी नहीं है कि एक चालाक आदमी रथ के पीछे रस्सा थाम कर लटक गया है और बड़ी आसानी से रथ के साथ साथ चला जा रहा है। हांकने वाले ने कई दफे पीछे फिर कर देखा मगर किसी को पीछा करते न पा निश्चिन्त हो रहा। सवेरा होने के पहिले ही रथ काशी जा पहुँचा और तब हांकने वाले ने रथ की तेजी कम कर दी। धीरे धीरे चल कर रथ त्रिलोचन महादेव के पास पहुंचा और एक बड़े फाटक के अन्दर चला गया जो इस समय खुला हुआ था। पीछे की तरफ जो

आदमी लटका हुआ था वह भी उसके साथ ही फाटक के अन्दर चला गया।

फाटक के अन्दर छोटा सा अस्तबल था जहां कई रथों के अतिरिक्त घोड़े और बैल भी बंधे हुए थे। जिस समय रथ फाटक के अन्दर पहुंचा उस वक्त अस्तबल में कई आदमी इधर उधर टहल रहे थे। उस समय सुबह की सुफेदी आसमान पर फैल चुकी थी और आदमियों की सूरत साफ साफ पहिचानी जाती थी।

अस्तबल के अन्दर वाले आदमियों ने रथ के पीछे लटकते हुए आदमी को देख कर हल्ला मचाया और उसके विषय में बहलवान से पूछना और उसे पकड़ना चाहा जिससे वह आदमी चैतन्य हो गया और रथ का रस्सा छोड़ अस्तबल के बाहर भागा। दो आदमियों ने उसका पीछा किया मगर उसे पकड़ न सके और वह दोनों को धोखा देता हुआ बड़ा तेजी के साथ बाहर निकल कर नजरों से गायब हो गया।

उस आदमी के भाग जाने से जो कुछ खलबली पड़ गई थी उस पर खयाल न करके रथ हांकने वाले ने परदा उठाया और सवारी को उतरने के लिए कहा। एक एक करके तीन औरतें रथ के नीचे उतरीं जिनमें से दो सरदार और एक मजदूरनी थी। रथ के नीचे उतरने के बाद मजदूरनी ने एक छोटी सी गठरी और एक पीतल का डिब्बा जिसमें ताला लगा हुआ था रथ पर से उतारा और तब तीनों औरतें अस्तबल के पूरब और उत्तर कोने की तरफ रवाना हुईं। उस कोने में एक छोटा सा मगर मजबूत दरवाजा था जिसके अन्दर वे तीनों घुस गईं और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

उस दरवाजे के अन्दर जाकर वे तीनों औरतें एक छोटी सी गली में पहुँचीं जिसकी चौड़ाई दो हाथ और लम्बाई दस बारह हाथ से ज्यादा न होगी। सामने ही एक संगीन मकान का दर्वाजा था जो इस समय भीतर से बन्द था। बाहर लोहे की एक कड़ी लगी हुई थी जिसके खटकाने से दरवाजा खुल गया और वे तीनों औरतें उस मकान के अन्दर चली गईं, दरवाजा पुनः बन्द हो गया।

यह मकान यद्यपि छोटा था मगर मजबूत और अन्दर से खूबसूरत बना हुआ था। इसके अन्दर कई दालान कोठरियां और सजे कमरे थे तथा कुर्सी पलंग इत्यादि के अतिरिक्त हर तरह के आराम की चीजें वहां मौजूद थीं।

जब वे तीनों औरतें मकान के अन्दर चली गईं और दरवाजा बन्द हो गया तब सामने पन्द्रह या सोलह वर्ष का एक लड़का दिखाई दिया जिसने झुक कर एक औरत को सलाम किया और पूछा, "मौसीजी, तुम्हारे आने में इतना अरसा क्यों लगा?" इसके जवाब में उस औरत ने कहा, "आराम से बैठूंगी तो सब हाल कहूंगी, बड़ी मुसीबत में फंस गई थी।"

इतना कह कर वह औरत दोनों को साथ लिए हुए सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर की मंजिल में चली गई और एक दालान में पहुंच कर जिसमें साफ फर्श बिछा हुआ था और कई आराम कुर्सियां रक्खी हुई थीं एक कुर्सी पर बैठ गई, दूसरी कुर्सी पर दूसरी औरत बैठ गई और मजदूरनी ने हाथ का असबाब उन दोनों के सामने रख कर दूसरी तरफ का रास्ता लिया। वह लड़का भी इशारा पाकर एक कुर्सी पर बैठ गया और बातें होने लगीं।

उन दोनों सरदार औरतों में से एक की उम्र बीस वर्ष की होगी जिसे उस लड़के ने मौसी कह कर सम्बोधन किया था और दूसरी की उम्र तीस वर्ष से ज्यादा की होगी। देखने में दोनों ही औरतें खूबसूरत और भले घर की मालूम होती थीं। यद्यपि इस समय उन दोनों का बदन जेवरों से खाली था मगर देखने वाला कदापि यह न कहेगा कि इनके पास जेवर नहीं है या इन्हें जेवर पहिरने की आदत नहीं है क्योंकि बदन पर मौके मौके से जेवरों के निशान मालूम पड़ते थे। कम उम्र औरत ने आराम कुर्सी पर बैठ कर एक लम्बी सांस ली और तब लड़के की तरफ देख कर कहा, "कैसी कैसी मुसीबतों को सह कर मैंने अपना काम निकाला, मगर सारनाथ पर आकर हम लोग बेतरह फंस गये।"

लड़का०। सो क्या?

औरत०। रथ धीरे धीरे आ रहा था, हम लोग नींद में मस्त हो रहे

थे, हांकने वाला तेगसिंह भी बैठे बैठे सो रहा था और बैल धीरे धीरे सीधी सड़क पर चल रहे थे कि यकायक सारनाथ आ पहुंचे। अगर हम लोग नींद में गाफिल न होते और इस बात का ज्ञान होता कि अब सारनाथ पहुंचा चाहते हैं तो तेजी के साथ रथ हांक कर वहां से निकल जाते और किसी के हाथ न लगते मगर नींद के झपेटों ने ऐसा न करने दिया। अस्तु जब वहां पहुंचे तो चौकीदार ने रोका और सीटी बजा कर बहुत से आदमियों को इकट्ठा कर लिया। मैंने आवाज से पहिचान लिया कि तुम्हारा 'मोहना' भी उन्हीं लोगों में शरीक है जिसका सबसे ज्यादा अन्देशा मुझे था।

लड़का०। (घबड़ाना सा होकर) फिर क्या हुआ ?

औरत०। (जो कुछ सारनाथ पर हुआ था उसे बयान करके) जब हम लोग वहां से निकल भागे और इस अस्तबल में आ पहुंचे तब मालूम हुआ कि दुश्मनों का एक आदमी रथ के पीछे लकड़ी या रस्सी थाम कर लटक गया था जो कि यहां अस्तबल के अन्दर तक चला आया और जब लोगों ने देखा तो भाग निकला, कोई उसे पकड़ न सका।

लड़का०। यह तो बहुत बुरा हुआ! जब वह दुष्ट सारनाथ में जाकर यह बयान करेगा कि रथ फलानी जगह गया है, तब वे लोग पता लगाने के लिए जरूर निकलेंगे और तब उन्हें इस बात का भी गुमान हो जायगा कि इस रथ में तुम ही सवार थीं।

औरत०। बेशक ऐसा होगा, और मुझे भी इसी बात का खुटका लगा हुआ है इसी से तो सफर की सब मुसीबतों से बढ़ कर मैंने इसे समझा और सबसे पहिले यही हाल तुमसे बयान किया। तुम बुद्धिमान होशियार और होनहार हो, अतएव सोच कर बताओ कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिए।

लड़का०। आपकी बुद्धि के मुकाबिले में मैं अपने को कुछ भी नहीं समझता तथापि सोच कर कुछ देर बाद मैं कहूंगा कि अब क्या करना

ठीक होगा, अच्छा मुझे दिखाइये तो सही कि आप वहां से क्या क्या चीजें लाई हैं ?

औरत०। हां हां, तुम्हें अभी दिखाती हूं, देखो।

यह कह कर उस औरत ने झुक के पीतल वाला डिब्बा उठाया और कमर में से ताली निकाल कर उसे खोला। लड़के ने झांक कर अन्दर देखा और झिझक कर पीछे हट गया।

औरत०। (मुस्कुरा कर) वाह वाह, तुम इतना डर गये ? अगर तुमको अपने हाथ से यह काम करना पड़ता तो मालूम होता है कि मौका मिलने पर भी तुम न कर सकते।

लड़का०। सो बात नहीं है, मुझे अगर यह काम करना पड़ता तो मैं कदापि संकोच न करता और न किसी तरह डरता ही। हाँ इस तरह बिगड़ी हुई खोपड़ी को डब्बे के अन्दर बन्द करके ले आना मेरे लिये बहुत कठिन था। इस काम से घृणा होती है और इसकी बिगड़ी हुई सूरत देख कर डर भी लगता है, बस इसे निकालो और फेंको।

औरत०। (हंस कर) सिर्फ तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए यह खोपड़ी मैं ले आई हूं, तुममें अभी लड़कपन का अंश मौजूद है इसलिए तुम डरते हो, मगर ध्यान रक्खो कि इसी किस्म का एक काम बहुत जल्द तुम्हें करना भी पड़ेगा।

लड़का०। (जोश दिखाता हुआ) एक नहीं दस दफे मैं ऐसा काम करने के लिए तैयार हूं !

औरत०। (पीठ ठोंक कर) शाबाश, इसकी आजमाइश दो ही चार दिन के अन्दर कर ली जायेगी। खैर देखो इस डिब्बे में और क्या चीजें हैं।

इतना कह कर उस औरत ने डब्बे के अन्दर से एक कटा हुआ सर निकाल कर बाहर रक्खा जो कई तह किये हुए कपड़े के ऊपर रक्खा हुआ था जो खून से तरबतर हो रहा था। इसके बाद उसने कपड़े पर लिखी और तह की हुई एक तस्वीर निकाली और खोल कर लड़के को दिखाते

तथा उसके भेदों को समझाने लगी।

औरत०। देखो, इस तस्वीर को देख कर किसी के भी दिल में शक न रह जायगा कि दयाराम के विषय में दलीपशाह और भूतनाथ दोनों ही ने धोखा खाया और वास्तव में वह आदमी दयाराम था ही नहीं जो भूतनाथ के हाथ से मारा गया। जिसने दयाराम को गिरफ्तार किया था उसे जरूर भूतनाथ ने मार डाला मगर उसके बदले उसका लड़का वह काम कर गुजरा जो उसका बाप किया चाहता था। भूतनाथ ने जो खून किया उसमें भी उसको धोखा हुआ, एक नहीं बल्कि दो दफे धोखा हुआ और उसके साथ साथ इन्द्रदेव के आदमियों को भी धोखा हुआ जो किसी दूसरे ही को दयाराम समझ कर उठा ले गये थे। पहिले पहिल भूतनाथ ने यह नहीं समझा था कि यह दयाराम हैं मगर जब वह वार कर चुका तब दलीपशाह के मुंह की बातें सुन कर उसको विश्वास करना पड़ा कि उसने वास्तव में दयाराम को ही मारा। मगर अफसोस, दयाराम बेचारा अभी तक कैद में है और न तो भूतनाथ तथा इन्द्रदेव और न उसकी दोनों औरतों को ही इस बात की कुछ खबर है। (तस्वीर पर उंगली रख कर) यह देखो इस कोठरी में दयाराम कैद हैं और दलीपशाह का धावा इस कोठरी पर हुआ जिसमें राजसिंह का भतीजा मुद्दत से बीमार पड़ा हुआ था, और देखो यह दर्वाजे पर राजसिंह सो रहा है, इसी जगह से इन दोनों को इन्द्रदेव के ऐयारों ने कैद कर लिया था, और यह देखो राजसिंह का लड़का अपने कमरे में बैठा न मालूम क्या लिख रहा है........

लड़का०। (बात काट कर) मौसी, यह तो बताओ कि यह तस्वीर किसकी बनाई है और तुमने कहां पाई ?

औरत०। (तस्वीर के नीचे की तरफ उंगली का इशारा करके) यह देखो इस तस्वीर के नीचे राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह का हस्ताक्षर है और यह तस्वीर उसी की बनाई हुई है, उसी के घर से मुझे यह मिली भी है।

लड़का०। ध्यानसिंह को इस तस्वीर के बनाने की क्या जरूरत पड़ी ?

औरत०। सो अभी ठीक ठीक समझ में नहीं आया मगर देखो तो तस्वीर के नीचे की तरफ (उंगली से बता कर) इन तीन सतरों को पढ़ने से क्या मालूम होता है ?

लड़का०। (पढ़ कर) इसमें लिखा है—"बेशक मेरे बाप ने दयाराम को पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुँच गया। भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया। असल में दयाराम को जमानिया के दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया। दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे। दयाराम को अपने कब्जे में रख कर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है। भूतनाथ, सम्हलो और इस भेद को जानो। इस खबर के बदले में मैं तुमसे मित्रता की भिक्षा मांगता हूं।"

औरत०। समझ गये ! इससे राजसिंह का मतलब कुछ गूढ़ मालूम होता है ! यह तस्वीर इसी आदमी के हाथ वह भूतनाथ के पास भेज चुका था जिसका सर मैं काट लाई हूं। अगर यह भूतनाथ के पास पहुंच जाती तो फिर मेरा काम कुछ भी न बनता पर अब देखो मैं कैसा रंग लाती हूं।

लड़का०। तो यह तस्वीर तुम जमना सरस्वती को दोगी या इन्द्रदेव को ?

औरत०। दोनों में से किसी को भी नहीं, जो कुछ करना होगा मैं स्वयं करूंगी और अपने हाथ से दयाराम का उद्धार करूंगी। जमना और सरस्वती को इस दुनिया से उठा दूंगी, भूतनाथ को कब्जे में करूंगी, और स्वयं जमना बनूंगी।

लड़का०। समस्या कठिन है, कार्रवाई मुश्किल है, मगर आपकी हिम्मत बहुत बड़ी है !

औरत०। सारनाथ वाले मेरे काम में बाधक और दुश्मन हो रहे हैं, उनके हाथ से अगर बच गई तो मैं सब कुछ कर सकूंगी।

लड़का०। उनका बन्दोबस्त मेरे जिम्मे, उन लोगों को मैं ठीक करूंगा, मगर आपका इस मकान में रहना ठीक नहीं है।

औरत०। मेरा भी यही खयाल है, आज ही मैं इस मकान को छोड़

दूंगी, और तुम क्या करोगे ?

लड़का० । मैं अभी इसी मकान में रहूंगा और सारनाथ वाले आपको खोजते हुए जब यहां पहुंचेंगे तो उन्हें गिरफ्तार करूंगा, अच्छा यह बताइये कि इस डिब्बे में और क्या चीजें हैं ?

औरत० । (डिब्बे में से कागज का एक मुट्ठा निकाल कर और लड़के के हाथ में देकर) भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई कई चीठियां हैं जो कि नागर से मंगनी मांग लाई हूं, इन्हें बहुत जल्द वापस करना होगा और यह सब कुछ करते हुए भी दारोगा से भले बने रहना पड़ेगा ।

लड़का० । यह बहुत कठिन होगा ।

औरत० । कुछ भी कठिन नहीं है ।

इसके बाद लड़का भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई चिट्ठियां देखने और पढ़ने लगा । जब वह सब चिट्ठियों को पढ़ चुका तब बोला, "बेशक अब तो मैं कह सकता हूं कि आप भूतनाथ पर कब्जा कर लेंगी और इसके अतिरिक्त जो कुछ आपने सोचा है वह काम भी आपका हो जायगा । अच्छा यह बताइये कि इस कटे हुए सर के लिए अब क्या करना चाहिये ?"

औरत० । थोड़े दिन तक तो इस सर को मैं इसी तरह कायम रखना चाहती हूं, क्योंकि मौका पड़ने पर शायद इसे दारोगा साहब को दिखाना पड़े इसलिए इसे मसाले में लपेट कर तुम तहखाने में हिफाजत से रख दो।

लड़का० । बहुत अच्छा ।

औरत० । अब तुम जाकर पहिले इस काम से छुट्टी पाओ तब निश्चिन्त होकर बातचीत करूंगी । (दूसरी औरत की तरफ देख कर) बहिन अब तुम भी नहा धोकर कुछ खाने पीने का बन्दोबस्त करो और मैं भी जरूरी कामों से निपटने के लिए जाती हूं ।

इतना कह वह औरत उठ कर खड़ी हो गई । लड़के ने वह कटा हुआ सर उठाया और एक तरफ का रास्ता लिया तथा वह दूसरी औरत खाने पीने का बन्दोबस्त करने कहीं चली गई ।

पाठक, हम अभी नहीं कह सकते कि यह औरत कौन है और इसका नाम क्या है, अथवा उस दूसरी औरत और उस लड़के से इसका क्या सम्बन्ध है, हां इस समय काम चलाने के लिए इसका कुछ नाम जरूर रखना चाहिए, अस्तु जब तक इसके असली नाम का पता न लगे तब तक के लिए हम इसका नाम "निरंजनी" रक्खे देते हैं।

दूसरी औरत और लड़के के चले जाने बाद निरंजनी वह डिब्बा लिये हुए पास वाले कमरे में चली गई और भीतर से उसका दरवाजा बन्द कर लिया। इस कमरे के अन्दर दाहिनी तरफ एक दर्वाजा और था जिसमें एक बहुत बड़ा और मजबूत ताला लगा हुआ था, देखने वाला यही समझेगा कि यह कोई कोठरी है मगर नहीं वास्तव में यह एक कैदखाने का रास्ता है।

निरंजनी ने कमर में से ताली निकाल कर ताला खोला तब उस दर्वाजे के अन्दर जाकर एक दूसरे कमरे में पहुंची जो पहिले कमरे से बड़ा था और कई रोशनदानों की बदौलत इसमें रोशनी भी ज्यादे थी। इस कमरे के बीचोबीच में लोहे के मजबूत और मोटे छड़ों से एक कोठड़ी बनी हुई थी जिसमें तीन तीन अंगुल के फासले पर छड़ लगे हुए थे और बीच में दो बन्द चौड़े लोहे के लगे हुए थे जिससे कि वे छड़ किसी तरह झुकाने से झुक नहीं सकते थे। छड़ों का एक सिरा ऊपर छत में घुसा हुआ था और दूसरा नीचे जमीन के अन्दर। यह कोठरी इतनी बड़ी थी कि इसके अन्दर दस बारह आदमियों का बिस्तरा (बिछौना) लग सकता था मगर इस समय हम इसके अन्दर सिर्फ एक कमसिन औरत को देख रहे हैं जिसकी उम्र ज्यादे से ज्यादे पन्द्रह वर्ष की होगी। यह औरत यद्यपि खूबसूरत कहने योग्य नहीं है परन्तु बदसूरत भी नहीं कही जा सकती। इसका रंग पक्का चेहरा बादामी और भोला है, आंखें बड़ी बड़ी मगर नाक मोटी है, इस के अंग हाथ पैर वगैरह सुडोल तो हैं मगर रूखे हो रहे हैं, इसी तरह चेहरा भी इसका उदास और मैला दिखाई देता है, मालूम होता है कि

इसको महीनों से नहाने धोने का मौका नहीं मिला है, इसकी धोती बहुत गन्दी हो रही है और सर के बाल मैले तथा खुले हुए हैं।

इस लोहे की सलाखों वाली कोठरी में जिसमें वह औरत कैद है एक तरफ पीतल के घड़े में पानी रक्खा हुआ है, पास में एक लोटा और गिलास है, तथा बांस की टोकरी में कुछ फल और खाने की दूसरी चीजें भी रक्खी हुई हैं। इन सब चीजों के अतिरिक्त दो कम्बल भी जमीन पर पड़े हुए दिखाई देते हैं। इस कोठरी में एक छोटा सा दरवाजा भी बना हुआ है जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा है और उस दरवाजे के आगे एक सुन्दर कुर्सी रक्खी हुई है। निरंजनी उसी कुर्सी के ऊपर जाकर बैठ गई और उस कैदी औरत की तरफ देख कर बोली, "मेरी प्यारी बहिन, कहो अच्छी तो हो?"

कैदी औरत०। जी मैं बहुत अच्छी तरह हूं और आपकी मेहरबानियों का शुक्रिया अदा करती हूं।

निरंजनी०। मुझे तुम्हारे कैद होने का बड़ा ही अफसोस है।

कैदी औरत०। (मुस्कुराती हुई) मेरा भी यही खयाल है।

निरंजनी०। (कुछ शर्मा कर) क्या तुम इस कैदखाने से बाहर निकलना नहीं चाहतीं!

कैदी औरत०। जी नहीं, मुझे इसमें बड़ा आराम है और मैं तुम्हें दरवाजा खोलने की तकलीफ नहीं दिया चाहती।

निरंजनी०। मैं तो इस समय भी दरवाजा खोलने के लिए तैयार हूं, (एक ताली दिखा कर) देखो यह ताली भी मौजूद है मगर क्या करूं वह तुम्हें स्वतन्त्र करने की आज्ञा नहीं देती और तुम जानती हो कि मैं उसके वश में हूं।

कैदी औरत०। बेशक ऐसा ही है, मगर तुम उसकी खुशामद क्यों करती हो, ताला खोल देने पर भी मैं इस कोठरी के बाहर नहीं निकलूंगी।

निरंजनी०। सो क्यों?

कैदी औरत०। इसलिए कि मैं आज कल पागल हो रही हूं और

विश्वास करती हूं कि तुम लोगों की मदद के बिना ही स्वतन्त्र हो जाऊंगी और तब ऐ मेरी प्यारी बहिन, सब के पहिले मैं तुम्हीं से बदला लूंगी और जमना बनने का तुम्हारा शौक पूरा कर दूंगी।

निरंजनी०। (चौंक कर) तुम्हें किसने कह दिया है कि मुझे जमना बनने का शौक है?

कैदी औरत०। मेरे एक दोस्त ने यह भेद की बात मुझसे कही है जो अक्सर इस कैदखाने में मेरे पास पहुंचा करता है।

निरंजनी०। तुम तो पागलपने की बातें करती हो!

कैदी औरत०। यह तो मैं खुद ही कह चुकी हूं कि मैं आज कल पागल हो गई हूं, तुमने यह कौन सी नयी बात कही?

निरंजनी०। (कुछ गुस्से के ढंग पर) तुम हद्द दर्जे की ढीठ हो गई हो!

कैदी औरत०। सिर्फ इस खयाल से कि तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकतीं, मेरा दोस्त मेरी मदद करेगा और बहुत जल्द मुझे इस कैद से छुड़ावेगा।

निरंजनी०। अरे बेवकूफ, यहां पर तो एक चींटी भी नहीं आ सकती!

कैदी औरत०। यह तुम्हारी भूल है, देखो मैं तुम्हें दिखाती हूं।

इतना कह कर उस कैदी औरत ने वह कम्बल उठाया जो जमीन पर पड़ा हुआ था। उसके नीचे एक आदमी का चेहरा दिखाई दिया और वह धीरे धीरे जमीन के अन्दर से ऊपर निकलने लगा। मोढ़ा निकला, छाती निकली, पेट बाहर हुआ, कमर दिखाई देने लगी, रान घुटना और अन्त में पैर भी बाहर निकल आये, और कुछ ही देर बाद वह पूरा नौजवान आदमी कैदी औरत के पास खड़ा दिखाई देने लगा। निरञ्जनी के तो होश उड़ गये और वह घबड़ा कर उन दोनों की तरफ देखने लगी।

॥ चौथा भाग समाप्त ॥

२४ वां संस्करण] १९७४ ई० [१२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥



भूतनाथ

पांचवां भाग

पहिला बयान

भूतनाथ ने क्रोध में आकर जमना सरस्वती और इन्दुमति पर हमला तो किया मगर कुछ कर न सका क्योंकि वह बाग मकान और चबूतरा तिलिस्म से सम्बन्ध रखता था और इन्द्रदेव के कब्जे में था, अतएव कोई अनजान आदमी लापरवाही के साथ उस बाग और इमारत की सैर पूरी तरह से नहीं कर सकता था और न उस चबूतरे पर ही जा सकता था जिस पर जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई थीं, अस्तु नतीजा यह निकला कि भूतनाथ उस चबूतरे पर चढ़ने के साथ ही पछाड़ खा कर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पड़ा और कुछ देर के लिए बेहोश हो गया। जब होश में आया तो उसने आश्चर्य के साथ उस चबूतरे की तरफ देखा परन्तु वे औरतें दिखाई न पड़ीं क्योंकि भूतनाथ की बेहोशी दूर होने के पहिले ही वे सब वहां से कहीं चली गई थीं।

भूतनाथ पुन: उस चबूतरे पर जाने की हिम्मत न कर सका और कुछ सोचता विचारता बाग के उस हिस्से की तरफ रवाना हुआ जिधर इमारत थी और दो चार आदमी भी टहलते दिखाई दे रहे थे। भूतनाथ घड़ी घड़ी आश्चर्य के साथ यह सोचता था कि जमना ने यह क्योंकर कहा कि भैयाराजा ने तुम्हारे ऐयारी के बटुए पर कब्जा कर लिया था और अब वह मेरे पास मौजूद है। यह क्योंकर सम्भव हो सकता है कि वह बटुआ मेरे शागिर्द के हाथ से भैयाराजा के कब्जे में चला गया हो! बेशक जमना ने मुझे धोखा देने के लिए कहा होगा।

धीरे धीरे भूतनाथ उस इमारत के पास जा पहुंचा और वहां उसने देखा कि इमारत के आगे एक बहुत बड़ा सहन है जिस पर भैयाराजा धीरे धीरे टहल रहे हैं और हाथ में नंगी तलवारें लिए सात आठ आदमी उनके पीछे पीछे हैं। भूतनाथ पर निगाह पड़ते ही भैयाराजा ने मुस्कुरा कर कहा, "भूतनाथ, अब तुम्हारा क्या इरादा है ? मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि तुम्हारी कसम सच्ची नहीं निकली।"

भूत०। सो क्या ? आपको कैसे मालूम हुआ कि मेरी कसम सच्ची नहीं निकली ?

भैया०। यही आजमाने के लिए तो जमना सरस्वती और इन्दुमति तुम्हारे सामने बैठाई गई थीं। आखिर तुमने उन पर हमला किया ही तो ? यह न सोचा कि मैं कहां और किसके कब्जे में हूं। जब मेरे बाग में रह कर तुमने ऐसा किया तो यदि किसी दूसरी जगह वे दोनों तुम्हें मिल जातीं तो तुम उन्हें कब जीता छोड़ते !

भूतनाथ ने भैयाराजा की इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और शर्म से सर नीचा कर के कुछ सोंचने लगा। भैयाराजा ने पुनः कहा, "गदाधरसिंह, शायद तुमको यह मालूम नहीं कि इस बाग में पहुंचने के पहिले जिसने तुम्हारे कसम खाने पर तुम्हें ताड़ना की थी वह मैं ही हूं, और जिसने अपनी ताड़ना पर तुम्हारे मुंह से ये शब्द निकलते हुए सुने थे कि—'नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सचाई में किसी तरह भी फर्क नहीं पड़ सकता, मैं यहां तक तैयार हो चुका हूं कि अपने ऐयारी के फन को भी तिलांजुलि दे दूंगा और दुनिया से एकदम किनारे हो जाऊंगा'—वह भी मैं ही हूं।"

भूत०। (आश्चर्य से भैयाराजा का मुंह देख कर) और वह त्रिशूल तथा डमरूधारी शिवरूपी महात्मा भी आप ही थे जिन्होंने मेरे बदन से त्रिशूल छुला कर मुझे बेहोश कर दिया था ?

भैया०। नहीं।

भूत०। वह कौन था ?

भैया०। यह मैं नहीं कह सकता।

भूत०। और यह बाग किसका है ?

भैया०। इसका भी जवाब तुम नहीं पा सकते।

भूत०। (सिर झुका कर देर तक कुछ सोचने बाद दोनों घुटने जमीन पर टेक कर और हाथ जोड़ कर) निःसन्देह मैं अपराधी हूं ! मेरे पापों का कोई प्रायश्चित नहीं। अपनी चादर का एक धब्बा मिटाने की कोशिश करते हुए मैंने अपनी

तमाम चादर को गंदला कर डाला जिसका साफ होना अब बहुत कठिन है । मैं जानता हूं कि मेरे प्यारे दोस्त और मुझ पर अत्यन्त अनुग्रह करने वाले इन्द्रदेव मे और आप से दोस्ती है, नहीं नहीं आप दोनों अंतरंग मित्र हैं और मुझे विश्वास है कि इन्द्रदेव ने जिस तरह मेरे अपराधों को क्षमा किया है और अपनी आंखों से मेरे कठोर प्रायश्चित को देखते हुए भी मुंह फेर लिया है तथा मेरे सब अपराधों पर मिट्टी डाल कर भी मुझे ठीक रास्ते पर चलाने की नीयत रखते हैं उसका नमूना दिखलाने वाला दुनिया में कोई भी नहीं होगा । हा, मुझ अभागे को इन्द्रदेव ने कई दफे समझाया कि 'दयाराम का कलंक तेरे सिर से दूर कर दूंगा' मगर मैंने इसका कुछ भी खयाल न किया । हा खेद, अब मैं इस दुनिया में मुंह दिखाने योग्य न रहा, जो कुछ मैं अब कह रहा हूं यह भी मेरी बेहयाई है । (अपनी डबडबाई हुई आंखों को पोछ कर) मैं इस योग्य नहीं कि आप से क्षमा मांगूं परन्तु आप इस योग्य हैं कि मुझे क्षमा करें और क्षमा करने के लिए इन्द्रदेव से भी मेरी सिफारिश करें।

इतना कह भूतनाथ भैयाराजा के पैरों पर गिर पड़ा और उसकी आंखों से आंसु की धारा बह चली । भैयाराजा ने उसे जल्दी से उठा कर छाती से लगा लिया परन्तु भूतनाथ ने जोर करके अपने को छुड़ा लिया और हाथ जोड़ कर कहा, "हा खेद, मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप मुझे भाई की तरह छाती से लगावें और दया करें, बल्कि मैं इस योग्य हूं कि आप मुझे अपने जूते के तले रौंदें और हजार लानत करें !"

भैया० । नहीं नहीं गदाधरसिंह, तुम ऐसा खयाल मत करो । इन्द्रदेव की तरह मैं भी तुम्हें माफ करता हूँ । तुम्हारी इस समय की अवस्था देख कर मुझे विश्वास होता है कि अब तुमसे कोई अपराध न होगा । ईश्वर तुम्हारा दिल सदैव के लिए नेक करें । अच्छा मैं तुम्हें इस समय एक दवा पिलाना चाहता हूं, पिओगे ?

भूत० । आप मुझे अब जहर हलाहल भी देंगे तो खुशी से पी लूंगा क्योंकि मैं उसी के योग्य हूं और दुनिया में मुंह दिखलाने की इच्छा नहीं रखता ।

भैया० । ईश्वर तुम्हें नेकी दे । मैं तुम्हारे साथ कदापि बुराई नहीं कर सकता परन्तु हां इस समय जो दवा मैं तुम्हें पिलाऊंगा उससे तुम बेहोश जरूर हो जाओगे ।

इतना कह कर भैयाराजा ने अपने एक आदमी की तरफ देख कुछ इशारा किया।

भूत० । मुझे इसकी कोई भी परवाह नहीं है कि मैं आपकी दी हुई दवा पीकर बेहोश हो जाऊंगा या मर जाऊंगा और न मैं इसके विषय में आपसे कुछ पूछने की ही इच्छा रखता हूं ।

भैयाराजा का इशारा पाकर वह आदमी किसी प्रकार की दवा से भरी हुई एक बोतल और चांदी का छोटा सा कटोरा ले आया और भैयाराजा के हाथ में दिया। भैयाराजा ने उस बोतल की दवा से कटोरा भरा और भूतनाथ के हाथ में दिया, भूतनाथ ने खुशी खुशी कटोरा मुंह से लगाया और दवा पीकर पुनः वह कटोरा इस विचार से भैयाराजा की तरफ बढ़ाया कि और दवा दीजिय मैं पीने के लिए तैयार हूं, मगर भैयाराजा ने यह कह कर कि 'बस अब और पीने की कोई जरूरत नहीं' कटोरा वापस लेने के लिए भूतनाथ की तरफ हाथ बढ़ाया। भूतनाथ ने उनके हाथ में जूठा कटोरा देना उचित न जान कर उनके आदमी के हाथ में दिया और पुनः हाथ जोड़ कर कहा, "मुझे क्षमा कीजिए और गुप्त हो जाने की आज्ञा दीजिए।"

भैया०। मैं यह नहीं चाहता कि तुम गायब हो जाओ, यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है। मैं सच्चे दिल से तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम लोगों मे मिले जुले रह कर सभों का उपकार करो जिसमें ईश्वर तुम्हार अपराधों को क्षमा कर दे।

भूत०। जो आज्ञा।

इतना कहते कहते भूतनाथ की आंखें बन्द हो गईं और वह बेहोश होकर जमीन पर लेट गया। जब उसकी आंखें खुलीं तो उसने अपने को उसी कोठड़ी मे पाया जिसमें त्रिशूल के छू जाने से बेहोश होकर इस बाग मे आया था। कोठड़ी से बाहर निकलने पर उसने अपने ऐयारी के बटुए के सहित कई शागिर्दों को पाया जो उसके लिए चिन्तित और उदास उससे मिलने का इन्तजार कर रहे थे।

दूसरा बयान

दिन दो पहर से ज्यादे ढल चुका है। धूप की गर्मी को हवा की तेजी यद्यपि कम कर रही है तथापि नाजुक-मिजाजों के बर्दाश्त के बाहर है। भूतनाथ अपनी असली सूरत में मामूली ढंग पर शाहराह और सड़क छोड़ कर जगल ही जगल जमानिया की तरफ जा रहा है, मगर उसके चेहरे पर उदासी नाउम्मीदी और बेचैनी छाई हुई है, उसको अपने इधर उधर या आगे पीछे की कुछ भी पर्वाह नहीं है, सर झुकाये हुए बराबर चला जा रहा है, हां कभी कभी सर उठा कर इस खयाल से देख लेता है कि रास्ता भटकने न पावे।

दो घण्टे तक बराबर चले जाने बाद उसे कुछ आदमियों के बातचीत की आहट मालूम हुई जिससे वह खड़ा हो गया और ध्यान देकर सुनने लगा कि किधर से

आवाज आ रही है। कुछ ही सायत में उसे मालूम हो गया कि वात करने वाले उससे ज्यादे दूरी पर नहीं हैं। भूतनाथ को उस आवाज पर कुछ शक मालुम हुआ और उन आदमियों को देखने तथा उनकी वात सुनने का अपनी प्रबल इच्छा को रोक न सका अतएव वह जमीन पर बैठ गया और बहुत धीरे धीरे पत्तियों की खड़खड़ाहट को बचाता हुआ उस तरफ बढ़ा जिधर से आवाज आ रही थी, यहां तक कि वह उन लोगों के इतना पास पहुंच गया कि वहां से उनकी बातचीत बखूबी सुन समझ सकता था। उन आदमियों को इसकी कुछ भी आहट नहीं लगी कि कोई आदमी उनकी बातें सुनने के लिए पास ही में आकर छिपा हुआ है अतएव भूतनाथ बड़ी बेफिक्री के साथ उनकी बातें सुनने लगा, साथ ही इसके उसने झाड़ियों में रास्ता करके यह भी देख लिया कि बातें करने वालों में दो मर्द और एक औरत है जिसकी उम्र बीस या पचीस वर्ष से ज्यादा न होगी। यद्यपि वह मर्दों की तरह चपकन पायजामा पहिरे हुए है और सर पर मुंड़ासा भी उसने बांध रक्खा है परन्तु उसकी आवाज और भूतनाथ की चालाक निगाहों के सामने उसका मर्दानापन कायम न रहा। उसी जगह पर पेड़ों के सहारे तीन घोडे वागडोर के साथ बंधे हुए थे। अब सुनिये कि उन लोगों में कैसी भेद भरी बातें हो रही हैं।

एक०। जमना और सरस्वती को यदि यह भेद मालूम हो जाय तो वे दोनों उद्योग करके उन्हें बहुत जल्द छुड़ा लें। हम लोगों की मेहनत उनका मुकावला नहीं कर सकती क्योंकि इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह उन दोनों के पक्षपाती हैं।

दूसरा०। अजी नहीं, इन्द्रदेव को जमना और सरस्वती से क्या मतलब? वह दारोगा साहब के गुरुभाई हैं, दारोगा साहब भूतनाथ की मदद करते हैं और भूतनाथ इन दोनों औरतों का जानी दुश्मन है इसी से समझ रखना चाहिये कि इन्द्रदेव क्योंकर दारोगा साहब के खिलाफ कारंवाई कर सकते हैं।

पहिला०। तुम्हें कुछ बसंत की खबर भी है या यों ही बकवाद कर रहे हो। बेईमान दारोगा के सबब से क्या धर्मात्मा इन्द्रदेव रणधीरसिंह का मुलाहिजा तोड़ देंगे या दयाराम को जान बूझ कर अपने हाथ से भाड़ में झोंक देंगे?

औरत०। (दूसरे की तरफ देख कर) नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता, तुमको इस बात की खबर ही नहीं है कि इन्द्रदेव ही की बदौलत आज तक जमना और सरस्वती की जान बची हुई है नहीं तो दारोगा साहब और भूतनाथ अब तक उन दोनों का खातमा कर चुके होते, इन्द्रदेव हर तरह से उन दोनों की मदद कर रहे हैं और करेंगे।

दूसरा०। (आश्चर्य से) क्या ऐसी बात है ?

पहिला०। बेशक ऐसी ही बात है। इन्द्रदेव साधू और महात्मा आदमी हैं जो अभी तक दारोगा से गुरुभाई का रिश्ता और भूतनाथ से दोस्ती का नाता भी निभाए जाते हैं नहीं तो इन लोगों को जहन्नुम मे पहुचाना उनके लिए एक आदनी बात थी।

दूसरा०। अगर यह बात है तो बेशक पता लगाने पर इन्द्रदेव की सहायता से जमना और सरस्वती अच्छा काम कर सकती हैं।

औरत०। निःसंदेह ! क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि जमना और सरस्वती ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है ? मगर यह बात बहुत गुप्त है।

दूसरा०। भला मुझे इस बात का पता क्योंकर लग सकता है, मगर आश्चर्य है कि तुम्हे यह बात कैसे मालूम हुई ?

औरत०। अकस्मात ही मुझे यह बात मालूम हो गई।

दूसरा०। क्योंकर ?

औरत०। उन दोनों को मैंने परसों भेष बदल कर घोड़ पर सवार काशी की तरफ जाते देखा था।

पहिला०। जब भेष बदले हुए थीं तब तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि ये दोनों वे ही हैं ?

औरत०। मैं उस समय घोड़े पर सवार मामूली तौर पर केवल मर्दाना कपड़ा पहिरे हुए रणधीरसिंह के यहां जा रहीं थी, यकायक रास्ते में मेरा और उन दोनों का मुकाबला हो गया। सरस्वती ने मुझे पहिचान लिया और नाम लेकर पुकारा। मैं उन दोनों को पहिचान न सकी परन्तु पुकारने पर और अपना नाम सुन कर रुक गई। उन दोनों ने बड़ी मुहब्बत से मुझे अपने पास बुलाया। मैं डरती हुई उनके पास गई। तब जमना ने मुझसे कहा, "छन्नों, तू कहां जाती है ? मैं तुझे पहिचान गई, मगर तू हम दोनों को बिना बताए नहीं पहिचान सकती। मेरा नाम जमना और इसका सरस्वती है। ओफ ओह, बहुत दिनों के बाद तुझे देखा। तुझे देख कर मेरे दिल में इस समय वही लड़कपन की मुहब्बत पैदा हो गई है। मेरी प्यारी छन्नों, क्या आज कल तू मेरे ससुराल में नहीं रहती ?"

पहिले तो मुझे उन दोनों के जमना और सरस्वती होने का विश्वास नहीं हुआ मगर जब उन्होंने लड़कपन की दो एक बातें याद दिलाईं तब मुझे विश्वास हो गया और मुहब्बत से मेरा जी भी उमड़ आया क्योंकि मैं बहुत दिनों तक उन दोनों के साथ रह चुकी हूं। हम तीनों में बड़ी ही मुहब्बत रही। जब वे दोनों

अपने ससुराल से गायब हो गईं और उनके मरने की खबर मशहूर हुई तब मैंने भी रणधीरसिंह का घर छोड़ दिया था।

पहिला०। यह तो बड़ी अजीब बात तुम सुना रही हो? अच्छा तब क्या हुआ?

औरत०। मैं तुरत घोड़े पर से उतर पड़ी और जमना के पैर के साथ लिपट गई। वे दोनों भी घोड़ों पर से उतर पड़ीं और मुझे गले से लगा लिया। वहां बिल्कुल ही सन्नाटा था, सड़क के दोनों तरफ जंगल था और बड़े बड़े साखू आसन तथा सलई के पेड़ लगे हुए थे। हम तीनों सड़क से किनारे होकर पेड़ों की आड़ में चली गईं और बागडोर के सहारे घोड़ों को पेड़ों के साथ बांध कर एक ठिकाने बैठ गईं और देर तक बातें करती रहीं। बस उसी समय मुझे मालूम हुआ कि उन दोनों ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है।

पहिला०। यह तो तुमने बड़ी बेढब बात सुनाई। मुझे नहीं मालूम था कि उन दोनों से तुम्हारी मुहब्बत है।

औरत०। सो भला कैसे मालूम होता, इस बात का कभी जिक्र तो आया नहीं था।

दूसरा०। अच्छा तो क्या तुमने दयाराम वाला सब भेद उनसे कह दिया?

औरत०। अभी नहीं, मैं ऐसा पसन्द नहीं करती कि काम अधूरा रहने पर किसी से ऐसा कठिन मामला कहूं।

पहिला०। मगर क्या तुम उन दोनों से यह भेद कहोगी?

औरत०। सो मैं अभी नहीं कह सकती।

दूसरा०। मगर नहीं, उन दोनों को इसका भेद नहीं कहना चाहिए, नहीं तो हम लोगों का मेहनत करना ही व्यर्थ हो जायगा। तुम्हारे कहने ही से हम लोग इस मामले में उद्योग करने के लिए तैयार हुए हैं। यद्यपि इसके साथ ही साथ लालच का पल्ला भी हम लोगों ने पकड़ा हुआ है तथापि ईमानदारी का ख्याल भी हमलोगों के दिल से दूर नहीं हो सकता। इसलिए यदि कदाचित तुम्हारा यह विचार हो कि यह भेद अथवा खुशखबरी जमना सरस्वती या इन्द्रदेव से कहो तो हम लोगों की सिफारिश के साथ इस ढंग से कहो कि उन लोगों को हम लोगों से मदद लेने की जरूरत पड़े, और यदि ऐसा न कर सको तो आज ही हमलोगों को साफ साफ जवाब दे दो, जो कुछ मेहनत कर चुके हैं उसी पर सन्तोष करेंगे।

औरत०। (मुस्कुराती हुई) नहीं नहीं, हताश मत होवो, यदि मुझे ऐसा ही करना होता तो तुम लोगों को अपना साथी क्यों बनाती? तुम इस बात का विश्वास

रक्खो, क्योंकि इस मामले से मुझे रुपये पैसे की कुछ लालच नहीं है, मैं तो जो कुछ कर रही हूं और जो तकलीफ उठा रही हूं वह सब जमना सरस्वती और दयाराम की महुब्बत के कारण है। तुम लोगों को भी यही उचित है कि जिसमें काम जल्दी हो वही उपाय करो और इस बात का ख्याल न करो कि किसी भी दूसरे को यह भेद मालूम न हो अथवा किसी भी दूसरे का हाथ इस मामले में न लगे, क्योंकि केवल तुम्हीं दोनों के भरोसे पर रह जाना यह नीति के विरुद्ध है, सम्भव है कि तुम दोनों की मेहनत का कोई अच्छा नतीजा न निकले और देर हो जाने के कारण दयाराम की जान पर आ वने.......।

दूसरा०। (कुछ बिगड़ कर और बात काट कर) इतने दिन बीत गए दयाराम की जान पर नौबत न आई और अब महीने पन्द्रह दिन की देर होने से उनकी जान चली जायगी! यह भी कैसा खयाल? हां यह कहो कि तुम्हारा दिल ही डगमगा रहा है और हम लोगों पर तुम्हें भरोसा ही नहीं होता। मगर इस बात को खूब समझ रखना कि ऐयार होने के अतिरिक्त जिस शहर में दयाराम हैं हम दोनों भी उसी शहर के रहने वाले हैं। घर घर का भेद जो हम लोगों को मालूम हो सकता है वह किसी दूसरे को नहीं मालूम हो सकता।

औरत०। इसी से तो मैं तुम्हें मेहनत करने के लिए कह रही हूं और समझती हूं कि इस काम को तुम जल्द कर सकोगे।

दूसरा०। नहीं, अगर ऐसा समझतीं तो किसी दूसरे आदमी का पुछल्ला हमारे साथ न लगातीं और न यह भेद किसी दूसरे से कहने का ही इरादा करतीं। क्या इस बात का ध्यान तुम्हें नहीं है कि ज्यादे आदमियों को इस बात की खबर हो जाने से धीरे धीरे यह बात दुश्मन के कान तक भी पहुंच सकती है और दुश्मन चौकन्ना हो सकता है।

औरत०। (मुस्कुरा कर) अगर इस बात का खयाल न होता तो मैं इस काम में जल्दी क्यों करती?

पहिला०। असल तो यह है कि तुम दिल का भाव छिपा कर बातें करती हो, तुम्हें उचित यही है कि अपना इरादा साफ जाहिर कर दो।

औरत०। मैं अपने दिल का भाव तुमसे जरा नहीं छिपाती, इसका शक तो तुम अपने दिल से दूर कर दो और इरादे की जो कहते हो सो इरादा तो मेरा यही होता है कि यह भेद जमना सरस्वती और इन्द्रदेव से कह दूं जिसमें वे उस काम की धुन में लगें, और तुम दोनों उनकी मदद करो।

दूसरा० । मगर हम दोनों को यह बात पसन्द नहीं है ।

औरत० । (कुछ सोच कर) खैर पसन्द नहीं है तो जाने दो, तुम ही दोनों इस काम को कर डालो और दयाराम को खोज निकालो, मैं किसी और से इसका जिक्र न करूंगी ।

पहिला० । अच्छा तो दयाराम के विषय में जो जो बातें तुम्हें मालूम हो चुकी हैं वह सब हमें सुनाओ ।

औरत० । यह मामला कल पर रहने दो । इतना तो मैं तुम्हें कह ही चुकी हूं कि फलाने शहर में दयाराम पड़े हुए हैं, बाकी और जो कुछ भेद की बातें मुझे मालूम होने वाली हैं उनका आज निश्चय करके तब कल तुमसे कहूंगा, तुम दोनों कल पुनः इसी समय इसी जगह आ कर मुझसे मिलना ।

दोनों० । बहुत अच्छा, कल जरूर आवेंगे ।

इतनी बातें होने के बाद तीनों वहां से उठ खड़े हुए और अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर चले जाने की फिक्र करने लगे । भूतनाथ बड़ी फुर्ती और चालाकी से घिसकता हुआ एक घनी झाड़ी के अन्दर जा छिपा और जब वे लोग वहां से चले गए तो उसने उस औरत को छोड़ कर दोनों मरदों का पीछा किया जो बड़ी खुशी खुशी आपस में बातें करते हुए धीरे धीरे पश्चिम की तरफ जा रहे थे ।

तीसरा बयान

भूतनाथ ने जो कुछ बातें छिप कर सुनीं वह उसके लिए बड़ी ही ताज्जुब की थीं । हम इस जगह पर यह नहीं कह सकते कि इन बातों को सुन कर भूतनाथ के दिल की क्या अवस्था हुई अथवा इससे उसके दिल पर क्या असर पड़ा, हां इतना जरूर मालूम होता है कि इस समय भूतनाथ का दिल उसके काबू में नहीं है और वह बहुत ही बेचैन हो रहा है ।

भूतनाथ इस फिक्र में था कि किसी तरह इन दोनों को गिरफ्तार करना चाहिए परन्तु इस समय वह किसी तरह की ऐयारी नहीं कर सकता था क्योंकि जिनको वह गिरफ्तार किया चाहता था वे घोड़े पर सवार जा रहे थे और भूतनाथ अपनी असली सूरत में था इसलिए कोई अच्छी कार्रवाई करना बहुत कठिन था परन्तु इस मौके को वह छोड़ भी नहीं सकता था ।

कई सायत वह खड़ा सोचता और उन दोनों सवारों की तरफ देखता रहा । इस बीच में उसे कोई बात याद आ गई । वह झट से एक पेड़ के नीचे बैठ गया

और जो कुछ उसे करना था बड़ी तेजी और फुर्ती के साथ किया अर्थात बटुए में से नकाब निकाल कर अपने चेहरे पर लगाई, इसके बाद एक शीशा निकाली जिसमें बहुत सी गोलियां भरी हुई थीं, उसमें से एक गोली निकाल कर अपने मुंह में रक्खी और फिर दो चीठियां जो लिफाफे में बन्द थीं और दो चांदी की डिबियाएं निकाल कर जेब में रखने बाद बटुआ बन्द कर उन दोनों सवारों का पीछा किया जो आपस में बातें करते हुए धीरे धीरे चले जा रहे थे।

थोड़ी ही देर में भूतनाथ उन दोनों सवारों के पास जा पहुंचा और सामना रोक कर दोनों को सलाम किया, साथ ही जेब में से डिबिया और चीठी निकाल कर एक एक डिबिया और एक एक चीठी दोनों के हाथ में देते हुए कहा, "एक औरत ने जो अभी अभी (हाथ का इशारा करके) उस तरफ जा रही है ये चीजें आपको देने के लिए मुझे भेजा है और कहा है कि बातचीत करने की धुन में यह डिबिया और चीठी आप लोगों को देना मैं बिल्कुल ही भूल गई थी।"

दोनों सवारों ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ के हाथ से डिबिया और चीठी ले ली और पूछा, "तुम कौन हो और उन्हें कहां मिले? व तो वहां हम लोगों के पास अकेली ही आई थीं!"

भूत०। इसका जवाब देना मैं उचित नहीं समझता, जो कुछ काम मेरे सुपुर्द किया गया था उसे पूरा कर चुका और जाता हूं।

एक सवार०। ठहरो ठहरो, इस डिबिया और चीठी को देख तो लेने दो, शायद कुछ जवाब देने की जरूरत पड़े।

भूत०। बहुत अच्छा मैं ठहरता हूं, आप देख लीजिये।

इतना कह कर भूतनाथ एक किनारे खड़ा हो गया और उन दोनों का तमाशा देखने लगा। उन्होंने पहिले तो डिबिया खोली और देखा कि उसमें नर्म मोम की तरह कोई खुशबूदार चीज भरी हुई है। डिबिया खुलने के साथ ही उसके अन्दर की खुशबू ने उन दोनों का दिमाग मुअत्तर कर दिया, यहां तक कि उन डिबियों को अच्छी तरह सूंघे बिना उनसे रहा न गया, इसके बाद डिबिया बन्द करके जेब में रक्खी और चीठी खोल कर पढ़ने लगे।

उन चीठियों में कुछ अजीब कुढंगे हर्फ लिखे हुए थे जो बिल्कुल ही समझ में नहीं आते थे। समझ लेना चाहिए कि वे चीठियां खाली बारीक लकीरों ही से भरी हुई थीं और केवल लोगों को धोखा देने के लिए भूतनाथ के बटुए में पड़ी रहा करती थीं। चीठी पढ़ते पढ़ते उन्हें देर हो गई मगर फिर भी वे दोनों कुछ

समझ न सके, आखिर एक ने भूतनाथ की तरफ देख के कहा, "यह आखिर क्या है?"

भूत०। सो मैं क्या जानूं!

एक०। उसने क्या कह कर तुम्हें हमारे पास भेजा है?

भूत०। कुछ भी नहीं, जो कुछ होगा उसी चीठी में लिखा होगा।

दूसरा०। यह चीठी तो पढ़ी ही नहीं जाती!

भूत०। तो मैं क्या करूं?

पहिला०। मालूम होता है कि तू हमसे चालाकी खेलता है!

भूत०। शायद ऐसा ही हो।

इतना कह कर भूतनाथ कई कदम पीछे हट गया और गौर से उन दोनों की तरफ देखने लगा।

भूतनाथ के ढग और उसकी बातों ने उन दोनों को क्रोधित कर दिया और उन्हें इस बात का शक हो गया कि हो न हो यह कोई ऐयार है क्योंकि डिबिया के अन्दर की खुशबूदार चीज के सूंघने से उनके ऊपर धीरे धीरे बेहोशी का असर होता जा रहा था। बातचीत करते करते यद्यपि वे दोनों बेकार हो चुके थे तथापि क्रोध में भर अपने को रोक न सके और घोड़ा बढ़ा कर भूतनाथ पर हमला किया। पैंतरा बदल कर भूतनाथ ने उनका वार बचा लिया और इधर उधर घूम फिर कर उन दोनों को चक्कर लगाने और शरीर हिलाने का मौका दिया। कुछ ही देर बाद वे अपने को सम्हाल न सके और दोनों ही बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

सब के पहिले भूतनाथ ने दोनों घोड़ों पर कब्जा किया और उन्हें किनारे ले जाकर बागडोर के सहारे एक पेड़ के साथ बांध दिया, इसके बाद बारी बारी से उन दोनों आदमियों को भी उठा कर घोड़ों के पास ले गया। धीरे धीरे बड़ी होशियारी और मुस्तैदी के साथ भूतनाथ ने उन दोनों को घोड़ा पर रख कर बागडोर से बांधा और दोनों घोड़ों की लगाम थामे हुए अपने घर का रास्ता लिया। इस समय वह अपनी कार्रवाई पर दिल ही दिल में खुश होता हुआ सोच रहा था कि 'कल इन दोनों के बदले में मैं अपने किसी शागिर्द को लेकर उस औरत से मिलूंगा और देखूंगा कि किस्मत क्या रग दिखाती है।'

चौथा बयान

दूसरे रोज दोपहर दिन चढ़ने के बाद वह औरत पुनः उसी जगल में उसी ठिकाने पहुंची और उन दोनों आदमियों को अपने पहुंचने के पहिले ही से वहां एक

पत्थर की चट्टान पर बैठे पाया। उसे देखने के साथ ही एक ने कहा, "हम लोग बहुत देर से आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

औरत०। मेरे आने में कुछ देर तो हुई नहीं।

एक०। ज्यादे नहीं मगर कुछ देर जरूर हुई।

औरत०। (एक पत्थर पर बैठती हुई) शायद ऐसा ही हो।

दूसरा०। खैर सुनाइए क्या हाल है?

औरत०। बस वही, जो कुछ कल मैं तुम लोगों से कह चुकी हूं उससे ज्यादे कोई काम की बात मालूम नहीं हुई, सिर्फ उतने ही से काम चलाना होगा।

पहिला०। क्या आप निश्चय रूप से कहती हैं कि दयाराम फलानी जगह और फलाने की कैद में हैं?

औरत०। जो कुछ मैंने कहा है उसमें किसी तरह का शक मत करो और विश्वास रक्खो कि दयाराम दारोगा साहब के कब्जे में हैं। चाहे दारोगा साहब ने उन्हें अपने घर में कैद कर छोड़ा हो या अपने किसी दोस्त के घर में, मगर वे हैं निश्चय रूप से दारोगा ही के कब्जे में।

एक०। खैर कोई चिन्ता नहीं समझ लिया जायगा, अच्छा इस विषय में कुछ कह सकती हो कि राजसिंह के यहां से निकल कर दारोगा के कब्जे में दयाराम क्योंकर जा फंसे।

औरत०। इसका हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह ने जो चीठी भूतनाथ को लिखी थी उसमें कैदखाने की तस्वीर दिखाने के अतिरिक्त केवल इतना ही लिखा है कि—'बेशक मेरे बाप ने दयाराम को पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुंच गया। भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया। असल में दयाराम को जमानिया के दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया। दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे। दयाराम को अपने कब्जे में रख कर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है। भूतनाथ, सम्हलो और इस भेद को जानो। इस खबर के बदले में मैं तुमसे मित्रता की भिक्षा मांगता हूं।' बस इतना ही मजमून लिखा था।

पहिला०। (मुस्कुराता हुआ) मानों अक्षर अक्षर तुमने याद कर रक्खा है।

औरत०। बेशक ऐसा ही है, इसमें मैंने कोई शब्द कम या ज्यादे नहीं कहा है।

दूसरा०। (मुस्कुराता हुआ) ध्यानसिंह अब गदाधरसिंहसे दोस्ती करना चाहता है।

औरत०। भूतनाथ का आज कल पता नहीं लगता, अगर ठिकाना मालूम

होता तो वह चीठी भूतनाथ के पास पहुंच गई होती और भूतनाथ ध्यानसिंह से मिल कर न मालुम क्या कर चुका होता ।

पहिला० । अब इस समय वह चीठी किसके पास है ?

औरत० । सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि मैं अपनी जान बचा कर सब काम किया चाहती हूं । अच्छा अब तो रहो सही बात भी मैंने तुमसे कह दी अस्तु जिस तरह बन पड़े तुम दयाराम का पता लगाओ और टोह लेते हुए बीच बीच में बराबर मुझसे मिलते भी रहो ।

पहिला० । तुम्हारा ठिकाना कहां रहेगा और हम लोग कहां पर तुमसे मिला करें ?

इस बात का जवाब उस औरत ने कुछ भी न दिया बल्कि किसी गौर में पड़ कर आश्चर्य से उस आदमी का मुंह देखने लगी । सबब इसका यह था कि कल जिन दो आदमियों से इस औरत ने बातचीत की वे इसका पता अच्छी तरह जानते थे मगर इस समय इससे बातें करने वाले असल में वे दोनों नहीं हैं बल्कि आज वह भूतनाथ और उसके शागिर्द से बातचीत कर रही है । भूतनाथ को उसका ठिकाना मालूम न था इसलिए वह भूल कर ऐसा सवाल कर बैठा जिससे वह औरत तुरंत समझ गई कि यह कोई दूसरा ऐयार है । वह इस भेद को खोला और कुछ कहा ही चाहती थी कि उसे एक खयाल ने ऐसा करने से रोक दिया । उसके दिल में यह बात पैदा हो गई कि अगर वह वास्तव में कोई दूसरा ऐयार है तो मेरे चौंकने और जाहिर कर देने से मेरा दुश्मन बन जायगा और शायद मुझे गिरफ्तार भी कर ले, मैं औरत की जात इस समय बिल्कुल बेबस और अकेली हूं और ये दो आदमी हैं । यहा सोच वह चुप हो रही और अपना चेहरा इस ढग का बना लिया मानों कुछ गौर कर रही है । कुछ देर बाद उसने उस आदमी से कहा, "अभी तक मेरा ठिकाना कोई निश्चय नहीं हुआ मगर हां कल तक यह बात भी तै पा जायगी । तुम एक दफे और तकलीफ करो और परसों पुनः मुझसे इसी जगह मिलो, मैं अपने ठिकाने का हाल तुमसे कह दूंगी तथा और भी जो कुछ भेद इस बीच में मालूम होगा वह भी बयान करूंगी ।" इतना कह वह औरत जाने के लिए तैयार हो गई और उसे मुस्तैद देख कर वे दोनों आदमी भी उठ खड़े हुए तथा अपने अपनी घोड़ों की तरफ बढ़े ।

हमारे पाठक जरूर ही समझ गये होंगे कि उस औरत से बातें करने वाले दोनों आदमियों में से एक भूतनाथ और दूसरा उसका शागिर्द था । वहां से रवाना

होने और कुछ दूर निकल जाने के बाद भूतनाथ और उसके शागिर्द से इस तरह दो चार बातें हुईं:—

भूत०। मेरे लिए इतना ही मालूम हो जाना काफी है कि दयाराम जीते जागते और दारोगा के कब्जे में हैं तथा ध्यानसिंह मुझे खोजता और मुझसे दोस्ती किया चाहता है।

शागिर्द०। बेशक इतना काफी है। बातें तो कुछ और भी जरूर मालूम होतीं मगर आखीर को एक सवाल जरा भूंड़ा पड़ जाने से वह समझ गई कि हम दोनों कोई दूसरे ही हैं।

भूत०। बेशक उस सवाल में मुझसे भूल हो गई और उसे शक पड़ गया। मैंने सिर्फ इस खयाल से वह सवाल किया था कि उसका पता मालूम हो जाय तो मैं और भी कोई काम निकाल सकूं मगर खैर जितना मालुम हुआ उतना ही बहुत है। पहिले तो मेरे जी में आया कि उसे पकड़ लूं परन्तु कई बातों को सोच कर रह गया।

शागिर्द०। नहीं, उसका गिरफ्तार कर लेना ठीक न होता।

इसके बाद चलते चलते उन दोनों में जो कुछ बातें हुईं वे ऐसी न थीं कि लिखी जांय।

वह औरत जब वहां से रवाना हुई तो उसका चेहरा बहुत उदास और सुस्त था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसका भेद किसी दूसरे ऐयार को मालूम हो गया। उसे भूतनाथ का डर बहुत ही ज्यादे लगा रहता था क्योंकि उसको विश्वास था कि अगर यह भेद भूतनाथ को मालूम हो जायगा तो दयाराम की जान किसी तरह न बचेगी अस्तु वह तरह तरह की बातें विचारती हुई जमना और सरस्वती से मिलने की नीयत करके इन्द्रदेव के मकान की तरफ तेजी के साथ रवाना हुई। उसे यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव आजकल कैलाश-भवन' में रहते हैं और जमना तथा सरस्वती से उसी मकान में मुलाकात होगी।

रात दो घण्टे से ज्यादे बीत गई होगी जब वह औरत कैलाश-भवन के दर्वाजे पर पहुंची। पहरेदार की जबानी इत्तिला कराने पर वह अन्दर बुला ली गई और मामूली जांच के बाद उस जगह पहुंचाई गई जहां जमना सरस्वतो और इन्दुमती रहती थीं। देखने के साथ ही जमना सरस्वती ने उसे बड़े प्यार से अपने पास बैठाया और पूछा, "कुछ पढ़ती है?" जिसके जवाब में उसने कहा, "हां महाभारत पढ़ने लगी हूं!"

यह एक गुप्त इशारा था जो इसके पहिले वाली मुलाकात में जमना और

सरस्वती ने इसे सिखाया था और कहा था कि मुलाकात होने पर मेरे सवाल के जवाब में जब तू ऐसा कहेगी तब मैं समझूंगी कि यह वास्तव में 'छन्नो' है। ऊपर के बयान में यह अपने दोनों साथियों से कह चुकी है कि जमना और सरस्वती से उसकी मुलाकात हो चुकी है।

छन्नो०। (जमना और सरस्वती से) कहो मिजाज तो अच्छा है?

सरस्वती०। मेरा मिजाज अच्छा है या बुरा सो क्या तुझसे छिपा है!

छन्नो०। छिपा तो नहीं है और मैं सब कुछ जानती भी हूँ परन्तु फिर भी और कुछ नहीं तो शारीरिक अवस्था का कुशल तो पूछना ही पड़ता है।

सर०। मनुष्य की शारीरिक अवस्था भी आन्तरिक अवस्था के ही आधीन है! जिसकी अन्तरात्मा प्रसन्न है उसका शरीर भी सबल और पुष्ट रहता है और जिसकी अन्तरात्मा दुःखी है उसका शरीर बिना रोग के भी सदैव रोगी रहता है। मेरी अन्तरात्मा का हाल तुझसे छिपा नहीं है और जो कुछ छिपा था सो भी उस दिन मुलाकात होने पर मैंने तुझसे दिल खोल कर कह दिया। अब तो मेरी प्रसन्नता का कोई कारण भी मेरे पास नहीं रह गया है जिससे इस बात की आशा हो कि मुझे भी किसी दिन प्रसन्न होने और दिल खोल कर हंसने का मौका मिलेगा सिवाय इसके कि दुश्मन पर फतह पाऊं और उसे अत्यन्त दुःखी देख कुछ काल के लिये अपने को सुखी मानूं।

छन्नो०। नहीं नहीं ऐसा नहीं सोचना चाहिए। उस महामाया की माया का अन्त नहीं है, और न कोई बात उसके लिए कठिन है। अगर इतने दिन तक तुम दोनों को विधवा रख के वह आज सधवा बना दे तो यह भी उसके लिए कुछ दूर नहीं।

जमना०। क्यों छन्नो, क्या तू हम लोगों से दिल्लगी करती है, या हम लोगों के पाप की कोई बात तूने सुनी है!

छन्नो०। (दांत तले जबान को दबा कर) राम राम राम! भला ऐसी भी कोई बात है कि मैं तुम दोनों को व्यभिचारणी समझूं या इस तरह की गन्दी दिल्लगी करूं। ऐसा कभी ख्याल भी न करना। बात यह है कि मैं तुम दोनों को तुम्हारे पति के अभी तक जीते रहने को मुबारकबाद देती हुई खुशखबरी सुनाने के लिए तैयार हूं और इसी लिये इस ढंग की बातें कर रही हूं।

दोनों०। यह दूसरी दिल्लगी है!

छन्नो०। मैं तुम्हारी ही कसम खाकर कहती हूं कि तुमसे झूठ नहीं बोलती और यही सच्ची खबर सुनाने के लिये मैं तुम्हारे पास इस समय आई हूं।

जमना० । क्या तू ईश्वर और धर्म की कसम खाकर ऐसा कह सकती है ?

छन्नो०। हां हां, ईश्वर और धर्म की भी कसम खा कर कहती हूं कि इसका पूरा पूरा सबूत पाकर ही मैं तुम्हें खबर देने के लिये आई हूं, परन्तु वह खबर सुना देने के बाद मैं नहीं कह सकती कि दुश्मनों के हाथ से जीती बचूंगी या नहीं क्योंकि जब मेरे दुश्मनों और उनके साथियों को यह बात मालूम हो जायेगी कि मैंने उनसे अलग होकर यह भेद तुमसे कह दिया है तब वे मुझे जान से मार डालने के लिये कोई बात उठा न रक्खेंगे। खैर मुझे अपने मरने की भी चिन्ता नहीं है,अगर चिन्ता है तो केवल इतनी ही कि मैं अपनी जिन्दगी में तुम दोनों को प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पति के पास बैठी हुई देख लूं।

छन्नो की बातों ने जमना और सरस्वती के दिल में प्रसन्नता के साथ ही साथ एक अजीब तरह की खलबली पैदा कर दी। मारे खुशी के रोमांच होकर उनका कंठ रुद्ध हो गया और बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर उन्होंने छन्नों की बात का जवाब दिया—

जमना०। अगर वे जीते हैं तो कहां और किस अवस्था में हैं ?

छन्नो०। जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है मगर किस अवस्था में हैं सो नहीं कह सकती।

जमना०। यह तुझे कैसे मालूम हुआ ?

छन्नो०। खुद मेरी मौसेरी बहिन निरंजनी ने इस बात का पता लगाया है। इस काम में मैं भी उसके साथ थी और साथ देना चाहती थी मगर जब मैंने देखा कि निरंजनी का दिल बेईमान हो गया और वह दयारामजी को खोज निकालने के साथ ही साथ स्वयं जमना या सरस्वती बन कर उनके साथ सुख किया चाहती है तब मैंने उसका साथ छोड़ दिया और तुम्हें यह बताने के लिए आई हूं कि तुम अपनी रक्षा करने के साथ ही साथ स्वयं उन्हें निरंजनी के पहिले ही कैद से छुड़ा लो और इस तरह निरंजनी को अपने ऊपर अहसान जताने का भी मौका मत दो। इन्द्रदेवजी की मदद पाकर तुम दोनों जो कुछ कर सकती हो वह निरंजनी को कदापि नसीब नहीं हो सकता। तुम इन्द्रदेवजी को यहां बुलाओ या अपने साथ मुझे उनके पास ले चलो। मैं सब हाल उनके सामने ही बयान कर दूंगी जिसमें दोहराने की नौबत न आवे और काम में देर न हो।

इतना सुनते ही जमना और सरस्वती उठ खड़ी हुईं और छन्नों का हाथ थामे हुए इन्द्रदेव के पास रवाना हुईं जो इस समय सन्ध्योपासन से निवृत्त

होकर अपने एकान्त के कमरे में बैठे हुए कुछ लिख रहे थे।

इन्द्रदेव इन तीनों को देख कर प्रसन्न हुए और बैठने का इशारा करके बोले, "मैं इस समय तुम तीनों को बुलाने वाला ही था। (छन्नो की तरफ देख कर) यह क्या दयाराम के अभी तक जीते रहने की खबर लेकर आई है?"

जमना०। (बड़े ही आश्चर्य के साथ) जी हां ऐसा ही है, आपको यह बात कैसे मालूम हुई?

इन्द्र०। अभी तुरत ही मुझे भी इस बात की खबर लगी है और मालूम हुआ कि वे अभी तक दारोगा की कैद में पड़े हुए हैं, परन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि यह खबर कहां तक सच है!

छन्नो०। बेशक यह खबर सच है और मैं इसका पूरा पूरा सबूत आपको दूंगी।

इन्द्र०। अगर यह खबर सच है तो इससे बढ़ कर कोई खुशी मेरे लिए नहीं हो सकती, बैठो और खुलासा हाल बयान करो।

जमना०। क्या आपको आपके किसी शागिर्द ने यह खबर दी है?

इन्द्र०। हां, कल छन्नो एक जंगल में बैठी हुई दो ऐयारों से इसी विषय में बातचीत कर रही थी और मेरा एक शागिर्द उसी जगह छिपा सब बातें सुन रहा था तथा एक तरफ भूतनाथ भी छिपा हुआ वह सब बातें सुन रहा था......

छन्नो०। (बात काट कर) क्या भूतनाथ ने वे सब बातें सुन लीं और उसे भी दयारामजी के जीते रहने की खबर लग गई?

इन्द्र०। हां, उसे सब बातें मालूम हो गई मगर कोई चिन्ता नहीं, अब तुम्हारे कहने से मुझे विश्वास हो गया और मैं होशियार हो गया हूं। मेरे सामने उसकी कोई कारंवाई चल न सकेगी चाहे वह नेकनीयती के साथ करे या बदनीयती के साथ। भैयाराजा का कथन तो यही है कि अब भूतनाथ किसी प्रकार की बुराई न करेगा, उसकी नीयत साफ हो गई, परन्तु मुझे उस पर अभी तक विश्वास नहीं होता। (छन्नो से) तुम्हें यह सुन कर आश्चर्य मालूम होगा कि उस एकान्त जंगल में तुम लोगों की बात सुनने के लिए मेरा शागिर्द क्योंकर जा पहुंचा!

छन्नो०। बेशक यह आश्चर्य की बात है।

इन्द्र०। तो मैं यह कह कर तुम्हारा आश्चर्य दूर करे देता हूं कि मेरा शागिर्द आज महीने भर से तुम्हारे और निरंजनी के पीछे लगा हुआ है इसका सबब यह है कि जमना और सरस्वती ने राजसिंह के कुल का अपने हाथ से सत्यानाश करने का प्रण किया है जो दयाराम को गिरफ्तार कर ले गया था। यद्यपि यह बात

मुझे पसन्द नहीं है तथपि इन दोनों की खातिर मुझे सब कुछ करना ही पड़ता है और इसी लिए आज कल मेरे दो शागिर्द राजसिंह के इलाके में और उसके घर के इर्द गिर्द कई वातों की टोह लगाने के लिए घूमा करते हैं। किसी कारणवश राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह को इस बात की खबर लग गई कि आज कल कई ऐयार उसके इलाके में घूम रहे हैं 'जसमे वह चैतन्य हो गया और डर के मारे उसने घर से निकलना तक भी वन्द कर दिया। साथ ही इसके वह गदाधरसिंह को दोस्त बनाने की फिक्र करने लगा यह सोच कर कि वह जमना और सरस्वती का दुश्मन है। इसी वीच में तुम्हारी वहिन निरंजनी ने अपने ऐयारों के साथ वहां पहुंच कर उसकी लड़की को हर लिया और उसे कैद करके अपने घर ले गई। मेरे शागिर्द ने मुझे इस वात की इत्तिला दी और मैं स्वयं इस बात की जांच में लग गया मगर जमना और सरस्वती का मैंने इस बात की खबर नहीं दी और उसके आगे का भेद मालूम करने लगा। काशी के जिस मकान में आज कल तुम और निरंजनी रहती हो वह मकान मेरा ही है। मेरे शागिर्द ने निरंजनी के एक ऐयार को गिरफ्तार कर लिया और खुद उसकी सूरत वन निरंजनी के साथ रहने लगा। उसी ने बातें बना कर और वहुत कुछ ऊंच नीच समझा कर मेरा मकान जिसमें मेरे नौकर चाकर रहा करते थे और निरंजनी को इस बात की कुछ भी खवर न थी, खाली करा कर थोड़े किराये में निरंजनी को दिलवा दिया और तुम लोगों ने उसी मकान में आकर डेरा डाला, तथा ध्यानसिंह की लड़की को भी निरंजनी ने उसी मकान में ले जाकर कैद किया। इसके बाद निरंजनी ने अपने ऐयारों की मदद से जिनमें मेरा शागिर्द भी शामिल था ध्यानसिंह के उस आदमी को मार डाला जो ध्यानसिंह की चीठी लेकर भूतनाथ की खोज में जा रहा था। उस चीठी के साथ दयाराम के कैद के विषय में एक नक्शा भी था। मेरे शागिर्द ने उस नक्शे और चीठी को अच्छी तरह देखा और पढ़ा था। जब मेरे शागिर्द ने इन सब बातों की मुझे खवर दी तब मैंने गुप्त राह से वहां पहुंच कर उस लड़की को कैद से छुड़ाया। आज ही वह लड़की यहां लाई गई है। इस समय मैं जमना और सरस्वती से उसकी मुलाकात कराने वाला था, पर खैर इससे अब तुम समझ गई होवोगी कि मेरा वह शागिर्द अभी तक तुम लोगों के पीछे लगा हुआ है। और इसी सबब से उसने उस जंगल में पहुंच कर तुम्हारी सब वातें सुन ली थीं।

इन्द्रदेव की बातें सुन कर छन्नो हैरान होगई और उसने हाथ जोड़ कर इन्द्रदेव से कहा, "आप धन्य हैं! आपकी बुद्धिमानी का कोई हद्द हिसाब नहीं। मैं तो

यही समझे हुई थी कि मैं यह खुशखबरी आपको सुनाऊंगी मगर अब मालूम हुआ कि आप इस विषय में मुझसे कहीं ज्यादा जानकार हैं जिससे मुझे अब अपनी कारंवाई पर शर्म आती है।"

इन्द्र०। नहीं नहीं, इसमें शर्म की कोई बात नहीं, मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूं कि तुमने नेकनीयती के साथ यहां आ कर इन सब बातों की जमना और सरस्वती को इत्तिला दी और इसे सुन कर मुझे अपने शागिर्द की बातों पर और भी विश्वास हो गया। अच्छा अब कहो कि तुमने यहां आकर जमना और सरस्वती को क्या बातें सुनाईं!

इन्द्रदेव की बातें सुन कर जमना और सरस्वती बहुत ही प्रसन्न हुईं तथा छन्नो ने भी जो कुछ मालूम था सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और अब भविष्य में क्या करना चाहिये इस विषय में राय पूछी।

हमारे प्रेमी पाठक भी अब इस बात को समझ गये होंगे और न समझे हों तो अब समझ जांय कि निरंजनी ने जिस लड़की को उस लोहे वाले जंगले में कैद कर रक्खा था वह ध्यानसिंह की ही लड़की थी और जो उस कैदखाने में उसका मददगार बन कर पहुँचा था (अथवा जमीन के अन्दर से निकला था) वह इन्द्रदेव थे।

इसके बाद उन सभों में फिर इस तरह बातचीत होने लगी—

सरस्वती०। (इन्द्रदेव से) तो क्या वास्तव में अभी तक वे जीते हैं।

इन्द्र०। मालूम तो ऐसा ही होता है, ईश्वर करे यह बात सच निकले और मैं उन्हें छुड़ा कर तुम लोगों के पास ला सकूं। (छन्नो से) इस भेद को अब तुम बहुत गुप्त रखना जिससे दारोगा के कान तक यह बात पहुंचने न पावे*।

छन्नो०। जी नहीं अब मैं इस विषय में किसी से भी बातचीत न करूंगी।

इन्द्र०। और तुम अब कुछ दिनों तक हमारे इस मकान से बाहर भी न जाना।

छन्नो०। जो आज्ञा।

इन्द्र०। अभी तक मैंने ध्यानसिंह की लड़की से कुछ विशेष बातचीत नहीं की है अस्तु उसे यहां बुलवाता हूँ। तुम उससे बातचीत करो और मैं भी उससे पूछ कर देखता हूँ कि इस विषय में और क्या क्या बातें बताता है।

छन्नो०। जरूर बुलवाना चाहिये। अच्छा यह तो बताइये कि निरंजनी का

---

* यह बात हमेशा के लिए गुप्त रह गई और इसीलिए चन्द्रकान्ता सन्तति में भूतनाथ का हाल कहते हुए दलीपशाह ने इस किस्से को नहीं बयान किया क्योंकि उसे यह हाल मालूम ही न था।

वह ऐयार जिसे आपके शागिर्द ने पकड़ लिया था अब कहां है ?

इन्द्र० । वह मेरे कब्जे में है, उसे अभी तक इस बात का ज्ञान नहीं हुआ है कि उसे किसने गिरफ्तार किया या वह किसके मकान में है और भविष्य में भी उसे इस बात की खबर न होगी क्योंकि वह बेहोश करके किसी जंगल मैदान में छोड़ दिया जायगा जहां से वह तुम्हारी बहिन निरंजनी के पास पहुंच जायगा । आज ही उसे भी रिहाई देने की मेरी इच्छा है ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठे और बाहर जाकर उन्होंने अपने किसी आदमी को हुक्म दिया कि ध्यानसिंह का लड़की को यहां ले आये । थोड़ी ही देर में वह लड़की वहां आ पहुंची जहां जमना सरस्वती छन्नो और इन्द्रदेव बैठे बातें कर रहे थे ।

इस लड़की की सूरत शक्ल के विषय में कुछ थोड़ा सा हम निरंजनी के बयान में लिख आए हैं, यहां पुनः लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती । यहां केवल इतना ही लिख देना काफी होगा कि अभी तक उसके चेहरे पर से उदासी और घबराहट दूर नहीं हुई । इसका विशेष कारण तो यह जान पड़ता है कि वह बेचारी वहां भी कैद थी और यहां भी अपने को कैदी ही समझती है ?

इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वह लड़की जिसका नाम ज्वाला था बैठ गई । तब इन्द्रदेव ने उससे कहा, "बेटी, मैं तुझे कई दफे कह चुका हूँ कि तू अपने दिल से डर और उदासी को दूर कर दे, मेरे यहां तुझे किसी तरह की भी तकलीफ न होगी, मगर फिर भी न मालूम क्यों तुझे मेरी बातों का विश्वास नहीं होता ।"

ज्वाला० । मुझे आपकी बातों का पूरा विश्वास है, मुझे आपका बहुत भरोसा है, आप मेरे बहुत आड़े वक्त में काम आये हैं और आपने मेरी रक्षा की है । मैंने निरंजनी के घर में जो-जो तकलीफें उठाई हैं वह मेरा ही जी जानता है । अगर आप मेरी सहायता न करते तो न मालूम मुझे और भी क्या क्या तकलीफें झेलनी पड़तीं या मैं जीती भी रहती या नहीं, परन्तु अब मुझे सिवा अपने घर पहुँचने के और किसी बात की फिक्र नहीं है ।

इन्द्र० । मैं तुझसे इस बात का भी वादा कर चुका हूं कि तुझे बड़ी इज्जत के साथ तेरे घर पहुंचा दूंगा ।

ज्वाला० । निःसन्देह आपने वादा किया है, आपकी बात कदापि झूठ नहीं हो सकत, (छन्नो की तरफ देख के) पर इनको देख के मैं इस समय पुनः डर गई हूं क्योंकि इन्हें निरंजनी के साथ देख चुकी हूं । यद्यपि इनके हाथ से मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई बल्कि मार पीट के समय इन्होंने मेरी सिफारिश-

ही की थी और मुझे बचाया भी था परन्तु फिर भी......

इन्द्र०। तेरा विचार ठीक है और डरना उचित ही है मगर मैं तुझे जोर देकर कहता हूं कि इससे डरने की तुझे कोई जरूरत नहीं। इसके और निरंजनी के मिजाज में उलटे सीधे का फर्क है। निरंजनी की बुरी नीयत देख कर इसने निरंजनी का साथ छोड़ दिया और अब मेरे घर में (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा करके) इन दोनों के पास चली आई है क्योंकि यह लड़कपन ही से इन दोनों के साथ प्रेम और सचाई के साथ रहती आई है। तू इन दोनों को नहीं पहिचानती और अभी मैं बताऊंगा भी नहीं कि ये दोनों कौन हैं पर इस बात के लिये तुझे दुःख न मानना चाहिए। इतना मैं तुझे जोर देकर कहूंगा कि इन दोनों से भी तुझे डरना न चाहिए और इससे तो जिसका नाम छन्नो है, कदाचित् तुझे मालूम हो, सिवाय भलाई के बुराई की उम्मीद ही मत कर। इसे मैं आज से नहीं बल्कि बहुत दिनों से जानता हूं, अगर ऐसा न होता तो इस पर विश्वास करके आज मैं इसे अपने घर में कदापि न आने देता।

ज्वाला०। आपके कहने से मैं बिलकुल बेफिक्र हो गई परन्तु यह जानने की इच्छा जरूर है कि (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा करके) ये दोनों कौन हैं और ये छन्नो यहां क्यों आई हैं?

इन्द्र०। मैं पहिले ही कह चुका हूं कि इन दोनों का भेद अभी मैं तुझसे न कहूंगा, हां यदि तू कुछ दिन यहां रह गई तो तुझसे कुछ छिपा भी न रहेगा। छन्नो यहां दयाराम का समाचार लेकर आई है जिसका भेद जानने के लिए ही निरंजनी ने तुझे गिरफ्तार किया था। तुझे यह बात अभी मालूम न हुई होगी कि निरंजनी ने तेरे बाप के एक सिपाही को मार कर एक चीठी जिसके साथ और भी कई चीजें थीं ले लीं जो कि तेरे बाप ने भूतनाथ के पास उससे दोस्ती करने के इरादे से भेजी थी और उसी से दयाराम का पूरा हाल निरंजनी को मालूम हो गया है।

ज्वाला०। यह हाल मुझे मालूम नहीं है, हां दयारामजी के विषय में मैं बहुत कुछ निरंजनी को बता चुकी हूं। मेरे पिताजी को बहुत दिनों तक इस बात की कुछ खबर न लगी कि उनके घर में से दयाराम को कौन चुरा ले गया। अभी हाल ही में इस बात का पता लगा है कि यह काम जमानिया के दारोगा ने किया है और अभी तक दयारामजी उसी के घर में हैं। (हाथ जोड़ कर) मेरे दादा की तरह निःसन्देह मेरा पिता भी इस मामले में दोषी है परन्तु मैं बिलकुल ही बेकसूर हूं। यदि मैं किसी योग्य होती तो मैं पिता के घर में कदापि न रहती और

न उसके साथ ही अपनी भी बेइज्जती कराती।

इन्द्र०। बेशक यही बात है और अब भी मैं तुझे यही राय दूंगा कि पिता के घर का नाम छोड़ दे क्योंकि तेरा पिता ताज्जुब नहीं कि किसी दिन अपने कर्मों का फल इसी जीवन मे पा जाय, ऐसी अवस्था में तुझे वहा बड़ी तकलीफ होगी।

ज्वाला०। तकलीफ क्या मैं बिल्कुल ही बेइज्जत हो जाऊंगी और किसी काम के लायक न रहूंगी। अब तो मैंने आप ही को अपना पिता और ईश्वर दोनों ही मान लिया है। आप जो आज्ञा देंगे वही करूंगी। मैं अपने घर का यदि कुछ ख्याल करती हूं तो केवल अपनी मां की मुहब्बत से।

इन्द्र०। ठीक है और अगर ईश्वर चाहेगा तो तू अपनी माता से भी किसी अच्छे मौके पर मिला दी जायेगी। यदि तेरी माता को यह बात मालूम होगी कि तू इतने दिनों तक इन्द्रदेव के यहां रही है तो वह कदापि तुझसे असन्तुष्ट न होगी और न तेरी इज्जत या चालचलन में किसा तरह का फर्क मानेगी।

ज्वाला०। निःसन्देह ऐसा ही है, आपके यहां रहने में मेरा किसी प्रकार का नुकसान नही।

इन्द्र०। (जमना सरस्वती और छन्नो से) अब तुम लोग इस लड़की को अपने साथ ले जाओ और इसे अपनी लड़की समझ कर खातिर के साथ अपने साथ रक्खो। (ज्वाला से) इन तीनों के साथ तू बेफिक्री के साथ रह कर ईश्वर से शुभ दिन के प्राप्ति की प्रार्थना कर, साथ ही दयाराम के विषय में जो कुछ ये तीनों पूछें उसके बयान में किसी प्रकार का संकोच मत कीजियो।

ज्वाला०। जो आज्ञा।

इसके बाद जब वहां से उठने जी तैयारी हुई तब छन्नो ने इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा, "एक बात मैं आपसे कहना भूल गई।"

इन्द्र०। वह क्या ?

छन्नो०। आपको मालूम ही होगा कि भूतनाथ से और नागर से दोस्ती है।

इन्द्र०। हां मैं इस बात को बखूबी जानता हूं।

छन्नो०। इसलिये भूतनाथ अपने हाल चाल की चीठी जिसमें बहुत सी भेद की बातें रहती हैं बराबर नागर को लिखा करता है। निरंजनी भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई बहुत सी चीठियां नागर से मंगनी मांग लाई है और उनसे भूतनाथ के भेद जान कर उस पर अपना रोआब जमाना चाहती है। अभी तक वे चीठियां निरंजनी के पास ही मोजूद हैं।

इन्द्र० । अच्छा किया जो तूने यह हाल मुझे बता दिया, अगर हो सका तो इस विषय में भी मैं कार्रवाई करूंगा, अच्छा अब तुम लोग जा कर आराम करो।

पांचवां बयान

दयाराम को खोज निकलने की धुन में तीन आदमी अपने अपने स्थान से बाहर निकले। निरंजनी को दारोगा साहब से नागर की बदौलत कुछ घनिष्ट सम्बन्ध था और नागर निरंजनी को बहुत प्यार करती थी अस्तु निरंजनी पहिले नागर ही के घर की तरफ रवाना हुई। भूतनाथ यद्यपि दारोगा से कुछ लड़ गया था परन्तु उसे इतना जरूर विश्वास था कि यदि मैं दारोगा के घर उसका दोस्त बन कर जाऊंगा तो वह मेरी खुशामद करने के लिए तैयार मिलेगा और चाहेगा कि मुझे किसी तरह अपना दोस्त बनावे, इसलिए वह दारोगा से मिलने के लिए अपनी असली सूरत में जमानिया की तरफ रवाना हुआ। इन्द्रदेव से दारोगा निःसन्देह डरता था और यह बात इन्द्रदेव को मालूम थी परन्तु इन्द्रदेव को विश्वास था कि यदि मैं दयाराम के विषय में दारोगा से कुछ कहूंगा तो वह जरूर अनजान बन कर इनकार कर जायगा और कहेगा कि उनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता, इस खयाल से इन्द्रदेव ने दारोगा को अपने घर ही बुला कर कुछ कार्रवाई करना मुनासिब समझा और अपने एक सवार को चीठी दे कर दारोगा के पास रवाना किया जिसमें यह मजमून लिखा हुआ था:—

"मेरे परम प्रिय गुरुभाई,

पत्र देखते ही हजार काम छोड़ कर मेरे पास चले आओ। मैं खुद तुमसे मिलने के लिए आता परन्तु अपने स्वास्थ्य के बिगड़ जाने से बिलकुल लाचार हो रहा हूं, नहीं तो आपको कष्ट न देता। यदि किसी कार्यवश महाराज भी आपको रोकें तो उनसे मेरी तरफ से क्षमा-प्रार्थना करना परन्तु आने में विलम्ब न करना।

आपका— इन्द्रदेव।"

इस पत्र को लेकर सवार तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुआ और इन्द्रदेव दारोगा के आने का इन्तजार करने लगे।

तीसरे दिन संध्या के समय दारोगा साहब इन्द्रदेव के घर पहुंचे और उन्होंने बड़ी खातिर से दारोगा को अपने कैलाश-भवन के एक सुन्दर कमरे में उतारा जो उस मकान या खंड से बिल्कुल ही निराले में पड़ता था जिसमें इन्द्रदेव की गृहस्थी और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति वगैरह रहती थीं।

खातिरदारी से छुट्टी पाने के बाद जब दोनों आदमी निश्चिन्ती से एकान्त में बैठे तो इन्द्रदेव और दारोगा में इस तरह बातचीत होने लगी:— ।

दारोगा०। कहो क्या मामला है जो तुमने इस तरह यकायक जल्दी के साथ मुझे बुला भेजा ? तुम्हारी चीठी पाकर तो मैं बहुत ही घबड़ा गया था फिर भी ईश्वर को धन्यवाद है कि यहां आकर तुम्हें तन्दुरुस्त पाता हूँ।

इन्द्र०। नहीं, मैं तन्दुरुस्त नहीं हूँ। यद्यपि उस दिन की बनिस्बत जिस दिन मैंने आपको चीठी लिखी थी आज कुछ अच्छा दिखाई देता हूँ और मुझमें चलने फिरने तथा घोड़े पर चढ़ने की भी हिम्मत हो गई है परन्तु फिर भी मैं अपने को तन्दुरुस्त नहीं मानता और वैद्य की बात पर विश्वास करता हूं जिसने मुझे संकोच छोड़ कर यह कह दिया है कि 'इन्द्रदेव, अगर तुम पन्द्रह दिन तक जीते बच गए तो फिर तुम्हें इस बीमारी से किसी तरह का डर न रहेगा।'

दारोगा०। (आश्चर्य और दुःख के साथ) हैं, ऐसी बात है ! आखिर तुम्हें बीमारी क्या है सो भी तो कुछ मालूम हो !

इन्द्र०। मुझे एक अजीब तरह की बीमारी हो गई है। मेरे पैरों में सख्त दर्द रहता है। कभी कभी वह दर्द आठ आठ दस दस घण्टे तक बन्द रहता है और जब यकायक उमड़ता है तो अधमूआ करके छोड़ देता है। इसी तरह दिन में दो तीन मरतबे कलेजे में दर्द होता है और उस समय तो मैं अपने जीवन से बिलकुल ही निराश हो जाता हूं। खाना पीना बिल्कुल ही नष्टप्राय हो रहा है, केवल मूंग की दाल खाने की आज्ञा वैद्यजी दे गए हैं !

दारोगा०। बड़े दुःख की बात सुना रहे हो ?

इन्द्र०। आप जानते हैं कि मेरा कोई लड़का नहीं है और मैं एक भारी तिलिस्म का दारोग हूं।

दारोगा०। हां यह तो मैं बखूबी जानता हूं।

इन्द्र०। यद्यपि मेरे घर लड़का होने की उम्मीद है सही परन्तु नहीं कह सकता कि लड़का होगा या लड़की अथवा दोनों की उम्मीद जाती रहेगी।

दारोगा०। परमात्मा न करे ऐसा हो !

इन्द्र०। भविष्य के गर्भ में क्या है सो कोई नहीं जानता।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है।

इन्द्र०। अतएव मैं चाहता हूं कि आपको तिलिस्म में ले चल कर वहां के कुछ भेद समझाने के साथ ही साथ एक वसीयतनामा और तिलिस्म की तालियों

का गुच्छा आपके हवाले कर दूं। ईश्वर की कृपा से यदि अच्छा रहा तो पन्द्रह बीस दिन बाद तालियों का गुच्छा आपसे वापस ले लूंगा नहीं तो उस वसीयतनामे के पढ़ने से आपको तिलिस्म का सब हाल मालूम हो जायगा, तथा और भी जो कुछ मैंने उस वसीयतनामे में लिख रक्खा है उसे आप बखूबी पूरा करेंगे ऐसी आशा केवल आपही से रख सकता हूं।

इन्द्रदेव की बीमारी का हाल सुनकर दारोगा साहब को दुःख हुआ सही परन्तु इन्द्रदेव जिस तिलिस्म का दारोगा है वहां का भेद मालूम हो जायगा और वहां की तालियां भी मिल जांयगी इस आशा से वह दिल में बहुत ही खुश भी हुआ मगर इस खुशी को अपने चेहरे से जाहिर न होने दिया।

सराहना तो इन्द्रदेव की करनी चाहिये कि इतनी दुष्टता देख कर भी उससे जाहिरदारी तोड़ने का विचार नहीं करता। यद्यपि वह दारोगा को चार दिन के लिये कैद करके अपना काम निकालना चाहता है मगर दारोगा को दुःख देना अथवा उससे जबर्दस्ती करना नहीं चाहता और न यही चाहता है कि दारोगा को उसके ऊपर किस तरह का शक हो।

दारोगा ने दिल की प्रसन्नता के भाव को छिपाया और जाहिर में अपने चेहरे को रंजीदा बना कर इन्द्रदेव से कहा—

दारोगा०। इन्द्रदेव, तुम्हारी इन बातों को सुन कर मेरा दिल डूबा जाता है। जो कुछ तुम कहोगे उसे मैं करूंगा जरूर परन्तु इन दुःखमय बातों को सुन कर मेरे कलेजे में चोट लगती है। इस दुनिया में मेरा मददगार सिवाय तुम्हारे और कोई भी नहीं है इसलिए तुम्हारी बात अगर सच निकली तो तुम्हारे बाद मेरी क्या दशा होगी यह तो जरा सोचो।

इन्द्र०। ईश्वर सब अच्छा ही करेगा। दुनिया में किसी के बिना किसी का काम अटका नहीं रहता। अब भोजन करके आराम कीजिये, कल प्रातःकाल आपको साथ लेकर मैं तिलिस्म की तरफ रवाना हो जाऊंगा।

दारोगा०। तुम्हारी बातों ने मेरी भूख प्यास बिल्कुल नष्ट कर दी है, अब मैं कुछ भोजन न करूंगा।

इन्द्र०। नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

इन्द्रदेव ने दारोगा के लिए भोजन इत्यादि का सामान ठीक कराया, दारोगा के साथ ही साथ इन्द्रदेव ने भी कुछ भोजन किया और तब दोनों आराम करने के लिए अलग अलग कमरे में चले गये।

दूसरे दिन सुबह कोई दो घड़ी रात रहते इन्द्रदेव उठे और उन्होंने दारोगा साहव को नींद से होशियार किया। घण्टे भर के अन्दर ही दोनों आदमी जरूरी कामों से निपट सफर करने के लिए तैयार हो गये। हुक्म के मुताबिक दो घोड़े तैयार करके हाजिर किए गये जिन पर सवार होकर दारोगा तथा इन्द्रदेव घर से बाहर निकले तथा उत्तर की तरफ रवाना हुए।

दोपहर दिन चढ़े तक ये दोनों आदमी मामूली चाल पर बराबर चले गये। इसके बाद इनको पहाड़ की तराई मिली और सुन्दर तथा साफ जल से भरा हुआ एक कुदरती तालाब भी नजर आया। इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा कि अब यहां पर उतर कर स्नान और कुछ भोजन कर लेना चाहिये। रात को मैंने अपने एक शागिर्द को आज्ञा दे दी थी कि वह यहां पर कुछ भोजन की सामग्री तैयार रक्खे, सम्भव है कि वह यहां आ चुका हो अथवा आता ही हो।

यद्यपि दारोगा वहां ठहरना नहीं चाहता था और तिलिस्म के अन्दर शीघ्र पहुंचने के लिये उसका जी बेचैन हो रहा था तथापि इन्द्रदेव की इच्छानुसार उसे रुकना ही पड़ा। दोनों आदमी उस तालाब के पास चले गये और एक सायेदार पेड़ के नीचे पहुंच घोड़े पर से उतर पड़े। दोनों ने अपने अपने घोड़े (कुछ टहलाने और शान्त करने के बाद) पेड़ से बांध दिए और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र करने लगे।

थोड़ी देर में सब कामों से निश्चिन्त होकर दोनों आदमी पुनः वहां पहुंचे जहां उनके घोड़े पेड़ से बंधे हुए थे और जीनपोश बिछा कर बैठ गए। उसी समय एक आदमी सर पर एक छोटी सी दौरी रक्खे उनकी तरफ आता हुआ दिखाई दिया। इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा, "लीजिये, जलपान का सामान भी आ पहुंचा।"

उस आदमी ने पास पहुंच कर जलपान की दौरी उनके सामने रख दी और पानी का बन्दोबस्त करके पेड़ की आड़ में चला गया तथा ये दोनों भोजन करने लगे। इन्द्रदेव ने बीमारी का पाखण्ड रच ही रक्खा था इसलिये केवल एक दो फल खाकर रह गए, मगर दारोगा ने तरह तरह की चीजों पर खूब ही हाथ फेरा।

जलपान से छुट्टी पाकर जब दोनों आदमी निश्चिन्त हुए तब उनमें इस तरह बातचीत होने लगी:—

इन्द्र०। बीमारी ने मेदा ऐसा कमजोर कर दिया है कि एक दो फल खाना भी भारी हो रहा है, छाती में बोझ सा हो गया और सर घूमने लगा।

दारोगा०। अफसोस, तुम्हारी तन्दुरुस्ती बहुत खराब हो गई है।

इन्द्र०। (लेट कर) बैठना मुश्किल हो गया, सर का चक्कर बढ़ता जाता है।

दारोगा०। सर तो मेरा भी घूम रहा है। (कुछ ठहर कर) ऐसा मालूम होता है कि खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिली हुई थी।

इन्द्र०। मुझे भी ऐसा ही शक होता है। किसी ऐयार ने मेरे आदमी को धोखा तो नहीं दिया? उस आदमी की जांच करनी चाहिए जो खाने का सामान लाया है।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ बैठे और 'रामा रामा' कह उस आदमी को पुकारने लगे। वह पास हो पेड़ की आड़ में था, पुकारने से सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "आपका रामा मेरी बदौलत जहन्नुम की सैर कर रहा है। मैं तुम्हारे दुश्मन का ऐयार हूं और अब तुम दोनों को गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले जाऊंगा।"

इतना कह कर वह कुछ दूर पीछे हट गया। उसकी बात सुन दारोगा के तो होश उड़ गए, उधर इन्द्रदेव ने जान बूझ कर जमीन पर लेट के आंखें बन्द कर लीं। दारोगा ने समझा कि वह बेहोश हो गए, क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और तलवार खैंच कर उस ऐयार की तरफ बढ़ा मगर कुछ कर न सका, थोड़ी ही दूर जाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। दारोगा को बेहोश देख कर वह आदमी इन्द्रदेव के पास आया और धीरे से बोला, "उठिये, दारोगा साहब बेहोश हो गए।"

इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और अपने शागिर्द से बोले, "अब इन्हें हमारे मकान में ले जाकर कैद करो। जहां मैं तुम्हें बता चुका हूँ उस जगह पर इन्हें रखना और खाने पीने का ख्याल रखना। इनको यह न मालूम होने पावे कि कहां पर और किसके यहां कैद है। इन्हें मैं घोड़े पर लाद देता हूं, तुम भी उसी पर सवार हो जाओ, जंगल की राह से धीरे धीरे जाओ जिसमें रात्रि के समय घर पहुंचो। मैं किसी काम के लिए तिलिस्म में जाता हूं।"

शागिर्द के साथ मिल कर इन्द्रदेव ने दारोगा को घोड़े पर लादा और शागिर्द को भी उसी पर चढ़ा कर घर की तरफ रवाना करने बाद स्वयम् उसी तरफ को चल पड़े जिधर जा रहे थे।

छठवां बयान

हम अपने पाठकों का ध्यान भूतनाथ उपन्यास के तीसरे भाग के पहिले और दूसरे बयान की तरफ ले जाते हैं जिसमें भूतनाथ से चन्द्रशेखर का मिलना, नागर

के यहां बाबू साहब (रामलाल) की मौजूदगी में भूतनाथ का आना, बाबू साहब से तथा भूतनाथ से बातें होना, और उसी जगह पुनः किसी आदमी का पहुंच कर भूतनाथ के आगे लिफाफा फेंक कर भाग जाना इत्यादि लिखा गया है।

उस बयान के पढ़ने से यह मालूम ही हो चुका होगा कि उस समय नानक की मां रामदेई से भूतनाथ का सम्बन्ध हो चुका था और बाबू साहब (रामलाल) को भूतनाथ का साला कहा जाता था। मगर भूतताथ का और बाबू साहब का उन दिनों मुद्दत से सामना नहीं हुआ था और इसी से भूतनाथ के मामलों से बाबू साहब को बहुत कम वाकफियत थी। तथापि बाबू साहब लुक छिप कर अपनी बहिन रामदेई से मिलने के लिए अकसर जाया करते थे और वह भी रुपये पैसे से इनकी मदद खुले दिल के साथ किया करती थी।

बाबू साहब यद्यपि डरपोक आदमी थे मगर ऐयार जरूर थे और दो चार बदमाश लुहेड़ों को भी अपने साथ रक्खा करते थे। इन्हीं दिनों इन्हें एक और भी गैबी मदद मिल गई थी जिसके कारण इनका दिमाग कुछ बढ़ने लग गया था जो आखिर यहां तक बढ़ा कि उस घटना के (जिसका जिक्र ऊपर कर आये हैं) थोड़े ही दिन बाद ये बहादुर बन गये, ऐयारी का दम भरने लगे और भूतनाथ के दुश्मन बन गए। अब सुनिए कि वह गैबी मदद क्या थी और उसके सबब से रामलाल की कैसी अवस्था बदली तथा चन्द्रशेखर के कारण भुतनाथ को कैसी परेशानी उठानी पड़ी।

भूतनाथ के दूसरे भाग के नौवें बयान में हम लिख आये हैं कि भूतनाथ ने अपने बारह शागिर्दों के साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया और उन्हें कैद करके एक गुफा में डाल दिया मगर जब बाहर से लौट कर पुनः उन सभों को देखने के लिए गया तो किसी को भी वहां न पाया।

असल में उन शागिर्दों को भी इन्द्रदेव ही ने घाटी के अन्दर ही अन्दर किसी गुप्त रास्ते से पहुंच कर छुड़ा दिया था मगर ऐसे ढंग से कि उन शागिर्दों को इस बात का कुछ भी गुमान न हुआ कि उनको छुड़ाने वाला कोन है, हां छुड़ाने वाले ने इतना जरूर कह दिया था कि 'मैं प्रभाकरसिंह की आज्ञा से तुम लोगों को छुड़ाता हूं, अब मुनासिब है कि तुम लोग भूतनाथ से अपना बदला लो और उस तलवार को भी छीन लो जिसके सबब से उसने तुम लोगों पर फतह पाई है। वह तलवार असल में प्रभाकरसिंह की है, उसका जख्म जरा सा भी जिसको लग जाता है वह बेहोश हो जाता है। मगर उस पर उसका असर कुछ भी नहीं होता जिसके

पास उसके जोड़ की अंगूठी होती है। वह अंगूठी भी जो लोहे की सी है भूतनाथ की उंगली में तुम देखोगे। यह सब कुछ करना पर भूतनाथ को जान से मत मारना नहीं तो हम तुम लोगों को भी जीता न छोड़ेंगे। हमने तुम लोगों को उसके फन्दे से छुड़ा कर जो कुछ तुम सभों पर अहसान किया है उसका बदला यही चाहते है कि भूतनाथ को जान से मत मारना, तकलीफ जितनी तुम्हारे जी में आवे और जो तुमसे हो सके देना।' इस बात को उन लोगों ने बड़ी खुशी से मंजूर कर लिया था और अपने छुड़ाने वाले को दिल से धन्यवाद दिया था।

केवल इतना ही नहीं, चलती समय महात्मा रूपी इन्द्रदेव ने उन ऐयारों को मदद की तौर पर कुछ अशर्फियां और जवाहिरात भी दिया और उनके सामने से देखते ही देखते कहीं गायब हो गये।

इस तरह पर भूतनाथ के पंजे से रिहाई पाकर वे ऐयार लोग उद्दंड हो गए और भूतनाथ को सताने की फिक्र करने लगे।

हम कई जगह लिख आए हैं कि 'भूतनाथ ने अपने रहने के लिए कई स्थान बना रक्खे थे और सभी जगह वह थोड़ी दौलत भी रखता था।' उन सब स्थानों और खजानों का हाल उन शागिर्दों को मालूम था अस्तु सबके पहिले उन लोगों ने भूतनाथ के खजानों पर धावा किया और जहां तक बन पड़ा उन्हें अपने कब्जे में कर लिया, इसके बाद अपने रहने के लिए एक सुयोग्य स्थान नियत करके और आपुस में मिलने जुलने का इशारा बांध कर जुदा हुए और कोई नई कार्रवाई करने की फिक्र में लगे। उन लोगों ने बहुत जल्द भूतनाथ का पता लगा लिया, तब सूरत बदले हुए मौके से उसका पीछा करने लगे तथा इस बात की भी फिक्र में लगे कि भूतनाथ क बाकी शागिर्दों को भी अपना हाल सुना कर भड़कावें और अपना साथी बनावें। आखिर दो ही चार रोज के हेर फेर में उन लोगों ने भूतनाथ के कई शागिर्दों को जो उन लोगों में से कई के रिश्तेदार भी थे तोड़ कर अपना साथी बना लिया जिसकी खबर भूतनाथ को कई दिनों तक न लगी। इनमें से दो शागिर्दों के नाम बिजय और बहादुर थे। बहादुर भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था अस्तु बहादुर इस मण्डली में मिलने के बाद सभों की राय के मुताबिक पुनः भूतनाथ के पास चला गया और समय का इन्तजार करने लगा।

अपने विश्वासपात्र ऐयारों का साथ छूट जाने और बेइन्तहा दौलत कब्जे से निकल जाने के बाद जब भूतनाथ ने वह घाटी छोड़ा तो बहुत दुःखी और उदास होकर पुनः अपने मालिक रणधीरसिंह के पास जाने और स्थिर भाव से वहीं रहने

का विचार किया। उनसे बहुत कुछ बातें बनाने और माफी मांगने के बाद उन्हें प्रसन्न करके वह उनके पास रहने लगा जिससे उसके बागी शागिर्दों को यकायक उसे सताने और उससे बदला लेने का मौका न मिला, मगर वे लोग उसकी धुन में निरन्तर लगे ही रहे।

एक दिन भूतनाथ मीरजापुर से निकल कर अपनी स्त्री रामदेई से मिलने के लिए काशी की तरफ रवाना हुआ। उसे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि उसके बागी शागिर्द भी उसकी धुन में लगे हुए हैं और सफर में वह जहां जहां टिका या ठहरा करता था प्रायः उन सभी जगहों पर रूप बदल कर उन लोगों ने दखल जमाया हुआ है।

भूतनाथ जब काशी जाया करता था तो एक बाग में जो करीब करीब सफर के मध्य में पड़ता था दो चार घण्टे के लिए जरूर ही ठहरा करता था बल्कि अक्सर वहां रसोई भी बनाया करता था, क्योंकि उस बाग के पास ही में एक छोटा सा बाजार भी था जहां सब सामान मिल सकता था। उस बाग के माली लोग लालचवश भूतनाथ की खिदमत किया करते थे और सीधा तथा बरतन पानी इत्यादि सुभीते से जुटा दिया करते थे। वह बाग 'रामबाग' के नाम से मशहूर था।

वह बाग किसी रईस या जमींदार का न था बल्कि कई खटिक और मालियों का था जो उसका फल फूल तथा मेवा और दरख्त वगैरह बेच कर फायदा उठाते थे और प्रायः उसमें रहा भी करते थे। भूतनाथ के दो शागिर्दों ने भी उसी में जाकर नौकरी की और रहने लगे। दोपहर का समय था जब सफर से थके हुए भूतनाथ ने आकर उस बाग में आराम किया और नहा धो कर रसोई बनाने की फिक्र में लगा। मालियों ने सब सामान मोहैया कर दिया और भूतनाथ रसोई बना कर भोजन करने के बाद वहां से रवाना हुआ। वहां के मालियों में से एक आदमी किसी काम का बहाना करके उसके साथ ही बातें करता हुआ उसी तरफ रवाना हुआ जिधर भूतनाथ जाता था।

थोड़ी दूर जाने बाद भूतनाथ को नशा सा चढ़ आया, जमीन घूमती हुई मालूम होने लगी और पैरों में लड़खड़ाहट पैदा हो गई। भूतनाथ ने घूम कर अपने साथ आते हुए माली की तरफ देखा और कहा, "क्या आज तुम लोगों ने मेरे खाने के सामान में कोई नशीली चीज मिला दी है?"

माली०। (साथ से कुछ अलग हट कर) जी हां, आज कुछ ऐसा ही मामला हुआ है। उस बाग के माली सब तो आपके खैरखाह और ताबेदार हैं, उन बेचारों

पर किसी तरह का शक आपको न करना चाहिए, मगर मैं जरूर आपका दुश्मन हूं और आप ही से बदला लेने की नीयत से मैंने क्षत्रिय होकर भी उन शूद्र मालियों की नौकरी की थी। आज मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ और आपके भोजन की सामग्री में दवा मिलाने का मुझे मौका मिला। (हंस कर) आप बहुत दिनों से दूसरों के लिए जहरीले पेड़ लगा रहे थे जिसमें अब फल लगने शुरू हो गए हैं और वे फल अब आप ही को चखने पड़ेंगे।

भूत०। (क्रोध से उस माली की तरफ देख कर) तू कौन है, मैं तेरा नाम सुना चाहता हूं।

माली०। हां, तुम बार बार मेरे हाथों से सताये जाओगे इसलिए तुम्हें मेरा नाम जरूर याद कर लेना चाहिए जिसे मैं खुशी से बताने के लिए तैयार हूं, मेरा नाम है 'चन्द्रशेखर'।

भूत०। तुम किसके नौकर हो ?

चन्द्र०। अपने दिल के।

भूत०। मेरे साथ दुश्मनी करने का कारण ?

चन्द्र०। तुम्हारी बदनीयती और बेईमानी।

भूत०। तुम्हारा मैंने क्या बिगाड़ा है ?

चन्द्र०। इज्जत और हुर्मत।

भूत०। (चिढ़ कर) साफ साफ और सीधी तरह से क्यों नहीं बातें करता।

चन्द्र०। इसीलिए कि तुम सीधी तरह से सीधे होने वाले नहीं हो।

मारे गुस्से के भूतनाथ पेचोताब खाने लगा और उसने जोश में आ कर खंजर के कब्जे पर हाथ रखा मगर कुछ कर न सका। उसका क्रोध बेफायदे था और उसका गुस्सा व्यर्थ, क्योंकि अब उस पर बेहोशी का पूरा असर हो चुका था, नतीजा यह हुआ कि खंजर खैंचते ही खैंचते वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

आने जाने वाले मुसाफिरों की निगाह से बचने का खयाल करके चन्द्रशेखर उसी समय भूतनाथ को उठा कर सड़क से बहुत दूर एक नाले में ले गया जहां बिल्कुल सन्नाटा था और किसी के आने की भी आशा न थी।

चन्द्रशेखर ने पहिले तो उस अंगूठी और तलवार पर कब्जा किया जो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से ली थी, इसके बाद उसका ऐयारी का बटुआ ले लिया, अन्त में उसके कपड़े भी उतार लिए तथा और भी जो कुछ उसके पास था लेकर केवल लंगोट पहिरे छोड़ दिया और दूसरी तरफ का रास्ता लिया।

संध्या होने के बाद जब भूतनाथ होश में आया तो उसने अपने को बड़ी दुर्दशा में पाया। कपड़ों के चले जाने का दुःख तो साधारण था परन्तु अपनी बेइज्जती होने और बटुए तथा तलवार के चले जाने का उसे बड़ा ही रंज हुआ। थोड़ी देर तक कुछ चिन्ता करने बाद वह उठ खड़ा हुआ और क्रोध से होठ चबाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ।

चन्द्रशेखर भूतनाथ के दुश्मन शागिर्दों का दोस्त तथा एक बहुत ही तेज और होशियार ऐयार था। इसका असली नाम कुछ दूसरा ही था परन्तु भूतनाथ के लिए इसने अपना बनावटी नाम चन्द्रशेखर रख लिया था। जब यह भूतनाथ को लूट कर अपने दोस्तों के पास गया तो बहुत ही खुश था क्योंकि भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ उसके कब्जे में था और उसमें उसके मतलब की बहुत सी चीजें हाथ लगी थीं। नागर की लिखी हुई कई चीठियां भी उसमें से मिली थीं जिसमें से कई भूतनाथ की चीठी के जवाब में लिखी हुई थीं और जिनके पढ़ने से इस बात का पता लगता था कि उन दोनों में किस तरह पर किस मामले की बातें हो रही हैं, तथा भूतनाथ कैसे कैसे दुर्घट मामलों के फेर में पड़ा हुआ है। यों तो वे लोग भूतनाथ के शागिर्द ही थे और उसके बहुत से मामलों से जानकार थे परन्तु इन चीठियों के पढ़ने से उन्हें और भी बहुत सी बातें ऐसी मालूम हो गईं जिनकी उन्हें कुछ भी गुमान न था और जिनका प्रकट होना भूतनाथ के लिए बहुत ही बुरा था।

भूतनाथ को अपनी अवस्था पर बहुत ही दुःख हुआ और वह मारे क्रोध के बेतरह पेचोताब खाने लगा। उसे उस अनूठी तलवार तथा अपने ऐयारी के बटुए के चले जाने का बड़ा ही सदमा हुआ क्योंकि उसमें तरह तरह की अनूठी चीजें भरी हुई थीं। खास करके नागर की चीठियों का जाना उसने अपने हक में बहुत ही बुरा सगुन समझा और इस बात का निश्चय कर लिया कि यदि मेरा यह दुश्मन किसी तरह मेरे हाथ लगेगा तो उसे बिना जान से मारे कदापि न छोड़ूंगा। यद्यपि उसे इस बात का निश्चय न था कि उसको सताने वाला चन्द्रशेखर कौन है तथापि देर तक सोचने के बाद उसने यही निश्चय किया कि उसके उन बिगड़ैल शागिर्दों ही में से कोई है जिन्हें उसने बहुत ही बेइज्जत किया था।

गुस्से में और होठों को चबाता हुआ भूतनाथ वहां से उठा और जंगल ही जंगल लोगों की नजरों से अपने को बचाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ और वहां पहुंच कर फिर से उसने अपना सामान दुरुस्त किया।

उन शागिर्दों के निकल जाने पर भी भूतनाथ के पास अभी कई शागिर्द हैं जो

दिलोजान से भूतनाथ का काम करते हैं और हर तरह से उसका साथ देने के लिए तैयार रहते हैं परन्तु उनके विषय में भी भूतनाथ को खुटका बना ही रहता है और इस बात का बराबर डर रहता है कि कहीं उसके बागी शागिर्द लोग इन नेक शागिर्दों को भी भड़का कर बेदिल न कर दें। इस खयाल से वह अपने खैर-खाह शागिर्दों के साथ बहुत ही अच्छा और मेहरबानी का बर्ताव करता है और अपने को उन पर ऐसा नेक साबित करता है कि जिससे उनको इस बात का विश्वास न हो कि भूतनाथ ने अपने अमुक शागिर्दों के साथ वास्तव में बुरा बर्ताव किया होगा।

भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने उसे बड़ा ही तंग किया और कई मर्तबे उसकी बेतरह बेइज्जती की जिससे वह एक दम घबरा गया और अपने बचाव की फिक्र करने लगा मगर उन शागिर्दों से वह अपने को किसी तरह छिपा नहीं सकता था और वे लोग बार बार उसके पास धमकी की चीठियां भेजा करते थे और अपने नाम की जगह 'सर्वगुण-सम्पन्न चांचला सेठ' इत्यादि लिखा करते थे।

तीसरे हिस्से के दूसरे बयान में जैसा कि हम लिख आये हैं नागर के मकान में भूतनाथ के सामने बाबू साहब ने चन्द्रशेखर का हाल बयान करके कहा था कि मैंने उसे बरना के किनारे देखा था, उसके साथ बिमला और प्रभाकरसिंह भी थे। असल में बाबू साहब ने यह बात झूठ नहीं कही थी। प्रभाकरसिंह तथा कला और बिमला का रूप उन्हीं शागिर्दों ने धरा था और बाबू साहब तथा नागर से मुलाकात करके भूतनाथ को कोई नया धोखा दिया चाहते थे।

कुछ ही दिन बाद भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने भूतनाथ के साले बाबू साहब को भी अपनी मण्डली में मिला लिया, इस खयाल से कि वह अपनी बहिन रामदेई से मिला जुला करता है अतएव उसके जरिये से बहुत कुछ हाल चाल मिला करेगा। इसके अतिरिक्त खुद बाबू साहब भी भूतनाथ से रंज रहा करते थे क्योंकि उनका नाता भूतनाथ से धर्मविरुद्ध होने के कारण लज्जा का था। संक्षेप में यह थोड़ा सा हाल हमने केवल सिलसिला मिला देने के लिए लिख दिया, आगे चल कर मौके मौके से हमारे पाठकों को इस बात का पता लगता रहेगा कि अपने बागी शागिर्दों की बदौलत भूतनाथ को कैसी कैसी तकलीफें उठानी पड़ीं।

सातवां बयान

जमानिया में दारोगा साहब का मकान कैसा है इसका कुछ हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है। जमना सरस्वती और इन्दुमति उस मकान की हवा खा

चुकी हैं और भैयाराजा को भी दारोगा उस मकान का मजा चखा चुका है। इस समय पुनः हम अपने पाठकों को उसी मकान में ले चल कर दिखाते हैं कि अब वहां क्या हो रहा है।

हाथ में छोटी सी लालटेन और तालियों का एक बड़ा सा गुच्छा लिए हुए आधी रात के समय हम एक आदमी को उस मकान में घुमते हुए देखते हैं। इस आदमी का तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ है और इसके चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई है। तालियों के गुच्छे में से वह तालियां लगा लगा कर कोठरियां खोलता और देखता है कि उसके अन्दर क्या है और फिर बन्द कर देता है। इसी तरह पर घूम फिर कर कोठरियां खोलता और देखता हुआ वह आदमी एक ऐसी कोठड़ी के दर्वाजे पर पहुंचा जिसके आगे मिट्टी का एक टूटा हुआ घड़ा और कुछ सुखी रोटियां पड़ी हुई थीं तथा मामूली ताले के अलावे एक और भी मोटी जंजीर लगी हुई और उसमें बहुत बड़ा ताला बन्द था।

उस आदमी ने उस ताले मिट्टी के घड़े और सूखी रोटियों को बड़े गौर से देखा और कुछ सोचता हुआ पहिले की तरह उसी ताली के गुच्छे में से एक ताली चुन कर उस कोठरी का भी ताला खोला मगर उस बड़े ताले की ताली उस गुच्छे में न दिखाई दी जो जंजीर में लगा हुआ था और न दूसरे तालों की तरह उस ताले पर कोई नम्बर या निशान ही लगा हुआ पाया।

कुछ क्षण चिन्ता करने के बाद उस आदमी ने धीरे से यह कह कर कि 'जरूर इसी में होगा' लालटेन जमीन पर रख दी और ऐयारी का बटुआ खोल कर उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का अर्क भरा हुआ था। इस अर्क से नकाबपोश ने ताले वाली जंजीर का मध्य भाग अच्छी तरह तर किया और खड़े रह कर इस बात का इन्तजार करने लगा कि जंजीर दो टुकड़े हो जाय तो कोठरी के अन्दर कदम रक्खे।

आधी घड़ी के अन्दर ही जंजीर का लोहा उस जगह से, जहां अर्क लगाया गया था, गल कर बह गया और एक हलकी आवाज देती हुई वह जंजीर बीच में से दो टुकड़े होकर जुदा हो गई। नकाबपोश ने लालटेन उठा ली और धीरे से दर्वाजा खोल कर कोठरी के अन्दर कदम रक्खा।

भीतर से यह कमरा बहुत बड़ा और कई बादकश* बने रहने के कारण हवा-

* जिस नल की राह से धूआं बाहर निकल जाता है अथवा हवा कमरे के अन्दर आती और पुनः बाहर निकल जाती है उसे बादकश कहते हैं।

दार था, फिर भी अंधकार तो मानों उसके हिस्से ही पड़ा था। यद्यपि इस समय वह नकाबपोश लालटेन लिए हुए उस कमरे के अन्दर चला गया है परन्तु उस लालटेन की रोशनी उस बड़े कमरे के अंधकार को किसो तरह भी दूर नहीं कर सकती थी, तथापि नकाबपोश ने इतना जरूर देखा कि एक आदमी जमीन पर बैठा हुआ उसी नकाबपोश अथवा दरवाजे की तरफ देख रहा है क्योंकि नकाबपोश के अन्दर जाने के पहिले ही इस बदनसीब कैदी को दर्वाजा खुलने की आहट मिल चुकी थी और इसी सबब से वह चैतन्य हो चुका था।

कैदी०। (नकाबपोश से) क्या अभी कोई और बदखबर सुनाना बाकी है? मैं समझता हूं कि अब तुम्हें ज्यादा दिनों तक मुझे सताने की जरूरत न पड़ेगी क्योंकि इस कैद की बदौलत अब मेरा शरीर चलता नजर नहीं आता ! लेकिन आज तुम नकाब पहिने चोरों की तरह आये हो इसमें कोई भेद जरूर है।

नकाब०। मैं कोई बदखबर सुनाने के लिये नहीं आया हूं बल्कि खुशखबरी सुनाने के लिए आया हूं, अब यह कैदखाना तुम्हारी जान का ग्राहक नहीं बन सकता, मैं वह नहीं जिसने तुम्हें इस मकान में कैद कर रक्खा है।

कैदी०। अर्थात् जमानिया राज्य के कर्ता-धर्ता दारोगा साहब !

नकाब०। जी हां, मैं वह दारोगा नहीं हूं।

कैदी०। तब आप कौन हैं, क्या अपना नाम बता सकते हैं ?

नकाब०। जी हां, अगर आपका नाम दयाराम है तो हैं अपना नाम जरूर बता सकता हूं।

कैदी०। निःसन्देह मेरा नाम दयाराम है।

नकाब०। मुझे क्योंकर विश्वास हो कि आपका यही नाम है ?

कैदी०। आपका नाम मुझे मालूम हो तो मैं कोई परिचय का शब्द ऐसा कह सकता हूं जिसको सिर्फ मेरे दोस्त ही समझ सकते हैं।

नकाब०। ठीक है, अच्छा अगर मेरा नाम इन्द्रदेव हो तो आप कौन शब्द परिचय का दे सकते हैं ?

कैदी०। अगर आप वास्तव में इन्द्रदेव होंगे तो परिचय लेकर मैं 'भुवनमोहिनी' की बातें आपको सुना दूंगा।

नकाब०। तब तो 'कामेश्वर' का कहना बहुत सच होगा।

यद्यपि वह कैदी बहुत ही कमजोर और दुबला हो रहा था परन्तु नकाबपोश अर्थात् इन्द्रदेव की आखिरी बात सुन कर बैठा न रह सका, उठ खड़ा हुआ

और दौड़ कर इन्द्रदेव के साथ लिपट गया और इन्द्रदेव ने भी प्यार से उसे गले लगा लिया और देर तक न छोड़ा। जब दोनों अलग हुए तो यों बातचीत होने लगी—

दया०। चाचा,* तुम तो मुझे एकदम भूल गये, ताज्जुब की बात है कि इतने दिनों तक तुमने मुझे याद क्यों नहीं किया ?

इन्द्र०। मेरे प्यारे भतीजे, मेरे दिल से तुम्हारी याद कभी भूल नहीं सकती, और इसकी गवाही खुद तुम्हारा दिल दे सकता है, मगर अफसोस, हमलोगों को इसका गुमान भी नहीं था कि तुम अभी तक जीते जागते हो। दुनिया को यही मा म था कि दयाराम मारे गए और हम लोग दस पाच आदमियों को तो यह निश्चय था कि खुद भूतनाथ के हाथ तुम्हारी जान गई है क्योंकि यह मामला मेरे दोस्त दलीपशाह के सामने ही हुआ था अर्थात् मेरे शागिर्द ने राजसिंह के घर तुम्हारा पता लगाया था और मैंने अपने शागिर्द शम्भू के साथ दलीपशाह को राजसिंह के घर भेजा था। दलीपशाह वहां पहुंचे और राजसिंह को गिरफ्तार करके तथा तुमको उसकी कैद से छुड़ा कर अपने यहां ले आए। यह तो अब मालूम हुआ है कि दलीपशाह तुमको नहीं बल्कि राजसिंह के भतीजे को जो बहुत दिनों से बीमार था दयाराम समझ के उठा लाए थे। यकायक भूतनाथ पता लगाता हुआ वहां पहुच गया जहां दलीपशाह राजसिंह को और उसक भतीजे को दयाराम समझ कर ले गए थे। राजसिंह का वहां देख कर भूतनाथ को विश्वास हो गया कि दिलप-शाह राजसिंह के साथ मिला हुआ है अस्तु भूतनाथ और दलीपशाह में लड़ाई हो गई, भूतनाथ ने राजसिंह को मार डाला और तब उसके भतीजे को भी मार डाला। तब दलीपशाह न भूतनाथ से कहा कि 'हम इन्द्रदेव के कहने से दयाराम की खोज में निकले थे और पता लगा कर दयाराम को तथा उसके दुश्मन राजसिंह को यहां ले आए थे, तुमने राजसिंह को मार डाला सो तो अच्छा ही किया मगर अफसोस की बात है कि दयाराम को भी अपने हाथ से स्वर्ग पहुंचा दिया।' दलीप-शाह को तो विश्वास ही था कि यह दयाराम हैं परन्तु भूतनाथ को भी दलीपशाह के कहने से तथा वहां की कई अन्य बातों से विश्वास हो गया कि यही दयाराम हैं और वास्तव में उसने उन्हें ही धोखे में मार डाला है। उसी दिन से हमलोग यही विश्वास करते चले आये कि वास्तव में दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारे गये। यद्यपि यह घटना भूतनाथ के लिये बहुत ही दुःखदाई हुई परन्तु लोगों में

* इन्द्रदेव को दयाराम चाचा के समान मानते थे और चाचा ही कह कर पुकारते थे।

प्रसिद्ध होने न पाई, क्योंकि शम्भू दलीपशाह और मैं सिर्फ तीन आदमी इस बात को जानते थे सो भूतनाथ के माफी मांगने तथा आजिजी करने पर और यह समझ कर कि वास्तव में भूतनाथ बेकसूर है चुप हो रहे और इस भेद को प्रकट होने न दिया, सिर्फ मन ही मन रोते और अफसोस करते रहे। बातें वहुत लम्वी चौड़ी हैं मगर यह मकान तथा कैदखाना इस योग्य नहीं है कि हमलोग यहां वेफिक्री के साथ बातें करें। असल बात यही है कि हम लोगों को स्वप्न में भी इस बात का गुमान नहीं था कि तुम्हें इस कैदखाने में एक दिन भालू की सी सूरत में देखेंगे। कैद की सख्ती उठाने और बालों के बढ़ आने से वास्तव में तुम्हारी ऐसी ही सूरत हो रही है।

दया०। आपका कहना वहुत ठीक है. यह कैदखाना निश्चिन्तों से बातें करने लायक नहीं है और मुझे भी उन घटनाओं के सुनने की जल्दी नहीं है जो मेरे पीछे हुई हैं और न अपनी राम कहानी सुनाने की ही जल्दी है हॉं इतना जरूर पूछूंगा कि मेरे चाचा रणधीरसिंह और दोनों स्त्रियों का क्या हाल है ?

इन्द्रदेव०। वे दोनों कुशल से हैं। तुम्हारी दोनों स्त्रियां अभी तक मेरे मकान में मौजूद हैं परन्तु दुनिया में यही मशहूर है कि वे दोनों मर गईं, और इस बात के मशहूर करने का कारण भी मैं ही हूं, क्योंकि तुम्हारी स्त्रियों को भूतनाथ से बदला लेने का शौक पैदा हुआ और उनकी जिद्द मुझे माननी पड़ी। मैंने खयाल किया कि यदि भूतनाथ को यह बात मालूम हो जायगी कि वे दोनों उससे बदला लिया चाहती हैं तो वह जरूर इन दोनों को मार डालेगा अस्तु पहिले ही से इन दोनों को मरा हुआ मशहूर कर देना उचित है। यह सब कुछ हुअ परन्तु मेरी इच्छानुसार वे दोनों वहुत दिनों तक अपने को छिपा न सकीं, भूतनाथ को उनका जीते रहना मालूम हो गया और वह अभी तक उन दोनों को मारने की फिक्र में लगा हुआ है। इस विषय में भी बड़ी बड़ी अनूठी घटनाएं हो गई हैं जिन्हें सुन कर तुम आश्चर्य करोगे परन्तु यह मौका ठीक नहीं है ! अब मैं एक नजर इस कमरे को अच्छी तरह देखने के बाद तुम्हें साथ लेकर बाहर निकलना चाहता हूं।

दया०। हां देखिये कैसा भयानक कैदखाना है, यहां रहने वाला चाहे कितना ही चिल्लाये मगर उसकी आवाज किसी के कान में भी नहीं पहुंच सकती, यह देखिये यही दोनों कम्वल मेरी किस्मत में सौंपे गए हैं। यह मिट्टी का घड़ा है जो चौथे या पांचवें दिन भरा जाता है मगर इधर आठ दिन से इसमें पानी नहीं डाला गया। शायद अब इसमें एक या दो गिलास से ज्यादा पानी न हो। देखिये यह

मेरे भोजन की टोकरी है, जब इस घड़े मे पानी डाला जाता है तभी इस टोकरी में पूरियां और कुछ तरकारी तथा नमक मिर्च रखने का दिन होता है। महीने में एक दफे नहाने के लिए जल मिलता है, यह कोने में मिट्टी का ढेर लगा दिया है बस इसी को बदन में मल कर मैं मानो भस्म-स्नान करता हूं और यों ही संध्या भी कर लिया करता हूँ। यह इधर पायखाना बना हुआ है पायखाना काहे को खासा कूंआ है, यह भी इतना गहरा है कि मिट्टी का ढोंका फेंकने से आवाज नहीं आती। यह टूटी हुई चारपाई पड़ी है, पहिले मैं इसी पर सोता था मगर जब से यह टूट गई तब से जमीन को ही मखमली फर्श समझता हूं।

इन्द्र०। इस मकान की हालत को मैं खूब जानता हूं, सिर्फ तुम्हारा सामान देखना था। (आंखों से आंसू पोंछ कर) । दैव, हम लोगों ने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसका फल इस तरह भोग रहे हैं ? मनुष्य को उसके ही कर्मों का फल देना तेरा काम है या अपनी तरफ से भी दया करके कुछ देना जानता है ! खैर मैं तुझसे कुछ भी नहीं चाहता परन्तु तेरा भरोसा जरूर रखता हूं।

दया०। चाचा इसके लिये हम ईश्वर को किसी तरह का दोष नहीं दे सकते, उसका तो यह काम ही है कि लोगों को उनके कर्मों का फल भुगताया करे, उसमें ज्यादे या कम करने से वह बेइन्साफ कहा जायगा। अगर वह कर्म के अतिरिक्त एक के साथ भी कुछ उपकार करेगा तो औरों को भी उपकार कराने का हक हो जायगा, क्योंकि उसकी निगाह में उसके सभी बच्चे ए समान हैं, इसलिए हम लोगों को एक तौर पर यही समझ रखना चाहिए कि हमारा कर्म ही हमारा ईश्वर है और इसीलिए कर्म और उद्योग में लगे रहना ही धर्म है. फल चाहे जो कुछ भी हो।

इतने ही में बाहर की तरफ से कुछ खटके की आवाज आई और दोनों ध्यान लगा कर दर्वाजे की त र्फ दखने लगे।

दया०। शायद दारोगा आ पहुंचा।

इन्द्र०। नहीं वह तो हमारी कैद में है मगर उस यह नहीं मालूम कि मुझे इन्द्रदेव ने कैद कर रखा है, हां भूतनाथ हो तो ताज्जुब नहीं, क्योंकि उस भी तुम्हारे जाते रहने और यहां कैद भोगने की खबर लग चुका है। साथ ही इसके जिस तरह मैं इस शैतान के ·ग रग से वाकिफ हुं उसी तरह या अगर उतना नहीं तो उसी के करीब कर ब भूतनाथ भी जानकार है, मगर इतना जरूर है कि मैं दारोगा के सन्दूक में से तालियों का गुच्छा लेता आया हूं जिससे सभी दर्वाजे खोल सकता हूं मगर भूतनाथ के पास तालियां न होंगी।

दया० । ऐसी अवस्था में यहां से शीघ्र निकल चलना चाहिए । कहीं ऐसा न हो कि वह बाहर से इस कोठरी का दर्वाजा बन्द कर दे ।

इन्द्र० । ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि दर्वाजे में जड़े हुए ताले की ताली मेरे पास है और जंजीर को अभी मैं काटता हुआ आया हूं तथापि अब चलने में विलम्ब न करना चाहिए । मैं तुम्हारे ओढ़ने के लिए एक अबा और चेहरे पर लगाने के लिए नकाब लेता आया हूं ।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने जेब में से एक नकाब निकाल कर दयाराम को दी और अपने ऊपर से स्याह अबा उतार कर उन्हें उढ़ा दिया, क्योंकि वह दो अबा ओढ़े हुए थे । इसके बाद वे दोनों उस कैदखाने के बाहर चले । उसी समय बाहर से पुनः खटके की आवाज आई मानो किसी ने जोर से धक्का देकर किवाड़ का पल्ला खोला हो।

दयाराम को साथ लिए हुए इन्द्रदेव उस कैदखाने के बाहर हुए और जिस राह से दरवाजा खोलते हुए आए थे उसी राह से कोठड़ियों को पार करते और ताला बन्द करते रवाना हुए क्योंकि जो ताले उन्होंने खोले थे वे अभी तक खुले ही रह गए थे।

इन्द्रदेव और दयाराम ने सिर्फ चार या पांच कोठड़ियां पार की होंगी कि सामने से एक आदमी स्याह अबा ओढ़े स्याह नकाब लगाये तथा खञ्जर और रोशनी हाथ में लिए आता दिखाई दिया । वास्तव में यह भूतनाथ ही था । इन्द्रदेव पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने कहा, "मैं समझता हूं कि आप दारोगा साहब ही होंगे क्योंकि सिवाय आपके किसी दूसरे का इस मकान में आना और इन तालों को खोलना बड़ा ही दुर्घट है ।"

इन्द्र० । (कई दफे खांस कर भारी आवाज से) आओ जी भूतनाथ, कहो अच्छे तो हो ? वास्तव में मैं तुम्हारा दोस्त और खैरखाह दारोगा ही हूं मगर सर्दी और खांसी से मेरी तबीयत बहुत परेशान हो रही है । यह बड़े ही ताज्जुब की बात मैं देख रहा हूं कि तुम मामूल के खिलाफ चोरों की तरह छिपे मेरे गुप्त स्थान में आधी रात के समय घूम रहे हो ।

भूत० । बेशक आपके लिए यह ताज्जुब की और मेरी आदत के खयाल से नई बात है परन्तु मेरे पास इनका काफी जवाब है जिसके सुनने से सन्तोष हो जाने के साथ ही साथ आपका आश्चर्य भी जाता रहेगा । मगर मैं यह निश्चय कर लेने के बाद जवाब दूंगा कि आप वास्तव में दारोगा साहब ही तो हैं, क्या आप अपने चेहरे पर से नकाब नहीं हटा सकते ?

इन्द्र० । (अपने चेहरे से नकाब हटा कर) हां हां, परदा किस बात का है,

लो मैं चेहरा दिखा देता हूं।

दारोगा को कैद करने के बाद दारोगा ही की सूरत बन कर इन्द्रदेव इस मकान में आए और दो दिन तक रहे थे। नौकरों को इस बात का गुमान भी नहीं हुआ था और इसी लिए उन लोगों ने वैसी ही खिदमत इन्द्रदेव की भी की थी जसी दारोगा की करते थे इसी लिए इस समय भी वे उचित समझ कर दारोगा ही की सूरत में थे सिर्फ नकाब चेहरे पर डाले हुए थे, अस्तु भूतनाथ को चेहरा देखते ही विश्वास हो गया कि यह वास्तव में दारोगा हैं मगर दयाराम को कुछ आश्चर्य जरूर हुआ परन्तु परिचय का शब्द इन्द्रदेव के मुंह से सुन चुके थे इसलिए उनका दिल मजबूत बना रहा।

भूत०। (चेहरा देखने के बाद) हां अब मुझे विश्वास हो गया कि आप दारोगा साहब हैं अस्तु अब मैं अपने इस तरह यहां आने का सबब बताता हूं, मगर एक बात और पूछने का है।

इन्द्र०। वह क्या ?

भूत०। (दयाराम की तरफ इशारा करके) यह आपके साथ कौन है ?

इंद्र०। हमारा ही विश्वासी आदमी है, इसे जरूरत समझकर साथ लेता आया था।

भूत०। अच्छा तो अब मैं अपने आने का कारण आप से कहता हूं सुनिए। मैं आप ही के पास आया था मगर आपसे मुलाकात न होने के कारण इस तरह छिप कर अपना काम करने की नीयत से आया हूं। मुझे इस बात का ठीक पता लग चुका है कि मेरे दोस्त दयारामजी आपके यहां कैद हैं।

इन्द्र०। (हंस कर) तुम्हारे मुंह से यह बात सुन कर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि तुमने खुद अपने हाथ से दयाराम की जान ली है !

भूत०। यह आपको किसने कह दिया ?

इन्द्र०। जमाने की जानकारी ने। भला तुम ही बताओ कि जमना और सरस्वती ने क्यों तुम्हारा पीछा किया हुआ है और तुमने ही उन्हें मारने के लिए कौन सी कार्रवाई उठा रक्खी है

भूत०। (चिढ़ कर) आपको इन सब बातों के कहने का कोई हक नहीं है और न मुझे जवाब देने की कोई जरूरत है। जब इस बात का निश्चय हो ही चुका कि दयाराम आपके कब्जे में हैं तब मेरे ऊपर उनके मारने का इल्जाम नहीं लग सकता।

इन्द्र०। खैर, तो मैं भी सीधी बातों में जवाब देता हूं कि दयाराम मेरे यहां नहीं हैं और न मुझे उनकी कुछ खबर है।

भूत० । आपका यह कहना बिल्कुल ही झूठ है, मुझे जो कुछ खबर लग चुकी है उसमें किसी तरह भूल नहीं हो सकती ।

इन्द्र० । मानने न मानने का तुम्हें अख्तियार है पर असल बात जो थी वह मैंने कह दी । हां अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वास्तव में दयाराम जीते हैं तो इस खबर से मैं बहुत ही सुखी हूं, ईश्वर करे कि उनका पता लग जाय और कुशलपूर्वक वे अपने दोस्तों में हंसते खेलते दिखाई दें, मगर फिर भी मुझे इस बात का डर बना ही रहेगा कि कहीं वे पुनः तुम्हारे कब्जे में न फंस जांय और इतने दिन की तकलीफ उठा कर अन्त में तुम्हारे ही हाथ से मारे जायं ।

भूत० । (चिढ़ कर) आप आवाज कसने से बाज नहीं आते और खामखाह मुझे बेईमान बना कर क्रोधित करते हैं ।

इन्द्र० । तुम्हारे बेईमान होने में शक ही क्या है ? दूसरे की बात तो दूर रहे तुमने खास अपने उन शागिर्दों के साथ जो हर वक्त तुम्हारे लिए अपनी जान हथेली पर लिए रहते थे ऐसा बुरा बर्ताव किया है कि नालायक से नालायक और बेई-मान आदमी भी नहीं करेगा । वे लोग भी तुम्हें ऐसा मजा चखावेंगे कि जन्म भर याद करोगे । मेरे पास वे लोग मदद मांगने के लिए आये थे मगर तुम्हारे मुला-हिजे से अभी तक उन्हें टालता रहा हूँ ।

यद्यपि नकली दारोगा यानी इन्द्रदेव की बातों से भूतनाथ को बेहिसाब क्रोध चढ़ आया था परन्तु अपने शागिर्दों की खबर सुन कर और बिगड़ने का मौका न जान कर वह अपने गुस्से को पी गया और नरमी के साथ बोला—

भूत० । नहीं नहीं मेरे दोस्त, आपने जो कुछ सुना है या मेरे शागिर्दों ने जो कुछ खबर आपको दी वह बिल्कुल गलत है । वास्तव में वे सब बड़े ही बेईमान और कमीने हैं । आपने बहुत ही अच्छा किया कि उनकी मदद नहीं की और मुफ्त में मुझसे दुश्मनी नहीं खरीदी । मुझ पर आपका बड़ा ही अहसान होगा यदि आप मुझे उन नालायकों का पता बता देंगे ।

इन्द्र० । तुम्हारे कहने के पहिले ही मैं यह सोच रहा था कि इस मामले की तुम्हें खबर दूं और इसीलिए उनसे टालमटोल करता चला आ रहा हूँ मगर इधर बहुत दिनों से तुमसे मुलाकात ही नहीं हुई और न तुम्हारा कोई पता ही चला ।

भूत० । खैर, इस समय तो मैं मौजूद हूं !

इन्द्र० । ठीक है पर इस समय मैं अपने काम में लगा हुआ हूं और विशेष बातचीत नहीं कर सकता, हां अगर कल तुम मुझसे मिलो तो बेशक मैं उनका सब

हाल तुमसे कहूंगा मगर मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि तुम मेरे मकान में इस तरह चोरों की तरह घुस कर मानों मेरी बेइज्जती करते हो।

भूत०। इसके लिए मैं आपसे माफी मांगता हूं, मैं तो केवल आपसे मिलने की नीयत करके यहां आया था।

इन्द्र०। खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब बाहर चलो, मैं कल तुमसे बातें करूंगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ पेचोताब खाया मगर अपने बिगड़ैल शागिर्दों का ख्याल करके चुप हो रहा क्योंकि उसे अपने शागिर्दों का बड़ा ही डर लगा हुआ था और वह समझता था कि यदि वे लोग पकड़े नहीं जांयगे तो मेरी जान किसी तरह बचने न पायेगी, इससे उचित यही है कि दारोगा साहब से पहिले उन शागिर्दों का पता लगा लिया जाय और तब दयाराम के बारे में बातचीत की जाय। इन्हीं सब बातों को सोच वह इस समय तरह दे गया और अपने कसूर की माफी मांग कर इन्द्रदेव के साथ ही साथ इस मकान से बाहर निकला।

भूतनाथ ने इन्द्रदेव से बिदा मांग कर जंगल और मैदान का रास्ता लिया मगर दयाराम को साथ लिए इन्द्रदेव पहिले उस कमरे में गए जहां दारोगा साहब रात के समय रहा करते थे। वहां उन्होंने लोहे की एक आलमारी खोली और उसमें वह तालियों का झब्बा जिससे ऊपर वाले कमरे खोले थे रख कर दयाराम को साथ लिए हुए मकान के बाहर चले गये। पहरे वालों ने मामूली ढंग पर उन्हें दारोगा समझ कर रोक टोक न की और चुपचाप अपने काम पर जहां के तहां मुस्तैद खड़े रहे।

कदम बढ़ाते हुए तेजी के साथ दोनों आदमी शहर के बाहर निकल गए और तब एक तालाब के पास पहुंचे जहां इन्द्रदेव की आज्ञानुसार उनके आदमी दो घोड़े और एक रथ लिये तैयार थे। इन्द्रदेव ने दयाराम से पूछा, "कहिए आप इस घोड़े पर सवार हो सकते हैं या नहीं ?"

दया०। आपकी आज्ञा हो तो मैं सवार हो जाऊं परन्तु मैं कमजोर बहुत हो रहा हूं, शायद...

इन्द्र। तो तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं, रथ तैयार ही है, इस पर हम लोग बखूबी सफर कर सकेंगे, हां यदि आप कुछ भोजन करना चाहें तो इसी रथ पर सामग्री तैयार है और तालाब का जल भी बहुत स्वच्छ है।

दया०। अब तो मैं आपकी कृपा से स्वतन्त्र हो गया हूं, ऐसी अवस्था में बिना स्नान और सन्ध्योपासन से निवृत्त हुए तथा ईश्वर को धन्यवाद दिये मैं भोजन

नहीं कर सकता, यदि आपकी आज्ञा हो तो यहां इन कामों से निवृत्त हो सकता हूं परन्त कपड़ों का अभाव......

इन्द्र०। (बात काट कर) नहीं नहीं, कपड़ों का अभाव क्यों होगा, इस समय का मुझे ध्यान था अस्तु मेरी आज्ञानुसार कपड़े भी इस रथ में जरूर आये होंगे।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने कपड़ों की बावत अपने आदमी से दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि भोजन की सामग्री के साथ ही साथ कपड़े भी मामूली तौर पर आये हुए हैं। रात नाममात्र को बाकी थी और पूरब तरफ आसमान पर सफेदी झलक मारने लग गई थी, अस्तु इन्द्रदेव और दयाराम दोनों ही नहाने धोने की फिक्र में लगे और घण्टे भर के अन्दर ही सब कामों से छुट्टी पा रथ पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हो गए।

आठवां बयान

दिन को दोपहर के समय हम इन्द्रदेव को एक घने जंगल में बहते हुए नाले के किनारे गुन्जान पेड़ के नीचे बैठे देखते हैं। पास में उनका एक शागिर्द खड़ा है और सामने जमीन पर बेहोश दारोगा लिटाया हुआ है। नाले के जल से कपड़ा गीला कर करके इन्द्रदेव दारोगा के सर पर बार बार रखते और बीच बीच में लखलखा भी सुंघाते जाते हैं। कुछ ही देर में दारोगा ने आंखें खोलीं और घबड़ा कर अपने चारो तरफ देखने बाद इन्द्रदेव पर ताज्जुब के साथ निगाह डाली। जब उसके होश हवास अच्छी तरह दुरुस्त हो गये तब उठ बैठा और इन्द्रदेव से बोला, "यह क्या मामला है, हम और तुम यहां पुनः क्योंकर इकट्ठे हुए ?"

इन्द्र०। (अपने शागिर्द की तरफ इशारा करके) मेरे इस शागिर्द ने आज हम दोनो ही को दुश्मनके पंजे से छुड़ाया। कम्बख्त दुश्मन ने हम दोनों को कैद तो कर ही लिया था परन्तु एक साथ रक्खा भी नहीं। अगर हम लोग एक साथ रहते तो कुछ तो दिल बहलता। मेरे इस शागिर्द ने हकीकत में बड़ी होशियारी और चालाकी का काम किया कि इतना जल्द हम लोगों का पता लगा लिया और छुड़ा भी लिया।

दारोगा०। ईश्वर ही ने हम लोगों की जान बचाई नहीं तो मैं एक दम नाउम्मीद हो गया था, जान बचने की कुछ भी आशा न थी। खैर वह था कौन जिसने हम लोगों के साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया ?

इन्द्र०। इस बात का तो निश्चय अभी तक नहीं हुआ है मगर दो चार दिन में छिपा भी न रहेगा।

दारोगा० । उसका नाम जरूर मालूम होना चाहिए जिसमें आइन्दे उससे होशियार रहा जाय । मैं उस कम्बख्त से जरूर बदला लूंगा । तुम्हारे साथ रहने के कारण मैं इस तरह धोखे में आ गया नहीं तो यकायक धोखा खाने वाला नहीं हूं ।

इन्द्र० । उसका पता लगाने के लिए पूरा उद्योग किया जायगा । आप खूब जानते हैं कि मैं कभी भी किसी के साथ बुराई नहीं करता तिस पर भी न मालूम क्यों मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया गया । हां, आपने अपने लिए बहुत दुश्मन जरूर बना रक्खे हैं और जहां तक मैं समझता हूँ आप ही के सम्बन्ध से मुझे भी यह दुःख भोगना पड़ा । बीमारी की हालत में ईश्वर ही ने मेरी रक्षा की नहीं तो कैद की अवस्था में मेरी बीमारी का बढ़ जाना कोई आश्चर्य की बात न थी सो इसके बदले में बराबर तन्दुरुस्त ही होता गया शायद इसका कारण यह हो कि मैंने तीन दिन तक सिवाय जल पीने के कुछ भी भोजन नहीं किया क्योंकि जो कुछ भोजन की सामग्री मिली वह मुझ बीमार के खाने योग्य न थी । मैं आपको फिर भी यही कहता हूँ कि आप अपनी चालचलन को बदल दीजिए । इस छोटी सी जिन्दगी में पापों का ढेर लगाते जाना और दिनों दिन दुश्मनों की गिनती बढ़ाते रहना आप ऐसे गृहस्थीशून्य पुरुष को अच्छा नहीं लगता । कौन आपके आगे बाल-बच्चों का बाजार लगा हुआ है कि जिनके लिए आप इतना अर्थप्रिय हो रहे हैं—ताज्जुब नहीं कि इसके लिए आपको एक दिन हद्द दर्जे की तकलीफ उठानी पड़े ।

दारोगा० । तुम हमेशे ही मुझको इस तरह की नसीहतें किया करते हो मगर मैं तो अपने खयाल से कोई भी बुरा काम नहीं करता हूं, हां मेरे साथ जो कोई दुश्मनी का वर्ताव करता है उसको मैं जवाब देने के लिए जरूर तैयार रहता हूं!

इन्द्र० । खैर मैं आपसे बहस करना पसन्द नहीं करता, जो कुछ आप करते हैं वह मुझसे छिपा नहीं है ।

दारोगा० । अच्छा जो होगा देखा जायगा, यह समय इस तरह की बातचीत का नहीं है, आप यह बताइये कि हम लोगों का पता आपके शागिर्द को क्योंकर लगा और किस मकान से इसने हम लोगों को छुड़ाया ?

इन्द्र० । पता क्योंकर लगा इसकी कथा तो बहुत लम्बी चौड़ी है, ऐयार लोग जिस तरह पता लगाते हैं वह ढंग आपसे छिपा हुआ भी नहीं, हां इतना कहना जरूरी है कि जमानिया में जो 'हरि मन्दिर' के समीप पुरानी टूटी फूटी इमारत है उसी के एक तहखाने के पास ही पास हम लोग कैद किए गए थे ।

पुरानी इमारत का नाम सुन कर दारोगा थोडी देर के लिए गौर में पड

गया और बहुत कुछ विचारने के बाद इन्द्रदेव से बोला—

दारोगा० । हां मैं कुछ कुछ समझ गया, आशा है कि अब बहुत जल्द अपने दुश्मन का पता लगा लूंगा, अब कुछ सवारी का बन्दोबस्त करना चाहिए जिसमें हम घर पहुंच सकें ।

इन्द्र० । आपके और मेरे लिए यहां पास ही में कसे कसाए दो घोड़े तैयार हैं।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द की तरफ देखा और कुछ इशारा किया । शागिर्द चला गया और कुछ ही देर में दोनों घोड़े जिनके साथ साईस भी थे ले आया और मामूली बातचीत करने के बाद एक घोड़े पर दारोगा सवार हुआ और साईस को साथ लिए हुए जमानिया की तरफ रवाना हुआ, उसके बाद इन्द्रदेव भी दूसरे घोड़े पर सवार हुए और अपने शागिर्द से बातचीत करते धीरे धीरे कैलाश-भवन की तरफ चल पड़े ।

नौवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है । दारोगा के मकान में हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिवाय पहरे वाले सिपाहियों और दो तीन खिदमतगारों के और कोई जागता हुआ दिखाई नहीं देता । दारोगा अपने एकान्त के कमरे में बैठा हुआ कुछ लिख रहा है । लिखते ही लिखते वह यकायक किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो जाता है और देर तक उसकी यही हालत बनी रहती है । कभी कभी वह घबड़ा कर उठ बैठता और कमरे में इधर उधर टहलने लगता है, कभी अपने कलमदान में से बाहर का आई हुई चिट्ठियां निकाल कर देखता और फिर उसी तरह रख कर पुनः लिखने लग जाता है । उसका चेहरा बड़ा ही उदास और चिन्तित जान पड़ता है । उसके सामने संगमर्मर की एक चौकी पर मोमी शमादान जल रहा है और छत में लटकती हुई चार पांच बिल्लौरी हांडियों में भी मोमबत्ती की रोशनी हो रही है ।

इसी तरह कभी लिखते कभी पढ़ते और कभी टहलते हुए उसने दो घंटे का समय बिता दिया और अन्त में पुनः अपनी गद्दी पर आकर गाव तकिये के सहारे लेट गया, उसी समय एक खिदमतगार ने हाजिर हो कर अर्ज किया कि 'गदाधरसिंह आये हैं' ।

दारोगा सम्हल कर उठ बैठा और बोला, "भेज दो ।" कुछ क्षण में भूतनाथ आ मौजूद हुआ । दारोगा ने बड़ी खातिरदारी से उसे अपने पास बैठाया

और कुशल मंगल पूछा। दो चार मामूली प्रश्न और उत्तर के बाद इस तरह बातचीत होने लगी—

दारोगा०। कहिये इधर कोई नई घटना भी देखने सुनने में आई है या नहीं ?

भूत०। हमारे और आपके लिये नई घटनाओं को कमी नहीं है। जब से मैंने सुना है कि दयारामजी आपके कैद में हैं तब से मुझे क्षण क्षण में नई घटना का अनुमान होता है। मैं नहीं कह सकता कि मेरे और आपके प्रारब्ध में क्या लिखा हुआ है।

दारोगा०। (आश्चर्य का ढंग दिखाता हुआ) दयाराम का मेरे कैद में होना कैसा ?

भूत०। हां, इस बात से रात को भी आपने इनकार किया था मगर साथ ही इसके आपने यह भी वादा किया था कि अगर तुम कल मिलोगे तो तुम्हारे बिगड़ैल शागिर्दों का तुम्हें पता बता देंगे।

दारोगा०। (सच्चे आश्चर्य से) यह मैंने तुमसे कब वादा किया था !

भूत०। (चिढ़ कर और कुछ क्रोध से) आखिर रात आपने मुझसे क्या क्या बातें की थीं।

दारोगा०। किस रात का तुम जिक्र कर रहे हो कुछ यह भी तो मालूम हो।

भूत०। मैं आज ही की बीती हुई रात का जिक्र कर रहा हूं, क्या आप नशे में तो नहीं थे या इस समय तो नशे में नहीं हैं !

दारोगा०। मैं तो नशे में नहीं हूं मगर तुम्हारे बारे में ऐसा जरूर शक कर सकता हूं। कई दिन के बाद आज शाम को तो मैं घर आया हूं। यहीं के सभी आदमी इस बात को जानते हैं बल्कि हमारे अड़ोस पड़ोस वालों से भी यह बात छिपी हुई नहीं होगी, और तुम कहते हो कि कल रात को तुमसे मुलाकात हुई थी ?

भूत०। (कुछ गौर और चिन्ता के बाद) यह अजीब बात है, आपका कहना मैं झूठ नहीं मान सकता मगर यह भी आप सच समझिये कि कल मैं आपके यहां आया था और आपसे मुलाकात भी हुई थी अगर वास्तव में वह आप नहीं थे तो जरूर आपकी सूरत में कोई आपका दुश्मन होगा।

दारोगा०। मुझे भी शक होता है कि मेरे बाद कोई दुश्मन इस मकान में जरूर आया था क्योंकि मैं अपने कई तरह के सामानों में रद्दोबदल देखता हूं। तुम्हारी जुबानी खुलासा हाल सुनूंगा तो शायद कुछ पता लगेगा।

भूत०। सच्ची बात तो यह है कि कल मैं आपसे लड़ने या आपको उलाहना देने के लिए यहां आया था क्योंकि मुझे इस बात की पक्की खबर लगी है कि

दयारामजी आपके यहां कैद हैं, परन्तु आपसे मुलाकात न होने के कारण मैं वापस चला गया और रात को तलाशी लेने की नीयत से चोरों की तरह आपके मकान में पहुँच कर दयाराम की तलाश करने लगा। मैं विशेष ढूंढ़ने भी न पाया था कि दो नकावपोशों से आपके मकान के ऊपरी हिस्से में मुलाकात हुई। कई तरह की बातचीत होने के बाद एक ने जब अपने चेहरे पर से नकाब हटाई तब आपकी सूरत दिखाई दी। केवल इतना ही नहीं उसने कई ढग से अपने को दारोगा साबित करके मुझसे तरह तरह की बातें कीं और आज मुझे यहां बुलाया।

इतना कह भूतनाथ ने पूरा परा हाल अपने रात में यहां आने का बयान किया जिसे सुन कर दारोगा बड़ी चिन्ता में पड़ गया और भय चिन्ता तथा घबड़ाहट के साथ भूतनाथ का मुंह देखने लगा। भूतनाथ ने पुनः दारोगा से पूछा, "क्या ये सब बातें आपसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखतीं !"

दारोगा०। कुछ नहीं। मैं तो यहां था ही नहीं, बातें क्या खाक होतीं, मगर यह घटना बहुत ही बेढब हुई। मुझे यहां आये अभी ज्यादे देर नहीं हुई तथापि जब मैं यहां आया तो सोचता था कि कई दिनों के बाद मुझे देख कर मेरे नौकर चाकर बहुत प्रसन्न होंगे और मुझसे मेरे गायब होने का सबब पूछेंगे मगर सो सब कुछ भी नहीं, इन लोगों ने इतना भी न पूछा कि कहां गये थे या आपका मिजाज कैसा है। मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ और मैं उनसे तरह तरह की बातें पूछने लगा जिससे मालूम हो कि मेरी कई दिन की गैरहाजिरी में यहां क्या क्या हुआ तथा कौन कौन आदमी मुझे ढूंढ़ने के लिए आए थे, परन्तु मेरी बातों का जो कुछ जवाब मेरे आदमियों ने दिया उससे यही जाहिर होता था कि मानों मैं एक दिन के लिए भी घर से बाहर कहीं नहीं गया था। इन सब बातों से साबित होता है कि मुझे कैद कर लेने के बाद मेरा दुश्मन मेरी सूरत बन कर यहां आया था और कई दिन तक रहा भी था। मैंने अपने मुंह से अभी तक अपने आदमियों को यह नहीं कहा है कि वास्तव में मैं यहां नहीं था, मुझे किसी ने कैद किया था, या मेरा दुश्मन मेरी सूरत बन कर यहां आया था, हां जब से आया हूं अपने घर की अवस्था पर जरूर ध्यान दे रहा हूं। दयाराम तो मेरे यहां हैं नहीं, वह खबर तुमने बिलकुल ही झूठी सुनी है, हां एक आदमी मेरे यहां कैद जरूर था जिसे वह छुड़ा कर ले गया जो मेरी सूरत बन कर आया था। इसके सिवाय और किसी तरह का मेरा नुकसान नहीं हुआ है।

भूत०। (आश्चर्य से) आपको किसी ने कैद कर लिया था !

दारोगा० । हां गदाधरसिंह, भला मैं तुमसे क्यों छिपाऊं, तुम तो मेरे मेहरबान ठहरे और तुम्हारा मुझे बहुत कुछ भरोसा भी रहता है । किसी दुष्ट ने मुझे और इन्द्रदेव दोनों को कैद कर लिया था । तीन दिन के बाद इन्द्रदेव के शागिर्द ने हम लोगों को छुड़ाया। अब खयाल होता है कि शायद इसी लिये उसने हमें कैद कर लिया था कि मेरे यहां से उस कैदी को ले जाय ।

भूत० । (आश्चर्य से) क्या आपको और इन्द्रदेव को दोनों ही को कैद कर ले गया था ? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ? इन्द्रदेव तो अजातशत्रु कहलाते हैं ! उनका कोई दुश्मन ही नहीं कहा जाता, फिर उनके साथ यह कैसा वर्ताव ? इसके अतिरिक्त एक बात और है, आपके यहां से तो उसे कैदी को छुड़ा ले जाना था मगर इन्द्रदेव से क्या मतलब था ?

दारोगा० । शायद उनसे भी कुछ मतलब हो, अब उनसे दरियाफ्त किया जाय तो मालूम हो । या इसका यह सबब हो कि हम और वे उस समय एक साथ ही सफर कर रहे थे जब गिरफ्तार हुए, ऐसी अवस्था में वह उन्हें छोड़ अकेले मेरे साथ क्योंकर दगा कर सकता था ?

भूत० । हां ऐसा हो सकता है, मगर..........

दरोगा० । मगर क्या ?

भूत० । (अपने दिल का असली विचार छिपा कर) कुछ नहीं, मेरा खयाल यही है कि दयाराम जरूर आपके यहां कैद हैं या वह दयाराम ही थे जिन्हें आपका दुश्मन यहां से छुड़ा कर ले गया है ।

दारोगा० । नहीं नहीं भूतनाथ, ऐसा खयाल मत करो । अगर तुम मेरे उस दुश्मन का पता लगाओगे जिसने हमें कैद किया था तो असल हाल तुमको खुद मालूम हो जायगा ।

भूत० । हां है तो ऐसी ही बात । आपके उस दुश्मन का जिसने आपको कैद किया था पता लगाये बिना ठीक ठीक हाल मालूम न होगा पर यद्यपि मैं बहुत जल्द उसका पता लगा सकता हूं मगर मुझे क्या गरज पड़ी है कि व्यर्थ इस मामले में हाथ डाल कर परेशान होऊं । काम आपका निकलेगा, मेहनत मुझे करनी पड़गी ।

दारोगा० । क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो ? क्या मैं तुम्हारा भरोसा नहीं रख सकता, या समय पड़ने पर मैं मदद करने से भाग सकता हूं ? न मालूम तुम्हारा दिल ईश्वर ने कैसा बनाया है ।

भूत० । (मुस्कुराता हुआ) आप जो कुछ कहें और समझें ठीक है, मगर असल बात तो यही है कि आप मुझसे सफाई का व्यवहार नहीं रखते । मैं कई दफे कई मामलों में देख चुका हूं कि आप बिना कुछ गिरह रक्खे मुझसे भेद की बात नहीं करते ।

दारोगा० । यह तुम्हारा भ्रम है, तुम्हारी आदत है कि बिना कुछ समझे बूझे या बिना असल मामले की जांच किये शक कर बैठते हो और खफा हो जाते हो, मैं तुम्हें भाई की तरह मानता हूं और वक्त पर मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता हूं मगर फिर भी .....

भूत० । आपके इस कहने का मैं शुक्रिया अदा करता हूं मगर लाचार हूं कि बिना कुछ मामला पड़े.......

दारोगा० । (बात काट कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूं कि तुम्हारा मिजाज शक्की है, जो कुछ इलजाम तुम मेरे ऊपर लगाते हो क्या उसका कोई सबूत भी तुम्हारे पास है ?

भूत० । हां है ।

दारोगा० । कहिये जरा मैं भी सुनूं ।

भूत० । पिछली बातों को जाने दीजिये, एक बात तो इसी समय सामने मौजूद है कि आप उस कैदी का ठीक ठीक हाल नहीं बताते जो आपके यहां से निकाल लिया गया है और दयाराम के भेद को छिपाते हैं यद्यपि मैं इस उलझन को अच्छी तरह सुलझा चुका हूं और रत्ती रत्ती भेद मय सबूत के पा चुका हूं ।

दारोगा० । तो क्या किसी ने तुम्हें यह निश्चय दिला दिया है कि दयाराम को मैंने कैद कर रक्खा है ?

भूत० । बेशक ऐसा ही है, इस बात का इलजाम मैं आपको नहीं देता कि दयाराम को रणधीरसिंहजी के यहां से आप गिरफ्तार कर लाये थे । नहीं वहां से तो उन्हें राजसिंह ले गया था, हां राजसिंह के यहां से आप चुरा लाये हैं और अब मेरा विश्वास यह है कि कल जो कैदी यहां से निकल गया है वह दयाराम ही थे । यह बात स्वयम् राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह ने मुझे लिखी है और इसके लिखने पर मैंने जब तहकीकात की तब अच्छी तरह से निश्चय हो गया कि ध्यानसिंह का लिखना ठीक है । अभी परसों ही की बात है कि मैं स्वयं ध्यानसिंह से मिलने गया था । उसका कथन है कि तुम खुद राजसिंह से दयाराम को मांग कर ले आये थे और इसके बदले में उसने तुमसे मनमानी रकम ली थी।

दारोगा० । ये सभी बातें झूठ और बनावटी हैं, अगर सचमुच ऐसा ही था

तो ध्यानसिंह ने तुमसे क्यों नहीं कहा ?

भूत० । इसके लिए तो उसने आपसे रकम ही वसूल की थी अस्तु इस भेद को छिपाना उसके लिये जरूरी था, साथ ही इसके वह मुझे दुश्मनी की निगाह से देखता था मगर अब जब कि उसे मुझसे खास जरूरत आ पड़ी है तब सब कुछ कहने और सब भेद खोलने के लिए तैयार हुआ है ।

दारोगा० । कुछ नहीं यह सब उसकी बदमाशी है, इन सब बातों का तुम कुछ खयाल मत करो । तुम जरा खयाल तो करो और सोचो तो सही कि जमना और सरस्वती के बारे में मैंने तुम्हारी कैसी मदद की थी । अगर मुझे तुमसे दुश्मनी हो करनी होती तो ऐसे गूढ़ मामले में मदद करने की मुझे क्या जरूरत थी ? हां तुमने बेशक अपने वादे का का कुछ भी खयाल नहीं किया और भैयाराजा के विषय में मदद करने की प्रतिज्ञा करके भी कुछ न किया । खैर अब तुम्हें उचित है कि मेरे दुश्मन का पता लगाओ और निश्चय करो कि मेरे कैदी को यहां से कौन निकाल कर ले गया है तब तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा कि मैं सच्चा हूं या झूठा ।

भूत० । बेशक मैं आपकी खातिर आपके दुश्मन का पता लगाऊंगा और अगर आप सच्चे निकलेंगे तो हमेशा आपका मददगार बना रहूंगा । भैयाराजा के विषय में मैं आपके लिए अभी तक कोशिश कर रहा हूं । यद्यपि इस काम में मुझे हद्द दर्जे की तकलीफ उठानी पड़ी जो कि मैं अभी इसी समय आपसे बयान करने वाला हूं परन्तु क्या करूं मेरी आर्थिक अवस्था बहुत ही खराब हो रही है, रुपये की मुझे सख्त जरूरत आ पड़ी है, मेरे कई शागिर्द मुझसे रंज होकर भाग गये हैं और मेरी तमाम दौलत चुरा कर ले गये हैं, मैं इस समय पूरा कंगाल हो रहा हूं और रुपये के बिना मेरे सभी कामों में बड़ा हर्ज हो रहा है ।

दारोगा० । मेरे लिये तुम अभी तक भैयाराजा के विषय में कोशिश कर रहे हो यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई । मैं इधर बहुत दिनों से तुम्हारा हाल जानने के लिए बेताब हो रहा हूं, क्योंकि बहुत दिनों से मुलाकात न होने के कारण तरह तरह की चिन्ता लगी रहती है । मैं जरूर सुनूंगा कि इस बीच में तुम पर क्या बीती और क्या क्या हाल हुआ ।

इसके बाद दारोगा और भूतनाथ में देर तक बातें होती रहीं जिनके लिखने की यहां कोई जरूरत नहीं जान पड़ती । इसके अतिरिक्त दारोगा ने रुपये पैसे से भी भूतनाथ की पूरी मदद की ।

दसवां बयान

दयाराम को कैद से छुड़ाने के बाद जब इन्द्रदेव अपने कैलाश-भवन में पहुंचे तब उस समय आधी रात होने के कारण उनके मकान में सन्नाटा छाया हुआ था मगर एक कमरे में जिसमें जमना और सरस्वती रहती थीं सन्नाटा नहीं था, उसमें जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे जमानिया की अवस्था और अपने भाग्य पर तरह तरह की बातें कर रहे थे तथा दयाराम के मामले में चिन्ता के साथ सोचते हुए इन्द्रदेव का इन्तजार कर रहे थे। सब के पहिले इन्द्रदेव अपने कमरे में गये और वहां अपने लोहे के सन्दूक में कुछ कागज वगैरह रखने बाद वहाँ गये जहां उनकी स्त्री सर्यू रहा करती थी। उस समय वह घोर निद्रा में थी परन्तु इन्द्रदेव के वहां पहुँचते ही पैरों की चाप सुन कर जाग गई और चारपाई के नीचे उतर कर उसने अपने पति को प्रणाम करके चारपाई पर बैठ जाने का इशारा किया।

इन्द्रदेव चारपाई पर बैठ गए और उन्होंने अपने सफर तथा दयाराम के छुड़ाने का हाल बयान करके कहा कि अब उनका इरादा क्या है तथा सर्यू को भी अब क्या करना चाहिए, इसके बाद आधे घण्टे तक उन दोनों में भेद की बातें होती रहीं, अन्त में सर्यू को साथ लिए हुए वे उस कमरे में गए जिसमें जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे हुए इन्द्रदेव का इन्तजार कर रहे थे।

इन्द्रदेव को देख सब उठ खड़े हुए और यथोचित दण्ड प्रणाम तथा साहब सलामत के बाद कुशल मंगल पूछ कर सब कोई बैठ गए और बातचीत करने लगे। इन्द्रदेव को अकेले देख कर जमना और सरस्वती वगैरह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्हें इसका पूरा पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव जरूर दयाराम को साथ लेकर घर में आवेंगे परन्तु उन्होंने दयाराम के बदले में सर्यू को उनके साथ देखा।

निराश हो जाने के कारण जमना और सरस्वती के चेहरे पर उदासी छा गई जिसे देखते ही इन्द्रदेव उसका कारण समझ गए और उन्होंने जमना तथा सरस्वती की तरफ देख कर कहा, "मैं तुम दोनों को इस बात की मुबारकबाद देता हूँ कि मेरा यह सफर ईश्वर की कृपा से व्यर्थ नहीं गया और जिस काम के लिए मैं गया था उसे पूरा कर आया।"

इन्द्रदेव के मुह से यह बात सुन कर दोनों प्रसन्न तो हुईं मगर उनकी चिन्ता दूर न हुई। जमना ने कुछ धीमी आवाज में इन्द्रदेव को यह जवाब दिया, "परन्तु

मैं तो आपको यहां अकेला ही देखती हूं ।"

इन्द्रदेव । हां अकेला देखती हो मगर कुछ चिन्ता की बात नहीं ।

प्रभाकर० । आपके कथन से तो यही जान पड़ता है कि आपने दयारामजी को कैद से छुड़ा लिया, परन्तु यहां आपको अकेले आए हुए देख कर हम लोगों की चिन्ता अथवा उत्कंठा यदि बढ़ जाय तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

इन्द्र० । बेशक ऐसा हो सकता है परन्तु मैं साफ साफ कह देता हूं कि मैं दयाराम को एक दुष्ट की कैद से छुड़ा लाया । यहां अपने साथ न लाने का भी एक कारण है । मैं यह उचित समझता हूं कि तुम लोग खुद चल कर उनसे मुलाकात कर लो, ऐसा करने से हम लोगों को सच्चा आनन्द आवेगा ।

जमना० । तो आप उन्हें कहां छोड़ आये हैं ?

इन्द्रदेव० । अपने असली और पुराने मकान में जो मेरा और मेरे बुजुर्गों का वास्तविक स्थान है ।

भैयाराजा० । अगर आप उन्हें यहां ले आते तो क्या हर्ज था ?

इन्द्र० । दुश्मनों के ख्याल से मैंने ऐसा नहीं किया, कम्बख्त दारोगा कोई मामूली आदमी नहीं है और भूतनाथ को भी इस मामले की खबर लग चुकी है तथा वह भी अपना जाल पूरी तरह फैल चुका है । नहीं कह सकते कि दयाराम के विषय में उनकी नीयत क्या है । केवल इतना ही नहीं, मेरे इस मकान में दारोगा या भूतनाथ का आ पहुंचना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । परन्तु दयाराम की जिद्द यही है कि मैं अभी लोगों में अपने को प्रकट नहीं करूंगा बल्कि अभी किसी को इस बात का पता भी न लगने दूंगा कि वास्तव में दयाराम जीते हैं अथवा दारोगा की कैद से उन्हें रिहाई मिल गई ।

प्रभाकर० । ऐसा क्यों ?

इन्द्र० । इसका सबब उनसे मुलाकात होने पर आप लोगों को मालूम हो जायगा । पहिले आप लोग उनसे मुलाकात तो कीजिए और देखिये तो सही कि इस कैद की बदौलत उनकी सूरत क्या हो रही है । वह तिलिस्मी स्थान बहुत सुरक्षित है, वहां कोई हम लोगों का दुश्मन पहुंच नहीं सकता और न उन्हें वहां किसी तरह की तकलीफ ही हो सकती है । इसके अतिरिक्त तुम लोगों ने भी अभी तक हमारा वह स्थान देखा नहीं है, केवल सुनते ही आते हो कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म का दारोगा है, अब सब कोई चलो और देखो कि कैसा सुन्दर और सुहावना स्थान है, और वहां चलने के लिए आज से बढ़ कर अच्छा मौका भी कब मिलेगा ।

सरस्वती० । आप वहां कब चलेंगे ?

इन्द्र० । अभी इसी समय मैं चलने के लिये तैयार हूं वल्कि रथ और घोड़ों को तैयार करने का हुक्म भी दे चुका हूँ । अव हम लोगों को जो कुछ बातें करना है वहां पहुंच कर ही करेंगे ।

प्रभा० । वहुत अच्छी बात है ।

इन्द्रदेव के तिलिस्मी स्थान को देखने की इन सभों को पहिले ही से इच्छा थी परन्तु लेहाज से कभी कुछ कह नहीं सके थे । आज वह जगह देखने में अवेगी और दयाराम से भी मुलाकात होगी यह जान कर सभी कोई प्रसन्न हुए और वहां जाने की तैयारी करने लगे । उसी समय एक लौंडी ने आकर इत्तिला की क सवारी हाजिर है।

पहर भर रात वाकी होगी जब जमना सरस्वती इन्दुमति और सयू रथ पर और इन्द्रदेव प्रभाकरसिंह तथा भैयाराजा घोड़ों पर सवार तिलिस्म की तरफ रवाना हुए ।

इन्द्रदेव का तिलिस्मी मकान कैसा था और वहां पहुंचने का रास्ता किस ढंग का था इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में वहुत खुलासे तौर पर लिखा गया है, आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक उसे भूले न होंगे ।

इन लोगों का सफर यद्यपि वहुत तेजी के साथ हुआ तथापि जब ये लोग उस पहाड़ के नीचे पहुंचे जिसके ऊपर कुछ और रास्ता तय करने के वाद उस तिलिस्मी घाटी का मुहाना मिलता था तो दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था । ये लोग सवारी से नीचे उतरे और पहाड़ पर चढ़ने लगे । अभी तक इन लोगों में से किसी ने स्नान या भोजन नहीं किया था और दयाराम से मिलने की चाह में किसी को इस बात की फिक्र भी न थी मगर इन्द्रदेव ने ऐसा करना उचित न जाना क्योंकि उन्हें विश्वास था कि जब ये लोग दयाराम के सामने पहुंच जांयगे तो मारे खुशी के और वातचीत की धुन में इन लोगों को खाने पीने की कुछ भी सुध न रहेगी और न इसका मौका ही मिलेगा । अस्तु इन बातों का विचार कर पहाड़ी के कुछ ऊपर चढने वाद चश्मे के किनारे पहुँच कर इन्द्रदेव ने डेरा डाल दिया और सभों को निपट ने और स्नान इत्यादि से छुट्टी पाकर कुछ जलपान करने के लिए कहा । इन्द्रदेव ने जलपान का इन्तजाम घर ही से कर लिया था अर्थात् कुछ मेवा मुरब्बा वगैरह अपने साथ रथ पर लेते आये थे । लाचार होकर सभी को इन्द्रदेव की आज्ञा माननी पड़ी।

घण्टे सवा घण्टे की देर में सब कोई जरूरी कामों से निपटने के वाद कुछ भोजन इत्यादि करके भी निश्चिन्त हो गए । अव उन लोगों को पैदल ही सफर

करना पड़ा परन्तु थकावट का चिन्ह किसी के भी चेहरे पर दिखाई नहीं देता था और वे लोग दयाराम से मिलने की धुन में बराबर कदम बढ़ाये चले जा रहे थे। केवल इतना ही नहीं, सर्यू और इन्द्रदेव को छोड़ कर बाकी सभी को इस बात का भी शौक उमड़ रहा था कि देखें इन्द्रदेव का तिलिस्मी स्थान कैसा है।

घण्टे भर और सफर करने के बाद यह मण्डली उस गुफा या सुरंग के मुहाने पर जा पहुंची जो इन्द्रदेव की घाटी में जाने का रास्ता या दरवाजा था। इस गुफा के दोनों तरफ दो चौड़े पत्थर रक्खे हुए थे जिन पर थोड़ी देर बैठ कर आराम करने के लिए इन्द्रदेव ने सभों को कहा। कुछ देर तक वहां आराम करने के बाद सभों ने इन्द्रदेव से कहा, "बस अब हमलोग आराम कर चुके, विशेष देर करना गढ़ाता है।"

इन्द्रदेव तैयार हो गये और सभों को साथ लिये हुए गुफा के अन्दर घुसे। यह गुफा अन्दर से बहुत खुलासा और प्रशस्त तो थी परन्तु इसके अन्दर बिलकुल अंधकार था। इन्द्रदेव के पीछे पीछे एक दूसरे का सहारा लिए क्रमशः सब कोई चलने लगे। लगभग सौ कदम जाने के बाद रास्ता घूमा और इन्द्रदेव के पीछे सब कोई बाईं तरफ को रवाना हुए। थोड़ी दूर और जाने के बाद इन्द्रदेव रुके क्योंकि यहां पर उन्हें कोई दर्वाजा खोलना था और इसकी तरकीब बहुत ही गुप्त थी। लोगों का सिवाय एक खटके की आवाज सुनाई देने के और कुछ भी मालूम न हुआ। उस समय इन्द्रदेव वहां खड़े हो गये और धीरे धीरे सभों को उस दरवाजे के अन्दर करके स्वयं सब के पीछे रहे गये और तब पुनः सभों को दर्वाजा बन्द होने की आहट मालूम हुई। अब इन्द्रदेव ने मोमबत्ती जला कर रोशनी की।

सब कोई बहुत देर तक अंधेरी गुफा में रहने और चलने के कारण घबड़ा गए थे, अब जो वहा रोशना दिखाई दी तो सभों के जी में जी आया और आश्चर्य के साथ सब कोई इधर उधर देखने लगे। यहां पर नीचे उतरने के लिए कुछ सीढ़ियां बनी हुई थीं। उसे खतम करके कुछ दूर और चलने के बाद सुरंग समाप्त हुई और सभीं की निगाह एक ऐसे सुन्दर सुहावने और रमणीक स्थान पर पड़ी कि जिसे देखते ही सब का दिल बाग बाग हो गया और सभों ही के मुंह से वाह वाह की आवाज आने लगी।

यह सुन्दर सुहावना और दिलचस्प सुन्दर सुन्दर गुलबूटों से भरा मैदान चारो तरफ की हरी भरी ढालवीं पहाड़ियों से घिरा हुआ था। हरे हरे तथा खुशबूदार फूलों से लदे हुए पेड़ तथा लताओं की खुशबू बहुतायत से निकल कर और हवा में मन्द मन्द मिल कर जिस तरह दिमाग को मुअत्तर कर रही थी उसी तरह रंग

विरंग की खुशनुमा चिड़ियों की आवाज तथा गूंजते और फूलों पर न्योछावर होते हुए भौरों की पंक्तियां कानों और आंखों को भी बहुत ही भली और प्यारी मालूम होती थीं। यही जी चाहता है कि यहां से क्षण भर भी हट कर कहीं न जायं और न इस स्वर्ग-तुल्य स्थान को देखने से मुंह मोड़ें। एक तरफ पहाड़ी का आधी ऊंचाई से सुन्दर झरना नीचे को तरफ गिर रहा था जिसके साफ सुथरे बिल्लौर के सा जल को बदौलत उस मैदान के गुलबूटों और पौधों की सिंचाई बखूबी होती थी तथा और भी बहुत से छोटे झरने पहाड़ी पर से बह रहे थे जिससे यहां की तरावट में किसी तरह की कमी नहीं आने पाती थी और यहां के पेड़ भी हर वक्त सरसब्ज और शादाब बने रहते थे। दूसरो तरफ पहाड़ी के ऊपर एक सुन्दर बंगला भी दिखाई दे रहा था और वह अपने चारो तरफ के गुलबूटों और पौधों से ऐसा मालूम पड़ता था मानो वसन्त ऋतु में कामदेव के भवन को बाग बगीचों न चारो तरफ से घेर रक्खा हो।

उन पहाड़ियों पर चढ़ने और उतरने के लिए हर तरफ छोटी बड़ी तथा मन-भावन सीढ़ियां बनी हुई थीं और जगह जगह पर बैठ कर आनन्द लेने के लिए रंग बिरंगे पत्थरों के बड़े बड़े चट्टान मौजूद थे जिनके इर्द गिर्द मौके मौके से खुश-नुमा और कीमती गमले सजाये हुए थे।

वहां की ऐसी अवस्था देख कर सभों का चित्त प्रसन्न हो गया मगर जमना और सरस्वती की आंखें वहां के गुलबूटों का आनन्द उतना नहीं ले रही थीं जितना दयाराम को खोजने के लिए उतावली होकर खंजन की सी चंचलता करती हुई चारो तरफ देख रही थी।

सभों को साथ लिए हुए इन्द्रदेव अपने बंगले की तरफ रवाना हुए। सब कोई सीढ़ियां उतर कर उस सुन्दर मैदान में पहुंचे और फिर बंगला की तरफ वाली पहाड़ी पर चढ़ने लगे। कुछ दूर ऊपर चढ़ने के बाद जमना और सरस्वती की निगाह यकायक किसी लताकुंज के नीचे एक चट्टान पर बैठे हुए दयाराम के ऊपर जा पड़ी जो इस समय सर झुकाये हुए कुछ सोच रहे थे। यद्यपि इस समय हंस-मुख दयाराम का वह गोरा सुन्दर और साफ चेहरा न था, न वह गोल मटोल तथा गठीला बदन ही था, दिल को उदासी और कैद की सख्ती ने उनके चेहरे और तमाम बदन पर झुर्रियां डाल दी थीं और अंधेरे में रहते रहते उनका रंग पीला पड़ गया था, मुद्दत से हजामत न बनने के कारण उनकी दाढ़ी मूंछ और सिर के बाल बेहिसाब बढ़ रहे थे जिससे उनका चेहरा भालू का सा और सूरत वहशियों

या जंगलियों को सी हो रही थी तथापि नजर पड़ने के साथ ही जमना और सरस्वती का कलेजा धड़कने लगा। उनके दिल ने कहा कि बेशक उनके प्यारे पति यही हैं। बहुत दिनों तक कैद में पडे रहने के कारण यदि उनकी ऐसी सूरत हो गई हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, अस्तु उनकी ओर इशारा करके जमना और सरस्वती ने इन्द्रदेव की तरफ देखा।

इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, "हां दयारामजी यही हैं, शायद हमलोगों के इन्तजार में ये बंगले से बाहर निकल कर यहां आ बैठे हैं। यह जरूर सम्भव था कि मैं इनके चेहरे और बदन की सफाई कर देता परन्तु तुम लोगों को इनकी अवस्था दिखाने की नीयत से ऐसा नहीं किया। इनके विषय में तुम लोग किसी तरह का शक न करो, यद्यपि आज कल का जमाना बहुत बुरा हो रहा है—हर तरफ ऐयारियों और चालबाजियों का डंका बज रहा है परन्तु मेरे काम में और इनके दयाराम होने में किसी तरह का धोखा नहीं है। कैदखाने के अन्दर ही मुझसे औ· इनसे गूढ़ तथा गुप्त बातें हो चुकी हैं और उसके बाद तो पहरों ही...... देखो अब वे स्वयं उठ कर हम लोगों की तरफ आने लगे।"

इन्द्रदेव की बातों ने सभों ही का ध्यान दयाराम की तरफ कर दिया और सभी कोई आश्चर्य और दुःख के साथ उनकी तरफ देखने लगे। जब यह देखा कि वे स्वयं उठ कर उन लोगों की तरफ आने लगे तब सभों की चाल में तेजी आ गई और प्रसन्नता के साथ सब कोई कदम बढ़ाते हुए उनकी तरफ लपके।

हम नहीं कह सकते कि इस समय जमना और सरस्वती के दिल की क्या हालत थी। जब दयाराम नजदीक आ पहुंचे तब जमना और सरस्वती झपट कर उनके पैर पर जा गिरीं और गर्म आंसुओं की धार से उनके चरण को धोने लगीं इन्द्रदेव को दयाराम पिता के बराबर मानते और इज्जत करते थे इसलिए उन्होंने इस समय अपने हृदय के वेग को रोका और जमना तथा सरस्वती के साथ वह बर्ताव नहीं कर सके जो एकान्त में अथवा केवल सखियों और दासियों के सामने करते। केवल इतना ही नहीं, उन दोनों को पैरों पर से उठाने के लिए जब झुके तो कोई ऐसा शब्द धीरे से बोल पड़े जिसे कोई दूसरा सुन न सका और जमना तथा सरस्वती को भी ज्ञान हो जाने के कारण उनके साद वर्ताव पर कुछ दुःख न हुआ।

वे दोनों उनके पैरों पर से उठ कर हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गई और उसके बाद सभी कोई हंसते और मुबारकबादी देते हुए उनसे मिले। मिलती समय जिसका जिस तरह का बर्ताव मुनासिब था उसने वैसा ही किया। दयाराम ने भैयाराज,

इन्द्रदेव और सर्यू को प्रणाम किया तथा प्रभाकरसिंह उनके गले मिले। इस समय किसी के मुंह से यह न निकला कि चलो बंगले में चल कर आराम से बैठें और तब निश्चिन्ती से बातचीत करें, खुशी के मारे सब उसी जगह जमीन पर बैठ गए और समयानुकूल तरह तरह की बातें करने लगे।

प्रभा०। (दयाराम से) हरे हरे, यह बात क्या कोई स्वप्न में भी विचार सकता था कि आप दुनिया में जीते जागते मौजूद हैं और एक दिन इस तरह पर हम लोग आपका दर्शन करेंगे !

भैया०। कदापि नहीं, तमाम जमाने को इनके मरने का विश्वास हो चुका था। जो कुछ गम जिसके दिल में था वह धीरे धीरे जाता रहा था यहां तक कि एक जमाना बीत जाने के कारण सर्वसाधारण के दिल से इनकी याद भी एक तरह से जाती रही, हां जो इनके बड़े ही प्रेमी थे केवल उन्हीं के दिल में कभी कभी इनका ध्यान आ जाता हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं।

इन्द्र०। मुझे तो इनका मिलना एक आश्चर्य सा जान पड़ता है। परमात्मा की भी क्या विचित्र माया है, जिस बात का कुछ शान न गुमान वह यकायक पैदा हो गई। ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त मैं नहीं कह सकता कि और किसको इसके लिए धन्यवाद दूं ?

कुछ देर तक इसी प्रकार की बातें होती रहीं परन्तु जमना और सरस्वती के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, हां आंखों से आंसुओं की धारा बराबर बहती रही। इसके बाद इन्द्रदेव सब को बंगले में ले गये। वहां सभों के लिए अलग अलग कमरों और कोठड़ियों तथा कपड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद अपने हाथ से दयाराम की हजामत बनाई और स्नान वगैरह करा कर कपड़े बदलवाये। इन सब कामों से छुट्टी पाते पाते तक संध्या हो गई और तब सब कोई निश्चिन्त हो कर एक कमरे में बैठे और बातचीत तथा हंसी दिल्लगी करने लगे। आज यहां सभी का चित्त प्रसन्न था और सभी को दयाराम की कहानी सुनने का शौक हो रहा था।

सबके पहिले जमना और सरस्वती ने अपनी तथा अपने साथ ही साथ इन्दुमति की दर्दनाक कहानी दयाराम से कह सुनायी और तब प्रभाकरसिंह ने अपना तथा भूतनाथ का बचा हुआ हाल बयान करके सभी कसर पूरी की। तत्पश्चात् भैयाराजा का हाल इन्द्रदेव ने बयान किया। इसी के बीच में भूतनाथ का हाल थोड़ा थोड़ा सब की जुबान से दयाराम ने सुना और अन्त में सब ने दयाराम का हाल पूछा।

दयाराम ने कहा, "मेरा किस्सा न तो अनूठा है और न उसमें किसी अनूठी

घटना का बयान हो सकता है सिवाय इसके कि वर्षों कैद में कैसे पड़े सड़ा किये और दुःख भोगते रहे। कैद में इतना मुझे जरूर मालूम हो गया था कि जमानिया का दारोगा राजसिंह का मददगार है और उसी की सहायता से राजसिंह ने मुझे गिरफ्तार भी किया था। अन्त में भूतनाथ पर कब्जा करने की नीयत से दारोगा मुझे अपने यहां ले आया और तब से मैं दारोगा का कैदखाना आबाद किये हुए था। मुझे अपने छूटने या छुड़ाने का कभी भी कोई अच्छा मौका नहीं मिला और न कोई मददगार ही दिखाई दिया, यदि आपको यकायक मेरा पता न लगता तो शायद मेरी जिन्दगी उस कैदखाने में ही पूरी होती और अन्त में मेरी लाश बिना संस्कार ही के जमीन में गाड़ दी जाती। आप लोगों की जुबानी जो कुछ मैंने सुना है उससे यही जान पड़ता है कि दारोगा के दिल में सदा ही से हम लोगों की दुश्मनी की जड़ें जमी हुई हैं और वह हम सभों ही के साथ खोटा वर्ताव करता चला आया है, परन्तु आप सदा ही उसका अपराध क्षमा करते चले आए और अपनी तरफ से किसी प्रकार का रंज भी उस पर प्रकट नहीं होने दे रहे हैं। ऐसा दिल और ऐसी बर्दाश्त शायद ही दुनिया में किसी को हो। केवल दारोगा ही के साथ नहीं बल्कि गदाधरसिंह के साथ भी आपने वैसा ही बर्ताव किया, जिस तरह भीष्मपितामहजी ने अपने प्रण की रक्षा की थी अर्थात् पिता के प्रसन्नार्थ न तो उन्होंने शादी ही की और न तमाम शरीर बाणों से विध जाने पर भी उन्होंने शिखण्डी पर शस्त्र या अस्त्र ही चलाया, उसी तरह आप भी अब तक अपने वचन की रक्षा करते चले आए और सैकड़ों आघात सह कर भी आपने उस पर किसी तरह का वार नहीं किया।

प्रभाकर०। बेशक ऐसी ही बात है, इन्द्रदेवजी ने जो कुछ किया वह दूसरा कोई नहीं कर सकता।

दयाराम०। परन्तु अब जो मैं देखता हूं तो उन दोनों के लिए बहुत बुरा समय आया हुआ दिखाई देता है। मेरा और मेरी दोनों स्त्रियों का तथा प्रभाकरसिंह और भैयाराजाजी का यकायक प्रकट होना कोई मामूली बात नहीं। इससे उन दोनों का बड़ा ही अनिष्ट होगा। चाचाजी (इन्द्रदेव) के चुप रह जाने पर भी दुनिया उन्हें सत्यानाश कर डालेगी।

भैया०। इसमें भी क्या कोई शक है? और इतना ही नहीं, उन दोनों का अनिष्ट होने के साथ ही साथ यह बात भी छिपी न रह जायगी कि इन्द्रदेवजी ने हम लोगों के विषय में क्या क्या कार्रवाई की है और उन दोनों के साथ कितना मुलाहिजा करते आये हैं।

इन्द्र० । मुझे अगर कुछ डर है तो इसी बात का । मैं नहीं चाहता कि मेरी इन कार्रवाइयों का सर्वसाधारण को पता लगे और न मैं यही चाहता हूं कि दारोगा तथा भूतनाथ को यह मालूम हो कि मैंने उनके विषय में कोई काम किया है अथवा उनके भेदों को मैं जानता हूँ (कुछ सोच कर) परन्तु यह बात असम्भव सी जान पड़ती है।

दयाराम० । बेशक यह बात असम्भव है लेकिन मैं अपने शरीर से कदापि आपका प्रण झूठा न होने दूंगा । जिस तरह भीष्मजी ने अपने पिता की प्रतिज्ञा रक्खी थी उसी तरह मैं सब दुःख सहन करने पर भी आपके , जिन्हें मैं पिता से बढ़ कर समझता हूँ, प्रतिज्ञा रक्खूंगा और अपने विषय में दोनों के ऊपर किसी तरह का दोष न लगने दूंगा ।

इन्द्र० । (आश्चर्य से) मगर यह कैसे हो सकेगा ?

दयाराम० । इसका होना कोई कठिन नहीं है । तमाम जमाना जान चुका है कि दयाराम मर गये । मेरे आत्मीय और सम्बन्धियों के दिल से धीरे धीरे मेरा रंज भी निकल चुका है, अस्तु अब मुझे इस बात की कोई जरूरत नहीं रह गई कि मैं खुले मैदान प्रगट होकर उन लोगों से मिलूं और सभों को अपना तथा आपका हाल मालूम होने दूं । बस इसी सुन्दर घाटी में कहीं थोड़ी जगह दे दें जहां मैं अपनी स्त्रियों के साथ रह कर बची हुई जिन्दगी ईश्वराधना में बिता दूं ।

इन्द्र० । शाबाश शाबाश, इस हिम्मत की देख कर मैं तम्हारी सराहना करता हूं, परन्तु यह कैसे हो सकता है कि मैं अपन हाथ से तुम्हारे पैर में कुल्हाड़ी मारूं और इतने दिनों तक कैद को तकलीफ उठाने के बाद रिहाई मिलने पर भी तुम्हें दुनिया की हवा खाने या दुनिया के सुख दुःख से वंचित रक्खूं ?

दया० । नहीं नहीं, इसके लिए आप जरा भी चिन्ता न करें, मैं शपथपूर्वक आपसे कहता हू कि मुझे इन बातों की अब कुछ भी लालसा नहीं है । कदाचित् कभी मेरे दिल मे यह आ भी जाय कि यहा से बाहर निकल कर दुनिया की हवा खाऊं और जमाने की चाल चलन को देखूं तो यह बात भी आपकी कृपा से मेरे और मेरी स्त्रियों के लिए सहज हो जायगी अर्थात् हम लोगों को आप थोड़ी सी ऐयारी सिखा देंगे तो उसका वदौलत दुनिया की सैर कभी कभी कर लिया करूंगा । बात यह है कि ऐसा करने में मेरे दिल को जरा भी कष्ट न होगा इसे आप सत्य समझें ।

इन्द्र० । (प्रेम के कारण डबडबाई हुई आंखों से दयाराम की तरफ देख के) बेटा, तुम्हारी जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है । जब कि मेरी इज्जत बात तथा प्रेण की रक्षा करने वाला तुम्हारे ऐसा सुपुत्र इस दुनिया में मौजूद है तब मुझे

किस बात की परवाह हो सकती है ? निःसन्देह मैं तुम्हें पाकर अपने को कृतकृत्य समझता हूं । ईश्वर तुम्हें चिरायु करे । जमना और सरस्वती की दुनिया की आफतों से बचे रहने के लिए मैंने ऐयारी सिखाई है और तुम्हें भी अवश्य सिखाऊंगा बल्कि इसके सम्बन्ध की बड़ी अनूठी चीजें दूंगा जिससे तुम सदैव प्रसन्न रहोगे । बहुत नहीं तो थोड़े दिनों तक तो तुम इस स्थान में गुप्त रीति से रहो फिर जैसी ईश्वर की मरजी होगी देखा जायगा । वह सर्वशक्तिमान जगदीश्वर सबकी इच्छा पूर्ण करने वाला है ।

प्रभा० । (हाथ जोड़ कर) मेरी भी एक प्रार्थना है ।

इन्द्र० । वह क्या ?

प्रभा० । मुझे और इन्दुमति को भी आपने ऐयारी सिखाई जिसके कारण यद्यपि मेरी हिम्मत और ताकत बहुत बढ़ी हुई है परन्तु मैं भी दयारामजी का अनुकरण किया चाहता हूं । आप मुझे आज्ञा दें कि मैं भी इनके साथ इसी घाटी में रहा करूं, सिवाय आपके मेरा तो इस दुनिया में अब कोई रोने वाला भी नहीं है।

इन्द्र० । तुम्हारा घर है, तुम खुशी के साथ जब तक चाहो यहां रह सकते हो । परन्तु दयाराम की तरह गुप्त होकर तुम्हें रहने की तो कोई आवश्यकता नहीं है । इन्दुमति को यहां रख कर मेरी बदनामी को बचाते हुए दुनिया में घूम फिर कर लोगों का उपकार कर सकते हो परन्तु भूतनाथ और दारोगा से यदि अपने को बचा सको तो ।

प्रभा० । मुझे अकेले को इन दोनों का कोई डर नहीं है, खैर जैसा होगा देखा जायगा ।

भैया० । परन्तु मैं तो दारोगा को किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता, मैं उसका और भाई साहब का जरूर सामना करूंगा और देखूंगा कि उस दुष्ट दारोगा की चालबाजी कहां तक काम करती है ।

इन्द्र० । बेशक आपको जमानिया में जाकर अपना घर देखना चाहिए परन्तु इस बात को आप जरूर छिपाये रहियेगा कि मैंने आपकी कभी मदद की थी ।

भैया० । हां इस बात को मैं जरूर बचाऊंगा और आपका भेद प्रकट न होने दूंगा ।

इसी तरह की बातें सभों में बड़ी देर तक होती रहीं । जब भोजन का समय हुआ तब सब कोई वहां से उठे और दूसरे कमरे में जाकर सभों ने भोजन किया। इन्द्रदेव ने आज नाना प्रकार के भोजन की सामग्री तैयार कराई थी जिसे देख

कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि शहर से इतनी दूर इस गुप्त स्थान में इतना जल्दी ऐसा सामान क्योंकर तैयार कराया गया।

भोजन से निश्चिन्त होकर सब कोई आराम करने के लिए अपने अपने कमरे में गये जिसका बन्दोवस्त इन्द्रदेव ने पहिले ही से कर रक्खा था। दयारामजी के लिए तीन चार कमरों और कोठड़ियों का बन्दोवस्त हुआ था जिनमें तरह तरह के आराम का सामान मौजूद था। दयाराम और उनकी स्त्रियों में दुःख उठाने पर मुद्दत के वाद मुलाकात हुई थी इसलिए उन लोगों की खुशी का तो कहना ही क्या है अस्तु इस सम्बन्ध में हम इससे ज्यादे और कुछ भी कहना मुनासिब नहीं समझते कि आज की रात उन लोगों के प्रेम का उद्गार किसी तरह कम न हुआ, हंसी दिल्लगी में उन लोगों ने जो जो तकलीफें उठाई थीं वह सब आज मानों स्वप्न के समान मालूम हो रही थीं।

एक सप्ताह तक सभी ने उस घाटी में रह कर हंसी खुशी से बिताया इसके बाद दयाराम जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को उसी जगह छोड़ कर बाकी सभों को साथ लिए इन्द्रदेव उस तिलिस्मी घाटी के बाहर हुए।

ग्यारहवां बयान

इन्द्रदेव के कैलाश-भवन में आज हम भूतनाथ को बड़ी बेचैनी बेताबी और उदासी के साथ बैठे हुए देखते हैं। इन्द्रदेव इस समय अपने पूजा के कमरे में बैठे पार्थिव पूजा कर रहे हैं और बीच बीच में जब मौका मिलता है तो भूतनाथ से दो चार बातें भी कर लेते हैं। सिवाय इन्द्रदेव और भूतनाथ के तीसरा कोई आदमी इस कमरे में दिखाई नहीं देता। हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ को यहां आये हुए कितनी देर हुई है तथा इन दोनों में क्या क्या बातें हो चुकी हैं परन्तु अब जो कुछ बातें होने वाली हैं वे जरूर सुनने के योग्य हैं।

भूत०। मेरी जिन्दगी तो मुफ्त में ही बर्बाद हो रही है, दिन रात दुश्मनों ही के खयाल में वीतता है। अपनी सुफेद चादर में पड़े हुए एक मात्र धब्बे को ज्यों ज्यों धोकर साफ करने की कोशिश करता हूं त्यों त्यों वह चादर गंदली ही होती जाती है और इसलिए मेरी अन्तरात्मा को सिवाय कष्ट के सुख का दर्शन भी नहीं होता।

इन्द्र०। तुम्हारे प्रारब्ध में जो कुछ बदा है उसे तुम भोग रहे हो इसके सिवाय और मैं क्या कहूं। केवल तुम ही दुःख नहीं भोगते बल्कि अपनी बेवकूफी से अपने साथ ही साथ अपने दोस्तों और साथियों को भी दुःखी करते हो। न

मालूम कै दफे मैं तुमको समझा चुका हूं कि तुम इन सब बखेड़ों को छोड़ो और इस बात की धुन में न पड़ो कि दयाराम के मारने का कलंक जो तुम पर लगा है उसे मिटा कर साफ करोगे, मगर तुम्हारे दिल में मेरी कोई बात बैठती ही नहीं। दयाराम वाली जिस बात को केवल चार आदमी जानते थे उसे अब तुम्हारी बेवकूफी से बीस आदमी जानने लग गये हैं। तुम इस मामले को तूल न देते तो हम लोगों के मुंह से कोई गैर आदमी कभी न सुनने पाता।

भूत०। बेशक मुझसे भूल हो गई।

इन्द्र०। अभी तक क्या हुआ है, अभी तो तुम दिनों दिन भूलें करते ही जाओगे। दयाराम के मारने का कलंक कोई सच्चा कलंक नहीं था, वह काम वास्तव में तुमसे धोखे में हो गया, मगर उस सम्बन्ध में अब जो कुछ तुम कर रहे हो वह जान बूझ के कर रहे हो और इन सब पातकों का फल तुम्हें अवश्य भोगना ही पड़ेगा। इस समय जो तुम अपने लड़के के गम में विकल हो रहे हो यह भी इन्हीं सब पापों का फल है। ऐसा कर्म करके भी तुम अपने वंश की वृद्धि चाहते हो!

भूत०। (अपनी आंखों से आंसू पोंछ कर) अफसोस, मैं कहीं का न रहा।

इन्द्र०। बेशक ऐसा ही है। अब नहीं तो आगे चल कर तुम वास्तव में कहीं के भी न रहोगे। मैं तुमसे यह पुछता हूँ कि जमना और सरस्वती के साथ क्या तुम्हें ऐसा ही बर्ताव उचित था जो तुमने किया?

भूत०। उन्होंने खुद मेरे साथ दुश्मनी की नींव डाली, मैं नहीं चाहता था कि उनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव करूं।

इन्द्र०। अगर थोड़ी देर के लिए मान लिया जाय कि वे दोनों तुम्हारे साथ दुश्मनी करने के लिए उतारू हुईं मगर क्या कोई कह सकता है कि तुम्हारे ऐसे ऐयार का वे मुकाबला कर सकती थीं? कदापि नहीं, अगर तुम चाहते तो नेकनीयती के साथ उन्हें अपना मालिक समझ कर उनके प्रहारों को बचाते हुए नेक और खिदमती कामों से उन्हें खुश कर लेते। मगर नहीं, तुम्हें तो ऐयारी का घमण्ड चढ़ा हुआ था, तुम्हारे अदृष्ट ने तुम्हारा दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था, फिर ऐसा काम होता ही क्यों? उनकी नेकनीयती और उनके पतिव्रत धर्म ने उनकी रक्षा की और अन्त में तुम उनका कुछ न बिगाड़ सके।

भूत०। जिसकी मदद आप करेंगे उसका भला मैं क्या बिगाड़ सकता हूं?

इन्द्र०। (कुछ बिगड़े हुए ढंग से) तुम्हारे पास क्या सबूत है कि मैं उनका मददगार बना था?

भूत० । सबूत तो कुछ भी नहीं है परन्तु.......

इन्द्र० । सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें तुम्हारे दोस्त दारोगा के फन्दे से छुड़ा भी नहीं सकता था, बस यही तो कहोगे या कुछ और ?

भूत० । विचार तो मेरा ऐसा ही है, आज मैं आप से साफ साफ कहता हूं कि बेशक मैं इस मामले में अपराधी हूं और इसके लिए पश्चात्ताप करता हूं ।

इन्द्र० । जब तुम्हारे किये कुछ हो ही नहीं सका तो अब जरूर ही पश्चात्ताप करोगे परन्तु इन्दुमति और प्रभाकरसिंह के बारे में शायद तुम पश्चात्ताप भी न करो।

भूत० । आज आप मुझसे बहुत ही जली कटी बातें कर रहे हैं, ऐसा तो कभी नहीं करते थे !

पूजा विसर्जन करके इन्द्रदेव ने जवाब दिया—

इन्द्र० । तुम्हारा कहना ठीक है । तुम्हारे दुष्ट कर्मों को देखते देखते अब मेरा चित्त बहुत ही दुःखी हो गया है । मैं अपनी जबान से तुम्हें दोस्त कह चुका हूं उसी का निर्वाह करता चला आता हूं, नहीं तो......

भूत० । निःसन्देह आपने आज तक उस शब्द का ऐसा निर्वाह किया कि जैसा कोई कर नहीं सकता । आपका हौसला आपकी हिम्मत और आपकी मर्दानगी सराहने योग्य है । अब मैं आप से क्षमा मांगता हूं, आप मेरे अपराधों को क्षमा करें । आज मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अब मे कदापि किसी पाप कर्म में हाथ न डालूंगा ।

इन्द्र० । तुम्हारी प्रतिज्ञा पर तो मैं विश्वास कर नहीं सकता परन्तु यह तुम स्वयं जानते हो कि मैं अपनी तरफ से तुम्हें दुःख देने की इच्छा कदापि नहीं रखता और इस हिसाब से कहना चाहिए कि मैं हमेशा ही तुम्हारा कसूर माफ करता चला आता हूं ।

भूत० । निःसन्देह मुझे यह बात माननी पड़ेगी, मेरा दिल इस बात की गवाही देता है, मैं खूब समझता हूं कि मेरे ऐसे को तबाह कर देने के लिए आपका इशारा काफी है, मगर नहीं, आप हमेशा ही मुझे समझाते और मेरे अपराधों को क्षमा करते चले आये हैं और इसी से आज मुझे पुनः आपके पास आने की हिम्मत हुई है नहीं तो वास्तव में मैं मुंह दिखाने लायक नहीं हूं, पर आज मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई है जिसके प्रकट होने से मैं सदा के लिए बेगुनाह साबित हो जा सकता हूं और साथ ही इसके मेरा और मेरे दोस्तों का उपकार भी हो सकता है ।

इन्द्र० । वह क्या ?

भूत० । मुझे इस बात का ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयारामजी अभी

तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है। आप जानते हैं कि तिलिस्म से सम्बन्ध रखने के कारण दारोगा की ताकत कितनी बढ़ी चढ़ी है, अस्तु यदि आप मेरी कुछ मदद करें तो मैं दयाराम को उसके पंजे से छुड़ा लूं। दयारामजी के छूट जाने पर हम लोगों में एक अजीब तरह की खुशी पैदा होगी और मेरे माथे से भी सदैव के लिए कलंक का टीका मिट जायगी।

इन्द्र०। (सिर हिला कर) इस असम्भव बात को भला कौन मान सकता है? भला दयाराम को दारोगा से क्या सम्बन्ध? मैं इस बात को कदापि नहीं मान सकता और न इस आकाश-कुसुम के फेर में पड़ता हूं। इसके अतिरिक्त तुम जानते ही हो कि दारोगा मेरा गुरुभाई है, अतएव तुम्हारी तरह उसके ऊपर भी किसी तरह का प्रहार नहीं करना चाहता। तुम्हें यदि दयाराम के जीते रहने का विश्वास हो तो जो कुछ उद्योग करते बने करो मगर मुझसे किसी तरह पर मदद पाने की आशा मत रक्खो।

भूत०। (उदास होकर) क्या आपको दयारामजी के छूटने से प्रसन्नता न होगी?

इन्द्र०। होगा और जरूर होगी परन्तु इसका कोई आशा भी तो हो!

भूत०। यदि आप मेरी मदद करें तो मैं अपनी बात सच करके दिखा दूं।

इन्द्र०। नहीं, दारोगा के विरुद्ध किसी कार्रवाई की मुझसे तब तक आशा मत रक्खो जब तक मुझे इस बात का पूरा पूरा विश्वास न हो जाय।

भूत०। मुझे जिस तरह मालूम हुआ है वह हाल सुनने ही से आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जायगा।

इन्द्र०। अजी वह निरंजनी और छन्नो वाली बात ही तो! मैं इस मामले को अच्छी तरह सुन चुका हूं। वे दोनों तथा ध्यानसिंह तम्हें धोखे में डाला चाहते हैं। दुश्मनों की बातों पर तुम न मालूम क्योंकर विश्वास कर बैठते हो।

भूत०। (आश्चर्य से) यह बात आपको कैसे मालूम हुई?

इन्द्र०। मुझे सब कुछ मालूम है और जिस तरह तुमने जंगल में छिप कर छन्नो की बातें सुनी हैं वह भी मैं जानता हूं, मुझसे कुछ छिपा नहीं है।

भूत०। तो क्या आपके खयाल में वे सब बातें झूठ हैं?

इन्द्र०। झूठ, बिल्कुल झूठ!

भूत०। में स्वयम् ध्यानसिंह के पास गया था, वह तो बड़े जोर से अपनी बात की पुष्टि करता है।

इन्द्र०। भले ही किया करे।

भूत० । मगर मुझे उसकी बातों पर पूरा पूरा विश्वास होता है ।

इन्द्र० । अगर विश्वास होता है तो उद्योग करके देख लो ।

भूत० । मगर आप इस काम में कुछ भी मदद न करेंगे ?

इन्द्र० । कदापि नहीं, तुम्हारी मदद करके मैं स्वयम् बदनाम हो सकता हूं। यद्यपि हजार दुष्टता करने पर भी तुम्हें और दारोगा को मैं बराबर माफ करता चला आया हूं परन्तु अब किसी काम में भी तुम दोनों की मदद मैं नहीं कर सकता। बात तो यह है कि अब तुम दोनों ही से मुझे घृणा हो गई है ।

भूत० । मैं कह तो चुका कि भविष्य में कभी ऐसा काम न करूंगा, और जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिए माफी मांगता हूँ ।

इन्द्र० । केवल इतना कहने ही से मैं सन्तुष्ट नहीं हो सकता । जब तक तुम दुनिया में नेक काम करके अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित न करोगे तब तक मैं तुमसे कोई वास्ता न रक्खूंगा, हां इस बात से तुम जरूर बेफिक्र रहना कि मैं तुम्हारे साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव अपनी जात से कदापि न करूंगा ।

भूत० । इसका तो मुझे जरूर भरोसा है और आपको भी शायद विश्वास होगा कि मैं आपका कैसा लेहाज करता हू ! मेरी जात से आपको कभी भी तक-लीफ नहीं पहुंच सकती और........

इन्द्र० । (बात काट कर) यह तो मैं समझता हूँ परन्तु मेरे स्वजनों को जो तुम तकलीफ देते हो क्या उसका असर मेरे दिल पर नहीं होता है ?

भूत० । जरूर होता होगा, इस बात का तो मैं बेशक कसूरवार हूं । मगर आप देख लीजियेगा कि आइन्दा मुझसे कभी ऐसी हरकत न होगी ।

इन्द्र० । अच्छा मैं तुम्हारी इस बात को भी आजमा कर देखूंगा ।

भूत० । जिस तरह आप चाहें आजमा लीजिये ।

इन्द्र० । अच्छा, अब तुम घर जाओ और दयाराम के विषय में उद्योग करना व्यर्थ समझो ।

भूत० । मैं उम्मीद करता हूं कि इस विषय में उद्योग करने से आप मुझे रोकेंगे नहीं और मुझे मेरी हिम्मत भर कोशिश करने देंगे ।

इन्द्र० । नहीं नहीं, यह कदापि न समझो कि मैं तुम्हें रोकता हूं, हां अपने दिल का विश्वास तुम पर प्रकट करता हूं, आइन्दा तुम्हारी खुशी ।

भूत० । अच्छा तो मैं जाता हूं परन्तु एक बात पूछने की लालसा मेरे दिल में बनी ही रह जायगी जिसका कहना था बहुत जरूरी परन्तु आपके डर से अब

पूछने में संकोच होता है।

इन्द्र०। संकोच की कोई बात नहीं है, मैं खुले दिल से तुम्हें इजाजत देता हूं कि जो कुछ तुम्हारे दिल में आवे कहो और पूछो। मैं पहिले कह चुका हूं कि अपनी तरफ से तुम्हें सिवाय नसीहत करने के किसी तरह की तकलीफ कदापि न दूंगा, मगर साथ ही इसके यह बात भी जरूरी है कि जब तक सीधी राह पर न आओगे और अपने पापों का प्रायश्चित न कर लोगे तब तक मैं किसी काम में तुम्हारी मदद न करूंगा इसे खूब समझे रहना।

भूत०। (कुछ सोच कर) बस, जब कि आपकी तरफ से कोरा जवाब ही मिल गया तब अब मुझे कुछ पूछने की जरूरत भी न रही।

इन्द्र०। (मुस्कुराते हुए) तथापि मैं सुन तो लूं कि तुम क्या कहने को थे और क्या चाहते थे ?

भूत०। आपसे तो मैं वादा ही कर चुका हूं कि भविष्य में अब किसी तरह का अपराध न करूंगा और आपने भी मुझे विश्वास दिला दिया है कि अपनी तरफ से किसी तरह की तकलीफ न पहुंचने देंगे परन्तु मैं अपने चन्द बेईमान शागिर्दों की तरफ से बहुत लाचार हो रहा हूं जो कि मुझसे बागी हो गये हैं और मेरी जान के पीछे लगे हुए हैं, ताज्जुब नहीं कि मैं उनके हाथ से मारा जाऊं, अस्तु उसी विषय में आपसे मदद चाहता था।

इस मामले को इन्द्रदेव तो जानते ही थे और उन्हीं का मदद से भूतनाथ के शागिर्दों की जान बची थी तथापि अनजान बन कर आश्चर्य का नाट्य करते हुए इन्द्रदेव ने भूतनाथ से पूछा—"क्यों क्यों ऐसा क्यों हुआ ? तुम्हारे शागिर्द तो तुम्हारे बड़े भक्त थे ?"

भूत०। हां था तो ऐसा ही मगर मुझसे उन लोगों के विषय में एक ऐसी भूल हो गई जिसके लिए मैं बहुत ही पछता रहा हूं।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपने शागिर्दों का हाल और उनके विषय में जो कुछ बेमुरौवती हो गई थी सब सच सच और साफ बयान कर दिया जिसे सुन कर इन्द्रदेव ने कहा, "मैं बहुत खुश हुआ कि तुमने यह किस्सा साफ साफ बयान कर दिया। बेशक वे लोग तुम्हें तकलीफ देंगे। यद्यपि मैं कह चुका हूं कि तुम्हें किसी तरह की मदद न दूंगा तथापि तुम्हारी मुरौवत से इतना वादा करता हूं कि तुम्हारी जान की रक्षा करूंगा और उन लोगों के हाथ से तुम्हारी जान पर नौबत न आने दूंगा, इससे तुम निश्चिन्त रहो, मगर तुम्हें यह किसी तरह भी न मालूम होने

पावेगा कि मैंने कब और किस तरह पर तुम्हारी मदद की।"

भूत०। आप समर्थ हैं, जो चाहे कर सकते हैं। अब मैं आपका भरोसा पा कर कुछ निश्चिन्त हो गया, अच्छा जाता हूँ, जय माया की।

इतना कह कर भूतनाथ वहां से बिदा हुआ। जाती समय इन्द्रदेव ने कहा, "कभी कभी तुम मुझसे मिलते रहना जरूर।"

हमारे प्रेमी पाठक समझते होंगे कि चलो अब किस्सा खतम हो गया और बखेड़ा निपट गया। जमना और सरस्वती को दयाराम मिल ही गये, प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का संयोग हो ही गया, साथ ही इसके भूतनाथ ने भी यह प्रण कर लिया कि अब भविष्य में कोई बुरा काम न करेगा इत्यादि, परन्तु नहीं जमना सरस्वती दयाराम इन्दुमति और प्रभाकरसिंह वगैरह के लिए अभी सुख का जमाना नहीं आया। उनका अदृष्ट अभी तक उनके सर पर नाच रहा है। जमानिया में गोपालसिंह जिस घटना के शिकार हुए थे और भूतनाथ को उस घटना से जैसा कुछ सरोकार था उसी तरह इन लोगों को भी उस घटना से घनिष्ट सम्बन्ध था, इसलिए गोपालसिंह के साथ ही साथ इन सभों को वड़ी वड़ी तकलीफें उठानी पडीं जैसा कि आगे चल कर आपको मालूम होगा।*

---

* अपनी जीवनी लिखते लिखते भूतनाथ यहां पर नोट लिखता है—मैं पहिले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हूँ कि मेरी यह जीवनी मेरे दोस्तों के भरोसे पर लिखी जा रही है, अर्थात् राजा गोपालसिंह को ग्रहदशा से छुटकारा मिलने पर और राजा बीरेन्द्रसिंह को तरफ से मुझे माफी मिल जाने पर मुझे यह मौका मिला कि अपने इन्द्रदेव ऐसे मित्रों और मेहरबानों से जो कुछ भेद मुझे मालुम न थे उन्हें पूछ पूछ कर अपने किस्से का सिलसिला दुरुस्त करूं। मगर इसी तरह जो कुछ हाल दारोगा अथवा उसके साथियों से सम्बन्ध रखता था उसका असल भेद मुझे मालूम न हुआ, जैसे भैयाराजा का परिणाम—उसे मैं किसी तरह भी पता लगा कर लिख न सका जिसके लिए मैं महाराज और महाराजकुमारों से क्षमा मांगता हूं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन दिनों मुझसे बड़े बड़े अपराध हो रहे थे और इन्द्रदेव उन सभों को क्षमा करते जाते थे परन्तु दारोगा के अपराधों को क्षमा कर देना जमानिया राज्य अथवा राजकुल के लिए जहर हो गया। चाहे इन्द्रदेव दारोगा को किसी तरह को सजा न देते पर उसकी दुष्टता से राजा गिरधरसिंह को और उनको नहीं तो कम से कम गोपालसिंह को भी होशियार कर देते

बारहवां बयान

भूतनाथ इन्द्रदेव से विदा हो सीधे जमानिया की तरफ रवाना हुआ। इस समय वह अपनी असली सूरत में था और सफर भी उसका पैदल ही था। कोस दो कोस से ज्यादे न गया होगा कि सामने से एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई दिया। चेहरे पर नकाब पड़े रहने के सबब से यद्यपि भूतनाथ उसे पहिचान न सका परन्तु उस नकाबपोश ने भूतनाथ के पास आकर उसे रोका और कहा, "कहो गदाधरसिंह, इस समय कहां जा रहे हो?" इतना कहने के साथ ही साथ उसने जरा सा नकाब हटा कर अपनी सूरत भी दिखा दी जिससे भूतनाथ पहिचान गया कि यह भैयाराजा हैं, फिर भी भूतनाथ को विश्वास न हुआ और वह सलाम करके बोला—"केवल चेहरा देख कर विश्वास कर लेने की हिम्मत नहीं पड़ती अस्तु कोई भेद की बात कह के अपना परिचय दीजिये और आइन्दे के लिए भी कोई परिचय नियत कर लीजिये।"

भैया०। हां हां, इस बात को मैं भी पसन्द करता और केवल उस दिन की बात याद दिला कर तुम्हें अपना परिचय देता हूं जिस दिन मैंने तुमको तिलिस्मी बाग में बेहोशी की दवा पिलाई थी और तुमने भविष्य में नेक राह पर चलने के लिए कसम खाई थी। दूसरों को तुम्हारे कसम खाने पर चाहे विश्वास न हो परन्तु मैं तुम्हारी उस दिन की प्रतिज्ञा पर विश्वास करता हूं।

तो उन पर ऐसी गहरी मुसीबत का पहाड़ आ कर न टूट पड़ता। यह सही है कि लक्ष्मीदेवी वाले मामले की इन्हें ठीक ठीक खबर नहीं हुई और यदि कुछ खबर हुई भी तो उस समय जब कि राजा गोपालसिंहजी का देहान्त हो जाना सर्वसाधारण में प्रसिद्ध हो चुका था और इसीलिए उस समय इन्द्रदेव ने मामले को उठाना कदाचित व्यर्थ ही समझा होगा। इसके अतिरिक्त वे अपनी लड़की और स्त्री के गम में बिल्कुल ही उदासीन हो गये थे अस्तु जमाने की अवस्था पर ध्यान देना क्योंकर अच्छा मालूम होता होगा? मतलब यह कि दारोगा के हाल से राजा गोपालसिंह को सच्ची आगाही न होना ही अनर्थ का मूल हो गया। भैयाराजा का मामला भी राजा गोपालसिंह को ठीक ठीक मालूम न हुआ नहीं तो वे कुछ चैतन्य जरूर हो जाते। सच है, आग बुझाना और चिनगारी छोड़ देना, सांप मारना और उसके बच्चे की हिफाजत करना, बुद्धिमानों का काम नहीं है। इन्द्रदेवजी ने दारोगा की ताकत तोड़ दिया सही मगर उसे छोड़ दिया। मगर सम्भव है कि मेरी नालायकी से भी उन्होंने धोखा खाया हो।"

भूत०। (झुक कर अदब से सलाम करने के बाद) अब मुझे विश्वास हो गया। बेशक आप मुझे जब चाहें आजमा कर देख लीजिये, मुझे अपनी प्रतिज्ञा पर सदैव दृढ पाएंगे।

भैया०। अच्छा यह बताओ कि इस समय तुम कहां से आ रहे हो और कहां जाते हो ?

भूत०। मैं इस समय इन्द्रदेवजी के यहां से आ रहा हूं और दारोगा से मिलने के लिए जमानिया जाने का इरादा है।

भैया०। मैं एक जरूरी काम के लिए तुम्हें कई दिनों से खोज रहा था, इत्तिफाक ही से तुम इस समय मुझे मिल गये।

भूत०। आज्ञा कीजिए, मैं दिलोजान से आपका काम करने के लिये तैयार हूं। इस शरीर से अगर आपका कुछ काम निकले तो मैं अपने को बड़ा भाग्यवान समझूंगा।

भैया०। अच्छा यहां तो बातें करने का मौका नहीं है, चलो किसी जंगल मैदान में चल कर निश्चिन्ती से बैठें और बातें करें।

भूत०। जो आज्ञा।

घोड़े पर सवार भैयाराजा और रिकाब थामे हुए भूतनाथ दोनों आदमी वहां से रवाना हुए और डेढ़ घण्टे के अन्दर एक घने जंगल में पहुंच कर एक सुन्दर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए और बातें करने लगे।

भैया०। आज क्या था कि तुम इन्द्रदेव के पास गये थे ?

भूत०। इस बात का पता लगा है कि दयारामजी अभी तक जीते हैं और जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है, अस्तु उस विषय में इन्द्रदेवजी से मदद मांगने के लिए मैं गया था।

भैया०। तो फिर क्या हुआ ?

भूत०। उन्होंने मदद करने से सूखा जवाब दे दिया और कहा कि 'मुझे दयाराम के जीते रहने का विश्वास नहीं होता'।

भैया०। अफसोस, न मालूम क्या समझ कर इन्द्रदेव ने ऐसा किया ? अच्छा तो अब तुम क्या करोगे ?

भूत०। इन्द्रदेव को चाहे विश्वास न हो परन्तु मुझे दयाराम के जीते रहने का विश्वास है अतएव जहां तक बन पड़ेगा मैं इस काम के लिए कोशिश जरूर करूंगा, आगे मेरी किस्मत।

भैया० । वेशक कोशिश करना चाहिये, मगर जिस दारोगा को खुश करने के लिए तुम मेरी जान लेने को तैयार हो गये थे उसी दारोगा के साथ तुम क्या करोगे सो मेरी समझ में नहीं आता, क्या उससे दोस्ती का नाता तोड़ दोगे ?

भूत० । दारोगा को खुश करने के लिए मैंने आपके साथ दुश्मनी नहीं की थी बल्कि अपना काम पूरा करने के लिए ऐसा किया था क्योंकि उस समय दारोगा मेरा काम कर रहा था और आपने मेरे काम में बाधा डाली था। अब तो मैं अपना ढंग बदलने के लिए आपसे प्रतिज्ञा ही कर चुका हूं इसलिए आपसे झूठ बोलना या किसी बात का छिपाना भी उचित नहीं अस्तु जो बात है वह साफ साफ कह देता हूं । मेरी और दारोगा की दोस्तो भला कब निबह सकती है ? हां मतलब साधने के लिए मैं दारोगा से कभी मिल जाऊं तो कोई आश्चर्य नहीं है । हां यह कहिये कि आप मुझे क्यों खोज रहे थे और अब अपने लिए क्या कार्रवाई सोची है । जिस तरह आप दो दफे महल में जाकर अपनी स्त्री से मिले हैं वह ढंग भी अच्छा नहीं है, इसमें आपकी स्त्री बदनाम हो जायगी और दारोगा को उनके साथ बुराई करने का मौका मिल जायगा क्योंकि आपके भाई साहब उस दुष्ट के वश मे हो रह हैं, इसके सिवाय मैं इस बात की इत्तिला भी आपको इसी समय देता हूं कि आपकी स्त्रो और कुंअर गोपालसिंह की मां दोनो ही को मार डालने के लिए दारोगा प्रयत्न कर रहा है, अगर आप इसी तरह पर और कुछ दिन बिता देंगे तो अपनी स्त्र को जिन्दा न पाएंगे ।

भैया० । (आश्चर्य और घबराहट से) क्या ऐसी बात है ?

भूत० । वेशक ऐसा ही है, मैं आपसे झूठ न बोलूंगा ।

भैया० । अगर तुम्हारा कहना ठीक है तो मुझे अपना ढंग जरूर बदल देना पड़ेगा । अच्छा अब तुमसे यह कह लूं कि तुम्हें क्यों खोज रहा था तब इस मामले में मैं आगे तुमसे राय लूं ।

भूत० । जो आज्ञा ।

भैया० । तुम क्या उन शागिर्दों का हाल साफ साफ मुझसे बयान कर सकते हो जो तुमसे बागी हो गये हैं ?

"जी हां मैं आपसे सच सच बयान कर देता हूं ।" इतना कह कर भूतनाथ ने उन शागिर्दों का सब ठीक ठीक हाल भैयाराजा से बयान कर दिया जिस सुनने के बाद भैयाराजा ने कहा, "उन शागिर्दों में से कई मुझे तुम्हारा दुश्मन समझ कर मुझसे मिले थे और मदद मांगते थे । मैंने उनसे मदद का वादा किया परन्तु

यह खयाल करके कि अब तुम अपने लिए अच्छा रास्ता अख्तियार कर रहे हो और तुमको बाहरी खतरों से बचाना चाहिये मैं तुम्हें उनकी बाबत इत्तिला दिया चाहता हूं।"

भूत०। (खुश होकर) आखिरी मर्तबे वे लोग कब आपसे मिले थे?

भैया०। कल शाम को मेरी उनसे मुलाकात हुई थी।

भूत०। क्या आपको उन लोगों का ठिकाना भी मालूम हुआ है कि वे लोग कहां रहते हैं?

भैया०। हां मालूम हुआ है, एक दफे मैं उनके डेरे पर भी गया था।

इसके बाद घण्टे भर तक भूतनाथ और भैयाराजा में बातचीत होती रही जिसके लिखने की यहां कोई जरूरत नहीं जान पड़ती, पर अभी उन लोगों की बातें समाप्त नहीं होने पाई थीं कि सामने से आठ आदमी नकाबपोश हर्बे लगाये घोड़ों पर सवार इनकी तरफ आते हुए दिखाई पड़े। ये दोनों सम्हल कर खड़े हो गये और उन सवारों की तरफ देखने लगे। नजदीक पहुचने पर उन लोगों ने तलवारें म्यान से निकाल लीं जिससे इन दोनों को विश्वास हो गया कि ये सवार हमारे दुश्मन हैं, अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा भी तलवार म्यान से निकाल कर मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये।

पास पहुंचते ही एक सवार न भूतनाथ पर तलवार का वार किया। भूतनाथ पैतरा बदल कर वार खाली दे गया और तब बगल में होकर अपनी तलवार से उस सवार को घायल किया। भूतनाथ की तलवार उसके दाहिने मोढ़े पर बैठी जिससे उसका दाहिना हाथ बेकार हो गया और तलवार उसके हाथ से छटक कर जमीन पर गिर पड़ी, साथ ही एक दूसरे सवार ने भूतनाथ पर वार किया जिसे भूतनाथ ने अपनी तलवार पर रोका और उसी तलवार से उस सवार पर हमला किया। वह सवार भी उस वार को बचा गया मगर इस वार से उसका घोड़ा बेकार हो गया। उस समय बाकी के सवारों ने भी भूतनाथ पर हमला कर दिया और चारो तरफ से भूतनाथ को घेर लिया। भैयाराजा अभी तक खड़े थे मगर जब उन्होंने भूतनाथ को घिरा हुआ देखा तो तलवार उठा कर उन सवारों पर टूट पड़े। भूतनाथ यद्यपि कई दुश्मनों से घिर गया था परन्तु उसकी फुर्ती दिलावरी और होशियारी ने किसी को उस पर हावी न होने दिया अर्थात् सभों के वार बचाता हुआ बड़ी बहादुरी के साथ जवाब देता रहा और जब भैयाराजा भी उसकी मदद पर तैयार हो गये तब तो थोड़ी ही देर में उन सवारों की हिम्मत जाती रही

क्योंकि भैयाराजा को भी उन सवारों ने वैसा ही बहादुर पाया जैसा भूतनाथ को।

थोड़ी देर की लड़ाई मे दो सवार जान से मारे गये और चार जख्मी होकर जमीन पर सिसकने लगे, बाकी के दो सवारों ने पीठ दिखा कर मैदान का रास्ता लिया। यद्यपि भूतनाथ का इरादा हुआ कि जख्मी दुश्मनों के चेहरे पर से नकाब हटा कर उनकी सूरत देखे और पहिचाने कि वे कौन हैं मगर इस काम को उसने पीछे के लिए छोड़ दिया और उन्हीं जख्मी दुश्मनों के घाड़ों में से एक पर कूद के सवार हो भैयाराजा को यह कहता हुआ कि—'आप इसी जगह ठहरिये और उनके चेहरे पर से नकाब हटा कर देखिये कि ये लोग कौन हैं'—उन भागते हुए सवारों के पीछे घोड़ा दौड़ाया। भैयाराजा को यह बात पसन्द न आई इसलिए उन्होंने भूतनाथ को आवाज देकर रोकना चाहा मगर भूतनाथ ने कुछ भी न सुना और बड़ी तेजी के साथ उन भागने वालों का पीछा किया। इस समय दिन अनुमान पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था।

भैयाराजा ने जब देखा कि भूतनाथ ने उनकी कुछ भी न सुनी और भागने वाले दुश्मनों के पीछे चला ही गया तब वे भी अपने घोडे प सवार होकर भूतनाथ के पीछे रवाना हुए और थोड़ी ही कोशिश में भूतनाथ के पास जा पहुंचे क्योंकि भैया-राजा का घोड़ा बहुत ही तेज और ताकतवर था।

घण्टे भर तक ये लोग बराबर भागने वालों का पीछा करते चले गये मगर उन दोनों को छू न सके हां पास जरूर पहुंच गये, यहां तक कि भागने वालों के और इनके बीच में चालीस या पचास हाथ का फासला रह गया होगा। चारों के घोड़े पसीने से तरबतर और परेशान हो गये और उनके चाल का तेजी जाती रही।

कुछ देर बाद वे लोग पहाड़ी की तराई में जा पहुंचे। यहां पर ऊंचे ऊंचे पहाड़ों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर यह मालूम होने लगा मानो ये लोग चारो तरफ से पहाड़ों के बीच में घिर गये हैं। पत्थरों के रोड़ों और ढोकों के कारण घोड़ों की चाल बहुत धीमी पड़ गई थी तथापि भूतनाथ और भैयाराजा बराबर पीछा करते ही चले गये। दिन यद्यपि घण्टे भर से ज्यादे बाकी था परन्तु ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के बीच में पड़ जाने के कारण इन लोगों को यही मालूम होता था कि अब संध्या हो गई।

पहाड़ों के बीच में चलते हुए दोनों भागने वाले कई दफे घूम घुमौवे रास्तों से चक्कर खाकर एक बहुत बड़े दर्रे के मुहाने पर जा पहुंचे और वहां भी न रुक कर बराबर दर्रे के अन्दर जाने लगे। जैसे जैसे आगे जाते थे ऊपर से दोनों तरफ के

पहाड़ आपुस में मिलते जाते थे यहां तक कि उस पहाड़ी दर्रे ने वहुत ऊंचे खोह या गुफा की सूरत पकड़ ली और तब ये लोग मानों एक साधारण अंधकार में जाने लगे, और भी कुछ दूर जाने बाद भूतनाथ और भैयाराजा पूर्ण अंधकार में जा फंसे। उस समय दोनों ना अपने घोड़ों को रोका और भूतनाथ ने भैयाराजा से कहा—"अब तो हम लोग बहुत अंधकार और भयानक जगह में आ पहुंचे हैं, यदि सामने से दस पांच दुश्मन आकर हम पर हमला कर दें तो हम लोगों का देखना और उनके हमले का जवाब देना भी कठिन हो जायगा ?"

भैया०। वेशक हम लोग वहुत ही वेढब जगह पर आ पहुंचे। मैंने तो तुम्हें इनका पीछा करने से मना किया था मगर तुमने न जाने क्या समझ कर मेरी बात न मानी।

भूत०। मुझे विश्वास हो गया कि ये लोग जरूर मेरे बागी शागिर्दों में से ही हैं और पीछा करने से आज ही मुझे इन लोगों का पता मालूम हो जायगा।

भैया०। तुम्हारे बागी शागिर्दों का पता तो मैं खुद ही तुम्हें दिया चाहता था।

भूत०। मैंने खयाल किया कि उस तरह पता लगाने में बहुत दिन लग जायेंगे और ताज्जुब नहीं कि उन लोगों ने अपना सच्चा ठिकाना न दिखा कर आपको धोखे में डाला हो।

भैया०। मगर अब तो तुम उनका पीछा भी नहीं कर सकते और अगर पीछा करो तो भी उनका हाथ लगना असम्भव है।

भूत०। वेशक असम्भव है और रात हो जाने के कारण पीछे हट कर अपने ठिकाने पहुंचना और भी कठिन है। अच्छा मैं रोशनी करके एक दफे पुनः आगे बढ़ने की कोशिश करता हूं।

भैया०। और अगर आगे चल कर अधिक दुश्मनों से मुकावला हो गया तब क्या होगा ?

भूत०। अब जो कुछ प्रारब्ध में लिखा हुआ होगा सो होगा। अफसोस इस समय मेरे पास वह अनूठी तलवार न हुई जो मैंने प्रभाकरसिंह की कमर से पाई थी, कम्बख्त दुश्मन ने मुझे बेहोश करके वह तलवार ले ली।

भैया०। यह तो दस्तूर की बात है कि जब आदमी लाचार होता है तो उसे प्रारब्ध या दैव याद पड़ता है। मुझे उस तलवार का हाल अच्छी तरह मालुम है जो तुमने प्रभाकरसिंह से पाई थी। खैर उसके लिए तुम चिन्ता मत करो, मेरी कमर में भी इस समय वैसी ही एक तलवार है।

भूत०। (आश्चर्य से और खुश होकर) जो गुण उस तलवार में था वही आपकी तलवार में भी है ? तब तो मेरी हिम्मत किसी तरह टूट नहीं सकती।

भैया०। बेशक इसमें भी वही गुण हैं, समझ लो कि यह उसी के जोड़ की तलवार है, मगर इससे यह न समझना कि यह तुम्हारी ही तलवार है या हमीं ने वह तुमसे छीन ली थी।

भूत०। नहीं नहीं भला ऐसा मैं क्यों समझूंगा, आप तो नाहक मुझे शर्मिन्दा करते हैं। अच्छा तो अब वह तलवार आप अपने हाथ में ले लीजिए और मैं अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाल कर आगे बढ़ने की कोशिश करता हूं।

भैया०। अच्छा मैं तलवार निकाल लेता हूं, तुम रोशनी करो।

भूतनाथ ने अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और फिर दोनों आगे की तरफ बढ़े। उस खोह की लम्बाई चौड़ाई इतनी बड़ी थी कि ये दोनों खुले तौर पर घोड़ों पर सवार बखूबी आगे बढ़ते चले गए।

आधे घण्टे तक बराबर चले जाने के बाद ये दोनों आदमी खोह खतम करके मैदान में जा निकले और तब मालूम हुआ कि अभी सूर्य भगवान के अस्त होने में कुछ देर है। ये लोग अब एक बहुत बड़े मैदान में जिसमें बहुत से जंगली दरख्त भी लगे हुए थे आ पहुंचे जिसके चारों तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ और बीच में चौथाई कोस का वह मैदान था।

जिस तरह जंगली कोल और भिल्ल अपने रहने के लिए जंगली पेड़ों को काट कर कुटिया बनाते हैं उसी तरह की कई झोपड़ियां मैदान में बनी हुई थीं और इधर उधर पेड़ों के साथ बंधे सात आठ घोड़े भी दिखाई दे रहे थे, मगर यहां किसी आदमी की सूरत इन दोनों को दिखाई न दी।

भूतनाथ और भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। हमलोगों का यहां आना तो बिल्कुल ही बेकार मालूम पड़ता है। अब रात भी हुआ ही चाहती है और ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि किसी मुश्किल का सामना आ पड़े।

ये दोनों खड़े खड़े उन कुटियों की तरफ देखते हुए तरह तरह की बातें सोच ही रहे थे कि यकायक आठ दस आदमी झोपड़ियों के अन्दर से निकल कर इन दोनों की तरफ बढ़ते हुए दिखाई पड़े। भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "गदाधरसिंह, तुमने बहुत ही नादानी का काम किया जो इन लोगों का पीछा किया। सिर्फ हम दो आदमियों को अब न मालूम कितने दुश्मनों का सामना करना पड़े और

क्या हो। देखो ये लोग लड़ने के लिए मुस्तैद होकर हमारी तरफ आ रहे हैं।"

तेरहवां बयान

अब हम थोड़ा हाल जमानिया का लिखना चाहते हैं क्योंकि वहां भैयाराजा की स्त्री बेचारी बड़े ही धर्म-संकट में पड़ी हुई है। यद्यपि उसे लोग सदैव ही साध्वी सती और सुशील समझते रहे हैं परन्तु जब से भैयाराजा ने गायब होकर अपना ढंग बदला है और छिप छिप कर कई दफे अपनी स्त्री के पास आये हैं तब से उसकी प्रतिष्ठा हीन हो रही है। सभों की निगाह में वह खटकने लग गई है और घर के सभी कोई उस पर व्यभिचार का दोष दबी जबान से लगाने लग गए हैं। प्रायः सभों ही का यह खयाल हो रहा है कि इसके पास महल में छिप कर आने वाला कोई इसका धर्म विरुद्ध दोस्त है। वह बेचारी पति की आज्ञानुसार उस भेद को छिपा तो रही है परन्तु अपने ऊपर कलंक लगते देख उसका चित्त बड़ा ही दुःखी हो रहा है। जिन बड़े लोगों की निगाह में वह हमेशा ही सीता और सावित्री सी बनी रहती थी आज वे ही लोग उस पर बदनामी का धब्बा लगाने लग गये हैं। यह सब उससे सहन नहीं होता परन्तु क्या करे मजबूर है, उसके पति का आज्ञा ही नहीं है कि वह इस भेद को खोल दे और अपनी चादर पर से कलंक का धब्बा मिटावे। कम्बख्त दारोगा को भी उसे सताने का यह अच्छा मौका मिल गया है। वह बराबर महाराज का समझा बुझा कर उसका तरफ से उनका दिल फरता रहता और उस बेचारी को बदकार साबित करता जाता है। अभी तक वह बचारी सब कुछ सहती रही और पति की आज्ञा के विरुद्ध उसने कोई काम नही किया परन्तु अब उससे रहा नहीं जाता और सहते नहीं बन पड़ता। इधर बहुत दिनों से उसके पास भैयाराजा भी आये नहीं जो वह अपने दिल का हाल उनसे कहती या यही समझाती कि तुम्हारी यह चाल ठीक नहीं पड़ती और इससे लोगों की निगाह में तुम बेइज्जत हुआ चाहते हो। उसके पास एक दो बहुत नेक बुद्धिमान और नमकहलाल लौंडियें हैं जिनको जुबानी उसे सब तरफ का हाल मिला करता है और वह जान रही है कि मेरी बेइज्जती दिनों दिन बढ़ती चली जाती है, ताज्जुब नहीं कि किसी दिन महाराज मुझे खुल्लमखुल्ला दोषी कह कर मार डालने को आज्ञा दे दें। साथ ही इसके अब उसे अपने पति की भी विशेष चिन्ता पड़ गई है क्योंकि बहुत दिनों से वे उसके पास नहीं आये हैं और न उनकी कुछ खबर ही मिली है। क्या करे, कहा जाय, किससे अपने दिल का हाल कहे, और किस तरह

अपने माथे से कलंक का टीका मिटाए, वह प्रायः इसी तरह की चिन्ता में डूबी रहती है। इस समय भी हम उसे ऐसी ही अवस्था में देख रहे हैं। दोपहर का समय है, घर के सरदार लोग औरत मर्द सभी कोई खा पीकर अपने अपने कमरे में आराम कर रहे हैं परन्तु वह वेचारी अपनी मलीन चारपाई पर बैठी हुई तलहत्थी पर गाल रक्खे इन्हीं सब चिन्ताओं में निमग्न है, तनोबदन की कुछ भी खबर नही है, कुछ भी नहीं मालूम कि मेरे पास कौन खड़ा है और क्या कह रहा है, परन्तु उसकी यह लौंडी कुछ देर से उसके पास खड़ी है और कुछ कहने की इच्छा से उसे दो तीन बार सम्बोधन कर चुकी है। कुछ देर बाद उसने आप ही आप एक लम्बी सांस लेकर सर उठाया और दर्वाजे की तरफ देखने की इच्छा की। उस समय उसकी निगाह लौंडी पर पड़ी और उसने ताज्जुब के साथ उससे पूछा, "बेला, तू कब से यहां खड़ी है ?"

बेला०। मैं तो बड़ी देर से यहां खड़ी हूं। बल्कि तीन दफे आपको बुला भी चुकी हूं।

भैयाराजा की स्त्री०। हैं, तीन दफे मुझे बुला चुकी है !!

बेला०। जी हां !

भैयाराजा की स्त्री०। क्या कुछ नई खबर लाई है ?

बेला०। जी हां मैं आपके लिए कुछ खुशखबरी लाई हूं ?

इतना कह कर बेला ने उसके हाथ में एक चीठी दे दी। यह चीठी भैयाराजा के हाथ की लिखी हुई थी जिनकी लिखावट को उनकी स्त्री अच्छी तरह पहिचानती थी। चीठी देखते ही उसका कलेजा धड़कने लगा और उसने बड़ी उत्कंठा से उस चीठी को पढ़ना आरम्भ किया। यह लिखा हुआ था :—

"प्राणवल्लभे,

मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि इधर बहुत दिन बीत जाने पर भी तुमसे मिल न सका, तथापि आशा है कि तीन चार दिन में मैं किसी न किसी तरह तुमसे मुलाकात करूंगा। दारोगा ने मेरे साथ जैसा बर्ताव किया है उसे मैं कदापि भूल नहीं सकता। ईश्वर ही ने मेरी जान बचाई। मेरा इस तरह गायब होना मेरे दोस्तों को बुरा मालूम होता है। वे कहते हैं कि तुम्हारा यह ढंग बिल्कुल ही अनुचित है, और तुम्हारी भी यही राय है, परन्तु मैं देखना चाहता हूं कि मेरे भाई साहब मेरे लिए क्या करते हैं और उनके दिल में मेरी कितनी मुहब्बत है ? पर अभी तक तो मैंने कुछ भी नहीं देखा और तबीयत को कुछ भी चैन नहीं मिला,

अब भविष्य में देखा जाय कि क्या होता है। इधर मैं कई तरह की विचित्र घटनाओं का शिकार हो रहा हूं, तथापि कुशलपूर्वक हूँ, तुम किसी तरह की चिन्ता न करना और कोई ऐसा वन्दोबस्त करना जिससे महाराज का और हम सभों का डेरा खास बाग में पड़ जाय। वहां ही मुलाकात कर सकूंगा।

तुम्हारा—शंकर।"

इस चीठी को पढ़ कर भैयाराजा की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई। उसके चित्त से एक वोझ सा उतर गया और यह सोचने लगी कि अब मैं हर तरह से अपनी वदनामी को बचा सकूंगी, अव मुझे कलंकित करने वाला कोई भी न रहेगा। अगर हर तरह से मजबूर हो जाऊंगी तो दुश्मनों का वार बचाने के लिए इसी चीठी को ढाल बनाऊंगी। अन्त में उसने बेला से पूछा कि यह चीठी तुम्हें किसने दी? जिसके जवाब में बेला ने कहा कि जिस आदमी ने यह चीठी तुम्हारे पास पहुंचाने के लिए मुझे दी उसे मैं नहीं पहिचानती। जब मैं तुम्हारे पूजा के लिए चन्दन खरीदने बाजार गई थी तब वह आदमी मिला था। इस चीठी को हिफाजत से तुम्हारे पास पहुंचाने की ताकीद करके वह न मालूम कहां चला गया।

भैयाराजा की स्त्री की लौंडियों में यह बेला लौंडी बहुत ही विश्वासपात्र थी साथ ही इसके यह बुद्धिमान और चालाक भी ऐसी थी कि राजा के महल में कोई लौंडी न थी जो किसी बात में इसका मुकाबला कर सकती। इसके अतिरिक्त इसमें बहुत अनूठा गुण यह था कि यह छोटे बड़े सभों ही को खुश रखती और जरूरत पड़ने पर सभों ही का थोड़ा बहुत काम कर दिया करती। यही कारण था कि बेला का काम भी बहुत जल्द निकल जाया करता और समय पड़ने पर सभी कोई इसकी मदद के लिए तैयार हो जाते।

बेला यद्यपि मजदूरनी था मगर उसका दिल अमीराना था। खाना पीना पहिरना सभी बातों में उसकी सफाई बढ़ी चढ़ी थी और यद्यपि उसे रुपये पैसे की आमदनी बहुत ज्यादे थी मगर वह बटोरना या जमा करना नहीं जानती थी। जो कुछ उसके हाथ में आता सभी खर्च कर देती और इस सबब से वहां के सभी आदमी कुछ न कुछ उसके अहसान से दबे रहते थे। यह सब कुछ था मगर वह अपने मालिक मालकिन की बहुत ही खैरख्वाह थी और उनके साथ मुहब्बत रखती थी तथा वे दोनों भी उसे दिलोजान से चाहते थे। भैयाराजा के छिप कर इस महल में आने जाने का हाल बेला अच्छी तरह जानती थी परन्तु इस भेद को वह भी उसी तरह छिपाये हुए थी जैसा कि उसकी मालकिन अर्थात् भैयाराजा की स्त्री।

जब कि भैयाराजा का भेद बेला को मालूम था तब समझ रखिए कि दारोगा की शैतानी का हाल या जो कुछ दारोगा ने भैयाराजा के साथ सलूक किया था वह भी बेला जरूर जानती थी। बेला की उम्र यद्यपि चालीस वर्ष के ऊपर होगी परन्तु वह काम काज और दौड़ धूप में बड़ी मेहनती थी। आलस्य तो उसके हिस्से में था ही नहीं। बेला ने पुनः भैयाराजा की स्त्री से कहा, "रानी, मैं और लोगों की तरह तुम्हें केवल दिलासा देना और समझाना बुझाना पसन्द नहीं करती बल्कि होशियार कर देने के लिए और तुम्हें हमेशा चौकन्ना रहने के लिए बारंबार ताकीद करते रहना ही पसन्द करती हूं। यद्यपि भैयाराजाजी की इस चीठी का आ जाना तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा सगुन है और यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा मसाला हो सकती है परन्तु फिर भी मैं कहती हूं कि आज कल का जमाना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है! भैयाराजाजी न मालूम क्या समझ कर अभी तक छिपे हुए हैं और यहां आकर खुले मैदान कार्रवाई करना पसन्द नहीं करते, पर जहां तक मैं देखती और समझती हूं उनके ऐसा करने से कम्बख्त दारोगा का जोर बढ़ता जाता है। ताज्जुब नहीं कि एक दिन भैयाराजाजी का सामना हो जाने पर वह उन्हीं को झूठा बनावे। मैंने यह भी सुना है कि वह आजकल तुम्हें मरवा डालने की धुन में लगा हुआ है और बदनाम करने की कार्रवाई तो रोज ही किया करता है।

भैया० स्त्री०। बेला, तेरा कहना बहुत ठीक है। उनकी कार्रवाई से मैं अच्छी तरह बदनाम हो गई हूं, दारोगा तो हम लोगों का दुश्मन हुई है उसका कहना ही क्या। परन्तु अब मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूं क्योंकि इस चीठी के आ जाने से मैं अपनी बेकसूरी साबित कर सकती हूं यद्यपि उन्होंने चीठी में भी ऐसा करने की इजाजत नहीं दी है।

बेला०। आखिर इसमें उन्होंने लिखा क्या है?

भै० स्त्री०। (चीठी बेला के हाथ में देकर) ले इसे तू खुद पढ़ ले।

बेला०। (चीठी पढ़ के) चाहे जो हो मगर मैं इनके इस विचार की पक्षपाती नहीं हूं। लो इसे रक्खो, बेशक इस चीठी से तुम्हें बहुत सहायता मिलेगी। अब तो मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूं। आजकल मैं रानी साहेबा जरूर तुमसे इस विषय में बातचीत करेंगी, मुझे ऐसा अन्दाजा मिल चुका है।

भैया० स्त्री०। खैर अगर वे इस विषय में मुझसे बातचीत करेंगी तो मैं जो कुछ कहना है साफ साफ कह दूंगी। अच्छा यह तो बता कि इस चीठी का जवाब लिख कर मैं उनके पास भेज सकती हूं?

बेला० । मैं भी यही चाहती थी कि उन्हें एक चीठी लिख कर यहां के हाल चाल की खबर दी जाय मगर लाचार हूं कि इस चीठी के लाने वाले ने जवाब का इन्तजार नहीं किया और न कुछ जुबानी ही कहा सुना, बस चीठी हाथ में देकर चलता बना । अब अगर जवाब जाय तो कहां और किसके हाथ जाय ? उनका कुछ पता ठिकाना भी तो मालूम नहीं है ।

भै० स्त्री० । फिर क्या किया जाय ? (बाहर की तरफ देखती हुई चौंक कर) ले देख भाभीजी (रानी साहिबा) तो स्वयं यहां आ रही हैं । आज वे बहुत जल्द सो कर उठ बैठी हैं ।

बेला० । मालूम होता है कि वे इस समय इस विषय में तुमसे बातचीत किया चाहती हैं, भरसक तो तुम तीन चार दिन के लिए और बचा लो अर्थात् भेद खोलने से रुकी रहो, क्योंकि इस चीठी में उन्होंने तीन चार दिन में तुमसे मिलने के लिए लिखा है, इसके बाद जैसा होगा देखा जायगा । अच्छा मैं बाहर जाती हूं ।

इतना कह कर बेला कमरे से बाहर निकल गई और रानी साहिबा कमरे के अन्दर दाखिल हुईं । भैयाराजा की स्त्री को रानी साहिबा बहुरानी के नाम से सम्बोधन करती थीं इस लिए अब हम भी उन्हें बहुरानी के नाम से ही पुकारेंगे ।

रानी साहिबा को देखते ही बहुरानी उठ खड़ी हुईं और प्रणाम करने के बाद उन्हें अपने पलंग पर बैठा के स्वयं नीचे बैठने लगी मगर रानी साहिबा ने उसे ऐसा करने न दिया प्यार से उसका हाथ पकड़ के अपने पास बैठा लिया और इस तरह उन दोनों में बातचीत होने लगी ।

इस जगह हम इतना कह देना जरूरी समझते हैं कि इन दिनों महल के प्रायः सभी आदमी बहुरानी पर दोषारोपण कर रहे थे परन्तु रानी साहिबा उसे बहुत चाहती और प्यार करती थीं तथा उनका दिल बहुरानी को कलंकित करने का साहस नहीं करता था ।

रानी० । बहुरानी, तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना चाहती और प्यार करती हूं, और यह भी तुमसे छिपा हुआ न होगा कि आज कल तुम्हारे विषय में लोगों का खयाल कैसा हो रहा है, क्योंकि कई दफे किसी आदमी को कमन्द के सहारे तुम्हारे कमरे में आते जाते कई लोगों ने देखा है ।

बहु० । मैं जानती हूं कि इस महल में मुझे मानने और प्यार करने वाला अगर कोई है तो सिवाय आपके दूसरा नहीं । साथ ही इसके लोगों का दिल भी जिस तरह मेरी तरफ से फिर रहा है उसे भी मैं खूब समझती हूं । यदि आपकी

कृपा मेरे ऊपर न होती तो न मालूम अब तक लोग मुझे किस दर्जे को पहुँचा चुके होते। यद्यपि इस विषय में आपने अभी तक मुझसे कुछ भी नहीं पूछा है तथापि मैं शपथपूर्वक सच सच आपसे कहती हूं कि मैं व्यभिचारिणी नहीं हूं, पापिनी नहीं हूं, और मुझ पर बदचलनी का धब्बा नहीं लग सकता। यद्यपि यह सच है कि मेरे पास एक आदमी कई दफे आ चुका है परन्तु वह आदमी ऐसा नहीं है कि मेरे पास आने लायक न हो अथवा उसके आने से मैं किसी तरह बदनाम हो सकूं। यह भेद अब बहुत दिनों तक छिपा न रहेगा, पांच चार दिन के अन्दर ही आप से आप खुल जायगा और तब आपको मालूम होगा कि मैं कहां तक सच्ची हूं।

रानी०। (आश्चर्य के साथ) क्या तुम्हारे पास आने वाला कोई ऐसा आदमी है जिसे मैं जानती हूं?

बहु०। बेशक आप जानती हैं और उसे लड़के के समान मानती तथा प्यार करती हैं। चार पांच दिन के अन्दर ही आप पर यह भेद खुल जायगा।

रानी०। ओफ, तुम्हारे इस कहने से मेरी उत्कंठा और भी बढ़ गई! चार पांच दिन तक सब्र करना मेरे लिए बड़ा ही कठिन है खास करके ऐसी अवस्था में जब कि वह भेद तुम्हें मालूम है और तुम हर तरह से मेरी दिलजमयी कर सकती हो। अगर तुम मुझ पर भरोसा रखती हो और मेरी तरह तुम भी मुझे प्यार करती हो तो मुझसे तुम्हें छिपाने की जरूरत नहीं है। इस बात का मैं तुमसे वादा करती हूं कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं यह भेद किसी पर प्रकट न करूंगी, जब तक तुम न कहोगी इसे दिल को तह में छिपाये रहूंगी। लो अब तुम यह बता दो कि यह मामला क्या है!

बहु०। (कुछ सोच कर) लाचार हूं कि आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं जिद्द नहीं कर सकती परन्तु मैं यही चाहती थी कि अपने पति की आज्ञा का पालन करूं और स्वयं इस भेद को अपने मुंह से न खोलूं।

रानी०। (बड़े आश्चर्य से) तो क्या यहां तुम्हारे पास आने वाले भैयाराजा ही हैं?

बहु०। जी हां, अब इस भेद का छिपाना मैं आप ही के सुपुर्द करती हूं, यद्यपि मैं स्वयं इसके विरुद्ध हूं और नहीं समझ सकती कि ऐसा करने में उन्होंने क्या फायदा समझ रक्खा है, अगर कुछ फायदा है तो यही कि मैं व्यर्थ बदनाम होती हूं।

रानी०। बेशक उन्होंने यह काम अच्छा नहीं किया। तुम देखती हो कि उनके गम में उनके भाई की क्या दशा हो रही है? चन्द ही दिनों में कैसे दुबले हो गए

हैं ? भला यह भी कुछ तुम्हें मालूम है कि उनके गायब होने का कारण क्या है ?

वहु० । हां मालूम है । दारोगा साहब उनका जीते रहना पसन्द नहीं करते और उन्हें मार डालने की फिक्र में लगे थे । एक दिन मौका पाकर दारोगा ने उन्हें अपने खयाल से मार कर जमीन के अन्दर अपने मकान में दफना दिया मगर उनके किसी दोस्त ने उन्हें वहां से निकाल कर उनके बदले में दूसरा आदमी वहां गाड़ दिया । ईश्वर की मर्जी थी कि उनकी जान बच गई । दारोगा को इस बात की कुछ भी खबर नहीं, क्योंकि शायद ही उसने वह लाश निकाल कर देखी हो या उसे कुछ सन्देह हुआ हो । यही सबब है कि वे भूत बन कर एक दफे भाईजी (राजा साहब) को दिखाई दिये थे और राजा साहब को उन्होंने जमीन पर लिख कर बता भी दिया था कि 'मुझे दारोगा ने मार डाला है' ।

रानी० । (आश्चर्य और क्रोध से) जो कुछ तुम कहती हो बेशक सच होगा, मैं उस कम्बख्त दारोगा की बदमाशी को खूब जानती हूं । मगर बड़े ही दुःख की बात है कि राजा साहब को उसने वश में कर रक्खा है और वे उसे पूरा योगी और महात्मा ही समझे बैठे हैं । सबूत देने पर भी वे दारोगा को बुरा न समझेंगे और बिना सबूत के तो दारोगा के विषय में किसी को जुबान हिलाने की ताकत ही कहां है । लेकिन अब जो यह सब हाल अगर राजा साहब से कह दूं तो वे मुझे और तुझे कदापि सच्चा न समझेंगे इसलिये इस भेद को अभी छिपाये रखना उचित है । खैर देखूंगी कि कम्बख्त दारोगा कहां तक साधू और महात्मा बनता है, दस पांच दिन के बाद मौका देख कर मैं गोपाल (कुंअर गोपालसिंह) से बातचीत करूंगी, वह बेचारा भी अपने बाप बदौलत धोखे में पड़ा हुआ है ! अच्छा यह तो बता कि आज कल भैयाराजा की कहां हैं और किस फिक्र में हैं ! क्या इन दिनों यहां आये थे ?

वहु० । नहीं वे तो उस दिन के बाद फिर कभी नहीं आए जिस दिन उनके आने के कारण पिछले नजरबाग में कोलाहल मचा था । वह भी दारोगा ही का काम था ! हां आज उनकी एक चीठी आई है ।

रानी० । क्या वह चीठी मैं देख सकती हूं ?

वहु० । हां हां देखें (चीठी दे कर) आपसे भला मैं क्यों छिपाने लगी ?

रानी० । (चीठी पढ़ कर) खैर, इस चीठी को पढ़ कर मुझे यह तो ढाढ़स हुई कि बेचारे भैयाराजा अभी तक कुशलपूर्वक हैं, नहीं तो उनके विषय में कैसे कैसे बुरे गुमान पैदा होते थे ! बहुरानी तू बेशक सच्ची और साध्वी है, मुझसे कसूर हुआ कि मैंने तुझ पर शक किया । पहिले पहिल जब मुझे इस बात की

खबर लगी कि तेरे पास कोई आदमी छिप कर आता है तो मारे गुस्से के मैं जल भुन कर कवाब हो गई, बिना कुछ सोचे विचारे महाराज को भी इस बात की खबर कर दी और उस समय तो मेरे रंज का कोई हद न रहा जब जांच करने पर यह बात सच निकली, राजा साहब को भी इस बात का बड़ा ही दुःख हुआ, मगर अब मैं अपनी भूल पर पछताती हूं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं तुमसे मुहब्बत रखती हूं और यही सबब है कि अपनी भूल साफ साफ बता देती हूं छिपाने और बात बनाने को कोई जरूरत नहीं समझती ! मगर अब मुझे इस बात की फिक्र पड़ गई कि महाराज का आईना रूपी दिल किस तरह साफ किया जाय जो कि तेरी तरफ से गंदला हो गया है, और कम्बख्त दारोगा दिनों दिन उसकी गंदगी और भी बढ़ा रहा है इस भेद को खोल कर दारोगा पर जुर्म लगाना भी इस समय उचित नहीं जान पड़ता, कदाचित् वादे के मुताबिक भैयाराजा यहां न आये तो हम लोग मुफ्त में झूठे और बेईमान ठहराये जांयगे और दारोगा को इस बात का और भी मौका लग जायगा कि हमारे सीधे साधे महाराज को हम लोगों की तरफ से भी रंजीदा कर दे।

बहू०। आपका विचार बहुत ठीक है, पर मैं क्या कहूं मेरी तो कुछ अक्ल ही काम नहीं करती। जो कुछ ठीक ठीक बात थी वह मैंने आपसे साफ साफ कह दी, अब जो आप मुनासिब समझें करें।

रानी०। अच्छा यह चीठी किसके हाथ आई है ? इसका कुछ जवाब भी तूने दिया है या नहीं ?

बहू०। बेला मेरे लिए चन्दन खरीदने बाजार गई थी, वहां ही एक आदमी ने उसे यह चीठी देकर मेरे पास पहुंचाने की ताकीद की और बिना कुछ जवाब पाये जल्दी के साथ वहां से चला गया। मैं नहीं समझ सकती कि इसका जवाब उन्हें क्योंकर दिया जाय। खैर आप कोई ऐसा बन्दोबस्त करें जिसमें हम लोगों का और महाराज का डेरा कुछ दिन के लिए खासबाग* में चला जाय फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

रानी०। यह कौन बड़ी बात है, आज ही मैं इसका बन्दोबस्त करती हूं और आशा है कि कल हम लोग खास बाग ही में दिखाई देंगे। वहां अगर भैयाराजा से मुलाकात होगी तो उन्हें समझाना चाहिए कि 'दारोगा से बदला लेने के लिए तुम्हारा

---

* खासबाग का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है, यह वही बाग है जिसमें मायारानी रहा करती थी।

यह ढंग समयानुकूल नहीं है। तुम तो घर के सर्दार ठहरे, तुम्हें खुल्लम खुल्ला दारोगा का मुकाबला करना चाहिए।'

बहु०। अबकी दफे अगर वहां उनसे मुलाकात हुई तो मैं जरूर आपका सामना कराऊंगी, आप उन्हीं की जुबानी सुनेंगी कि दारोगा ने उनके साथ कैसा वर्ताव किया था।

रानी०। मैं बहुत खुश होऊंगी अगर तुम मुझे उनसे मिलाओगी, कम्बख्त दारोगा को मैं अच्छी तरह पहिचान गई हूं। जब तक इस कम्बख्त को सजा न दी जायगी मेरे जी को चैन न पड़ेगा। आज दामोदरसिंह ने अपनी स्त्री को मेरे पास भेजा था और बहुत ही गुप्त रखने की ताकीद करते हुए यह कहला भेजा था कि—'दारोगा से होशियार रहना, वह तुमको और बहुरानी को मार डालने की फिक्र में है और चाहता है कि बलभद्रसिंह की लड़की से गोपालसिंह की शादी न होने पावे।'

बहु०। मुझे भी उड़ती हुई यह खबर लगी है।

रानी०। खैर जो होगा देखा जायगा. जितने दिन की जिन्दगी विधाता ने हम लोगों को दे रक्खी है उतने दिन तो कोई मारने वाला नहीं है और इसके अलावे जो कोई जैसा करेगा फल पावेगा।

बहु०। ईश्वर हमारा सहायक है, आप किसी तरह की चिन्ता न करें। आप खास बाग में चलने की फिक्र करें फिर जैसा होगा देखा जायगा।

रानी०। कल जरूर हम लोग खासबाग में चले जायेंगे, कुछ सामान वगैरह लादने की जरूरत तो है नहीं कि तरद्दुद करना पड़ेगा, जिस तरह यहां सब सामान दुरुस्त है उसी तरह वहां भी किसी चीज की कमी नहीं है।

इसके बाद थोड़ी देर तक और भी इन दोनों में बातें होती रहीं तब अन्त में रानी साहिबा बहुरानी को समझा बुझा कर वहां से चली गईं।

रानी साहिबा की इच्छानुसार महाराज ने भी खासबाग में जाना स्वीकार किया और दूसरे दिन प्रातःकाल खासबाग ही में महाराज का दर्बार हुआ। बहुरानी और रानी साहिबा भी खासबाग में अपने अपने ठिकाने जा बिराजीं जहां वे सब प्रायः रहा करती थीं। उस दिन तो कुछ नहीं मगर दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही रानी साहिबा और बहुरानी को यह खबर लगी कि 'आज चौक बजार में दारोगा साहब ठीक चौमुहानी पर बेहोश पाये गए। एक कान कटा और मुंह में कालिख लगी हुई तथा गले में पुराने जूतों का हार पड़ा हुआ था। होश में आने के बाद उसी सूरत में महाराज के पास चले आ रहे हैं।'

चौदहवां बयान

देखते ही देखते भैयाराजा और भूतनाथ को कई दुश्मनों ने आकर घेर लिया और उन पर वार करना शुरू किया। मगर वाह रे भूतनाथ, जिस तरफ तलवार घुमाता हुआ टूट पड़ता था उस तरफ दुश्मनों के दिल भी टूट जाते थे। यद्यपि भूतनाथ के बदन पर कई जख्म लगे परन्तु पांच आदमियों को उसने बेकार कर जमीन पर सुला दिया। भैयाराजा की तो बात ही न्यारी थी, उनकी तिलिस्मी तलवार की बदौलत जो दुश्मन उनके सामने आया वही जख्मी और बेहोश होकर जमीन पर जा रहा और किसी का तनोबदन को खबर न रही, मगर भैयाराजा का भी बदन जख्मी होने से बचा न रहा।

अब पुनः उस मैदान में केवल भूतनाथ और भैयाराजा दिखाई देने लगे। यद्यपि इस समय उन्होंने अपने दुश्मनों पर फतह पाई थी मगर इन दोनों का शरीर भी थकावट से चूर चूर हो रहा था। एक तो सफर की हरारत दूसरे दुश्मनों से लड़ाई होने के कारण ये दोनों ऐसा थक गए कि अब तलवार क्या हाथ हिलाना भी कठिन सा हो गया था, साथ ही इसके दिल में दुश्मनों की तरफ से बेफिक्री भी नहीं होती थी, यह सोचते थे कि शायद और दुश्मनों का सामना हो जाय तो मुश्किल होगी क्योंकि अब रात हो गई है जिसके कारण दुश्मनों का वार बचाना और कठिन हो जायगा।

भैयाराजा और भूतनाथ दोनों आदमी एक पेड़ के नीचे बैठ गए और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

भैया०। भूतनाथ, मैं इस समय तुमसे पुनः एक सवाल किया चाहता हूं।

भूत०। कहिए।

भैया०। तुम ठहरे दारोगा साहब के दोस्त, चाहे वह दोस्ती जाहिरदारी और खुदगरजी ही के साथ क्यों न हो, मगर मैं हूं दारोगा साहब का दुश्मन क्योंकि उसने मुझे मार डालने में किसी तरह की कसर नहीं उठा रक्खी थी और इस बात को तुम भी जानते हो क्योंकि उसके सहायक ही थे, या यों भी कह सकते हैं कि तुम्हारी ही मदद करते हुए दारोगा को मेरे साथ दुश्मनी करने की जरूरत आ पड़ी...

भूत०। (बात काट कर) अब आप कृपा कर इन सब शर्मिन्दा करने वाली बातों को जाने दीजिये, मैंने जो कुछ किया वह आपसे छिपा हुआ नहीं है, मैं खुद कह चुका हूं कि मुझ सा पापी और पतित इस दुनिया में कोई दूसरा न होगा।

भविष्यत् के लिए अपना रास्ता बदलने की कसम खाता हुआ मैं आपसे माफी मांग चुका हूं और आपने मुझे माफी देकर अपना बना भी लिया है, अस्तु अब पुनः जब तक आप मुझे पाप करते हुए न देखें या सुनें तब तक आपको ऐसी बात ...

भैया० । (बात काटते हुए) नहीं नहीं भूतनाथ, मेरे इस कहने का यह मतलब नहीं है कि तुम्हें उन सब बातों की याद दिला कर शर्मिन्दा करूं, तुम मेरी बात तो पूरी तरह सुन लो ! मैं कहता हूं कि तुम अभी दारोगा से दोस्ती रखना चाहते हो और मैं उससे बदला लेने की फिक्र में हूं, ऐसी अवस्था में अगर ऐसे समय दारोगा से मुलाकात हो जाय तो तुम उसके साथ कैसा सलूक करोगे ? क्योंकि ताज्जुब नहीं कि यह कार्रवाई दारोगा की तरफ से की गई हो, ये सब उसी के आदमी हों, और यहां खुद उससे मुलाकात भी हो जाय, मेरा दिल घड़ी घड़ी इन्हीं बातों की तरफ ढुलकता है ।

भूत० । जमना और सरस्वती के विषय में निःसन्देह दारोगा ने मेरी मदद की थी जिसके लिए मुझे उसका शुक्रगुजार होना चाहिये था मगर अब जब कि मैंने अपना रास्ता बदल दिया तो अपने पहिले के पापकर्म में साथ रहने वाले पापी साथियों के साथ भाईचारे का बर्ताव नहीं कर सकता । यद्यपि किसी कारण से मैं उसके साथ जाहिरदारी का बर्ताव कर रहा हूं सही, मगर अब तो मुझे उसकी भी जरूरत न रही क्योंकि अब न तो मुझे जमना सरस्वती इत्यादि के साथ दुश्मनी करनी है और न उससे कुछ काम लेने की जरूरत ही जान पड़ती है, मैंने तो अब अपने को दयामय परमात्मा के भरोसे पर छोड़ दिया है और आपकी शरण में आ गया हूं, अस्तु जो कुछ होनी हो सो हो, मैं आपका ताबेदार आपके साथ हूं, आप जो आज्ञा देंगे वही करूंगा ।

भैया० । खैर तुम्हारी तरफ से मेरी दिलजमई तो हो ही चुकी थी अब पुनः हो गई मगर अफसोस यह है कि इन्द्रदेव हजार दुःखी होने पर भी अभी तक दारोगा के साथ कोई खोटा बरताव नहीं किया चाहते और मैं इन्द्रदेव के विरुद्ध कोई काम न करूंगा ।

भूत० । बेशक ऐसा ही है, मुझे भी इन्द्रदेव का ख्याल है और साथ ही इसके दारोगा की जात से दयारामजी का पता लगाना भी जरूरी है ।

भैया० । (चौंक कर) वह देखो सामने से रोशनी कैसी आ रही है !

भूत० । कोई आदमी लालटेन लिए हुए इसी तरफ आ रहा है ।

भैया० । क्या इसे भी अपना दुश्मन समझें ?

भूत० । ऐसे मौके पर दोस्त की उम्मीद कब हो सकती है और अगर हो भी तो हमें अपनी तरफ से होशियार ही रहना चाहिए । उसका साथी कोई मालूम नहीं पड़ता, चलिए हमलोग आगे चलें ।

यद्यपि ये दोनों आदमी बहुत सुस्त हो रहे थे तथापि हिम्मत करके उठ खड़े हुए और म्यान से तलवार निकाले हुए उस तरफ बढ़े जिधर से वह आदमी लालटेन लिए आ रहा था । अंधेरा क्षण क्षण में बढ़ता जाता था और इस आदमी के बदन की हरकत दिखाई नहीं पड़ती थी फिर भी वह तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ बेखौफ इनके पास आ पहुंचा और बोला—

आदमी० । भैयाराजाजी, दुश्मनों के घर में भी अक्सर दोस्त दिखाई दे जाया करते हैं, देखिये मेरे हाथ में सिवा इस लालटेन के और कोई हर्बा नहीं है, कहिये इस लालटेन का और मुझ 'मेघराज' का आप मुकाबला कर सकते हैं ?

भैया० । (उत्साह से भरी हुई आवाज में) जब तक 'मेघराज' गरजेंगे नहीं तब तक मैं मुकाबिला करने के लिए तैयार हूं । आओ मेरे प्यारे दोस्त, तुम खूब आये और अच्छे मौके पर आये, शायद इस जगह तुम कुछ मेरी मदद कर सको ।

मेघ० । बेशक मैं आपको मदद कर सकता हूं, एक नहीं अगर आपके हजार दुश्मन भी यहां आ जाय तो मैं अकेला उनसे आपको बचा सकता हूँ ।

इतना कह कर मेघराज ने अपना अंग झटकारा और उसके तमाम बदन से खौफनाक चिनगारियां निकलने लगीं जिसे देख कर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि डर कर कई कदम पीछे की तरफ हट गया इसके बाद मेघराज ने सिर्फ भूतनाथ को दिखाने की नीयत से लालटेन ऊंची की जिससे उसके तमाम बदन की अवस्था साफ साफ दिखाई देने लगी । भूतनाथ ने देखा कि वह बहुत ही बारीक सुनहरी तार से बना हुआ सुन्दर कवच पहिरे हुए है जिससे उसका सिर से पैर तक हर एक अंग बखूबी महफूज जान पड़ता है और वह कवच ऐसी खूबी के साथ बना हुआ है कि हाथ पैर और उंगलियां इत्यादि कुछ भी हिलाने से किसी तरह अंडस नहीं मालूम पड़ती । उसी ढंग के बनावट की एक टोपी भी उसके सर पर थी थी जिसके पिछली तरफ की झालर गरदन के नीचे तक लटक रही थी, जिससे उसकी गरदन पर भी कोई हर्बा काम नहीं कर सकता था । केवल इतना ही नहीं कि उसने इस कवच से अपने बदन को ही रक्षित कर रक्खा था, वह चाल ढाल और रंग ढंग से भी बहादुर मालूम होता था तथा कसरती और बदन से गठीला जान पड़ता था । मेघराज ने लालटेन नीची करके पुनः भैयाराजा से कहा—

मेघ० । मैं इत्तिफाक से ही यहां आ पहुंचा हूं, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि आपके दुश्मन यहां आये हुए हैं और उन्होंने आपको फंसाने के लिए यहां कोई कार्रवाई कर रक्खी है अथवा आप यहां आकर दुश्मनों से घिर गये । मुझे तो ईश्वर ने अकस्मात ही यहां पहुंचा दिया । मैं उतरती समय पहाड़ के ऊपर से आप लोगों की लड़ाई देख रहा था और जल्द से जल्द आपके पास पहुंचने की कोशिश कर रहा था परन्तु रास्ता ऐसा खराब है कि हजार कोशिश करने पर भी समय पर आपके पास पहुंच न सका कि आपकी मदद करता, तथापि मैं जानता था कि आपके पास तिलिस्मी तलवार मौजूद है, जिससे सिर्फ इतने दुश्मन आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते और इस सबब से मुझे ढाढ़स बंधी हुई थी। मैं परसों से इन लोगों को यहां आते जाते देख रहा हूं मगर कारण कुछ समझ में नहीं आता था, और इस समय भी मैं इन्हीं लोगों को देखने आ रहा था, मगर आपको शायद यह बात मालूम न हुई होगी कि यह कार्रवाई आपके दारोगा साहब की है और यह सब आदमी भी उसी के हैं ।

भैया० । (आश्चर्य से) हां, क्या यह सब आदमी दारोगा ही के हैं !

मेघ० । जी हां, ये सब उसी शैतान के आदमी हैं, बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह खुद भी इन्हीं लोगों में कहीं बेहोश पड़ा हुआ हो । इस लालटेन से सभों की सूरत देखने पर मालूम होगा ।

भैया० । तो देखना चाहिये वह यहां है या नहीं, तुम जानते ही हो कि जब तक मैं इन लोगों को होश में न लाऊं तब तक ये सब स्वयं यकायक थोड़ी देर में चैतन्य नहीं हो सकते ।

मेघ० । हां मैं इस बात को और आपकी तिलिस्मी तलवार की तासीर को खूब जानता हूं !

भैया० । अच्छा कुछ यह भी बता सकते हो कि हमारे दुश्मनों में से कोई और भी हैं या बस इतने ही थे जो इस समय यहां जख्मी और बेहोश पड़े हुए हैं ।

मेघ० । सो मैं बिना तहकीकात किए नहीं कह सकता, खैर चलिये अपने बेहोश दुश्मनों की सूरत तो देखिये, यहां अगर और कोई होगा भी तो हमारा क्या कर लेगा ।

इतना कह कर लालटेन लिये हुए मेघराज आगे बढ़ा और उसके पीछे पीछे भैयाराजा तथा भूतनाथ चलने लगे । भूतनाथ को मेघराज के विषय में बड़ा ही आश्चर्य था और यह जानने के लिए उसका दिल बहुत ही बेचैन हो रहा था कि यह मेघराज कौन है । इन बात को वह जरूर समझ गया था कि भैयाराजा उसे देखते

ही पहिचान न सके इस लिए उसने बात के इशारे ही में अपना परिचय दिया और भैयाराजा ने भी इशारे ही में परिचय देकर अपने को प्रकट किया। इसमें तो कोई शक नहीं कि यह भैयाराजा का दोस्त है मगर कौन है सो मालूम नहीं होता।

लालटेन की रोशनी में भैयाराजा ने सभी दुश्मनों की सूरतें देखी और उनमें से कइयों को पहिचाना भी। उन्हीं के बीच में दारोगा साहब भी पाये गये जो कि भैयाराजा की तिलिस्मी तलवार से जख्मी होकर बेहोश हो गये थे।

इस काम से निश्चिन्त होकर तीनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बातचीत करने और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। उस समय भूतनाथ ने मौका पाकर मेघराज के विषय में भैयाराजा से पूछा कि 'यह कौन साहब हैं? यदि कोई हर्ज न हो तो आप मुझे इनका परिचय दीजिए'। इसके जवाब में भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "मैं लाचार हूँ कि इन (मेघराज) की इच्छा के विरुद्ध इनका परिचय तुम्हें नहीं दे सकता, ये अगर मुनासिब समझेंगे तो अपना परिचय खुद ही तुम्हें देंगे।"

भैयाराजा का जवाब पाकर भूतनाथ चुप हो रहा और फिर उसे मेघराज के विषय में कुछ पूछने की हिम्मत न पड़ी।

भैया०। (मेघराज से) अब बेहोश दुश्मनों के बारे में आपकी क्या राय होती है? इनके साथ क्या सलूक करना चाहिये?

मेघ०। यह बात आपकी मर्जी पर है, जो आप मुनासिब समझें करें।

भैया०। मैं तो यही चाहता हूं कि इन सभों को कहीं पर कैद कर दूं मगर मेरे पास कोई जगह इस योग्य नहीं है।

मेघ०। ठीक है परन्तु यह भी आप जानते ही हैं कि अपने यहां भी मैं इन सभों को नहीं रख सकता अस्तु बेहतर होगा कि इन सभों को कुछ सजा देकर छोड़ दिया जाय, दारोगा के लिए भी इस समय यही मुनासिब होगा।

भैया०। आप ठीक कहते हैं, इन सभों को नाक कान काट के छोड़ दिया जाय और दारोगा कम्बख्त का सिर्फ दाहिना कान थोड़ा सा काट कर उसे जमानिया सदर बाजार के चोमुहाने पर रख दिया जाय जिसमें वहां के सभी आदमी अपने राजा के वजीर को ऐसी हालत में देख कर खुश हों। (भूतनाथ की तरफ देख कर) मैं तो यही मुनासिब समझता हूं, कहिये आपकी क्या राय है?

भूतनाथ०। सजा तो बहुत अच्छी तजवीज की गई है। जब कि आप इस दारोगा का सरे दरबार मुकाबला किया चाहते हैं तो अभी इसे कत्ल करने की

जरूरत नहीं है। हुक्म दीजिए तो मैं काम शुरू करूं?

भैया०। हां अब देर करने की जरूरत नहीं है, इन सभों के कान नाक काट कर दुरुस्त करो, इनके हर्बे भी ले लेने चाहियें।

भैयाराजा का हुक्म पाते ही भूतनाथ ने कार्रवाई शुरू कर दी, तलवार से सभों के नाक कान काट डाले और अन्त में दारोगा का भी थोड़ा सा दाहिना कान काटने के बाद अपने ऐयारी के बटुए में से स्याही निकाल कर खूब अच्छी तरह उसका मुंह काला किया और कुछ रंग रोगन भी लगा कर उसकी विचित्र सी सूरत बना दी, इसके बाद एक घोड़े पर उसे कस के कमन्द से अच्छी तरह बांध दिया।

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मैदान में डाकुओं के कई घोड़े भी मौजूद थे, उन्हीं में से एक पर भूतनाथ ने दारोगा को कसा और तब भैयाराजा से कहा, "अब यहां से चलती समय इसको अपने साथ ले चलेंगे और रात को मौका देख कर जमानिया के चौमुहाने पर छोड़ देंगे।"

भैया०। ठीक है (मेघराज से) यहां आने का रास्ता बहुत ही टेढ़ा और खराब है, ताज्जुब नहीं कि लौटती समय हम लोग रास्ता भूल जायं। क्या यहां के रास्ते को बन्द भी कर दिया जा सकता है?

मेघ०। जी नहीं, यह तो एक खुली घाटी है, सिर्फ यहां आने का रास्ता पेचीला और भयानक होने के कारण कोई इस जगह आता नहीं, हां इतना जरूर है कि यह घाटी किसी तिलिस्मी घाटी के साथ मिली हुई है और तिलिस्म से भी कुछ सम्बन्ध रखती है। शायद दारोगा को यहां का हाल मालूम है आपको नहीं, यद्यपि यह सरजमीन आप ही के राज्य में है।

भैया०। बेशक यहां का हाल मुझे कुछ मालूम नहीं।

मेघ०। मेरा इरादा था कि मैं आज भर के लिए आप लोगों को यहां रोक लेता जिससे आपकी थकावट रात भर आराम करने से अच्छी तरह मिट जाती और कुछ भोजन भी कर लेते। मैं यहां बहुत जल्द आप लोगों के खाने पीने का इन्तजाम कर सकता हूं।

भैया०। अगर ऐसा हो सके तो क्या ही अच्छी बात है, मैं भी यही चाहता हूं कि कुछ भोजन और बेफिक्री के साथ आराम करने का इन्तजाम हो जाता और इसके पहिले मैं स्नान भी कर लेता मगर खौफ यही है कि कहीं और भी दुश्मन लोग यहां न आ जायं।

मेघ०। अब दुश्मनों के यहां आने का आपको खयाल ही क्यों होता है। मेरी

मौजूदगी में दो चार सौ दुश्मन भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर यह समझिये कि और लोग आकर आपके इन दुश्मनों को छुड़ा कर ले जायगे तो इनके लिये भी जो कुछ आप किया चाहते थे कर चुके, अब चाहे ये सब खुद-बखुद चले जायं या इन्हें कोई इनका दोस्त यहां आकर ले जाय काम केवल इतना बाकी है कि दारोगा को जमानिया बाजार के चौमुहाने पर पहुंचा देना, सो इस काम में यदि विघ्न भी पड़ जाय तो आपका कोई हर्ज नहीं है।

भ.या०। (कुछ सोच कर) अच्छा तो फिर जैसा आप कहें किया जाय।

मेघ०। बस यही ठीक होगा कि आप दोनों आदमी मेरे डेरे पर चले चलें और दारोगा को जो घोड़े पर लाद दिया गया है उतार कर एक गुफा में जो मैं आपको बताऊगा रख दें, फिर जाती समय पुनः घोड़े पर लाद दिया जायगा।

इतना कह कर भूतनाथ को साथ ले मेघराज ने दारोगा को घोड़े पर से उतारा और गुफा में जो वहां से थोड़ी दूर पर थी रख कर उसका मुंह पत्थर से ढांक दिया। उसी समय किसी चीज की रोशनी उस मैदान में घूमती हुई दिखाई दी जिसे देखते ही मेघराज चैतन्य हो गया। अपनी लालटेन का खटका उसने दबाया जिससे एक मोटा शीशा लालटेन के मुंह पर आ गया जिसके कारण रोशनी तेज हो गई और दूर तक जाने लगी। मेघराज भी अपनी लालटेन की रोशनी इस तरह पहाड़ पर दौड़ाने और घुमाने लगा मानों उस पहिली रोशनी का जवाब देता हो। पहिले की आई हुई रोशनी उस सरजमीन पर अजीब ढंग से घूमती थी और मेघराज अपनी लालटेन की रोशनी से उसका जवाब देता था। पास में खड़ा हुआ भूतनाथ बड़े आश्चर्य से इस तमाशे को देख रहा था।

भूतनाथ ने यह तो जरूर समझ लिया कि मेघराज रोशनी का जवाब रोशनी से दे रहा है। वह कोई मेघराज का साथी है जिसने यहां लालटेन की रोशनी पहुंचाई है, वह रोशनी के इशारे से बात करता है और मेघराज उसका जवाब देता है, परन्तु हजार अक्ल दौड़ाने पर भी भूतनाथ को इस बात का पता न लगा कि उन दोनों में रोशनी के इशारे से क्या क्या बातें हो रही हैं या किस तरह के अक्षर बनाये जा रहे हैं।

आधे घंटे से ज्यादे देर तक मेघराज इस काम में लगा रहा, इसके बाद वह रोशनी गायब हो गई और मेघराज ने भी लालटेन से रोशनी देना बन्द करके अपनी लालटेन का खटका दबा कर फिर पहिले की तरह दुरुस्त कर लिया।

मेघ०। (भैयाराजा से) अच्छा तो अब आप दोनों आदमी मेरे पीछे चलें,

मैं आपको अपने मकान पर ले चलूं।

भैया०। मैं चलने के लिए तैयार हूँ मगर यह तो बताओ कि इस लालटेन की रोशनी से तुम किस आदमी के साथ बातचीत कर रहे थे और क्या बात की!

मेघ०। अभी मैं इसका जवाब न दूंगा, समय पर आपको स्वयम् मालूम हो जायगा।

भूत०। उस वक्त मालूम हो जायगा जब कि सुनने के लिए मैं आपके साथ न रहूंगा।

मेघ०। (भूतनाथ से) हां जी गदाधरसिंह, बेशक यही बात है। तुम्हारे सामने अपना भेद प्रकट करते डर मालूम होता है। चाहे भैयाराजा ने तुम पर भरोसा कर लिया हो मगर और आदमियों की इतनी हिम्मत कहां कि तुम पर भरोसा करें।

भूतनाथ०। निःसन्देह मैं अपने कर्मों की बदौलत ऐसा ही जवाब सुनने के योग्य हूं।

मेघ०। आप खफा न हों, मेरा मतलब यह नहीं कि मैं अपनी बातों से आपको रंज पहुंचाऊं। आज कल जमाने का ढंग ही कुछ ऐसा हो रहा है कि किसी को किसी पर भरोसा करने का साहस नहीं होता।

भूत०। है तो ऐसा ही, खैर चलिए आप अपना काम कीजिये।

"मेरे पीछे पीछे चले आइये" इतना कह कर मेघराज आगे बढ़ा और भैयाराजा तथा भूतनाथ उसके पीछे पीछे रवाना हुए। तमाम मैदान खतम करने बाद पहाड़ी के ऊपर चढ़ने की नौबत आई। रात का समय होने से यद्यपि चढ़ने में तकलीफ होती थी, मगर फिर भी लालटेन से सहारा पाते हुए ये दोनों आदमी बराबर चले गये और लगभग पौन कोस रास्ता चलने के बाद एक गुफा के मुंह पर पहुंचे जिसमें आदमी खड़ा होकर बखुबी जा सकता था। दोनों आदमियों का साथ लिए हुए मेघराज उस गुफा के अन्दर चला। रास्ता बहुत ही पेचीला और घूमघुमौआ था तथा चढ़ाई की तरह चला गया था। लगभग चौथाई कोस चले जाने बाद ये तीनों आदमी बाहर मैदान में निकल और पुनः कुछ दूर चलने के बाद दूसरी गुफा के अन्दर घुसे मगर उसमें ज्यादे दूर जाना न पड़ा, कुल दो ढाई सौ कदम जाने बाद एक बन्द दरवाजा मिला जिसे मेघराज ने किसी गुप्त रीति से खोला और अपने दोनों साथियोंको अन्दर कर लेनेके बाद पुनः दर्वाजा बन्द कर दिया। ध्यान लगाये रहने पर भी भूतनाथ को दर्वाजा खोलने और बन्द करने का ढंग मालूम न हो सका।

अब ये तीनों आदमी एक ऐसे कमरे में पहुँचे जिसकी लम्बाई बीस गज और चौड़ाई दस गज के करीब होगी। कमरे में सभी तरह का सामान जिनकी जरूरत

आदमी को रोज ही पड़ा करती है मौजूद था। कमरे के एक तरफ सुन्दर फर्श बिछा हुआ था जिस पर दस बारह आदमी बखूबी आराम कर सकते थे। सामने की तरफ तीन दर्वाजे थे जिनमें से इस समय एक दर्वाजा खुला हुआ था जिसकी राह मेघराज अपने दोनों साथियों को कमरे के बाहर ले गया। अब ये तीनों आदमी एक छोटे से बाग में पहुंचे जो जंगली गुलबूटों और क्यारियों के बदौलत बहुत ही भला मालूम पड़ता था। पूरब तरफ से उदय होकर चन्द्रदेव कुछ ऊंचे हो अपनी चांदनी फैलाने लग गये थे जिससे उस बाग पर और भी जोबन चढ़ रहा था और दिखाई दे रहा था कि यह पहाड़ो बाग तीन तरफ से ऊंचो ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। उन पहाडियों पर कई सुन्दर सुन्दर मकान और बंगले बने हुए थे जिनमें से चार या पांच बंगलों के आगे तेज और चांद का मुकाबला करने वाली सुफेद रोशनी हो रही थी जिससे वहां की सरसब्ज जमीन पर दूर दूर तक की चीजें बहुत साफ दिखाई दे रही थीं और इस बाग पर भी उनका अक्स बहुत अच्छी तरह पड़ रहा था। भुतनाथ ने देखा कि इस बाग में चार पांच आदमी भी मौजूद थे जो न मालूम किस काम में व्यग्र और दौड़ धूप कर रहे हैं।

बाग के बीचोबीच संगमर्मर का सुन्दर चबूतरा था और उस पर तरह तरह की कई कुर्सियां रक्खी हुई थीं। मेघराज उसी चबूतरे पर चला गया और लालटेन रख कर अपने दोनों साथियों को बैठने के लिए कहा।

इस बाग में आने से यद्यपि भूतनाथ और भैयाराजा की तबीयत बहुत प्रसन्न हुई मगर थकावट ओर भी ज्यादे हो गई थी इसीलिए दोनों आदमी आराम कुर्सियों पर बैठ गये और पैर फैला कर चांदनी में चारो तरफ की कैफियत देखने लगे। इस समय भूतनाथ के पेट में कुअ अजीब तरह की खिचड़ी पक रही थी और मेघराज का असल हाल जानने के लिए वह बहुत ही बेचैन हो रहा था।

यहां पहुँच कर मेघराज ने जफील बुलाई जिसे सुन कर बात की बात में तीन आदमी वहां आ पहुंचे और इशारा पा कर हर तरह का सामान जुटाने लगे। भैयाराजा और भूतनाथ ने स्नान किया तब सन्ध्यापासन से निवृत्त हो भोजन किया और फिर निश्चिन्त होकर बैठने के बाद आपुस में बातचीत करने लगे। इस समय रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी और चांदनी भी अच्छी तरह फैल रही थी। सहसा एक आदमी जो हाथ में कोई चीज लिए हुए था इन लोगों के सामने लाया गया जिसे देख कर भूतनाथ चौंक पड़ा और घबड़ाहट तथा खौफ के साथ उसकी तरफ देखने लगा। इस आदमी के हाथ में यद्यपि हथकड़ी न थी मगर पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी।

मेघ० । (भूतनाथ से) कहो गदाधरसिंह, इस आदमी को पहिचान जानते हो ?

भूत० । (दुखित ढंग से) बेशक पहिचानता हूँ, इसका बाप राजसिंह मेरी जिन्दगी का शैतान था, उसी की बदौलत मेरे ऐशो आराम में फर्क पड़ा तथा मेरे धर्म और ईमान में बट्टा लगा, मेरे दोस्त दयाराम से मेरी जुदाई हुई और आज तक मैं दुर्दशाग्रस्त तरह तरह की तकलीफों को सहता हुआ मारा फिरता हूँ । इसका नाम ध्यानसिंह है ! यदि आपकी आज्ञा हो तो इससे दो चार बातें करूं ।

मेघ० । हां हां, तुम इससे जो चाहे बातें कर सकते हो ?

भूत० । (ध्यानसिंह से) कहो ध्यानसिंह, तुमने तो मुझे विश्वास दिलाया था कि 'दयारामजी अभी तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा के कब्जे में हैं' ।

ध्यान० । बेशक मैंने आपसे ऐसा ही कहा था और अभी तक मैं अपनी राय पर कायम हूं ।

भूत० । मगर तुम बिलकुल झूठे और बेईमान हो । अच्छा हुआ कि तुम इस समय मुझे इस हालत में यहां दिखाई दिये । मैं तुमसे मिलने ही वाला था ।

ध्यान० । आप जो कुछ समझें और कहें मगर मैं अपनी बात का पूरा पूरा सबूत रखता हूं । मगर मेरी मदद लेकर दयारामजी को खोजते तो जरूर दारोगा के यहां ...

भूत० । यह सब फजूल बातें है, मैं तुम पर किसी तरह भी भरोसा नहीं कर सकता । (मेघराज से) क्या इसे आपने गिरफ्तार किया है ? इसके गिरफ्तार करने से दयारामजी का कुछ पता लगा या केवल सजा देने ही के लिए यह गिरफ्तार किया गया है ।

मेघ० । इसका जवाब मैं कुछ भी नहीं दे सकता । यद्यपि मैं भैयाराजा की जुबानी सुन चुका हूँ कि तुमने प्रतिज्ञा की है कि भविष्य में अच्छी राह पर चलोगे और इन्होंने तुम पर भरोसा करके विश्वास भी कर लिया हैं परन्तु हमलोगों का दिल भैयाराजा सा नहीं है, हमलोग बिना जांच किये किसी पर भरोसा नहीं करते ।

मेघराज की बातों से यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया मगर वह चुप हो रहा, कुछ भी न बोला । मेघराज ने भैयाराजा को वहां से उठाया और बाग की एक रविश पर ले जा कर एकान्त में खड़े हो कुछ बातें कीं और इधर भूतनाथ भी तब तक ध्यानसिंह से कुछ बातें करता रहा । इन सभों में क्या क्या बातें हुईं इसके लिखने की यहां कोई जरूरत नहीं मालूम पड़ती ।

बातों से छुट्टी पाकर पुनः सब कोई उस चबूतरे पर इकट्ठा हो गए, ध्यानसिंह वहां से हटा दिया गया और तब भैयाराजा ने मेघराज से कहा, "गदाधरसिंह की जुबानी

मैंने सुना है कि दारोगा अब मेरी स्त्री को मार डालने के फिक्र में है इसलिए मैं चाहता हूं कि वहां जाकर उसकी रक्षा करूं और बन पड़े तो उसे वहां से निकाल लाऊं।'

मेघ०। बेशक आपको दारोगा के हाथ से उनकी रक्षा करनी चाहिए और महाराज के सामने ही दारोगा से यह भी पूछना चाहिए कि उसने आप के साथ ऐसा गन्दा सलूक क्यों किया ? आपका छिप कर कार्रवाई करने में दो पसन्द नहीं करता।

भैया०। मेरे और दोस्तों की भी यही राय है अस्तु बेहोश दारोगा को जमानिया सदर बाजार के चौमुहाने पर पहुंचा देने के बाद मैं प्रकट हो जाऊंगा और देखूंगा कि भाई साहब के सामने ही मुझसे और दारोगा से क्योंकर निपटती है। अच्छा तो अब मुझे यहां से रवाना हो जाना चाहिये। अब हम लोगों की थकावट भी अच्छी तरह मिट गई और हमलोग बखूबी सफर करने लायक हो गए हैं।

मेघ०। मैं तो यही चाहता था कि रात भर आप लोग यहां आराम करके प्रातःकाल सफर करते।

भैया०। नहीं, अब मैं जहां तक शीघ्र जमानिया पहुंचूं अच्छा है, तुम मुझे पुनः उसी जगह पहुंचा दो जहां से लाये हो।

मेघ०। बहुत खूब, चलिए।

मेघराज ने भैयाराजा और भूतनाथ को पुनः उसी जगह पहुंचा दिया जहां से लाया था। इन लोगों ने बेहोश दारोगा को गुफा के बाहर निकाला और मिल जुल कर एक घोड़े पर लादने बाद बागडोर अच्छी तरह कस दिया। बाकी बेहोश और जख्मी दुश्मनों को उसी जगह छोड़ दारोगा को लिए हुए भूतनाथ और भैयाराजा वहां से रवाना हुए। मेघराज भी तब तक भैयाराजा के साथ गए जब तक कि वे लोग पेचीले रास्ते को तै करके सीधे रास्ते पर न जा पहुंचे।

मेघराज के विषय में भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य और खुटका हो गया था। यद्यपि भूतनाथ ने देखा था कि वह अपना चेहरा नकाब से ढांके हुए नहीं है तथापि यह निश्चय हो गया था कि उसकी सूरत जरूर बदली हुई है। मेघराज को पहिचानने के लिए उसने उद्योग तो किया था मगर सफल मनोरथ न हुआ। अब भी उसे यह आशा जरूर थी कि सफर करते हुए भैयाराजा से मेघराज का भेद पूछेंगे और मुझे वे जरूर बता देंगे, मगर ऐसा न हुआ अर्थात् भैयाराजा ने उसे दिलासा दे दिया मगर मेघराज का असल भेद नहीं बताया। इस बात की मजबूरी दिखाई कि 'मेघराज ने अपना भेद छिपाने के लिए मुझसे कसम लिखा ली है'।

॥ पांचवां भाग समाप्त ॥

२८ वां संस्करण] १९७४ ई० [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

* श्रीः *



भूतनाथ

छठवां भाग

—:०:—

पहिला बयान

जमानिया में इस बात की धूम मची हुई थी कि दारोगा साहब सरे बाजार चौमुहानी पर बेहोश पाये गये, उनका मुंह काला था और दाहिना कान कटा हुआ था, गले में जूतों का हार था तथा बदन पर भी कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए थे। इस खबर से उनके दोस्त डर गये थे और दुश्मनों के चेहरों पर हंसी दिखाई दे रही थी। आदमियों के झुण्ड के झुण्ड उनकी अवस्था देखने के लिए चले जा रहे थे और जो देखता था वही खुश होता था। प्रायः सौ में नब्बे यही कहते थे कि 'बहुत अच्छा हुआ, ऐसों की ऐसी ही सजा होनी चाहिए!'

यहां के राजा साहब सीधे सादे रहमदिल और धर्मात्मा थे सही, मगर बिल्कुल ही बेपेंदी के लोटा थे। उनके आत्मीय मित्र और सम्बन्धी लोग समय पड़ने पर जो कुछ उन्हें समझा देते थे वे उसी पर विश्वास कर लेते

थे मगर जब कोई उसके विपरीत समझा देता तो वह पहिला खयाल उनके दिल से निकल जाता! अपनी राय कुछ भी कायम नहीं कर सकते थे, और इस सबब से भी उनकी रियाया में एक तरह की बेचैनी रहा करती थी और दारोगा की खूब चल बनी थी। वह महाराज के नाक का बाल हो रहा था और महाराज समझते थे कि हमारा राज्य इसी दारोगा की बदौलत रौनक पर है। महाराज आसकती और आरामपसन्द बहुत ज्यादे थे और दारोगा उनकी इस आदत को बढ़ाने के लिए हमेशा कोशिश किया करता था।

होश में आकर दारोगा ने न तो अपना चेहरा साफ किया और न गले में से जूते का हार निकाला, उसी सूरत और हालत में सीधे महाराज की तरफ चला। खबर पाकर उसके कई नौकर सिपाही भी वहां आ गये थे जिनकी जुबानी यह सुन कर कि महाराज का डेरा खास बाग में गया है वह भी खास बाग ही की तरफ रवाना हुआ।

जमानिया बाजार की चौमुहानी पर पहुंचा देने के पहिले दारोगा को भैयाराजा होश में ले आये और आइने के जरिये से उसे बता दिया था कि तेरी सूरत कैसी की गई है और यह भी कह दिया था कि 'इसी सूरत में तू जमानिया बाजार की चौमुहानी पर छोड़ा जायगा जिसमें तमाम रिआया तेरी इस बेहूदी हालत को देखे, इसके बाद मैं भाई साहब के सामने पहुंच कर उसी जगह तुझसे बदला लूंगा!' इसके बाद दारोगा बेहोश करके बाजार की चौमुहानी पर पहुँचा दिया गया था।

होश में आने के साथ ही दारोगा को भैयाराजा की बात याद आ गई और वह बिना कुछ जांच किये सीधे महाराज की तरफ रवाना हो गया। खास बाग के दर्वाजे तक तो उसके साथ सैकड़ों आदमियों की भीड़ गई मगर आगे न जा सकी क्योंकि पहरे वाले किसी गैर को बिना आज्ञा के अन्दर नहीं जाने देते थे। दारोगा को किसी ने नहीं रोका और वह सीधा महाराज के पास चला गया।

इस समय राजा साहब बाग के दूसरे दर्जे के नजरबाग में बैठे मुंह धो रहे थे और तीन चार मुसाहब उनके इर्द गिर्द बैठे तमाम शहर की झूठी सच्ची खबरें सुना रहे थे। यकायक दारोगा उनके सामने जा पहुंचा और उनके पैरों पर गिर कर जार जार रोने लगा। राजा साहब उसकी विचित्र सूरत देख कर हैरान हो गये और क्रोध में भर कर बोले, "यह तुम्हारी क्या दशा है? किसने तुम्हारी यह सूरत बनाई?"

दारोगा०। (गले से जूतों की माला निकाल कर) यह सब आपके भाई साहब भैयाराजा की बदौलत है, उन्होंने ही मेरी यह दुर्दशा की है।

राजा०। भैयाराजा कहां हैं? ईश्वर उन्हें चिरायु करे। मैं तो उनके बिना अधमूआ हो रहा हूं, अगर ईश्वर की कृपा से वे जीते जागते हैं तो मेरे पास क्यों नहीं आते?

दारोगा०। आपके सामने क्यों आवेंगे। वे तो आपसे बागी हो गये हैं और स्वयम् जमानिया के राजा बना चाहते हैं। अच्छा जो कुछ उनके जी में आवे करें, आप जानें वे जानें, पर मेरी यह दुर्दशा क्यों हो रही है? केवल इसीलिए कि मैं आपका खैरख्वाह हूं और आपने कुछ राज्य का बोझ मेरे ऊपर डाल रक्खा है, इसी से तो लोग डाह करते हैं। खैर जो कुछ होना था हो गया, अब आप जानिये और आपका राज्य जाने, अपना काम आप देखिये, मैं ऐसी बेइज्जती की नौकरी से इस्तीफा देता हूं। मैं साधू और फकीरों की तरह जिन्दगी बिताने वाला, सिर्फ आपकी मुहब्बत में फंस कर बार बार इस तरह की बेहुर्मती बर्दाश्त कर रहा हूं, घर गृहस्थी को छोड़ कर भी मुझे आराम नसीब नहीं।

राजा०। खैर कुछ कहो भी तो सही कि क्या मामला है? भैयाराजा तुम्हें कहां मिले और तुम्हारी ऐसी दशा उन्होंने क्यों की? आखिर इसका कुछ सबब भी तो होगा?

दारोगा०। सबब तो मैं आपसे कही चुका कि वे जमानिया का राज्य लिया चाहते हैं और मेरे जीते जी उनकी यह आशा पूरी नहीं हो सकती।

राजा० । उनकी यह आशा क्यों नहीं पूरी हो सकती ? मैं बड़ी खुशी से उन्हें यह राज्य देने के लिए तैयार हूं। यद्यपि इस राज्य का मालिक मेरा लड़का मौजूद है मगर वह भी मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करेगा। यदि मैं भैयाराजा को यहां की गद्दी दे दूंगा तो गोपाल भी कुछ न बोलेगा।

दारोगा० । तो आप यह भी करके देख लीजिये ! जिसमें आपकी जान सलामत रहे मैं भी उसी में खुश हूं, मगर मेरी जान क्यों आफत में डाली जाय और मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक क्यों हो ? अपने हाथ से जब आप कुंअरजी का हक मारने के लिये तैयार हैं तो दूसरे को बोलने की क्या गरज पड़ी है ? मेरा हाल जो आप सुना चाहते हैं तो सुनिये मैं बयान करता हूं। परसों भैयाराजा के भेजे हुए दो आदमी मेरे पास आये और एकान्त में मुलाकात करके इधर उधर की बातें करने बाद बोले कि 'भैयाराजा ने आपको बुलाया है, वे आपसे कुछ बातें किया चाहते हैं।' मैं यह सुन कर प्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा से भैयाराजा जीते हैं क्योंकि मुझको और आपको भी उनके मरने का विश्वास सा हो रहा था, अस्तु मैंने सोचा कि अब विलम्ब करना ठीक नहीं है, जहां तक जल्द हो सके उनसे मिलना और समझा बुझा कर उन्हें आपके पास ले आना चाहिए। खैर उन आदमियों की इच्छानुसार संध्या हो जाने पर मैंने तीन घोड़े मंगवाये, एक पर आप सवार हुआ और दो पर उन दोनों को सवार करा के उनके पीछे पीछे चल निकला। यहां से सात कोस की दूरी पर जो 'सुन्दर घाटी' नाम का आपका शिकारगाह है उसी में भैयाराजा टिके हुए थे और वे दोनों आदमी मुझे उसी जगह ले गये। मैं भैयाराजा को देख कर बहुत ही खुश हुआ और उनके पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने मुझे उठा कर गले लगा लिया और अपनी बगल में बैठा कर बातचीत करने लगे। उस समय दस बारह आदमी नंगी तलवार लिये उनके पास मौजूद थे। मुख्तसर यह कि मैंने उनसे यकायक गायब हो जाने का कारण पूछा, उनकी जुदाई में आपका जो कुछ हाल हो रहा है

उसे कह कर बहुत कुछ समझाया बुझाया और यहां आने के लिए जोर दिया, मगर मेरी बातों का उन पर कुछ भी असर न हुआ क्योंकि उनके दिल में राजा बनने का शौक उभड़ा हुआ था, अस्तु मेरी बात को काट कर वे मुझी को समझाने और लालच में डालने लगे। मुझे तरह तरह का सब्जबाग दिखा कर बोले कि 'तुम राजा साहब और गोपालसिंह को मारकर मुझे जमानिया का राजा बनाओ, जो कुछ तुम कहोगे मैं तुम्हें दूंगा और जन्म भर तुम्हारा गुलाम बना रहूंगा' इत्यादि। बातें तो बहुत लम्बी चौड़ी हुईं मगर मैं आपसे बहुत ही संक्षेप में बयान करता हूं! मैंने उन्हें फिर भी बहुत कुछ धर्म अधर्म की बातें समझा कर कहा कि आप घर चले चलिए, महाराज बड़ी खुशी से आपको गद्दी देने के लिए तैयार होंगे और अगर वे ऐसा न करेंगे तो मैं आपसे वादा करता हूं कि जिस तरह बनेगा मैं आपको राजा बनाऊंगा। यह सब कुछ मैंने कहा और समझाया मगर उनके दिल में एक न बैठी, बोले कि 'उन दोनों के जीते रहते मैं निष्कण्टक राज्य न कर सकूंगा, हमेशा खुटका बना ही रहेगा इसलिये उन दोनों को मार डालना ही उत्तम है' इत्यादि बातें सुनते सुनते मेरा जी ऊब गया और मैंने रंज हो उन्हें साफ जवाब दे दिया और कह दिया कि यह सब काम मेरे किये न होगा, मैं अपने मालिक के साथ निमकहरामी न करूंगा। मुझसे जवाब पाकर उन्हें क्रोध चढ़ आया और उन्होंने जो कुछ मेरे साथ किया उसका नमूना यही है जो कि आपने देखा। बहुत कुछ गाली गुफ्ता के बाद मैं जबर्दस्ती बेहोश कर दिया गया और इस दर्जे को पहुंचाया गया।

दारोगा की बातें सुन कर राजा साहब को क्रोध चढ़ आया और भाई की मुहब्बत को एकदम भूल कर मारे क्रोध के कांपने लगे। एक चोबदार को कुंअर गोपालसिंह को बुला लाने की आज्ञा देकर दारोगा से बोले, "मैं नहीं जानता था कि भैयाराजा के पेट में ऐसा जहर भरा हुआ है! मैं उन्हें बहुत ही नेक और सूधा समझता था!!"

दारोगा०। खयाल तो मेरा भी ऐसा ही था मगर परसों जो कुछ मैंने

उनकी जुबान से सुना वह इस योग्य न था कि मेरे ऐसा आदमी बर्दाश्त कर सके। छिः, ऐसे सूधे भाई से और ऐसी संगदिली !!"

राजा०। ऐसे भाई का तो मुंह न देखना चाहिए! अरे मैं तो खुद उन्हें राज्य देने के लिए तैयार था, फिर ऐसी बदनीयती क्यों ? बेचारे गोपालसिंह ने उनका क्या बिगाड़ा था !

दारोगा०। कुछ न पूछिये, उनकी बातें सुन कर तो मेरे होश उड़ गये, मैंने जो कुछ कहा वह बहुत ही मुख्तसर में है, कहीं उनकी जुबान से निकलीहुईसभी बातें आपसे कहूं तो आपके दुश्मनों की तबीयत ही खराब हो जाय। मैं आपको रंज पहुँचाना नहीं चाहता, पर उन्होंने मुझे इस बात की भी धमकी दी कि मैं भैया के पास पहुंच कर अपने सामने तेरी दुर्गति कराऊंगा और तुझे बेईमान साबित करके जेलखाने की गन्दी कोठड़ी में जन्म भर के लिए भेजवाऊंगा। अब देखिए परमात्मा क्या दिखाता है।

राजा०। परमात्मा जो कुछ करेगा अच्छा ही करेगा। वह मेरे सामने आवें भी तो।

इसी तरह की बातें कह कह कर दारोगा कुछ देर तक राजा साहब के गुस्से को बढ़ाता रहा, यहां तक कि कुंअर गोपालसिंह भी आ पहुँचे और दारोगा की अवस्था देख कर आश्चर्य करने लगे तथा अपने पिता को क्रोध में भरे देख कर बहुत ही बेचैन हुए। प्रणाम करने के बाद हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और हुक्म का इन्तजार करने लगे। राजा साहब ने मुहब्बत की निगाह से कुंअर साहब की तरफ देखा और अपने पास वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

कुंअर०। (कुर्सी पर बैठ कर दारोगा से जो अभी तक जमीन पर बैठा आंसू गिरा रहा था) यह क्या मामला है ? आप ऐसी सूरत में क्यों दिखाई देते हैं।

राजा०। तुम्हारे चाचा साहब ने इनकी यह दुर्दशा कर डाली है।

कुंअर०। (आश्चर्य से) सो क्या! क्या चाचाजी की कुछ खबर मिली है?

राजा०। हां, वे ईश्वर की कृपा से कुशलपूर्वक हैं मगर हमारे और तुम्हारे दुश्मन हो रहे हैं।

कुमार०। ऐसा क्यों? हम लोगों ने तो उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ा! वे तो मुझ पर बड़ी ही कृपा रखते हैं और आपसे भी उन्हें अतीव स्नेह है!

राजा०। वह सब दिखौआ मामला था, नहीं तो इस बेचारे की ऐसी दुर्दशा वे न करते। इन्हें अपनी राय में मिलाना चाहते थे मगर जब इन्होंने हमारा पक्ष न छोड़ा तब इनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया। यही सुनने के लिये तो हमने तुमको बुलाया है, (दारोगा की तरफ देख कर) हां, एक दफे वे सब बातें फिर बयान कर जाओ जिसमें गोपाल को भी मालूम हो जाय कि इनके चाचा साहब इन पर कैसे मेहरबान हैं।

राजा साहब की आज्ञा पाकर दारोगा ने पुनः वह किस्सा बयान किया जिसे पहिले सुना चुका था। उसे सुन कर कुंअर साहब हैरान हो गये, मगर उनके दिल में यह बात बैठी नहीं इसलिये दारोगा तथा अपने पिता को कुछ जवाब न दिया, केवल यही सोचते रह गये कि यह किस्सा कहां तक सच होगा? यदि चाचा साहब मिलें तो बातों का मुकाबला करके कोई राय कायम की जाय।

राजा०। (कुंअर से) कहो चुप क्यों हो? जो कुछ हाल था तुमने सुन ही लिया।

कुंअर०। जी हां सुना मगर यह भी मालूम हुआ कि चाचाजी स्वयम् आने वाले हैं। यदि वे आ गये तो उनकी बातें सुनने पर अपनी राय कायम कर सकूंगा।

राजा०। बाबाजी* जो कुछ कहते हैं उसमें रत्ती बराबर झूठ नहीं होगा!

---

* उन दिनों दारोगा ब्रह्मचारियों और साधुओं की तरह अपने को बनाये रहता था।

कुंअर० । सम्भव है।

राजा साहब ने अपने हाथ से दारोगा को जमीन पर से उठाया, उसके आंसू पोंछे और अपने सामने ही सफाई करने का हुक्म दिया। उन दिनों यह नियम था कि जब राजा साहब का डेरा खासबाग में जाता था तब दारोगा को भी उसी बाग के नियत स्थान में रहना पड़ता था। अस्तु राजा साहब ने उसे दिलासा देकर और समझा बुझा कर उसके डेरे में भेजा और स्वयं स्नान इत्यादि की फिक्र में पड़े। कुंअर गोपालसिंह वहाँ से उठ कर महल में गये और अपनी माता से मिल कर दारोगा का सब हाल तथा जो कुछ किस्सा उसने अपनी दुर्दशा का कहा था वह भी बयान किया। जवाब में रानी साहिबा ने कहा कि दारोगा ने भैयाराजा के विषय में जो कुछ किस्सा कहा है वह सब झूठ है, असल में कसूर दारोगा ही का है, वह खुद भैयाराजा को मारने की फिक्र में पड़ा हुआ है।

इतना कह रानी साहेबा ने वह सब हाल जो बहुरानी की जुबानी सुना था कुंअर गोपालसिंह से बयान किया जिसे सुन कर वे बहुत ही हैरान हुए, यद्यपि मुंह से कुछ न बोले मगर दिल में बड़े गौर के साथ सोचने लगे कि असल में भेद क्या है और बात कौन सी सच है।

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर कुंअर गोपालसिंह पुनः अपने पिता के पास गये और कुछ देर तक वहां बैठ कर बातचीत करने बाद हाथ जोड़ कर बोले, "इधर बहुत दिनों से इन्द्रदेवजी से मुलाकात नहीं हुई, वे भी यहां न आये, न मालूम क्या सबब है। उनसे मिलने को जी चाहता है, आज्ञा हो तो एक दिन के लिए उनके पास जाऊं।" महाराज ने यह कह इन्द्रदेव के पास जाने की इजाजत दी कि 'जाओ मगर होशियार रहना, क्योंकि तुम्हारा चाचा तुम्हारे खून का प्यासा हो रहा है, ऐसा न हो कि कहीं रास्ते में मिले और तुम्हें धोखा दे। अपने साथ आदमी और सवार काफी तौर पर ले जाना।'

दूसरा बयान

इन्द्रदेव अपने कैलाश भवन के नजरबाग में संध्या के समय क्यारियों में घूम फिर कर गुलबूटों का आनन्द ले रहे थे जब कुंअर गोपालसिंह के आने की उन्हें इत्तिला मिली। वे खुशी खुशी कदम बढ़ाये हुए दरवाजे की तरफ गये तथा इस्तकबाल करके उन्हें आपने साथ पुनः उसी नजरबाग में ले आये और एक चबूतरे पर जहां कई कुर्सियां बिछी हुई थीं दोनों आदमी बैठ कर बातें करने लगे।

इन्द्र०। आज तो आपके अनूठे दर्शन हुए! भला किसी तरह मेरी याद तो आई।

कुंअर०। (मुस्कुराते हुए) अगर आप मुझे भूल गये तो क्या मैं भी आपको भूल जाऊं!

इन्द्र०। असल में तो मित्रों और मुलाकातियों को भूल जाना आप ही लोगों का काम है, मैं तो गरीब आदमी हूं जो कि कभी भी अपने अमीर मेहरबानों को भूल नहीं सकता।

कुंअर०। यही सबब है कि इतने दिनों तक आपने मेरी खबर न ली। आखिर में अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद होकर आपके पास दौड़ा आया, सोचा कि क्या जाने कल को क्या हो जाय, एक दफे चल के मुलाकात तो कर लें।

इन्द्र०। इसका क्या अर्थ है? जिन्दगी से नाउम्मीद हो जाना कैसा?

कुंअर०। सुना है कि मेरे चाचा साहब मुझसे नाखुश हैं और मुझे तथा मेरे पिता को भी मार डालने की फिक्र में पड़े हैं।

इन्द्र०। (हंस कर) यह आपको किसने कह दिया। भैयाराजा ऐसे महात्मा आदमी पर ऐसा कलंक लगाने वाला कौन निकल आया! स्वप्न में भी मुझे ऐसी बेतुकी बातों पर विश्वास नहीं हो सकता। क्या उनका कुछ पता लगा?

कुंअर० । हां आपके गुरुभाई साहब ने ही तो यह बात कही है !

इतना कह कर गोपालसिंह ने दारोगा साहब का कुल हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं इन्द्रदेव से बयान किया और पूछा कि 'इस मामले में आपको क्या राय है ?'

इन्द्र० । असल में जो कुछ मामला है उसे मैं खूब जानता हूं मगर अपनी तरफ से मैं दारोगा को नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता और आपसे भी ऐसी ही आशा रखता हूं । परन्तु मैं यह जरूर कहूंगा कि आप अपने चाचा साहब की तरफ से बिल्कुल ही बेफिक्र रहिए और दारोगा की तरफ से चण भर के लिये भी गाफिल मत होइये । यह तो मुझे विश्वास नहीं है कि वह आपको तकलीफ देगा मगर इसमें कोई शक नहीं है कि वह आपके चाचा साहब का जानी दुश्मन है और एक दफे उन पर अच्छी तरह हाथ साफ भी कर चुका है मगर ईश्वर ने उनकी जान बचा ली ।

कुंअर० । अच्छा यह तो बताइये कि चाचाजी और दारोगा के बीच में दुश्मनी क्यों पैदा हो गई और चाचाजी ने एकदम से हम लोगों को क्यों छोड़ दिया ?

इन्ददेव० । मामला बड़ा पेचीदा है । असल में वह आपके चाचा साहब का दुश्मन न था, मगर मजबूर होकर अपनी जान बचाने के लिए उनसे दुश्मनी करने की जरूरत पड़ी । यदि आप इस बात का वादा करें कि मेरी तरह से आप भी इस भेद को छिपाये रहेंगे और उन दोनों का फैसला उन्हीं दोनों की अक्ल पर छोड़ देंगे तो मैं आपसे यह रहस्य बयान करूं । इसमें शक नहीं कि मेरी जुबानी जो आप सुनेंगे उससे आपको दारोगा पर क्रोध जरूर आवेगा परन्तु आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप दोनों में से किसी का भी पच्च न लें क्योंकि आपके पिता दारोगा साहब को इष्टदेव की तरह मानते हैं और हम लोगों के हजार कहने पर भी वे दारोगा को झूठा और नमकहराम नहीं समझेंगे, ऐसी अवस्था में अपनी जबान हिला कर राजा साहब से बुरे बनना बुद्धिमानी के विरुद्ध है, मौका मिलने पर जो

कुछ होगा देखा जायगा।

कुंअर०। आपका कहना बहुत ठीक है, आप भरोसा रक्खें कि मैं आपकी आज्ञा के विरुद्ध कभी कोई काम न करूंगा और इस भेद को जब तक आप न कहेंगे आप ही की तरह अपने दिल में छिपाए रहूंगा तथा दारोगा को भी मालूम न होने दूंगा कि मैं उससे होशियार हूं।

इन्द्र०। ऐसा ही होना चाहिए। अच्छा सुनिये मैं आपसे असल भेद कहता हूँ। आपको दयाराम का कुछ हाल मालूम है?

कुंअर०। इतना मुझे आप ही ने कहा था कि उन्हें रामसिंह कैद करके ले गया था और वे धोखे में भूतनाथ के हाथ मारे गये। बस इससे ज्यादे मुझे कुछ भी नहीं मालूम है।

इन्द्र०। हाँ बेशक मैंने आपसे कहा था मगर यह नहीं कहा था कि उनकी दोनों स्त्रियां मेरे पास जीती जागती मौजूद हैं क्योंकि उनके मरने की खबर तमाम दुनिया में फैल चुकी थी। यह भेद मैंने आपसे इसलिए छिपा रक्खा था कि उन दोनों ने भूतनाथ से अपने पति का बदला लेने के लिए प्रण कर लिया था मगर भूतनाथ का वे कुछ बिगाड़ नहीं सकती थीं क्योंकि वह बड़ा ही होशियार है और मैं भी इस ख्याल से भूतनाथ का मारा जाना पसन्द नहीं करता था कि असल में उसका कोई कसूर नहीं है, उसने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा था बल्कि धोखे में ऐसी घटना हो जाने का उसे बड़ा ही दुःख था मगर चूंकि दलीपशाह वगैरह को यह बात मालूम थी और दलीपशाह पर भूतनाथ को भरोसा नहीं था इसलिए भूतनाथ इस फिक्र में बराबर ही लगा रहता था कि भेद खुलने न पावे और मैं बदनाम न हो जाऊँ। दयाराम की दोनों स्त्रियों को मैंने इस बात की इजाजत तो दे दी कि तुम लोग गदाधरसिंह से बदला लो और स्वयं उनकी मदद भी करता रहा पर इस बात की सख्त ताकीद कर दी कि गदाधरसिंह की जान पर कोई धक्का लगने न पावे। मगर वे उस काम को बखूबी और खूबसूरती के साथ न कर सकीं, यहाँ तक

कि गदाधरसिंह पर उनका भेद खुल गया और वह उन दोनों को मार डालने की फिक्र में पड़ा, क्योंकि उसे उन दोनों के जरिये से अपनी बदनामी का खयाल हो गया। इस काम में गदाधरसिंह ने दारोगा से मदद ली और दारोगा ने उन दोनों को तथा साथ ही उनके प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को भी गिरफ्तार कर लिया। यह हाल भैयाराजा को मालूम हो गया और वे उन सभों को छुड़ाने के लिए दारोगा पर टूट पड़े मगर दारोगा ने अपना भेद छिपाये रखने की नीयत से भैयाराजा को भी कैद कर लिया। मैंने बड़ी मुश्किलसे उन सभोंको दारोगा और गदाधरसिंहके पंजेसे छुड़ाया, ऐसे ढंग से कि अभी तक दारोगा तथा गदाधरसिंह को इस बातका गुमान भी न हुआ होगा कि मैंने ही उन सभों को उनके पंजे से छुड़ाया था।

कुंअर०। (आश्चर्य करते हुए) यह तो बहुत ही अनूठा किस्सा आप बयान कर रहे हैं, मगर कहने के ढंग से मालूम होता है कि आप बहुत संक्षेप में कह रहे हैं, ऐसे नहीं, आप मेहरबानी करके खूब खुलासे तौर पर बयान कीजिये।

इन्द्र०। आप मेरे दिली दोस्त हैं इसलिए मैं आपसे यह भेद की बात कह रहा हूं मगर खूब होशियार रहें कि कोई आपके दिल के अन्दर से यह भेद निकालने न पावे बल्कि किसी को गुमान भी न होने पावे कि यह सब हाल आपको मालूम हैं, मैं खुलासा बयान करता हूं!

इतना कह कर इन्द्रदेव ने जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह दारोगा और भूतनाथ इत्यादि का तथा इनको अपने मदद करने का कुल हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं गोपालसिंह से बयान किया। दयाराम निरंजनी छन्नों और घ्यानसिंह वगैरह का हाल भी कहा, मगर यह नहीं कहा कि दयाराम को हम दारोगा की कैद से छुड़ा लाये हैं और वे अब फलानी जगह हैं।

सबके अन्त में इन्द्रदेव ने अपनी तरफ की यह राय दी—'मेरी समझ में तो गदाधरसिंह और दारोगा वगैरह सभी बेकसूर समझे जा सकते हैं, क्योंकि सभी ने अपनी अपनी जान बचाने के लिए ही ऐसे पाप

किये। मगर फिर भी आपके दारोगा साहब की नीयत अच्छी नहीं है। हम नहीं कह सकते कि उनके पापों की गिनती कहां तक तरक्की करेगी मगर आपको अभी एकदम से सन्नाटा खींचे रहना चाहिए, क्योंकि अगर आप ऐसा न करेंगे तो राजा साहब की मुहब्बत आप पर से जाती रहेगी। देखिये भैयाराजा से राजा साहब को कितनी मुहब्बत थी मगर अब इस समय दारोगा के सामने उस मुहब्बत की कुछ भी कदर न रही।

कुंअर०। आपका कहना बहुत ठीक है, जो कुछ आपने कहा मैं वैसे ही करूंगा मगर इस किस्से को सुन कर तो मैं हैरान हो गया, मेरी बुद्धि ठिकाने न रही! ताज्जुब नहीं कि कई दिनों तक मुझे रात को नींद न आवे! आह, दुनिया भी क्या चीज है और इसमें कैसी कैसी घटनाओं का आविर्भाव हुआ करता है!

इन्द्रदेव०। बेचारे भैयाराजा बिल्कुल ही निर्दोष हैं, उनका तो व्यर्थ ही होम करते हाथ जला है, थोड़ी सी भूल ने उन्हें बर्बाद कर रक्खा है। बिना सोचे विचारे जल्दी में जब आदमी से कोई चूक हो जाती है तो फिर उसका सम्हालना मुश्किल हो जाता है। इस दारोगा के पंजे से मैंने उन्हें छुड़ाया था उसी समय अगर वे महाराज के सामने जा पहुँचते तो जरूर अपना दिल ठण्ढा कर लेते मगर अब तो दारोगा ने अपना रंग जमा लिया। मुझे उनकी बड़ी ही फिक्र लगी हुई है, देखा चाहिए क्या होता है।

कुंअर०। आपने बहुत ही अच्छा किया कि यह सब हाल मुझसे कह दिया नहीं तो क्या जाने मुझसे कोई भारी भूल हो जाती और पीछे पछताना पड़ता।

इन्द्र०। इसी खयाल से तो मैंने आपको होशियार कर दिया, अब आपको बड़ी होशियारी और चालाकी से काम लेना चाहिये।

तीसरा बयान

रात का समय है और दारोगा अपने खासबाग* वाले मकान में एकान्त कमरे में बैठा हुआ जैपाल से बातें कर रहा है।

दारोगा०। न मालूम क्या समझ कर भैयाराजा ने मेरी जान छोड़ दी नहीं तो मैं बड़े ही बेमौके जा फंसा था! कार्रवाई तो मैंने बहुत अच्छी की थी मगर इस बात की खबर न थी कि भैयाराजा के पास तिलिस्मी तलवार मौजूद है।

जैपाल०। खैर जो कुछ होना था सो हो गया अब आपको बहुत सावधानी के साथ काम करना चाहिये, ताज्जुब नहीं कि भैयाराजा अब खुद राजा साहब के पास आवें और आपका मुकाबला करें। यद्यपि मेरा तो खयाल यही है कि अब राजा साहब उनकी बातों पर कदापि विश्वास न करेंगे क्योंकि आपने उनको खूब ही दुरुस्त कर रक्खा है।

दारोगा०। बेशक अब राजा साहब उनका पक्ष न करेंगे, हां गोपालसिंह का बन्दोबस्त करना जरूरी है।

जैपाल०। जब कि आप सोचते हैं कि भैयाराजा और उनकी स्त्र को मार डालने के बाद रानी साहब और राजा साहब को भी मार डालेंगे तो गोपालसिंह को छोड़ने की क्या जरूरत है? उन्हें भी निपटा कर निष्कण्टक राज्य कीजिए।

दारोगा०। यह सोचना तुम्हारी भूल है। हमारी कुमेटी के बड़े बड़े रईस लोग जो अभी तक मेरी इज्जत करते हैं वे एकदम से मेरे दुश्मन हो जायंगे और समझेंगे कि दारोगा ने राजा बनने की नीयत से यह कुमेटी रची थी। वे मुझे कदापि राजा न बनने देंगे और तमाम फौज भी मेरी दुश्मन बन जायगी। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि कोई दूसरा राजा

---

* खासबाग में दारोगा के लिए एक मकान मुकर्रर था और वह भी खासबाग के तिलिस्म से मिला हुआ था।

आकर जमानिया में दखल जमा ले और अगर ऐसा हुआ तो मैं बड़ी दुर्दशा से मारा जाऊंगा। मुझे राजा बनने में सुख नहीं है, मैं नाम मात्र के लिए गोपालसिंह को राजा बनाऊंगा और खुद राज्य करूंगा। जब गोपालसिंह की शादी हेलासिंह की लड़की से हो जायगी तब बेशक गोपालसिंह मारे जायं तो कोई हर्ज नहीं। उस समय उनकी स्त्री को रानी बनाऊंगा और उसे ऐयाशी पर उतारू करके आप आनन्द करूंगा। फिर मेरा मुकाबला करने वाला कोई भी न होगा।

जैपाल०। बात तो आपने बड़े दूर की सोची! मेरा खयाल इन सब बारीकियों की तरफ नहीं गया था। बेशक आपकी बुद्धि तेज है और आप नीति को खूब समझते हैं।

दारोगा०। अब तो गोपालसिंह को खुशामद से या जिस तरह बनेगा अपने ऊपर प्रसन्न करूंगा और तब देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है। सबसे बड़ा काम तो यह है कि उनकी शादी हेलासिंह की लड़की से हो जाय।

जैपाल०। बेशक बेशक! ईश्वर चाहेगा तो आपका काम बखूबी हो जायगा। मगर राजा साहब के जीते जी यह बात नहीं होने की।

दारोगा०। मगर दयाराम वाला खुटका मेरे दिल को बहुत ही बेचैन किये हुए है। न मालूम उसे कौन छुड़ा ले गया और अब वह कहां है। यह और भी ताज्जुब है कि वह अभी तक प्रगट नहीं हुआ। जब वह प्रगट होगा तो मुझे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा और उस समय इन्द्रदेव भी मेरा दुश्मन बन जायगा।

जैपाल०। बेशक दयाराम का गायब हो जाना बहुत ही बुरा हुआ। मेरा तो खयाल है कि खुद गदाधरसिंह उसे छुड़ा ले गया। जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह का भी कुछ हाल मालूम नहीं हुआ, वे सब भी तो आपकी फिक्र में होंगे।

दारोगा०।बेशक उनके लिए भी मैं तरद्दुद में हूं, हां अगर गदाधरसिंह ने मेरा साथ दिया तो मैं उन सभी की तरफ से शायद बेफिक्र हो जाऊंगा।

जैपाल० । गदाधरसिंह का तो खुद ही उन लोगों की बदौलत नाक में दम हो रहा है ।

दारोगा० । सही है, मगर फिर भी जब वह उन लोगों की फिक्र में है तो कुछ करके ही छोड़ेगा ।

जैपाल० । अगर वह ऐसा करे भी तो उसमें आपकी क्या भलाई हो सकती है जब कि वह स्वयं आपसे रंज है ? इधर वाला मामला बहुत ही बुरा हो गया, भैयाराजा के साथ ही साथ आप गदाधरसिंह पर भी वार कर बैठे सो अच्छा नहीं किया ।

दारोगा० । अगर मेरा वार खाली न जाता और भैयाराजा तथा गदाधरसिंह मारे जाते तो तुम ऐसा न कहते बल्कि मेरी तारीफ करते, अब जब मामला बिगड़ गया है तो जो चाहे कहो, फिर भी मुझे इस बात से दिलजमई है कि गदाधरसिंह लालची है, दौलत के आगे वह धर्म ईमान और इज्जत वगैरह कुछ नहीं समझता ।

जैपाल० । गदाधरसिंह को कब्जे में करने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी होगी कि आप उसके बागी ऐयारों और शागिर्दों को अपना पक्षपाती बनावें ।

दारोगा० । बात बहुत अच्छी है मगर मैं उन लोगों को खोजूं क्योंकर ! उन सभों का मिलना ही तो बड़ा कठिन है ।

जैपाल० । उनमें से एक आदमी मुझे मिला था और मैंने उससे आपके विषय में बातचीत भी की, अगर आप कहें तो मैं इस बारे में उद्योग करूं ।

दारोगा० । जरूर कोशिश करनी चाहिए, खर्च करने के लिए मैं हर तरह से तैयार हूं । बात यह है कि या तो गदाधरसिंह हमारे कब्जे में आ जाय और या फिर दुनिया से उठा दिया जाय । (ऊंची सांस लेकर) अफसोस दयाराम का हमारे कब्जे से निकल जाना बहुत बुरा हुआ नहीं तो गदाधरसिंह मेरे तलवे चाटा करता और जो कुछ मैं कहता वह झक मार के करता

तुम कहते हो कि दयाराम को गदाधरसिंह छुड़ा ले गया मगर मेरा दिल इस बात को कबूल नहीं करता । जब दयाराम के विषय में बातचीत करने के लिए वह मेरे पास आया था उसके पहिले ही कोई मेरी सूरत बन कर दयाराम को छुड़ा ले गया था, जैसा कि भूतनाथ ने भी मुझसे कहा था, और मैंने भूतनाथ से बहाना किया था कि वह दूसरा ही कैदी था ।

जैपाल० । हो सकता है, तो अगर गदाधरसिंह नहीं तो भैयाराजा का यह काम होगा क्योंकि वे जमना और सरस्वती को दिलोजान से मदद कर रहे हैं ।

दारोगा० । सम्भव है कि भैयाराजा ही ने ऐसा किया हो । अफसोस यह कई दफे मेरे पंजे में आकर निकल गया है । अच्छा बकरे की माँ कब तक खैर मनावेगी । अबकी दफे तो भैयाराजा को तिलिस्मी तलवार ने बचा लिया, जख्म लगते ही मैंने पहिचान लिया कि फलानी तलवार होगी, मैं बहुत जल्द उसे महाराज से मांग लूंगा ।

जैपाल० । आप तिलिस्म के दारोगा ठहरे, आपके पास तो जरूर ऐसी तलवार होनी चाहिए, बल्कि मेरे पास भी होनी चाहिए क्योंकि मैं आपका मित्र हूं ।

दारोगा० । अच्छा अब मैं उस काम की फिक्र करता हूं जिसके लिए तुमने राय दी थी । तुम जाकर अपना रथ तैयार कराओ और खुद हांकते हुए खासबाग के पिछले दर्वाजे की तरफ लाकर मेरा इन्तजार करो । ईश्वर चाहेगा तो आज ही मेरा वह काम हो जायगा फिर दूसरे की फिक्र करूंगा ।

जैपाल० । बहुत अच्छा मैं जाता हूं ।

चौथा बयान

खास बाग में महल के अन्दर जो कमरा बहुरानी के लिए मुकर्रर था उसमें इस समय सिवा बहुरानी के कोई दूसरा दिखाई नहीं देता, यहाँ तक कि कोई लौंडी भी उस कमरे में मौजूद नहीं है जो जरूरत पर काम आवे । हम आश्चर्य के साथ देखते हैं कि उस कमरे में दीवार के साथ जो

आलमारियां बनी हुई हैं उनमें से इस समय एक आलमारी कुछ अधखुली सी मालूम पड़ती है और उसके अन्दर से एक आदमी सर निकाल कर उस कमरे की अवस्था को बड़े गौर से देख रहा है।

आधी रात का समय है। कमरे के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है, केवल एक सुन्दर मसहरी पर बहुरानी आराम की नींद सो रही है और उसके नाक से कोमल खर्राटे की आवाज आ रही है। कमरे में पूरब और पश्चिम की तरफ की खिड़कियां खुली हुई हैं और पूरब तरफ वाली खिड़की से जो आम की बारी की तरफ पड़ती हैं, ठंडी ठंडी हवा आ रही है जिससे बहुरानी की मसहरी का जालीदार नफीस पर्दा दरियाई लहरों की तरह झकोरे ले रहा है। कमरे की दीवारगीरों में से दो में मोमबत्ती की रोशनी हो रही है।

उस आदमी ने जो आलमारी के अन्दर से सर निकाल कर झांक रहा है, देखा कि इस कमरे का सदर दरवाजा जिधर से लोग इस कमरे में आते जाते हैं, खुला हुआ है मगर जहां तक बाहर की तरफ निगाह जाती है कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता।

धीरे धीरे उस आलमारी का दोनों पल्ला अच्छी तरह खुल गया और वह आदमी जो सिर निकाल कर झांक रहा था और जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी निकल कर कमरे में दाखिल हुआ। धीरे धीरे पैर रखता हुआ वह सदर दर्वाजे के पास पहुंचा और उसे बहुत धीरे से बन्द करके अन्दर से कुंडी चढ़ा ली और तब उस मसहरी के पास आया जिस पर बहुरानी आराम कर रही थी। उसने मसहरी का पर्दा हटाया और हाथ से हिला कर बहुरानी को जगाया। बहुरानी जब चैतन्य हुई तो अपने सामने एक नकाबपोश को देख कर हैरान हो गई मगर दिल कड़ा करके बोली, "तुम कौन हो जी ?"

इसके जवाब में नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब हटा कर कहा, "देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूं।"

नकाब हटते ही भैयाराजा की सूरत देख बहुरानी शरमा गई, मुस्कुराती हुई उठ खड़ी हुई और बोली, "मैं कई दिन से तुम्हारा इन्तजार कर

रही हूं, तुमने तो मुझे ऐसा छोड़ा कि मानों मैं तुम्हारी कुछ थी ही नहीं ! ऐसा ही था तो मुझे भी अपने साथ ले जाते, जो कुछ मुसीबत आती उसके झेलने में मैं भी शरीक होती और खुशी खुशी तुम्हारे साथ दिन बिताती !"

भैया० । (मुस्कुराते हुए) यह तो ठीक है मगर बिना किसी तरह का बन्दोबस्त किये तुम्हें ले जाना क्या सहज बात है ? मैं तो मर्द ठहरा, हर तरह पर हर जगह जाकर समय बिता सकता हूं मगर तुम्हारे लिये तो यह बात नहीं हो सकती । अब मौका देख कर मैं तुम्हारे पास आया हूं और खास करके इसलिये आया हूं कि तुम्हें यहां से ले जाऊं ।

बहु० । खैर मैं चलने के लिये तैयार हूं, मुझे उज्र ही क्या हो सकता है, आराम से बैठो और सुनाओ तो सही कि इधर क्या क्या मामले हुए ? दारोगा कम्बख्त को तो तुमने खूब ही छकाया ! (दर्वाजे की तरफ देख कर) क्या इस दर्वाजे को तुमने बन्द कर दिया है ? मैं तो खुला छोड़ कर सोई थी ।

भैया० । हां मैंने ही बन्द किया ।

बहु० । अच्छा बैठिये और मेरी बातों का जवाब दीजिये ।

भैया० । नहीं, मैं इसलिए नहीं आया हूं कि आराम से तुम्हारे पास बैठूं और बेफिक्री के साथ तुमसे बातें करूं । समय बहुत नाजुक है, बस तुम्हें यहां से जल्द चल देना ही चाहिये ?

बहु० । (शोखी से) अब इतनी जल्दी क्या पड़ गई ? बैठो तो सही, मैं तो सोचे हुए थी कि अबकी दफे तुम आओगे तो प्रकट रूप में अपने भाई के साथ मिलोगे और खुल्लमखुल्ला दारोगा का मुकाबला करोगे जैसा कि तुमने लिखा था । इस राय को मैं बहुत पसन्द करती हूं और तुम्हारी भावज साहिबा भी ऐसा ही करने के लिए कहती हैं । उनसे मुलाकात तो कर लो। मैंने उनसे वादा किया है कि अबकी आवेंगे तो तुम्हारा सामना कराऊंगी।

भैया० । बेशक मैं भी ऐसा ही चाहता था मगर अब मेरे दोस्तों की दूसरी राय हो गई है जो इससे बहुत अच्छी है । बस अब तुम किसी तरह

का सोच विचार मत करो और जल्दी से मेरे साथ चली चलो, किसी को खुटका हो जायगा तो ठीक न होगा।

बहु०। तो क्या बस निश्चय हो गया कि मैं तुम्हारे साथ चली चलूं ?

भैया०। हां, मैं कहता हूं कि चलने में जल्दी करो।

बहु०। अब इसी तरह ? बिना कुछ सामान लिये !

भैया०। हां, बस इसी तरह !

बहु०। अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ चलने में खुश हूं, किस राह से चलोगे ?

भैया०। जिस तिलिस्मी रास्ते से आया हूं उसी गुप्त राह से तुम्हें ले चलूंगा। मैं तो इतनी देर भी न लगाता जितनी बातचीत में लग गई है और तुम्हें बेहोश करके अपनी पीठ पर लाद कर जल्दी से ले भागता मगर क्या करूं रास्ता इस लायक नहीं है। मेरे पीछे पीछे चली आओ, कुछ दूर तक अंधकार में चलना होगा।

बहु०। मैं हर तरह से चलने के लिए तैयार हूं, चलो।

इतना कह कर बहुरानी तैयार हो गई और भैयाराजा के पीछे पीछे चल खड़ी हुई। भैयाराजा जिस आलमारी के अन्दर से निकले थे उसी में अपनी स्त्री को लिए हुए चले गये। भीतर से वह आलमारी बहुत लम्बी चौड़ी थी और उसमें नीचे की तरफ उतर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। भीतर जाकर भैयाराजा ने न मालूम किस ढंग से दरवाजा बन्द कर लिया और नीचे उतरने लगे। आगे आगे भैयाराजा और पीछे पीछे पीठ पर हाथ रक्खे हुए बहुरानी जाने लगी, रास्ता तंग और अंधकारमय था मगर सीढ़ियां बहुत छोटी थीं इसलिए उतरने में आसानी थी।

बहुत दूर तक नीचे उतर जाने के बाद वे दोनों एक कोठड़ी में पहुंचे जिसमें एक लालटेन की रोशनी हो रही थी। यह लालटेन भैयाराजा ऊपर जाते समय छोड़ गये थे।

इस कोठड़ी में पूरब और पश्चिम की तरफ से दो दरवाजे थे जिनमें

से पूरब तरफ वाला दर्वाजा इस समय खुला हुआ था। भैयाराजा ने वह लालटेन उठा ली और बहुरानी को साथ लिए हुए उस दर्वाजे के अन्दर चले गये। भीतर जाकर उन्होंने दर्वाजा बन्द कर दिया। केवल दोनों पल्ला मिला कर दबाने ही से एक खटके की आवाज हुई और वह दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द हो गया। अब ये दोनों आदमी एक सुरंग में दाखिल हुए और चुपचाप बहुत दूर तक चले गये। आधी घड़ी के बाद पुनः एक कोठड़ी मिली जिसका दर्वाजा भैयाराजा ने एक मुट्ठा घुमा कर जो उस दर्वाजे में लगा हुआ था खोला। बहुरानी इस दर्वाजे के खोलने का ढंग भी अच्छी तरह समझ न सकी क्योंकि मुट्ठा घुमाने में भी कोई खास तर्कीब थी।

दरवाजे के अन्दर घुस कर भैयाराजा ने लालटेन बुझा दी और अब पुनः बहुरानी को अंधकार में चलना पड़ा। यह बात बहुरानी को अच्छी नहीं मालूम हुई और उसने कुछ चिढ़ कर भैयाराजा से कहा, "भला यहाँ पर लालटेन बुझा देने को क्या जरूरत थी ? व्यर्थ ही अंधकार में चला कर तकलीफ देना........!"

भैया०। घबड़ाओ मत, यहां पर दो चार चीजें ऐसी हैं जिन्हें देख कर तुम डर जातीं इसीलिए मैंने लालटेन बुझा दी। तुम बेखटके मेरे पीछे पीछे चली आओ मगर देखो आगे कुछ दूर तक पानी में चलना पड़ेगा।

वास्तव में यही बात थी। बहुरानी के कान में पानी के बहने की मीठी मीठी आवाज आई और चन्द कदम चलने के बाद पानी में पैर पड़ा जिससे वह कपड़ा कुछ उठा कर चलने लगी। मालूम होता था कि सुन्दर चिकने फर्श पर पानी बह रहा है जो कि कहीं बित्ता भर कहीं ज्यादे और कहीं उससे कम होगा। वहाँ पर बहुरानी को कई दफा चक्कर लगाना पड़ा और अन्त में वह एक चौखट लांघ कर सूखी जमीन पर पहुंची और पीछे से पुनः दरवाजा बन्द होने की आवाज आई।

यहां पर भैयाराजा ने लालटेन जलाई और बहुरानी को साथ लिए हुए

आगे की तरफ बढ़े। अब वे दोनों एक मामूली सुरंग में जा रहे थे और रास्ता ऊंचाई की तरफ चढ़ रहा था। कुछ दूर जाने के बाद पुनः एक दरवाजे के पास पहुँचे और जब वह खोला गया तो दोनों आदमी खासबाग के बाहर होकर मैदान में पहुंचे जहां ठंढी ठंढी हवा के झोंके लग रहे थे और एक रथ जिसमें मजबूत घोड़ जुते हुए थे सामने खड़ा था।

दरवाजा बन्द करने के बाद भैयाराजा ने बहुरानी को उस रथ पर सवार कराया और आप भी सवार होकर रथ हांकने का हुक्म दिया। रथ कुछ दूर निकल जाने के बाद उन्होंने बहुरानी से कहा, "मैं वास्तव में भैयाराजा नहीं हूं, मैं वही दारोगा हूं जिसे भैयाराजा ने बेइज्जत किया था। तुम्हें जहन्नुम की सैर कराने के वास्ते लिए जाता हूं, ताज्जुब नहीं कि वहां बहुत जल्द असली भैयाराजा से तुम्हारी मुलाकात हो। बस खबरदार चिल्लाने की कोशिश मत करना!"

पांचवां बयान

बहुरानी के फंस जाने के घंटे भर बाद असली भैयाराजा उसी राह से बहुरानी के कमरे में दाखिल हुए जिस राह से दारोगा उन्हें धोखा देकर ले गया था। बहुरानी की मसहरी खाली देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ और यह सोच कर कि कोई दुर्घटना जरूर हुई है उनका कलेजा धड़कने लगा। वे इधर उधर की चीजों पर निगाह दौड़ाते हुए सदर दरवाजे पर गये तो दरवाजे को अन्दर से बन्द पाया। जिससे उनका शक और भी मजबूत हो गया और वे सोचने लगे कि जरूर बहुरानी इसी कमरे में थी, अगर यहां न होती तो यह दरवाजा अन्दर से क्योंकर बन्द होता! तो क्या वह अपनी खुशी से कहीं बाहर चली गई? नहीं बाहर जाने का यह तिलिस्मी रास्ता तो उसे मालूम ही न था, वह क्योंकर बाहर होगी! तब वह जरूर किसी धोखे में डाली गई।

इसी प्रकार से कुछ देर तक सोचने के बाद पुनः भैयाराजा सदर

दरवाजे के पास गये और उसकी कुन्डी जो अन्दर से बन्द थी खोल कर उसी तिलिस्मी राह से दरवाजे खोलते और बन्द करते हुए मकान और बाग के बाहर निकल गये और उस जगह पहुंचे जहाँ दारोगा ने बहुरानो को रथ पर चढ़ाया था। वहां भूतनाथ खड़ा उनका इन्तजार कर रहा था जिसे वे बाहर ही छोड़ गये थे।

भूत०। (आश्चर्य से) आप बहुत जल्द बाहर चले आये!

भैया०। हां, जिस काम के लिए मैं गया था वह काम नहीं हुआ अर्थात् मेरी स्त्री उस कमरे में मुझे नहीं मिली जो उसके रहने का स्थान था। मैं वहां कुछ देर तक ठहर कर उसका इन्तजार करता अगर उस कमरे का दर्वाजा खुला हुआ देखता मगर आश्चर्य तो यह है कि कमरे का दर्वाजा अान्दर से बन्द था।

भूत०। अगर दरवाजा अन्दर से बन्द था तो वे जरूर कमरे के अन्दर ही रही होंगी अस्तु या तो वे अपनी इच्छानुसार किसी तिलिस्मी राह से बाहर निकल गई हैं या ताज्जुब नहीं किसी मुसीबत में फंस गई हों।

भैया०। मैं भी तुम्हारे इसी दूसरे खयाल का पक्षपाती हूं, वह जरूर किसी मुसीबत में फंस गई है क्योंकि एक तो उसे वहां से बाहर निकल जाने का तिलिस्मी रास्ता मालूम न था, दूसरे....

भूत०। तो जरूर कोई दुश्मन वहां पहुंचा जिसने उन्हें धोखा दिया।

भैया०। यह काम दारोगा के सिवाय और कौन कर सकता है? अगर वास्तव में वह कहीं गायब हो गई या उसे किसी दुश्मन ने फंसा लिया है तो कल मेरे जासूस इस बात की खबर देंगे।

भूत०। मैं तो इस समय भी पता लगाने की कुछ कोशिश करूंगा।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और वहां की जमीन को गौर से देखने लगा। रथ के दोहरे पहिये का निशान जमीन पर देख कर वह चौंका और बोला, "देखिए यह चार पहिए के रथ का निशान यहां मौजूद है। जरूर वह

यहां तक लाई गई हैं और यहां से रथ पर बैठा कर उन्हें कोई ले गया है। अब आप अपने डेरे पर जाइये और मुझे पता लगाने के लिये इसी जगह छोड़ दीजिये, मैं इसी निशान से दुश्मन का पता लगा लूंगा!"

भैया०। अगर मैं भी तुम्हारे साथ रहूं तो क्या हर्ज है?

भूत०। नहीं मुझे इस काम में रोशनी का सहारा लेना पड़ेगा चाहे वह रोशनी किसी चिराग या मोमबत्ती की हो या चमकते हुए सूर्य भगवान के किरणों की। अगर मुझे कोई देख भी लेता तो कुछ चिन्ता नहीं मगर आपको कोई देख ले तो आपकी इच्छा के विरुद्ध होगा।

भैया०। हां यह तो ठीक है, खैर तुम अपना काम करो, मैं कुछ देर तक तुम्हारे साथ रह कर फिर मौका पा हट जाऊंगा और सबेरा होते होते तक माई साहब के पास पहुँचूंगा तथा मुकाबले में देखूंगा कि ईश्वर की तरफ से क्या फैसला होता है।

भूत०। बहुत खूब, इसमें कोई मुजायका नहीं।

उस रथ के पहियों का निशान बिना कहीं से बिगड़े या खराब हुए दारोगा के मकान तक चला गया था क्योंकि अभी तक उस रास्ते पर आमदरफ्त नहीं हुई जिससे कि वह निशान बिगड़ता और नष्ट होता, अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा को विश्वास हो गया कि बहुरानी को मुसीबत में डालने वाला यह दारोगा ही है।

भैया०। लो गदाधरसिंह, हमलोगों का गुमान बहुत ठीक निकला। अब तुमको चाहिये कि उस दुष्ट के कब्जे से मेरी स्त्री की जान बचाओ।

भूत०। आप इस काम का बोझ मुझ पर डाल कर जाइये और राजा साहब से मिलने की फिक्र कीजिये, वहां जाने पर आपको महल के अन्दर का हाल चाल भी मालूम हो जायगा जो आपके स्त्री के गायब होने के बाद वहां पैदा हुआ होगा तथा घटना की भी सचाई जानी जायगी।

"अच्छा" कह कर भैयाराजा वहाँ से चले गए और सूर्य उदय होने के पहिले ही बिना रोक टोक खास बाग में दाखिल होकर राजा साहब के

पास पहुँचे जो कि नजरबाग के सामने एक चन्दन की चौकी पर बैठे हाथ मुंह धो रहे थे। अभी तक नहुरानी के गायब होने का हाल उन्हें मालूम नहीं हुआ था मगर महल के अन्दर लौंडियों में कानाफूसी चली हुई थी।

भैयाराजा पर निगाह पड़ते ही राजा साहब अपना काम छोड़ उठ खड़े हुए और चौकी से नीचे कूद कर नंगे ही पांव उनकी तरफ झपटे जो राजा साहब को उठते देख तेजी के साथ उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे।

राजा साहब ने बड़े प्रेम से भैयाराजा को गले लगा लिया और दोनों की आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगे। कई आदमी दौड़े हुए कुंअर गोपालसिंह के पास चले गए और उन्हें भैयाराजा के आने की खबर दी। कुछ देर के बाद भैयाराजा का हाथ पकड़े हुए राजा साहब दालान में आए जहां बहुत सी कुर्सियों के अतिरिक्त चाँदी सोने की भी दो कुर्सियां रखी हुई थीं जिन पर हां नहीं करते हुए दोनों भाई बैठ गए और इस तरह बातचीत करने लगे :—

राजा०। क्यों भाई, हमने क्या कसूर किया जो तुम इस तरह हमें छोड़ कर चले गए थे?

भैयाराजा०। मैं तो सदा ही से आपके चरणों का दास हूं और जितना प्रेम आप मेरे साथ करते हैं उसे भी मैं खूब जानता हूं, फिर यह कब हो सकता है कि मैं आपको कसूरवार समझूं और रंज होकर कहीं चला जाऊं। मगर इतना जरूर है कि आपने दारोगा के फेर में पड़ कर मेरी जान का कुछ खयाल न किया। मैंने आपके कमरे में पहुँच कर यह प्रगट कर दिया कि दारोगा ने मुझे मार डाला है। मगर आपने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया यद्यपि यह बात बहुत ही ठीक थी और वास्तव में दारोगा ने मुझे मार डाला था परन्तु ईश्वर ने एक मददगार पहुँचा दिया जिसने मेरी जान बचा ली और अपने घर ले जाकर मुझे आराम से रक्खा। मैं कई दिनों तक इस बात का इन्तजार करता रहा कि देखें आप मेरे लिए क्या करते हैं मगर जब मैंने देखा कि मेरी बनिस्बत दारोगा पर आप ज्यादे मुहब्बत

रखते हैं तब मैं लाचार और हताश होकर रह गया।

राजा०। मेरे सोने वाले कमरे में पहुंच कर जो कुछ तुमने किया और जमीन पर लिख कर बताया उस पर मुझे कैसे विश्वास हो सकता था? मैं तो भूत प्रेत का तमाशा समझ कर चुप हो रहा। फिर आश्चर्य है कि तुम दारोगा की शिकायत करते हो कि 'उसने मुझे मार डालने का प्रयत्न किया' मगर मेरी समझ में नहीं आया कि उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक करने में अपना क्या फायदा समझ रक्खा था? आखिर यह भी कहो कि उसने ऐसा क्यों किया? मैं समझता हूं कि इस मामले में तुम्हें धोखा हुआ और इसी धोखे में पड़ कर तुमने दारोगा के साथ बड़ी बेइन्साफी की। उसका कान काट डाला और मुंह काला करके तथा जूतों का हार गले में डाल कर सरे बाजार छोड़ दिया।

भैया०। जी नहीं, मुझे धोखा नहीं हुआ और दारोगा के साथ जो मैंने यह कार्रवाई की वह भी बेजा नहीं की। असल में तो वह मार डालने के लायक था मगर इस खयाल से मैंने उसकी जान न ली कि आप उसे अपना दोस्त समझते हैं और मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहता। केवल थोड़ी सी सजा देकर छोड़ दिया, सो भी ऐसी हालत में जब कि आपने मेरे बारे में उसकी कारतूतों पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

इसी बीच में कुंअर गोपालसिंह भी आ गये और अपने पिता और चाचा को प्रणाम करके आश्चर्य करते हुए एक कुर्सी पर बैठ गये।

राजा०। फिर भी मैं यही कहता हूं कि तुमको दारोगा के बारे में धोखा हुआ। जब कि इतने दिनों तक उसने तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया तो अब उसे ऐसी कौन सी जरूरत आ पड़ी थी कि तुम्हें....

भैया०। (बात काट कर) जी उस दिन की घटना ही ऐसी बेढब थी कि दारोगा के लिए मुझे मार डालने की जरूरत आ पड़ी, मैं वह घटना बयान करता हूं आप सुनिये।

इतना कह कर भैयाराजा ने उस दिन का सब हाल बयान किया और

जमना सरस्वती तथा प्रभाकरसिंह का हाल भी कह सुनाया मगर यह नहीं कहा कि भूतनाथ को इस मामले से क्या सम्बन्ध था अर्थात् भूतनाथ को इस मामले से बिल्कुल ही अछूता रक्खा, यहाँ तक कि इस किस्से में उसका नाम भी नहीं लिया।

भैयाराजा की जुबानी सब हाल सुन कर राजा साहब को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वे सिर झुका कर कुछ सोचते रहे और तब बोले—

राजा०। इस समय जमना सरस्वती और प्रभाकरसिंह कहां हैं?

भैया०। वे अपने उसी दोस्त के यहां हैं जिसने उनकी और उनके साथ ही साथ मेरी भी रक्षा की थी। उन्हें आपके सामने बुला कर उनकी गवाही दिला सकता हूं।

राजा०। नहीं नहीं, गवाही की क्या जरूरत? अगर मैं तुम्हें झूठा समझूंगा तो उन्हें सच्चा क्यों समझूंगा? मगर तुमने बड़े ही आश्चर्य की बात कही। दारोगा ने तो तुम्हारी दुश्मनी का कारण मुझसे और ही कुछ बयान किया!

भैया०। उसने क्या कहा था?

इसके जवाब में सीधे सादे राजा साहब ने वह सब हाल कह सुनाया जो दारोगा ने गढ़ कर राजा साहब से कहा था अर्थात् भैयाराजा आपको और कुंअर गोपालसिंह को मार कर स्वयं जमानिया के राजा बनना चाहते हैं और इसी काम में मदद मांगते थे, देने से इनकार किया तब मेरी यह दुर्दशा की गई इत्यादि।

भैया०। (क्रोध में भर कर) क्या उस दुष्ट ने आपसे ऐसा कहा! और आपके दिल में यह बात बैठ भी गई?

इसका जवाब राजा साहब ने कुछ भी न दिया जिससे भैयाराजा समझ गये कि दारोगा की बातों पर भाई साहब को विश्वास हो गया है।

भैया०। खैर आप दारोगा को यहां बुलाइये, मैं जरा उससे पूछूं तो सही।

राजा०। हमारी तुम्हारी बातों में उसे बुलाने की जरूरत ही क्या है?

ऐसा जवाब राजा साहब ने इस खयाल से दिया कि उन्हें इस बात का शक हो गया कि दारोगा यहां आवेगा तो भैयाराजा उसे जरूर मारेंगे मगर भैयाराजा को यह जवाब बहुत बुरा लगा और वह राजा साहब का मतलब समझ गए। भैयाराजा कुछ और कहा ही चाहते थे कि लौंडियों का कोलाहल सुन कर सब कोई चौंक पड़े और उस तरफ देखने लगे जिधर तीन चार लौंडियां घबड़ाई हुई आकर खड़ी हो गई थीं। बहुरानी के गायब हो जाने से महल में कोलाहल मच चुका था और वही खबर सुनाने के लिये लौंडियां आई थीं।

राजा साहब ने बड़े ही आश्चर्य के साथ यह खबर सुनी और भैयाराजा की तरफ देख कर कहा, "मैं समझता हूं कि वह तुम्हारी ही इच्छानुसार यहां से चली गई होगी क्योंकि मैंने सुना है कि तुम कई दफे महल में उससे मिलने के लिए आये थे। पहिले तो मुझे यह बात मालूम न थी और महल में आने वाले को चोर या बदमाश समझता था मगर जब तुम्हारी भावज ने यह हाल तुम्हारी स्त्री से सुन कर मुझसे कहा तब मुझे मालूम हुआ कि महल में आने वाले तुम्हीं हो और तब मैं एक तरह पर निश्चन्त सा हो गया।"

भैया०। (कुछ क्रोध में आकर) बेशक यह काम भी आपके दारोगा साहब ही का है। जब तक अपने लिये कोई ठिकाना नहीं बना लेता तब तक मैं उसे यहां से क्योंकर ले जा सकता था? आप दारोगा को जरूर बुलवाइये, बिना उसके आए मेरी बातों का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। मुझे आपका और बेचारे गोपालसिंह का दुश्मन बनाया और आपने भी उस पर विश्वास कर लिया। जरूर मेरी स्त्री का भी चोर वही दुष्ट है। आप इस बात से निश्चिन्त रहिए, मैं कदापि जमानिया का राजा बनना नहीं चाहता। यदि आपको इस बात का विश्वास न होगा तो मैं अपने को आपके सामने ही मार कर आपके दिल से यह खुटका दूर कर दूंगा मगर

अपने मरने से दारोगा को सुखी न होवे दूंगा। पहिले दारोगा को और अपनी स्त्री को मार कर निश्चिन्त हो जाऊंगा तब आपके चरणों में अपना सर अर्पण करूंगा। अपनी स्त्री को इस लिए मारूंगा कि मेरे बाद उसे किसी तरह का दुःख न भोगना पड़े।

राजा०। नहीं नहीं नहीं, ऐसा न करो, मैं इस खून खराबे को पसन्द नहीं करता, मैं खुशी से तुम्हें यहाँ का राजा बनाने के लिए तैयार हूं और मुझे विश्वास है कि गोपाल को भी इसमें कोई उज्र न होगा क्योंकि वह बड़ा ही पितृ-भक्त है और मेरी आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा के समान मानता है, साथ ही इसके दारोगा को भी इस राज्य से अलग करके तुम्हें बेफिक्र कर दूंगा और उसे अपने साथ जंगल में ले जाकर किसी ठिकाने निवास करूंगा क्योंकि वह मेरा साथ छोड़ना पसन्द न करेगा!

भैया०। अफसोस, आपकी सभी बातों से दारोगा की तरफदारी टपकती है। उसके सामने आपके दिल में मेरी कुछ भी कदर नहीं है और उसकी बातों के आगे मेरी बातें सच्ची नहीं समझी जाती हैं, अस्तु मैं वही करूंगा जो कह चुका हूं क्योंकि इतना कह जाने पर भी मैं आपको ईश्वर के समान मानता हूं। मैं इस बात को साबित करके दिखा दूंगा कि मेरी स्त्री का चोर भी वही है। बेशक मुझसे भूल हुई कि इतने दिनों तक गायब रह कर आपकी मुहब्बत की जांच करता रहा!! आज मुझे मालूम हो गया कि दारोगा के सामने मेरी कितनी इज्जत है। मैं अब एक क्षण भी यहां रहना पसन्द नहीं करता और आपका चरण छूकर बिदा होता हूं।

इतना कह कर भैयाराजा उठ खड़े हुए और राजा साहब का चरण छूकर वहां से रवाना हुए। राजा साहब कितना ही, "हां हां, सुनो सुनो!!" कहते रहे मगर भैयाराजा ने एक भी न सुनी, लाचार राजा साहब बैठे के बैठे रह गये मगर कुंअर गोपालसिंह उठ खड़े हुए और भैयाराजा के पीछे पीछे बाग के बाहर निकल गये। वहाँ पर गोपालसिंह ने भैयाराजा का पैर पकड़ लिया और कहा, "आप जहां जी चाहे जाइये

अगर मेरी दो चार बातें सुनते जाइये। मैंने आपका कोई कसूर नहीं किया है और न मैं आपको अपना दुश्मन समझता हूं, अस्तु मुझ पर जो आपका प्रेम है उसका खून मत कीजिये !"

भैयाराजा अटक गये, उन्होंने गोपालसिंह को उठा कर छाती के साथ लगा लिया और बोले, "नहीं बेटा, मुझे तुमसे रंज नहीं है बल्कि तुम्हारे मिजाज और तुम्हारी लायकी से मैं बहुत ही प्रसन्न हूं, तुम्हें होन-हार समझता हूं और तुम पर भरोसा रखता हूं। कहो क्या कहते हो ?"

गोपाल०। मुझे जो कुछ कहना है एकान्त में कहूंगा, यहां बहुत से आदमी हैं।

भैया०। अच्छा मैं तुम्हारे साथ एकान्त में चलता हूं।

छठवां बयान

दिन तीन पहर से ज्यादे ढल चुका है और बाजारों में लोगों की आमदरफ्त बढ़ती जा रही है जो कि दोपहर के समय धीरे धीरे घटती हुई बिल्कुल कम हो गई थी। बाजार की बड़ी बड़ी दूकानें भी धीरे धीरे खुलती जा रही हैं जो सुबह से दोपहर तक व्यवहार करने के बाद बन्द हो गई थीं और उन छोटी छोटी दूकानों की भी रौनक बढ़ती जा रही है जिनके मालिक सुबह से खोल कर दो घण्टे रात जाते तक भी बन्द करना पसन्द नहीं करते।

जमानिया यद्यपि बहुत छोटा राज्य और मामूली शहर है मगर फिर भी यहां का चौक और महाजनी बाजार रौनक पर है और जरूरत की सभी चीजें मिल जाया करती हैं। महाजनों में लेन देन हुण्डी पत्री का व्यवहार भी अच्छी तरह से होता है तथा बजाजे और बनारसी माल की दूकानें भी बहुत सी हैं जिनको कभी इस बात की शिकायत करने का मौका नहीं मिलता कि 'बिक्री कम होती है और मुनाफे में लज्जत नहीं है !' हां इस बात की शिकायत लोग जरूर करते हैं कि हमारे राजा साहब को किसी

बात का शौक नहीं, अगर होता तो इस शहर की रौनक चौगुनी हो गई होती।

शहर की गलियां बहुत तंग और इमारतें मामूली दर्जे की हैं परन्तु चौक और महाजनी बाजार की सड़कें कुछ चौड़ी, इमारतें तथा दूकानें बड़ी बड़ी हैं, क्योंकि इसके पास ही यहां के राजा साहब का महल है और बड़े बड़े ओहदेदारों तथा कारिन्दों और फौजी अफसरों का रहना भी इस बाजार के पास ही होता है।

धीरे धीरे चौक बाजार में भिश्तियों ने छिड़काव भी कर दिया (जो कि दूकानदारों की तरफ से थे) और दूकानें सब खुल गईं तथा संध्या होते तक बाजार पूरी रौनक पर हो गया और सैलानी लोग भी टहलते हुए दिखाई देने लगे। ऐसे समय हम एक ऐसे आदमी को जो रंग ढंग से कोई देहाती जमींदार मालूम होता था सड़क पर टहलते और इधर उधर निगाहें दौड़ाते हुए देखते हैं।

इसकी पोशाक कुछ अजीब ढंग की है। सर पर बहुत बड़ी गुलेनार रंग की पगड़ी और बदन में घेरदार जामा है जिसके दोनों बगल खूब चुन्नट पड़ी हुई है तथा पायजामे की मोहरी भी इतनी चौड़ी है कि एक एक पैर में खासा मोटा ताजा आदमी बखूबी घुस जाय। बसन्ती रंग का बारह या चौदह हाथ लम्बा कपड़ा जिसमें चारो तरफ सुनहरा गोट टंगा हुआ है कमर में लपेटे है और उसमें एक खन्जर भी खुसा हुआ था। माथे में रामानन्दी तिलक और गले में तीन चार छोटे बड़े दानों की तुलसी की माला है और सबसे बढ़ कर यह बात है कि हाथ में मोटा सा माथे तक का लट्ठ लिए हुए है जिसे हर कदम पर अपने भद्दे पैरों के साथ ही साथ पटकता हुआ चल रहा है।

इस आदमी के पीछे पीछे इसका एक नौकर भी है जिसके सर पर गन्दा मटमैला साफा और बदन में जगह जगह से फटी हुई मिरजई पड़ी हुई है। यद्यपि उसकी धोती का कपड़ा छोटा नहीं है मगर घुटने के ऊपर

ही दिखाई देता है। कन्धे पर छोटा सा थैला जिसमें शायद लोटा डोरी कोयला तथा तम्बाकू वगैरह होगा और हाथ में बड़ा सा नारियल लिये कुछ पीछे पीछे जा रहा है।

इस जमींदार सूरत वाले आदमी की निगाह चौंक की एक बहुत बड़ी दूकान पर पड़ी जिसके ऊपर लटकते हुए तख्ते पर बड़े बड़े हरफों में यह लिखा हुआ था :—

"यहाँ पर ऐयारी का सभी सामान मिलता है,
ऐयारी सिखाई जाती है, और ऐयारों को
रोजगार भी दिलाया जाता है। आइये
दूकान की सैर कीजिये—"

इस लिखावट को पढ़ कर वह आदमी अटक गया और दूकान की तरफ गौर से देखने लगा। दूकान बड़ी खूबसूरत रंगी हुई थी। खम्भों पर रंग बिरंगे कपड़ों के गिलाफ चढ़े हुए था और आगे की तरफ एक सुन्दर सायबान बना हुआ था जिसके चबूतरे पर बैठने के लिए छोटी बड़ी बहुत सी कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं। कमर में तलवारें लगाये चार पांच सिपाही भी काम करते हुए दिखाई देते थे।

कुछ देर देखने बाद वह आदमी दूकान के अन्दर चला गया और वहाँ की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा। एक आदमी जो शायद सौदा बेचने के लिए मुकर्रर था उसके सामने आया और बड़ी लनतरानी के साथ तारीफ करता हुआ तरह तरह की चीजें दिखाने लगा जो कि शीशे की सुन्दर आलमारियों में करीने से सजाई हुई थीं। दूकानदार ने कहा—

"देखिये ये तरह तरह की दाढ़ी और मूछें तैयार हैं, बीस वर्ष से लेकर सौ वर्ष का आदमी बनना चाहे तो बन सकता है। जो पूरी तौर पर ऐयारी नहीं जानते, बनावटी दाढ़ी मूछें तैयार करने का जिन्हें इल्म नहीं है वे इन दाढ़ी मूछों को बड़ी आसानी से लगा कर लोगो को धोखे में डाल सकते हैं मगर जो काबिल ऐयार हैं और मनमानी सूरत बनाया करते हैं

अथवा जो किसी की नकल उतारनेमें उस्ताद हैं उनके लिए तरह तरह केखुले हुए बाल पलग रक्खे हुए हैं। (लकड़ी के डब्बों को खोलकर दिखाते हुए) इन सुफेद और स्याह बालों से वे अपनी मनमानी सूरतें बना सकते हैं, देखिये बारीक मोटे सादे और घुंघराले वगैरह सभी तरह के बाल मौजूद हैं। इसके अलावे यह देखिये(दूसरी आलमारी की तरफ इशारा करके) तरह तरह की टोपियां जो कि पूरब पश्चिम उत्तर और दक्खिन के मुल्कों वाले पहिरा करते है तैयार हैं और इसी तरह हर एक मुल्क की पोशाकें इधर उधर खूंटियों पर देखिये तैयार लटक रही हैं। साफे पगड़ी और मुड़ासों की भी कभी नहीं है, बस सर पर रख लेने की देर है! आइये इधर दूसरे कमरे में देखिये ये तरह तरह के बटुए लटक रहेहैं जिनमें रखनेके लिए हर एक तरहका सामान भी इस दूकान में मौजूद रहता है। (तीसरे कमरे में जाकर) इस छोटे बड़े हल्के भारी सभी तरह के कमन्द और हर्बों को सैर कीजिये जिनकी प्रायः सभी ऐयारों को जरूरत पड़ती है। आप ऐयार हैं इसलिए मैं आपको यहां की हर एक चीज की सैर अच्छी तरह कराया चाहता हूं।"

"आप ऐयार हैं" यह सुन कर वह जमींदार ठमक गया और दूकानदार का मुंह देखने लगा।

दूकान०। आप आश्चर्य क्यों करते हैं! मैं अभी बहुत सी चीजें आपको दिखलाऊंगा, क्योंकि ऐयार होने के साथ ही आप अमीर भी मालूम पड़ते हैं।

जमींदार०। आपका खयाल गलत है। आपने क्योंकर जाना कि हम ऐयार हैं और अमीर भी हैं?

दूकान०। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। मेरा तो दिन रात का यह काम ही ठहरा, मैं खुद ऐयार हूं और हर घड़ी ऐयारों से वास्ता पड़ा ही करता है। अक्सर ऐयार लोग मुझसे अपने काम में सलाह लेने आया करते हैं और मैं उन्हें अपनी फीस लेकर अच्छी सलाह दिया करता हूं मगर किसी का भेद नहीं खोलता और एक की बात दूसरे से नहीं कहता। यह तो हमारी हाल ही में यह नई दूकान हुई है, लेकिन हर एक बड़े शहर में हमारे मालिक की

बड़ी बड़ी दूकानें हैं जिनमें मेरे ऐसे ऐसे सैकड़ों ऐयार काम करने के लिए नौकर हैं। ऐयारों से दिन रात व्यवहार करते करते हम लोग पक्के हो गए हैं अतएव आपको पहिचान लिया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है और इसके लिए आप किसी तरह की चिन्ता न करें। आइये और इस कमरे की सैर कीजिए जिसमें तरह तरह की दवाइयां तैयार हैं और होती हैं।

दूकानदार की चलती फिरती बातें सुन कर वह जमींदार दंग हो गया और फिर कुछ भी न बोला, उसके साथ ही साथ उस दूसरे कमरे की सैर करने चला गया और वहां देखा कि तरह तरह की बहुत सी शीशे की आलमारियों में सोने चांदी तांबे और पीतल के बड़े छोटे कई प्रकार के डिब्बे और डिबियाएं सजाई रक्खी हैं और कई नौकर जमीन पर बैठे खल बट्टा चला रहे हैं जिनमें हरी पीली सुफेद काली तरह तरह की दवाएं घुट रही हैं।

दूकान०। यह देखिए इन आलमारियों में जितने डिब्बे और डिबियायें आप देखते हैं सभों में तरह तरह की दवाइयां मौजूद हैं जो कि ऐयारों के सुभीते के लिए बना कर रक्खी हुई हैं। हमारी दवाओं में इस बात की शर्त है कि पांच बरस तक कुछ भी खराब नहीं होतीं और इनके इस्तेमाल से किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचता। इस दूकान में कोई भी ऐसी दवा आपको नहीं मिलेगी जिसमें किसी तरह का जहरीला असर हो या जिससे किसी को किसी तरह का नुकसान पहुंचे क्योंकि किसी ऐयार का यह धर्म नहीं है कि अपने काम से सर्वसाधारण या किसी खास व्यक्ति को नुकसान पहुंचावे, अगर ऐसा करे तो वह ऐयार नहीं पूरा बेईमान और दगाबाज है। ऐयार का यही काम है कि अपने मालिक के लिए छिपे हुए मामले का पता लगाये, दुष्टों चोरों और खूनियों का पता लगाये, राजाओं रईसों की लड़ाइयों को जिनमें बहुत से आदमियों का खून होना सम्भव है अपनी कारीगरी से रोकें और सहज ही में मामले को तै कर डाले। जो लोग इसके विपरीत करते हैं, उन्हें मैं ऐयार नहीं समझता। वे चोर बदमाश और डाकू हैं तथा किसी भले आदमी के पास बैठने लायक नहीं हैं और उनका किसी रईस को

भरोसा न करना चाहिए। अस्तु इस दूकान में जितनी चीजें हैं सब ईमानदार ऐयारों ही के लिये हैं। सम्भव है कि इन चीजों से कोई बुरा काम ले जिसमें कि हम लोगों का कोई कसूर नहीं है मगर हम लोग अगर किसी को ऐसा करते देखते और सुनते हैं तो सजा देने के लिये भी तैयार हो जाते हैं। हम लोग बहुत ठीक और कीमती दवाइयां रखते हैं। हमारे यहां की बेहोशी की दवा अगर किसी को ज्यादे भी खिला पिला या सुंघा दी जाय तो उसका कुछ नुकसान नहीं होता या अगर पांच पांच सात सात दिन तक भी उससे किसी आदमी को बेहोश रक्खा जाय तो दिल और दिमाग में किसी तरह की खराबी नहीं पहुँच सकती। इसी तरह चेहरे पर लगाने के लिए भी जितने तरह के रोगन हैं उनसे बदन की जिल्द में धब्बा नहीं पड़ने पाता और न चमड़े का रंग ही बदलता है। जिल्द में खुरखुरापन नहीं आता। इसके अलावा पक्का रोगन भी इस दूकान में मौजूद है जो कि एक खास किस्म के अर्क से अगर धोया न जाय तो महीनों तक अपना रंग कायम रखता है, मसा और तिल बनाने का मसाला भी इस दूकान में बहुत अच्छा तैयार है। तारीफ तो यह है कि हमारे यहां की किसी दवा में भी बदबू नहीं है, सभी खुशबूदार चीजों के पुट देकर तैयार की जाती हैं। आप इस दूकान की कोई चीज इस्तेमाल करके देखिए। हां इस दूकान में खाने की चीजें भी ऐसी बनती हैं कि जिन्हें आप महीनों तक ऐयारी के बटुए में रख कर सफर में काम ले सकते हैं और बिगड़ने नहीं पातीं तथा उनमें किसी तरह की छूत भी नहीं है अर्थात् खालिस घी चीनी दूध और फलों से बनाई जाती है। आप नमूने के तौर पर कुछ खाकर भी देख सकते हैं।

जमीं०। बेशक आपकी दुकान बड़े काम की है मगर मैं समझता हूं कि यह अभी थोड़े ही दिनों से कायम हुई है।

दूकानदार०। यह तो मैं खुद ही कह चुका हूं कि बड़े बड़े शहरों में हमारे मालिक की बहुत सी दूकानें हैं, यहां भी थोड़े दिनों से एक शाखा खोली गई है।

इतने ही में एक आदमी की सूरत देख कर वह जमींदार चौंक पड़ा जो कि आलमारियों के शीशों को रेशमी कपड़े से पोंछ पोंछ कर साफ कर रहा था। यद्यपि जमींदार ने अपने दिल के भाव को छिपाने के लिए बड़ी कोशिश की मगर फिर भी दूकानदार समझ ही गया और बोला, "मगर इस शहर में हम लोगों को नौकरों की बड़ी तकलीफ हुई हम सिर्फ सात आदमी ऐसे हैं जो कि एक साथ मालिक के भेजे हुए इस शहर में आये हुए हैं और जिनको कि हम अपना साथी कह सकते हैं, बाकी के जितने आदमी आप देखते हैं सब इस शहर से नौकर रक्खे गये हैं और इसीलिए हम लोग दवा के काम में इनसे मदद नहीं लेते।"

जमीं०। ठीक है यह काम आपने बड़ी होशियारी का किया क्योंकि (धीरे से कान में मुंह लगा कर) इस शहर के आदमी बड़े बेईमान होते हैं खास कर इन दिनों तो....

दूकानदार०। मैं उम्मीद करता हूं कि आपसे इस काम में मुझे मदद मिला करेगी।

जमीदार०। जरूर, मैं अक्सर आया करूंगा और अपने दोस्तों को भी लाऊंगा।

दूकानदार०। कोई चीज खरीदने की इच्छा है?

जमीं०। हां मुझे कुछ चीजों की जरूरत भी है जो कि मैं एकान्त में आपसे कहूंगा, आप किसी दूसरे कमरे में चलिए।

जमींदार को साथ लिए दूकानदार साहब जिनका नाम रामेश्वरचन्द्र था एक दूसरे कमरे में चले गये जो खास करके ग्राहकों और रईसों के बैठने व आराम करने के लिए मुकर्रर था। यह कमरा बहुत साफ और साधारण ढंग पर सजा हुआ था। इसकी दीवार और छत आसमानी रंग की थी और जमीन पर सुफेद फर्श बिछा हुआ था तथा दस बारह कुर्सियां और चार पांच कोच भी रक्खे हुए थे जिनकी गद्दियों के ऊपर सुफेद चांदनी बन्द के सहारे बंधी हुई थी। छत में दस बारह शीशे लटक रहे थे जिनमें इस समय रोशनी हो

चुकी थी। रामेश्वरचन्द्र ने जमींदार को ले जाकर एक कोच पर बैठा दिया तथा आप एक कुर्सी खेंच कर उसके पास ही बैठ गया और बातचीत करने लगा।

रामेश्वर०। हां, अब आप फर्माएं आपको किस किस चीज की जरूरत है?

जमींदार०। एक तो मुझे ऐसी पोशाक की जरूरत है जो खास काबुल के रहने वाले अमीर मुगल लोग पहिरते हैं।

रामेश्वर०। तैयार, मौजूद है, और फर्माइये?

जमींदार०। ऐसी दवा भी चाहिए जो आदमी को कम से कम सात दिन तक के लिए गूंगा बना सके।

रामेश्वर०। करीब करीब ऐसी ही दवा मैं दे सकता हूं जो कि किसी की जुबान पर लगा देने से वह बोलने लायक न रहेगा। जबान की शक्ति बिल्कुल जाती रहेगी मगर उसे खाने पीने में किसी तरह को तकलीफ न होगी और न कोई चीज बदजायका मालूम पड़ेगी।

जमीं०। बस इस वक्त मैं बतौर आजमाइश के सिर्फ ये दो चीज ही आपके यहां से खरीदूंगा, अगर आपके यहां की दवा ठीक निकली तो मैं दो तीन दिन में आपसे मिल कर बहुत चीजें खरीदूंगा।

दूकानदार रामेश्वरचन्द्र ने थोड़ी ही देर में दोनों चीजें लाकर जमींदार के सामने रख दीं और दस अशर्फी उनकी कीमत मांगी जो कि उसी वक्त जमींदार ने अपनी कमर से निकाल कर दे दी और कहा कि—'ये चीजें मेरे नौकर के हवाले कर दी जांय जिसे कि मैं दुकान के बाहर छोड़ आया हूं। दूकानदार ने ऐसा ही किया। चलते समय जमींदार ने दूकानदार से कहा—

जमींदार०। दूकान के लिए यह मकान आपको बहुत अच्छा मिल गया है, असल में यह ऐयारों ही के रहने लायक है। मैं इसके हर एक दर्जे, कोठड़ियों, कमरों और तहखानों से वाकिफ हूं।

रामेश्वर०। जी हां यह मकान हमको बहुत अच्छा मिल गया है और मकान मलिक भी बहुत नेक आदमी है।

जमींदार०। हां मैं जानता हूं। यह मकान यहां के एक ओहदेदार रईस

दामोदरसिंह का है और उन्होंने अपने दामाद इन्द्रदेव को दहेज के साथ दे दिया है। तो आपने इसे किससे किराये पर लिया है? दामोदरसिंहजी से या इन्द्रदेव से?

रामेश्वर०। मेरे साथ तो दामोदरसिंहजी ने इसका बन्दोबस्त किया है, इन्द्रदेवजी की सूरत मैंने अभी तक नहीं देखी मगर सुना है कि यहां के दारोगा साहब के वे गुरुभाई हैं और बड़े लायक आदमी हैं?

जमींदार०। ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है।

इतना कह कर जमींदार वहां से रवाना हुआ मगर अभी दूकान के बाहर नहीं हुआ था कि सामने से दूकान के अन्दर आते हुए गदाधरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कि इस समय अपनी असली सूरत में था। जमींदार भूतनाथ को देख कर सहम गया लेकिन भूतनाथ ने उस एक मामूली निगाह डालने के अतिरिक्त और कुछ खयाल नहीं किया।

उस जमींदार के चले जाने के बाद रामेश्वरचन्द्र ने भूतनाथ को अन्दर वाले एकान्त के कमरे में बड़ी खातिर से बैठाया और पूछा, "कहिए कुशल तो है?"

भूत०। हम लोगों से कुशल मंगल पूछना तो व्यर्थ ही है। जब तक निद्रादेवी की गोद में हैं तब तक तो कुशल है और जहां उससे सम्बन्ध छूटा कि दिमाग में चक्कर आने लगे। तरह तरह के खयालात तरह तरह के विचार और तरह तरह के मनसूबों से दम भर के लिए भी फुरसत नहीं। केवल इतना ही नहीं, शरीर का सुख भी मिलना कठिन ही होता है। न दिन को दिन गिनना पड़ता है न रात को रात, न जाड़े का खौफ न गर्मी का खयाल, न बरसात से डर न धूप से परहेज। बस केवल अपने काम की धुन लगी रहती है, तिस पर फिर मेरे ऐसे कम्बख्त का तो पूछना ही क्या है जिसे मालिक के काम की फिक्र तो नाम ही मात्र को है परन्तु बाहरी सैकड़ों तरफ के तरद्दुदों का शिकार हो रहा है। सच तो यों है कि ऐयारी का पेशा ही बहुत बुरा होता है।

रामेश्वर० । (मुस्कुरा कर) भला आपकी इस बात को मैं क्योंकर मान लूंगा ?

भूत० । सो क्यों ?

रामेश्वर० । आपको ऐयारी पेशे में तो किसी तरह की तकलीफ हुई नहीं, हा मानसिक विकारों के कारण आप जरूर परेशान हो रहे हैं । इसमें ऐयारी पेशे का तो कोई कसूर है नहीं इसे तो आप मुफ्त ही बदनाम कर रहे हैं ।

भूत० । एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है मगर मेरे मानसिक विकारों की उत्पत्ति तो ऐयारी पेशे ही के सबब से है ।

रामेश्वर० । सो भले ही हुआ करे । सभी ऐयारों का दिल तो एक सा नहीं होता ! इन्द्रदेव क्या ऐयार नहीं हैं ? फिर आपकी तरह तरददुद में क्यों नहीं फंसते ?

भूत० । (मुस्कुरा कर) उनकी बात जाने दो ! वे महात्मा हैं बल्कि देवता हैं, हम लोग नालायक और अभागे हैं अतएव दुःख भी हमी लोगों के हिस्से में पड़ा हुआ है । खैर इस बहस को जाने दो क्योंकि मुझे इस समय इतनी फुरसत नहीं है । यह बताओ कि तुमको भैयाराजा को कुछ खबर है मैं इस समय उन्हीं का पता लगाने के लिए तुम्हारे पास आया, तुम्हारी दूकान तो हम लोगों के लिए एक लाभदायक अड्डा है ।

रामेश्वर० । इसी ख्याल से तो यह कारखाना खोला गया हैं । अच्छा? तो आप इस समय भैयाराज का केवल पता ही पूछना चाहते हैं या उनसे मिलना भी चाहते हैं ?

भूतनाथ० । वाह वाह, अगर मुलाकात हो जाय तो फिर पूछना ही क्या है ?

रामेश्वर० । वे आज दोपहर के समय भेष बदले हुए मेरे पास आये थे ! आपके नाम की एक चीठी भी दे गये हैं और कह गये हैं कि आधी रात के समय हम पुनः यहां आवेंगे अगर गदाधरसिंह से मुलाकात हो जाय तो

उन्हें उस समय यहां आकर मुझसे मिलने के लिए कह देना। (एक चीठी निकाल कर और भूतनाथ के हाथ में देकर) लीजिये इस चीठी को पढ़िये।

भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र के हाथ से चीठी ले ली और बड़े उत्साह से उसे पढ़ना आरम्भ किया। यह लिखा हुआ था :—

"मेरे प्यारे गदाधरसिंह,

क्या उस बात का पता लगा जिसकी खोज में तुम मुझसे जुदा हुए थे? क्या वास्तव में वही शैतान उसका चोर है जिस पर तुमने शक किया था? मैं आधी रात के समय यहां आऊंगा, अगर सम्भव हो तो मुझसे जरूर मुलाकात करो, यदि न मिल सको तो इस चीठी का जवाब लिख कर रामेश्वर के पास रख दो, मैं आकर ले लूंगा!

तुम्हारा वही—भैया"

चीठी पढ़ने के बाद भूतनाथ ने भी उसी जगह से कलम दावात और कागज उठा कर यह जवाब लिखा—

"मेरा खयाल ठीक निकला, उसी शैतान ने यह काम किया है।

—भूत०"

चीठी लिफाफे में बन्द करके भूतनाथ ने उस पर अपनी मोहर लगाई और रामेश्वर के हाथ में देकर कहा, "यह जवाब उनको दे देना और कह देना कि मैं रात को यहां उनसे जरूर मिलूंगा, अगर मेरे आने में देर हो जाय तो मेरा इन्तजार करें।"

रामेश्वर०। (चीठी लेकर) बहुत खूब, मैं उन्हें तब तक रोके रहूंगा जब तक आप न आवेंगे। (मुस्कुरा कर) कहिये कुछ सौदा खरीदना है?

भूत०। (हंस कर) हां तुम्हारा सर खरीदना है! अच्छा यह तो बताओ कि यह जमींदार कौन था जो अभी अभी यहां से गया है?

रामेश्वर०। इसमें तो कोई शक नहीं कि कोई ऐयार है मगर बेवकूफ है। ज्यादे हाल अभी कुछ मालूम नहीं हुआ क्योंकि आज वह पहिले ही मर्तबे यहां आया है।

भूत० । मुझे उस पर शक होता है कि वह जरूर मेरे बागी शागिर्दों में से है।

रामे० । आपके शक को हम लोग यकीन के दर्जे तक मानते हैं, अगर ऐसा भी हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। देखिये दूसरी मुलाकात में कुछ न कुछ पता लग ही जायगा।

भूत० । अच्छा तो मैं जाता हूं, ज्यादे देर तक नहीं ठहर सकता।

रामे० । क्या कोई जरूरी काम है? कुछ भंग बूटी की नहीं ठहरेगी?

भूत० । नहीं इस समय मुझे भंग का कुछ खयाल नहीं है क्योंकि एक कठिन काम का बांधनू बांध चुका हूं जिसे आज जरूर पूरा करना है। हां, भैयाराजा से मिलने के समय जब रात को आऊंगा तो जरूर बूटी छानूंगा और स्नान करके तुम्हारा ही सर खाऊंगा भी।

रामे० । (हंस कर) बहुत अच्छा मैं हाजिर हूं, बन्दोबस्त कर छोड़ूंगा।

भूत० । (कुछ सोच कर) अच्छा एक काम करो। कुछ सामान दो तो मैं इसी जगह अपनी सूरत भी बदल लूं नहीं तो तरद्दुद करना पड़ेगा।

रामे० । लीजिये हर तरह का सामान तो मौजूद ही है, चलिये फिर तहखाने में।

भूत० । हां चलो।

दोनों आदमी उठ खड़े हुए और पास का एक दर्वाजा खोल कर दूसरे कमरे में चले गये।

कुछ देर के बाद भूतनाथ एक साधू को सूरत बना हुआ हाथ में एक सुन्दर तानपूरा लिये उस कमरे के बाहर निकला। साथ में रामेश्वरचन्द्र भी मौजूद था जिससे कुछ बातें करने के बाद भूतनाथ दूसरे चोर दर्वाजे की राह से मकान के बाहर निकला।

भूतनाथ इस दूकान के अन्दर अकेला आया था सही परन्तु उस बाजार में वह अकेला नहीं आया था बल्कि उसके साथ सूरत बदले हुए उसके दो

शागिर्द भी थे जिन्हें वह दूकान के बाहर बल्कि दूकान से कुछ दूर हट कर छोड़ गया था और कह गया था कि इसी जगह घूमते फिरते कुछ समय बिताओ और मेरे आने का इन्तजार करो। मैं रामेश्वरचन्द्र की दूकान में जाता हूं, शायद कोई काम बन जाय। अस्तु जब भूतनाथ दूकान से निकल कर बाहर आया तो इशारे से अपने को प्रगट करके उन दोनों को साथ लिया और उस सड़क पर चल पड़ा जो खास बाग की तरफ चली गई थी।

इसी सड़क पर कुछ दूर आगे जाकर नागर का मकान था जो एक छोटे से बागीचे के अन्दर बना हुआ था या यों कहिये कि उस मकान के चारो तरफ कुछ थोड़ी सी जमीन छूटी हुई थी जिसमें उसने कुछ फूल पत्ते और चन्द मेवों के दरख्त लगा रक्खे थे, और एक छोटी सी चार-दीवारी कायम करके सड़क की तरफ एक फाटक बनवाया था जहां प्रायः उसके दो एक नौकर रहा करते थे।

नागर के मकान के सामने एक महाजन का मकान था जिसके आगे ऊंचा और पक्का चबूतरा था जिस पर दस पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे। इस समय जब कि भूतनाथ वहां पहुँचा बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। चलता चलता भूतनाथ वहां अटक गया और चबूतरे के पास खड़ा होकर नागर के मकान की तरफ देखने लगा। उस फाटक के बाहर निकलते हुए एक आदमी को भूतनाथ ने देखा और अपने एक शागिर्द से कहा कि मैं इसी जगह ठहरता हूं तुम इसके पीछे पीछे जाकर पता लगाओ कि यह आदमी कौन है। मुझे शक होता है कि यह दारोगा साहब का आदमी है।

आज्ञानुसार भूतनाथ का शागिर्द उस आदमी के पीछे पीछे चला गया और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोला, "आपका खयाल बहुत ठीक है, वह दारोगा साहब का खास कृपापात्र (नौकर) टोमल है, आगे तम्बोली की दुकान पर बैठ कर पान बनवा रहा है।"

भूत०। (प्रसन्न होकर) तो बस इसमें कोई सन्देह नहीं कि दारोगा साहब यहां आ गये हैं। सच तो यों है कि इस समय ईश्वर ही ने मेरी सहा-

यता की, जिस काम के लिए मैं जा रहा था वह ईश्वर चाहेगा तो इसी जगह निकल जायगा। अगर दारोगा के साथ साथ जैपाल भी यहाँ आया हो तब तो कहना ही क्या है।

शागिर्द०। जैपाल जरूर आया होगा। ऐसे ऐसे मौके पर दारोगा उसे अपना सहायक बना कर जरूर साथ रखता है और उसकी ताकत पर भरोसा करता है।

भूत०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है। अच्छा मैं इसी भेष में इस मकान के अन्दर जाने का उद्योग करता हूँ, जब जाऊंगा तुम दोनों को अपने साथ लेता जाऊँगा। वहाँ क्या करना होगा सो मैं अभी से इसी जगह तुम दोनों को समझाए देता हूं।

इतना कह कर भूतनाथ ने समय के अनुसार जो कुछ मुनासिब था अपने दोनों शागिर्दों को समझा दिया और इसके बाद उसी चौतरे पर बैठ कर तानपूरा छेड़ता हुआ गाने लगा।

भूतनाथ परले सिरे का गवैया था और इस फन को वह बहुत अच्छी तरह जानता था परन्तु सिवाय उसके अंतरंग मित्रों के और कोई विशेष इस बात को जानता न था और न वह हर एक के सामने कभी गाता ही था, यहां तक कि दारोगा और नागर को भी इस बात का पूरा ज्ञान न था।

भूतनाथ ने बड़ी विज्ञता के साथ बागेश्वरी की एक तान लगाई जिसकी आवाज नागर के कान तक पहुंची और एक दफे उसका कलेजा हिल गया। नागर वेश्या थी और गाने बजाने का काम करती थी। यद्यपि ओस्तादों के खयालसे वह इस फनमें ओस्ताद नहीं मानी जाती थी परन्तु वास्तव में उसको समझ अच्छी थी और गाने बजाने का उसे बहुत शौक था। वह हमेशा इस फन के ओस्तादों को ढूंढ़ा करती थी। भूतनाथ भी इस सबब से कि नागर को संगीत का बहुत शौक है और वह बहुत अच्छा गाती है उसे जी जान से प्यार करता था। दारोगा का नागर से मुहब्बत करना यद्यपि भूतनाथ को बुरा मालूम होता था मगर नागर भूतनाथ से यही प्रकट करती थी कि मैं मुह-

ब्बत तुम ही से करती हूं और दारोगा साहब को केवल रकम वसूल करने के लिए लगा रक्खा है, मगर वास्तव में क्या बात थी सो नागर ही जाने, रण्डियों की माया बड़े बड़े बुद्धिमानों को उल्लू बना डालती है।

निःसन्देह इस समय दारोगा साहब और उनके साथ जैपाल भी नागर ही के यहां बैठे हुए थे और भूतनाथ की तान ने उन दोनों का दिल भी अपनी तरफ खैंच लिया था। कुछ देर तक तो वे तीनों सन्नाटे में आकर उस गीत को सुनते रहे इसके बाद नागर ने दारोगा से इजाजत लेकर अपना आदमी यह देखने के लिए भेजा कि गाने वाला कौन है।

जब उसे यह मालूम हुआ कि गाने वालाएक साधू है जो अपने दो शिष्यों के साथ सामने।के चबूतरे पर बैठा गा रहा है, तब उसने बड़े आग्रह के साथ साधूरूपी भूतनाथ को बुलाया और दो चार नखरे तिल्ले तथा हां नहीं के बाद भूतनाथ नागर के पास गया जहां दारोगा और जैपाल मस्त बैठे हुए नागर से बातें कर रहे थे।

भूतनाथ अपने दोनों शागिर्दों को बंगले के बाहर बाग में छोड़ गया जहां नागर के कई नौकर सिपाही भी थे और खुद जब नागर के सामने गया तब उसे मालूम हुआ कि इस समय ये तीनों आदमी शराब के नशे में मस्त हैं जरूरहमारे आने के पहिले यहां बोतल और प्याला भी मौजूद रहा होगा।

तीनों आदमियों ने साधूरूपी भूतनाथ को प्रणाम किया। नागर ने बड़ी खातिर से उसे अपने पास बैठाया तथा उसके गाने की तारीफ करने लगी।

नागर०। (साधू से) कहिये महात्माजी, आपका मकान कहां है?

साधू०। भला साधुओं का भी कहीं मकान होता है?

नागर०। क्यों नहीं, आखिर कहीं गुरु का स्थान या मठ वगैरह तो होता ही है।

साधू०। जो अपना मठ और स्थल रखते हैं वे साधू नहीं हैं। हम उन लोगों में नहीं हैं जिन्हें अपने पीछे का खयाल रहता है। हम तो जहां रह गये वहीं हमारा स्थान है और जिसने हमें भोजन दे दिया वही हमारा गुरु

और सर्वस्व है।

नागर०। ठीक है, वास्तव में आप लोगों के लिए ऐसा ही होना चाहिए। अब यह बताइये कि इस समय आपका आना कहां से होता है।

साधू०। हमें इस शहर में आये अभी तीन चार घंटे से ज्यादे नहीं हुए हैं, नैपाल से आ रहे हैं, वहाँ बड़े बड़े गवैयों का जमघट हुआ था, बस गाना सुनने के शौक में वहां गये थे।

नागर०। आखिर इस समय डेरा कहां किया है?

साधू०। मैं तो पहिले ही कह चुका कि जहाँ बैठ गये वही डेरा है।

नागर०। तो बेहतर होगा कि आप मेरे ही मकान में डेरा डालें, यहाँ अक्सर गाना बजाना भी हुआ करता है और आप भी बहुत अच्छा गाते हैं।

साधू०। खैर जैसा होगा देखा जायगा।

नागर०। मुझे आपकी आवाज बहुत ही भली मालूम हुई इसीलिए आपको तकलीफ दी है, अगर कृपा कर कुछ गाइये तो...

साधू०। क्या हर्ज है, मैं गाता हूं सुनिये, मालूम होता है कि आपको भी गाने का शौक है।

इतना कह कर साधू महाशय ने तानपुरा छेड़ा और मालकोस का एक ध्रुपद गाने के बाद उसे जमीन पर रख दिया। इनका गाना सुन कर दारोगा नागर और जैपाल तीनों ही बहुत प्रसन्न हुए और उनकी यही इच्छा हुई कि बाबाजी और कुछ गावें मगर जब उन्होंने बाबाजी से गाने के लिए कहा तब बाबाजी ने यही जवाब दिया कि 'अब तो गांजे का एक दम लगा लेंगे तब गावेंगे।'

नागर०। मैं आपके लिए अभी अभी गांजे का बन्दोबस्त करती हूं।

साधू०। बन्दोबस्त करने की कोई जरूरत नहीं, मेरे पास सब सामान अर्थात गांजा सुतीं चिलम वगैरह तैयार हैं, आप केवल अग्नि मंगा दीजिये और कमरे के सब दर्वाजे बन्द करके मेरा गाना सुनिये। दर्वाजा बन्द किये बिना आवाज कायम नहीं होती और गूंजती भी नहीं।

नागर०। जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा।

नागर ने एक बर्तन में कंडे की आग मंगवा दी और अपने हाथ से कमरे के सब दर्वाजे बन्द कर दिये। साधू ने अपनी कमर में से अनमोल अदभुत गांजा जिसमें बेहोशी पैदा करने वाली एक प्रकार की दवा मिली थी निकाला और चिलम तैयार कर धूएं का गुब्बार बांधने लगे, यहां तक कि धूएं से तमाम कमरा भर गया। यद्यपि यह बात दारोगा साहब को कुछ बुरी मालूम हुई मगर नागर की खातिर से चुप रहे। साधू ने तान पूरा उठा लिया और गाना शुरू किया।

अबकी दफे गाना सुन कर सब के सब मदहोश हो गये। उस गांजे के धूएं ने भी सब का दिमाग बिगाड़ दिया और धीरे धीरे नागर दारोगा और जैपाल तीनों आदमी बेहोश हो कर जमीन पर लम्बे हो गये।

उस समय भूतनाथ कमरे के बाहर आया और अपने दोनों शागिर्दों को ढूंढने लगा। थोड़ी दूर जाकर भूतनाथ ने देखा कि उसके दोनों शागिर्द वहां खड़े हैं और इधर उधर कई लौंडी गुलाम तथा सिपाही बेहोश पड़े हैं भूतनाथ को देखते ही उसके एक शागिर्द ने कहा, "हम लोग अपना काम कर चुके हैं, अब यहां कोई आदमी ऐसा नहीं है जो होश में हो।"

भूत०। शाबाश, खूब काम किया! कमरे के अन्दर में भी अपना काम कर चुका हूं, अब तुम दोनों आदमी मेरे पीछे पीछे चले आओ।

दोनों शागिर्दों को साथ लिये हुए भूतनाथ पुनः कमरे के अन्दर गया। जैपाल के बदन पर से उसके तमाम कपड़े उतार कर उसने जैपाल को अपने शागिर्दों के हवाले किया और कहा, "बस इसे तुम दोनों आदमी उठा कर लामाघाटी में ले जाओ और कैद कर रक्खो तथा यहां जितनी हल्की और कीमती चीजें दिखाई देती हैं सभी उठा कर लेते जाओ।"

भूतनाथ की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द वहां की कीमती चीजें और जैपाल को लेकर चले गये और तब भूतनाथ कमरे का दर्वाजा बन्द करके दीवार के साथ लगे हुए एक आइने के सामने बैठ गया। बहुत चालाकी

से उसने अपनी सूरत जैपाल की सूरत के समान बनाई और उसके तमाम कपड़े पहिर कर तथा कमरे का एक दरवाजा खोल कर उसी जगह दारोगा और नागर के पास लेट गया।

बची हुई रात और पहर भर दिन चढ़े तक वे लोग बेहोश पड़े रहे।

भूतनाथ की आंखों में यद्यपि नींद न थी परन्तु वह मौके का इन्तजार करता हुआ चुपचाप उसी जगह पड़ा रहा। इस बीच में भूतनाथ ने देखा कि नागर की लौंडियां और नौकर कई दफे कमरे के दर्वाजे पर उन लोगों को देखने के लिए आए परन्तु नागर और बाबाजी वगैरह को बेहोश देख चुपचाप लौट गए, उन लोगों को जगाने या होशियार करने की किसी ने हिम्मत नहीं की।

सब के पहिले दारोगा की बेहोशी दूर हुई और वह उठ कर बड़ी घबराहट के साथ चारो तरफ देखने लगा तथा पहर भर दिन चढ़ा हुआ जान कर बहुत ही परेशान हुआ क्योंकि वह नागर के घर में बहुत चोरी के साथ छिप कर आया करता था। अब दिन के समय यहां से जाना उसे बड़ा कठिन मालूम हुआ तथा इस बात की भी चिन्ता हुई कि न मालूम हमारे घर पर हमारे न रहने के सबब से लोगों को क्या गुमान हुआ होगा और राजा साहब ने भी मुझे याद किया होगा या नहीं, इत्यादि।

होश हवास दुरुस्त करके दारोगा ने नागर और जैपाल को हिला हिला कर जगाया और जब वे दोनों भी उठ कर बैठे तो इस तरह पर बातचीत होने लगी—

नागर०। (आश्चर्य से चारो तरफ देख कर) यह हम लोगों को क्या हो गया था? (दारोगा से) आपने हमको जगाया क्यों नहीं!

दारोगा०। मैं खुद जागता तब तो तुम्हें भी जगाता!

नागर०। आखिर यह मामला क्या है!

जैपाल०। क्या उस साधू ने हम लोगों को धोखा दिया?

दारोगा०। बेशक यही बात है।

नागर०। (चारो तरफ देख कर) जरूर वह कोई ऐयार था। देखिए मेरी बहुत सी कीमती चीजें भी यहां से गायब हैं। सोने के गुलदस्ते, इत्र-दान पानदान, रिकाबियां इत्यादि सभी चीजें तो गायब हैं उस खूटी पर मेरी मोती की माला टंगी हुई थी वह भी दिखाई नहीं पड़ती ! बेशक वही इन सब चीजों को भी उठा ले गया ? कम्बख्त लौंडी गुलाम और सिपाहियों ने भी हम लोगों की कुछ खबर नहीं ली।

दारोगा०। मालूम होता है कि उस साधू ने उन लोगों पर भी कोई करामात की होगी, जरूर वह कोई ऐयार था मगर हम लोगों को यहां छोड़ क्यों गया यही आश्चर्य है।

जैपाल०। अजी वह ऐयार नहीं था बल्कि चोर था, तभी तो यहां की कीमती चीजें सब उठा ले गया। ऐयार लोग चोरी करने के लिए किसी के घर में नहीं घुसते, अगर वह ऐयार होता तो जरूर हम लोगों में से किसी न किसी को ले गया होता।

दारोगा०। तुम्हारा कहना ठीक है, वह जरूर चोर था ऐयार नहीं।

नागर०। आखिर लौंडी गुलाम और पहरे के सिपाही लोग क्या झख मार रहे थे ? मैं उन्हें बुला कर पूछूं तो कुछ पता लगे।

इतना कह कर नागर वहां से उठी और बाहर जाकर उसने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि उस साधू के साथ दो शागिर्द भी थे जिन्हें वह बंगले के बाहर छोड़ गया था। उन्हीं दोनों शागिर्दों ने अपनी कारीगरी से बाहर के लौंडी गुलाम और सिपाहियों को बेहोश करके बेकाम कर दिया था इसलिए किसी को भी इस बात की खबर नहीं है कि वह साधू कमरे के अन्दर से क्या ले गया और कब चला गया।

अपने नौकरों की फजीहत करने के बाद नागर पुनः कमरे के अन्दर आई और दारोगा साहब से बाहर का सब हाल सुना कर बोली, "आपकी हुकूमत इस जमानिया में बहुत ही अच्छी है। ऐसे ऐसे चोर और बदमाश यहां बसते हैं और जब आप ही लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं तो

बेचारे रिआया लोगों की रक्षा तो बस विधाता ही के आधीन है। मेरी जितनी चीजें यहां से गईं सब आप ही को देनी पड़ेंगी !!"

दारोगा०। (शर्मिन्दगी के साथ) बेशक मैं दूंगा और तुम्हें दिखा दूंगा कि ऐसे बदमाशों के साथ मैं कैसा सलूक करता हूं। (जैपाल की तरफ देख के) अब यहां से घर जाना मेरे लिए बड़ा ही मुश्किल है। जितना ही मैं छिप कर रात के समय आता हूं उतना ही मेरा परदा खुला चाहता है। अब दिन के समय मैं क्योंकर यहाँ से बाहर निकलूंगा ? न मालूम मेरे घर पर कितने आदमी आकर लौट गये होंगे और लोगों के दिल में क्या बातें पैदा हो रही होंगी अथवा लोग मेरी खोज में हैरान हो रहे होंगे। राजा साहब को अगर मेरे गायब हो जाने की खबर लगी होगी तो........

जैपाल०। बेशक बड़ी मुश्किल का सामना है। मेरी तो यह राय है कि आज दिन भर आप इसी घर में रह जाइये, मैं जाकर सब तरह की आहट ले आता हूं और आपके आदमियों को भी शान्ति दे आता हूं। इसके अतिरिक्त यदि और कोई जरूरी काम हो तो कहिये मैं उसे भी ठीक कर आऊं।

दारोगा०। तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा ही करने से काम चलेगा।

इतना कह कर दारोगा ने जैपाल को एकान्त में ले जाकर कुछ समझाया और अपनी कमर में से तीन चार ताल्लियों का एक गुच्छा निकाल कर और जैपाल के हाथ में देकर कहा, "हमारे घर में तुम्हें कोई रोकने वाला है नहीं क्योंकि हमारे सभी आदमी जानते हैं कि दारोगा साहब में और जैपाल में कोई भेद नहीं है, अस्तु तुम घर में जाकर एक दफे कैदियों की खबर लेना और उनके लिये भोजन और पानी का बन्दोबस्त अपने हाथ से कर देना। इसके बाद तुम राजा साहब से मेरे कहे मुताबिक कार्रवाई करना और रामेश्वरचन्द्र की भी खबर लेना जिसने ऐयारी की दुकान खोल रक्खी है। असल में वह कौन है इस बात का पता लगाना बहुत जरूरी है। मैं अपने यहां के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह को भी इस काम पर मुकर्रर कर आया था, शायद उन्होंने कुछ पता लगाया हो। शाम को

जब तुम यहाँ आओगे और तुम्हारी जुबानी सब हाल चाल मुझे मालूम हो जायगा तब मैं यहाँ से घर चलूंगा।"

जैपाल, जो असल में भूतनाथ था, दारोगा से बिदा होकर नागर के मकान से बाहर निकला और पहिले रामेश्वरचन्द्र की दूकान की तरफ चला, क्योंकि वह रामेश्वरचन्द्र से वादा कर आया था कि रात को जब भैयाराजा यहां आवें तो उन्हें रोकना मैं उनसे मिलने के लिये जरूर आऊंगा, अस्तु वह इस बात से बेचैन था कि वादे के मुताबिक भैयाराजा से मिलने के लिये रामेश्वरचन्द्र की दूकान में न जा सका।

सातवां बयान

रामेश्वरचन्द्र की दूकान की तरफ जाते जाते रास्ते में भूतनाथ ने सोचा, "मैं रामेश्वरचन्द्र से मिलने के लिये जाता तो हूं परन्तु यदि मैं अपना परिचय न दूं और जैपाल ही बना हुआ उससे मिलूं तो क्या वह मुझसे सीधा सादा और रूखा बर्ताव करेगा या दारोगा का दोस्त समझकर डरेगा और खातिरदारी से मिलेगा? अथवा मुझे फंसाने की फिक्र करेगा? वह क्या करेगा इस बात को देखना चाहिये और कुछ देर तक जैपाल ही बने रह कर और जैपाल ही के ढंग पर बातचीत करके जांचना चाहिये कि वह कैसा बर्ताव करता है।"

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ भूतनाथ रामेश्वरचन्द्र की दूकान पर जा पहुंचा और जब उससे मुलाकात हुई तो जिस तरह पढ़े लिखे दूकानदार लोग ग्राहकों की खातिरदारी करते हैं उसी तरह खातिरदारी के साथ वह नकली जैपाल को दूकान के अन्दर ले गया और अपने एकान्त वाले बैठके के कमरे में ले जाकर कुर्सी पर बैठा के बातचीत करने लगा।

रामेश्वर०। कहिए मिजाज तो अच्छे हैं?

जैपाल०। ईश्वर की कृपा से मैं बहुत अच्छा हूं। (मुस्कुरा कर) आप अपनी दूकान का हाल कहिए, दिनों दिन तरक्की ही हो रही है न?

रामेश्वर० । आप लोगों की कृपा रहेगी तो तरक्की में सन्देह ही क्या है ? अभी तो यहां मुझे आठ पहर भी नहीं बीते हैं मगर फिर भी मैं यह जरूर कहूंगा कि आप और दारोगा साहब किस्मतवर हैं क्योंकि आवे के साथ ही एक अनूठा शिकार हाथ लगा।

जैपाल० । (ताज्जुब और प्रसन्नता की सूरत बना कर) हां !! किसको फांसा सो तो कहो ?

रामेश्वर० । यहां आकर हम लोगों ने असली रामेश्वर को खूब ही धोखा दिया और उसे फंसा लेने के बाद खुद रामेश्वरचन्द्र बन कर इस दूकान पर कब्जा कर लिया । उसके नौकरों को अभी तक इस बात की कुछ भी खबर नहीं लगी । इसके बाद रात को तीन बजे भैयाराजा यहां आये । मालूम होता है कि उन्होंने गदाधरसिंह और रामेश्वरचन्द्र से यहां आकर मिलने का वादा किया था । खैर वे तो हमारी तरफ से बेफिक्र ही थे इसलिए सहज ही में फंस गये । कुछ खिला पिला कर हमने उन्हें बेहोश कर दिया और गिरफ्तार कर लिया ।

जैपाल० । शाबाश, शाबाश, यह बड़ा ही काम हुआ । इस समय वे दोनों कहां हैं ?

रामेश्वर०। इसी मकान में हैं, नीचे के तहखाने में मैंने उन्हें बन्द कर रक्खा है, अब इस फिक्र में हूं कि किसी तरह मौका देख कर उन्हें दारोगा साहब के घर पहुँचाया जाय और यहां के आदमियों को किसी तरह का गुमान न होने पावे ।

जैपाल० । ठीक है, तो इस काम को मैं अपने हाथ से करूंगा । रात को मैं कुछ आदमियों को साथ लेकर सौदा खरीदने के बहाने यहाँ आऊंगा और यह काम बड़ी खूबसूरती के साथ कर दूंगा, तब तक उनकी हिफाजत करो ।

नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ का तो यहां की अवस्था जान कर कलेजा हिल गया। यह तो सिर्फ इत्तिफाक की बात थी कि नकली रामेश्वरचन्द्र ने भूतनाथ को असली जैपाल समझ कर सब हाल कह दिया

नहीं तो बड़ा ही बुरा होता और धोखे में पड़ कर स्वयं भूतनाथ भी शायद गिरफ्तार हो जाता मगर खैरियत गुजरी कि ऐसा नहीं होने पाया। असली रामेश्वरचन्द्र वास्तव में भूतनाथ का शागिर्द है और जितने आदमी दूकान के मुखिया हैं सभी भूतनाथ और भैयाराजा के शागिर्द और नौकर हैं।

भैयाराजा ने इन्द्रदेव की मदद से और भूतनाथ के भरोसे पर यह ऐयारी की दूकान कायम की थी और निःसन्देह इस दूकान के जरिये ये लोग बड़े बड़े अनूठे काम कर गुजरते मगर दारोगा के ऐयारों ने इनके काम में बाधा डाल दी जिससे भूतनाथ को बड़ा ही कष्ट हुआ और वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। बहूरानी को छुड़ाने की फिक्र करते करते भैयाराजा से भी हाथ धो बैठे। अब किस तरकीब से इन सभों को छुड़ाया जाय? अगर खुल्लम खुल्ला नकली रामेश्वर से भिड़ जांय तो यह दूकानदारी चौपट हो जायगी और फिर इस दूकान के जरिये से कुछ भी काम न निकलेगा। दूकानदारी तो अब चौपट हो ही जायगी बल्कि चौपट हो गई क्योंकि दारोगा के ऐयारों को मालूम हो ही गया होगा कि यह जाल वास्तव में गदाधरसिंह का फैलाया हुआ है परन्तु फिर भी जब तक जैपाल बना हुआ दारोगा को अपने कब्जे में रक्खूंगा तब तक इस दूकान से कुछ न कुछ काम निकलता ही रहेगा, या जब तक दारोगा को यह विश्वास रहेगा कि हमारा ही ऐयार रामेश्वरचन्द्र बना हुआ इस दूकान पर है तब तक यह दूकान कायम रहेगी। अगर कोई ऐसी तर्कीब निकल आवे कि हम इस ऐयार को गिरफ्तार करके पुनः अपने रामेश्वरचन्द्र को यहां कायम कर दें तो बड़ा ही काम हो। वह दारोगा के आदमियों के सामने दारोगा ही का एक ऐयार बना रहेगा और उन्हीं के ढब की बातें किया करेगा। ऐसी अवस्था में काम भी ज्यादे निकलेगा, मगर समस्या जरा कठिन है। मेरे ज्यादे देर तक यहां ठहरने से या विशेष बातचीत करने से कहीं इस ऐयार को मुझी पर शक न हो जाय। हां यह भी तो मालूम होना चाहिए कि असल में यह ऐयार कौन है? क्या बिहारीसिंह और हरनामसिंह में से

यह कोई है ? चलती समय दारोगा ने मुझसे कहा था कि मैंने अपने दोनों ऐयारों को इस काम पर मुकर्रर किया है। जरूर यह उन्हीं दोनों में से कोई होगा। इस समय दारोगा के मकान पर मेरा जाना भी बहुत जरूरी है, अगर ऐसा न करूंगा तो बड़ा हर्ज होगा, मगर अब इसका पीछा छोड़ देना भी मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। यद्यपि मैंने इससे यह कह दिया है कि रात को आकर दोनों कैदियों को ले जाऊंगा, मगर यह बात ठीक नहीं है। खैर मैं कोई न कोई तरकीब ऐसी जरूर करूंगा कि इसे फंसा लूं।

इसी तरह की बातें भूतनाथ ने थोड़ी देर में सोचीं सो भी ऐसे ढंग से कि नकली रामेश्वरचन्द्र को किसी तरह का शक नहीं हुआ और न उसने यह समझा कि जैपाल कुछ सोच रहा है।

नकली रामेश्वर०। अच्छा तो अब आपका इरादा क्या है सो कहिये।

भूत०। इरादा तो यही था कि इस समय यहां से जाकर दारोगा साहब का जरूरी काम करूं और रात को यहीं आकर दोनों कैदियों को ले जाऊं मगर फिर सोचता हूं कि रात को मेरा यहां आना शायद कठिन हो जाय तो ताज्जुब नहीं क्योंकि एक ऐयार ने दारोगा साहब को बेढब धोखे में डाल कर उन्हें नागर के मकान में फंसा दिया और वे इस समय दिन होने के कारण अपने घर जा नहीं सकते, मैं उनके घर जा कर उनके बिगड़े हुए कामों को सुधारने की फिक्र करूंगा और उनके गायब होने से जो घबराहट फैली हुई होगी उसे शान्त करने के बाद राजा साहब से मिलूंगा क्योंकि उन्होंने दारोगा साहब को जरूर याद किया होगा।

नकली रामेश्वर०। (आश्चर्य से) किसी ऐयार ने दारोगा साहब को धोखे में डाला ? क्या मामला हुआ सो तो कहिए।

भूत०। अजी ऐसी दिल्लगी हुई कि अगर सुनोगे तो हंसते हंसते लोट जाओगे।

नकली रामेश्वर०। क्या क्या, कुछ कहिये भी !

भूत०। एक बड़े महात्मा बाबाजी आये थे। नागर के सामने वाले

मकान के नीचे जो चबूतरा है उसी पर बैठ कर गाने लगे। गाना बेशक मजेदार था, सुनने के साथ ही नागर का जी बेचैन हो गया? उसने बाबाजी को अपने यहाँ बुलवाया, बड़े नखरे तिल्ले के साथ बाबाजी आये और सभों को उल्लू बना गये।

इतना कह कर नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ ने मसखरेपन के साथ वह सब हाल बयान किया जो उसकी बदौलत नागर के मकान पर हुआ था। उसे सुन कर नकली रामेश्वर पहिले तो बहुत हंसा और तब अफसोस करने लगा। इसके बाद दोनों आदमियों में देर तक बातचीत होती रही। अन्त में भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र से कहा कि 'अच्छा होता अगर इस समय मैं असली रामेश्वरचन्द्र और भैयाराजा से मुलाकात कर लेता; सम्भव है कि उनकी मुलाकात से कोई काम निकल जाय, फिर क्या जाने रात को आना हो या न हो।'

नकली रामेश्वरचन्द्र ने इस बात को खुशी से मंजूर कर लिया और कमरे का दरवाजा बन्द करके (जिससे किसी को कुछ मालूम न हो) भूतनाथ को उस कोठड़ी में ले गया जिसमें तहखाने का रास्ता दीवार में बहुत ही गुप्त ढंग से बना हुआ था और जिसका हाल न मालूम किस ढंग से नकली रामेश्वरचन्द्र को मालूम हो गया था। यद्यपि उस तहखाने में भी एक रास्ता तहखाने और मकान के बाहर निकल जाने के लिए था मगर उसका भेद नकली रामेश्वरचन्द्र को मालूम नहीं हुआ था, अगर मालूम होता तो शायद उस तहखाने में कैदियों को बन्द न करता, यद्यपि उन दोनों के हाथ पैर बंधे हुए थे और वे अपनी रिहाई के लिए कुछ उद्योग नहीं कर सकते थे।

नकली रामेश्वरचन्द्र भूतनाथ को साथ लिए हुए तहखाने के अन्दर चला गया और वहां पहुँच कर भूतनाथ ने अपने शागिर्द रामेश्वरचन्द्र और भैयाराजा को हथकड़ी बेड़ी से मजबूर बैठे हुए देखा। एक मद्धिम चिराग की रोशनी तहखाने में हो रही थी और गर्मी के सबब से दोनों कैदी परेशान मालूम पड़ते थे।

भैयाराजा को ऐसी अवस्था में देख कर भूतनाथ का जी बेचैन हो गया और क्रोध से उसकी आंखें लाल हो गईं। पहिले तो भैयाराजा के पास जाकर भूतनाथ ने कोई ऐसा बंधा हुआ इशारा किया जिससे भैयाराजा को मालूम हो गया कि यह जैपाल नहीं बल्कि भूतनाथ है, इसके बाद भूतनाथ ने नकली रामेश्वरचन्द्र की तरफ देख के कहा, "क्यों बे नमकहराम, तुझे अपने हाथों से भैयाराजा को हथकड़ी और बेड़ी पहिनाते शर्म नहीं आई ? जिसके नमक से तेरा शरीर पला हुआ है उसके साथ ऐसी कार्रवाई करते कलेजा हिल नहीं गया और अब इनके सामने आते तुझे शर्म नहीं मालूम हुई।" भूतनाथ की ऐसी बातें सुन कर नकली रामेश्वर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह गौर से नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ की सूरत देखने लगा और इसके बाद बोला, "मालूम होता है कि तुम कोई ऐयार हो, जैपालसिंह नहीं !"

भूत०। बेशक यही बात है, अगर अभी तक तू नहीं समझा तो अब समझ जा कि मेरा नाम गदाधरसिंह है। बस बस, भागने का उद्योग मत कर मैं इसी जगह तेरा मुकाबला करने को तैयार हूं।

रामे०। खैर अब सिवाय मुकाबले के और कुछ हो भी नहीं सकता।

इतना कह कर नकली रामेश्वरचन्द्र ने फुर्ती के साथ खंजर निकाल कर भूतनाथ पर वार किया मगर कुछ कर न सका। भूतनाथ ने उसका वार खाली कर दिया और पीछे पहुंच कर इस जोर से उसकी कमर में लात जमाई कि वह सम्हल न सका और मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। तुरत भूतनाथ ने उस पर कब्जा कर लिया और कमन्द से हाथ पैर बांधने के बाद एक किनारे रख दिया। इसके बाद वह भैयाराजा के पास पहुंचा और उनके हाथ पैर खोल देने के बाद असली रामेश्वरचन्द्र को भी हथकड़ी बेड़ी से रिहाई दी।

इतना कर के भूतनाथ ने शागिर्द की मदद से जब नकली रामेश्वरचन्द्र की जांच की तो मालूम हुआ कि वह वास्तव में हरनामसिंह है*। कमन्द

---

* चन्द्रकान्ता सन्तति में मायारानी के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह का नाम आया है।

खोल कर उसे हथकड़ी और बेड़ी पहिरा दी गई और उसी तहखाने में उसे छोड़ कर तीनों आदमी बाहर निकल आये। ऊपर की कोठड़ी में पहुंच कर भूतनाथ ने भैयाराजा की सूरत बदली और थोड़ी ही देर में वे तीनों आदमी दूकानदारी के कमरे में खुले आम बैठ कर बातचीत करते हुए दिखाई देने लगे। उस समय भूतनाथ ने अपना सब हाल भैयाराजा और रामेश्वरचन्द्र से बयान किया और कहा, "अब हमें बहुत कुछ काम करना चाहिए, समय बीतता चला जा रहा है।"

थोड़ी ही देर में तीनों आदमियों ने यह निश्चय कर लिया कि अब क्या करना चाहिए और इसके बाद रामेश्वरचन्द्र को उसी दूकान में छोड़ अपने साथी शागिर्दों को कुछ समझा कर भूतनाथ और भैयाराजा वहां से रवाना हुए। भूतनाथ जैपाल की सूरत में था और भैयाराजा हरनामसिंह बने हुए थे इसके पहिले इन दोनों ने दारोगा के मकान में जाने का इरादा किया क्योंकि वहां से भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाना बहुत जरूरी था, केवल इतना ही नहीं भूतनाथ यद्यपि इसके पहिले दारोगा के मकान में से सूखा लौट आया था तथापि अभी तक उसे इस बात का निश्चय था कि दयाराम जरूर दारोगा के मकान ही में कैद हैं अतएव उसको दयाराम की भी धुन लगी हुई थी

भूतनाथ और भैयाराजा रामेश्वरचन्द्र की दूकान से बाहर निकल कर थोड़ी ही दूर आगे गये थे कि यकायक भूतनाथ की निगाह मेघराज पर पड़ी जिसे वह आज के कई दिन पहिले एक तिलिस्मी पहाड़ी में विचित्र ढंग से देख चुका था और भैयाराजा के साथ ही वह भी जिसका मेहमान बन चुका था।

इस समय मेघराज अकेला नहीं था। उसके साथ सिपाहियाना ठाठ का एक आदमी और भी था जिसे भूतनाथ ने नहीं पहिचाना मगर उसे इस बात का विश्वास जरूर हो गया कि मेघराज की तरह यह भी अपनी सूरत बदले हुए है। मेघराज को देखते ही भूतनाथ का कलेजा हिल गया और एक दफे रोमांच हो जाने के साथ ही कुछ देर के लिए उसके दिल में धड़कन पैदा हो गई। ऐसा क्यों हुआ सो तो हम नहीं कह सकते हां इतना कह देना जरूरी

है कि इस समय भी मेघराज की सूरत शक्ल तथा पोशाक वैसी ही थी जैसी कि उस दिन भूतनाथ देख चुका था।

जिस तरह भूतनाथ और भैयाराजा ने मेघराज और उसके साथी को देखा उसी तरह मेघराज ने भी इन दोनों को देखा परन्तु ये दोनों जैपाल और हरनामसिंह की सूरत में थे इसलिए मेघराज ने इन दोनों की तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया। मगर भैयाराजा अपने को रोक न सके, उन्होंने आगे बढ़ कर मेघराज का एक हाथ पकड़ लिया और धीरे से कहा जिसे भूतनाथ ने भी सुना, "मेघराज, वाह वाह खूब पहुंचे। आज तुम हम लोगों के साथ ही मिल कर गरजो। अपना परिचय दो तो और भी कुछ कहूं। मैं हूं इन्द्र भैया!"

मेघराज०। पावस में 'तड़ित' की कमी नहीं है, आपने धोखा नहीं खाया। मेरे साथ वैद्य है।

भैया०। बस तो ठीक है। जिस तरह मैं हरनामसिंह की सूरत में हूं उसी तरह यह मेरा साथी भूतनाथ भी जैपाल की सूरत में है। बस अब जो कुछ कहना है वह निराले में कहूंगा। आओ मौका अच्छा है, तुम भी मेरे साथी बन जाओ।

इतना कह कर भैयाराजा आगे की तरफ बढ़े और उस तरफ चले जिधर कुछ सन्नाटा मिलने की उम्मीद थी और उनके पीछे पीछे भूतनाथ तथा मेघराज और उसका साथी ये तीनों रवाना हुए।

भैयाराजा ने इस समय मेघराज से जिस तरह की बातचीत की और अपना तथा भूतनाथ का भेद खोल दिया यह भूतनाथ को पसन्द न आया बल्कि बहुत बुरा मालूम हुआ मगर मौका मुनासिब न समझ वह कुछ न बोला और चुपचाप उनके पीछे चला गया।

थोड़ी देर में ये चारो आदमी एक छोटे से बगीचे में जा पहुंचे जहां इन लोगों के लायक अच्छा सन्नाटा था। भैयाराजा ने भूतनाथ को एक पेड़ के नीचे बैठ जाने के लिए कहा और स्वयं वहां से कुछ दूर पर दूसरे पेड़ के नीचे मेघराज और उसके साथी को लेकर जा बैठे और बातचीत करने लगे।

✓ भैयाराजा की पहली कार्रवाई से भूतनाथ को रंज हो चुका था, अब यह दूसरी कार्रवाई भूतनाथ के लिए और भी दुःखदाई हुई। भूतनाथ को अलग छोड़ कर तीनों आदमियों का एकान्त में बातचीत करना भूतनाथ को सहन न हुआ और उसके अन्दर क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी, आँखों के साथ ही साथ उसके चेहरे ने भी सुर्खी पकड़ ली। कुछ देर तक तो वह टेढ़ी निगाह से उन तीनों की तरफ देखता रहा और फिर दांत पीस कर धीरे से बोल उठा, "क्या मैं भैयाराजा के हाथ बिक गया हूं! वे मुझसे भेद रक्खें और मैं उनके लिए जान दूं गदाधरसिंह ऐसा उल्लू नहीं है।" इतना कह वह चुप हो गया और न मालूम क्या सोचने लगा।

भैयाराजा मेघराज और उसके साथी के बीच आध घंटे तक बातचीत होती रही। इसके बाद वे तीनों उठ खड़े हुए और भूतनाथ के पास आकर भैयाराजा ने कहा, "चलो साहब अब उठो और अपने काम की फिक्र करो।

भूत०। (उठ कर और मेघराज की तरफ बता कर) ये दोनों साहब अब किधर जायंगे?

भैया०। ये दोनों भी हमारे साथ ही रहेंगे।

भूत०। तो क्या हम लोगों का भेद इनसे जाहिर कर दिया गया?

भैया०। हां, इनसे हमलोगों का कोई भेद छिपा नहीं रह सकता।

भूत०। मगर इनका भेद हमसे छिपा ही रहेगा?

भैया०। हां, कुछ दिनों के लिए तो ऐसा ही रहेगा।

भूत०। तो ऐसी हालत में हम लोगों का मिलजुल कर काम करना बहुत कठिन है।

भैया०। कुछ भी कठिन नहीं है।'

भूत०। जरूर कठिन है बल्कि असम्भव है!

भैया०। सो क्यों?

भूत०। जब कि इनका भेद मुझसे छिपा रहेगा तो अपने भेद की बातें मैं इनसे क्यों कहूंगा? ऐसी अवस्था में ठीक काम भी न हो सकेगा।

भैया०। तुम इन्हें अपना दोस्त समझो और विश्वास रक्खो कि इनसे सिवाय नफे के नुकसान कभी न पहुँचेगा।

भूत०। आप तो सब कुछ समझाते हैं मगर मेरा दिल भी कुछ समझे तब तो!

भैया०। दिल को समझाओगे और दिलासा दोगे तो सब कुछ समझ लेगा।

भूत०। मेरा दिल ऐसा कच्चा और नादान नहीं है!

भैया०। तब कैसे काम चलेगा?

भूत०। काम चले या अटका रहे अथवा जहन्नुम में जाय। मैं उस आदमी के साथ क्षण भर भी रहना पसन्द नहीं करता जिसका कुछ भी हाल अपने को मालूम न हो। पहिले दफे जब इनसे मुलाकात हुई थी तब आपने इनका परिचय मुझे नहीं दिया और आज भी वही हाल हो रहा है। केवल इतना ही नहीं, मुझे अलग छांट कर आप इन लोगों से बातें करते हैं और ऐसे काम में मुझे इनका साथी बनाते हैं जिसमें कदम कदम पर जान जोखिम का सामान है। नहीं नहीं, गदाधरसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है। हजारों दुश्मनों से अपने को बचाये रहने वाला गदाधरसिंह ऐसी बेवकूफी करके गन्दी नादानी के साथ अपने गले पर अपने हाथ से छुरी नहीं चलावेगा।

भैया०। फिर तुम क्या चाहते हो?

भूत०। बस इनका परिचय चाहते हैं!!

भैया०। इनका परिचय तो अभी तुम्हें नहीं मिल सकता क्योंकि ये अपना भेद अभी प्रगट नहीं किया चाहते।

भूत०। फिर आपको क्या हक था कि मेरी इच्छा के विरुद्ध आप मेरा भेद इनसे प्रगट कर दें?

भैया०। इसलिए कि मैं इन्हें खूब जानता हूं और मेरा इन पर विश्वास है।

भूत०। आप इन पर भले ही विश्वास रक्खें मगर मैं तो इन पर भरोसा नहीं रखता, अस्तु मेरे भेद के मालिक ये कैसे हो सकते हैं? यह आपकी जबर्दस्ती है कि मेरा भेद मेरी मर्जी के बिना आप इनसे कहते हैं और इनका परिचय तक मुझे कुछ भी नहीं देते।

मेघ० । गदाधरसिंह, मेरा भेद बहुत दिनों तक तुमसे छिपा न रहेगा और जब तुम मुझे जानोगे तो इतने दिनों तक भेद छिपाये रखने की शिकायत न करोगे ।

भूत० । चाहे ऐसा ही हो मगर जब कि मै तुमको जानता ही नहीं तो तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास कर सकता हूं ।

मेघ० । (कुछ तीखेपन से) तुम्हारी इन बातों से रंज होकर मैं चला जाता और तुम्हारा साथी नहीं बनता मगर इसलिए जाना पसन्द नहीं करता कि दारोगा तथा दारोगा के मकान से जितना तुमको और भैयाराजा को सम्बंध है उससे कहीं ज्यादा मुझको सम्बन्ध है, इसलिए मैं दारोगा के मकान में जरूर जाऊंगा और अपना काम करूंगा ।

भूत० । हां हां, तुम भले ही दारोगा के मकान में जाओ मगर मेरे बनाये हुए रास्ते से क्यों जाओगे ? अपने लिए खुद अपना रास्ता बनाओ ! मैंने जो कुछ मेहनत की है वह तुम जैसे एक अनजान आदमी के फायदा उठाने के लिए नहीं की है ।

भैया०। सुनो गदाधरसिंह, तुम व्यर्थ ही क्रोध करते हो और मेरी बात मान कर कुछ दिनों के लिए सब्र नहीं करते । जब कि हम इन्हें और तुम्हें अपना समझते हैं तब हमारी तुम्हारी कारंवाई से अगर बिना नुकसान के हो सके तो ये भी फायदा उठा सकते हैं, इसके लिए तुम्हें रंज न होना......

भूत० । (बात काट कर) मैं यह सब दिलासे की बातें नहीं सुना चाहता, आप साफ कहिये कि इनका परिचय मुझे देंगे या नहीं ?

भैया० । इस समय नहीं क्योंकि इनकी मरजी नहीं है ।

भूत० । तो बस मुझे भी इनके साथ रहना मंजूर नहीं । आपने बहुत ही बुरा किया कि मेरी आज की कारंवाई का हाल इनसे कह दिया । इस समय बातचीत करते हुए आपने जरूर कह दिया होगा यह मुझे अन्दाज से मालूम हो गया ।

भैया० । हां कह तो दिया है ।

भूत०। तब बेशक आपने बुरा किया। अच्छा अब जो आपके जी में आवे कीजिये मैं जाता हूं।

भैया०। कहां जाओगे ?

भूत०। जहां मेरे जी में आवेगा।

भैया०। मतलब यह है कि इस समय तुम मेरा साथ छोड़ते हो ?

भूत०। हां साथ छोड़ता हूं।

भैया०। अच्छा तो एक ठिकाने बैठ कर हम लोगों का इन्तजार करो और देखो कि हम लोग क्या करते हैं।

भूत०। मैं इस बात का वादा नहीं कर सकता।

भैया०। तो तुम बना बनाया काम बिगाड़ा चाहते हो !

भूत०। मेरी नीयत तो यह नहीं थी मगर आप खुद अपने हाथ से सब काम चौपट किया चाहते हैं ! मैं आपसे जो कुछ प्रतिज्ञा कर चुका था उसे निबाहता रहा परन्तु आप अपनी प्रतिज्ञा भंग कर रहे हैं। जो हो, अब मैं स्वतन्त्र होता और अपने मालिक के पास जाता हूं तथा इन सब झंझटों को सदैव के लिए तिलांजुली देता हूं।

भैया०। (चलते भूतनाथ को रोक कर) सुनो सुनो, जरा ठहरो तो ! मैं एकान्त में इन्हें समझाता हूं, और इनका भेद प्रगट करने के लिए इनसे आज्ञा लेता हूं तब तक कुछ देर के लिए तुम इसी जगह खड़े रहो।

भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर और मेघराज तथा उसके साथी को लेकर भैयाराजा कुछ दूर पेड़ों की आड़ में चले गये और मेघराज से बातें करने लगे—

भैया०। गदाधरसिंह तो बेतरह हठ कर रहा है।

मेघ०। वह लड़कपन का हठी है, मगर आप खुद सोच सकते हैं कि इस समय मेरा भेद खोलना कहां तक उचित होगा।

भैया०। नहीं नहीं, आपका भेद तो कभी खुलना ही नहीं चाहिए, परन्तु मालूम होता है कि भूतनाथ अब हम लोगों का साथ नहीं देगा।

मेघ० । केवल हम लोगों का साथ न देकर ही वह सब्र कर जाय तो कोई चिन्ता नहीं, मगर वह जरूर हम लोगों का दुश्मन बन जायगा और दारोगा से जा मिलेगा, उससे रुपये वसूल करेगा और हम लोगों का भेद खोल देगा, रामेश्वरचन्द्र वाला मामला भी छिपा न रहने देगा ।

भैया० । अजी वह सब काम ही चोपट करेगा ! ऐसी अवस्था में हम लोगों का दारोगा के घर में घुसना खतरे से खाली नहीं है और साथ ही इसके मेरी स्त्री को भी उसके पंजे से छुटकारा मिलना असम्भव है ।

मेघराज का साथी० । और मेरी उम्मीदों पर भी बिल्कुल ही पाला पड़ जायगा । गदाधरसिंह बड़ा ही बेईमान है, चुप होकर बैठ रहना उससे कदापि न होगा, अस्तु बेहतर तो यह होगा कि उसे इसी जगह गिरफ्तार कर लिया जाय ।

भैया० । (मेघराज से) आपकी क्या राय है ?

मेघ० । इसके सिवाय दूसरी तर्कीब ही कौन है ? अगर वह दारोगा के पास जाकर सब भेद कह देगा तो अनर्थ हो जायगा !

कुछ देर तक इन तीनों में इसी तरह की बातें होती रहीं । अन्त में यह निश्चय करके कि भूतनाथ को गिरफ्तार कर लिया जाय वे तीनों आदमी वहां पहुंचे जहां भूतनाथ को छोड़ गए थे, मगर अफसोस, भूतनाथ वहां से भाग गया था और उस जगह सिवाय पेड़ पत्तों के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था ।

आठवां बयान

भूतनाथ, क्या तू भूल कर नेक रास्ते पर चला आया था ! क्या तू इस साफ और सुथरी राह को छोड़ कर पुनः उस कंटीली पगडण्डी पर चला चाहता है ? अगर तू वास्तव में ऐसा करता है तो निःसन्देह बदकिस्मत है । अबकी दफे तू चूकेगा तो कहीं का भी न रहेगा, दुनिया में किसी को मुंह न दिखला सकेगा और जीते जी कब्र के अन्दर ढकेल दिया जायगा । खैर देखा चाहिये तेरी किस्मत में क्या है और तू क्या करता है ।

भूतनाथ का वहां से चला जाना भैयाराजा मेघराज और उसके साथी को बहुत गढ़ाया और ये तीनों आदमी बड़े तरद्दुद में पड़ गए, तथापि मेघराज ने हिम्मत नहीं हारी और उसने अपने साथी तथा भैयाराजा को भी अपनी उमंग भरी बातों से उत्साहित किया पर वे लोग अब जो कुछ करेंगे पीछे देखा जायगा, हम इस समय भूतनाथ के साथ चलते हैं और देखते हैं कि यह क्या करता है।

दिन लगभग तीन पहर के ढल चुका था और दारोगा साहब नागर के यहां बैठे हुए जैपाल के आने का इन्तजार कर रहे थे। ज्यों ज्यों जैपाल के आने में देर होती थी त्यों त्यों उनका तरद्दुद बढ़ता जाता था। उन्होंने नागर के आदमियों को कई दफे बाहर भेजा कि आगे बढ़ कर देखें कि जैपाल आता है या नहीं मगर किसी ने भी लौट कर कोई दिल खुश करने वाला जवाब न दिया, हां आखिरी मर्तबे जो आदमी भेजा गया उसने लौट कर एक चीठी दारोगा साहब के हाथ में जरूर दी जिसे दारोगा ने उछलते हुए कलेजे के साथ लिया और पढ़ने लगा, यह लिखा हुआ था :—

"आप यहां चुपचाप बैठे हुए किसका इन्तजार कर रहे हैं ? रात को आपका दुश्मन आपके दोस्त जैपाल को आपके पास ही से गिरफ्तार करके ले गया और आपको कुछ खबर तक न हुई! सुबह को जिस जैपाल को आपने कई काम सुपुर्द कर के बाहर भेजा था वह वास्तव में आपका जैपाल नहीं बल्कि दुश्मन था। बस इसी से समझ जाइए कि आपने कितना बड़ा धोखा खाया और अब आपका काम किस तरह चौपट हुआ चाहता है!

आपका—

(अगर आप मानें तो) दोस्त, गदाधरसिंह।"

इस चीठी को पढ़ते ही दारोगा साहब के तो होश उड़ गए। घबड़ाहट के मारे उनके सर में चक्कर आने लगा। उनको ऐसी अवस्था देख कर नागर ने जो उनके पास ही बैठी हुई थी पूछा, "कहिए क्या मामला है, यह चीठी किसकी है ?"

इसके जवाब में दारोगा ने हाथ बढ़ा कर वह चीठी नागर को दे दी और बड़ी बेचैनी से उसका मुंह देखने लगा।

नागर०। (चीठी पढ़ कर) बात तो ठीक मालूम होती है !

दारोगा०। अब जो मैं सुबह के मामले पर ध्यान देता हूं तो मुझे भी यही निश्चय होता है कि गदाधरसिंह का लिखना ठीक है। (उस आदमी की तरफ देख कर जो चीठी लाया था) जिसने यह चीठी तुम्हें दी वह है या गया ?

आदमी०। मैं समझता हूं कि वह अभी तक बाहर खड़ा होगा।

दारोगा०। तो उसे बहुत जल्द मेरे पास बुलाओ।

"जो आज्ञा !" कह कर आदमी बाहर चला गया और थोड़ी ही देर के बाद गदाधरसिंह को साथ लिए हुए पुनः उस कमरे में दाखिल हुआ।

दारोगा साहब ने उठ कर और आगे बढ़ कर बड़ी खातिर के साथ गदाधरसिंह को लिया और अपने पास बैठाने बाद नौकर को बिदा करके इस तरह बातचीत करने लगे :—

गदाधर०। कहिए मिजाज तो अच्छा है ?

दारोगा०। मिजाज क्या खाक अच्छा होगा ! आपकी बदौलत तरह तरह की तकलीफें उठा रहा हूं।

गदाधर०। (आश्चर्य की सूरत बना कर) मेरी बदौलत ! मैंने आपको क्या नुकसान पहुंचाया है !

दारोगा०। हां हां, बेशक आपकी बदौलत ! जितना मैं आपको मानता हूं उसका चौथाई भी अगर आप मेरी खातिर करते तो मेरे बराबर दुनिया में कोई भी सुखी नहीं दिखाई देता और आपको भी कभी किसी बात की कमी न होती। जब कभी आप कहते हैं मैं आपकी मदद करता हूं और भविष्य में भी मदद करने के लिए तैयार रहता हूं, मगर आपको मेरा कुछ खयाल नहीं होता।

गदाधर०। यह आप कैसे कहते हैं ? अगर आपका मुझे खयाल न होता

तो इस समय में यहाँ आकर आपको सचेत क्यों करता ! और अगर मैं सचेत न करता तो क्या आप बेतरह मुसीबत में गिरफ्तार न हो जाते !

दारोगा० । इसको मैं मानता हूं और आपकी इस कृपा का धन्यवाद देता हूं । इसी से तो इतना कहने का मुझे हौसला भी हुआ, नहीं तो यदि मैं आपको बिल्कुल बेगाना समझता तो उलाहना ही क्यों देता ? मगर फिर भी मुझे कहने के लिए बहुत जगह है । अभी उस दिन की बात है कि भैयाराजा के साथ आपने मुझ पर और मेरे आदमियों पर हमला किया था और मेरी दुर्दशा में शरीक हुए थे ।

गदाधर० । यह आपका भ्रम है, आपकी शिकायत तब ठीक होती जब आप अपनी असली सूरत में होते । मैंने दारोगा साहब समझ के पीछा नहीं किया था, बल्कि भैयाराजा का दुश्मन समझ कर पीछा किया था । फिर भी जब उस घाटी में आपकी सूरत दिखाई पड़ी तब मैंने आपकी जान बचाने की चेष्टा की नहीं तो भैयाराजा उस समय आपको जान से ही मार डालने के लिए तैयार थे, मैंने बड़ी कोशिश से आपको बचाया ।

दारोगा० । अगर आपका कहना ठीक है तो अब भी मैं अपने को धन्य मानूंगा ।

गदाधर०। बेशक यही बात है । हां इस बात का मैं दोषी जरूर हूं कि भैयाराजा के विरुद्ध आपकी मदद न कर सका और न कर सकूंगा क्योंकि उन्हें मित्रभाव से देखने के लिए प्रतिज्ञा कर चुका हूं।

दारोगा० । (कुछ चिन्ता करके) यह बात तो ठीक नहीं है, मैं आपसे बहुत बड़ी उम्मीद रखता हूं और आपके लिए सब कुछ करने को तैयार हूं !

गदाधर० । माफ कीजियेगा, मेरी तरफ से आपका दिल भी स्वच्छ नहीं है, यदि स्वच्छ होता तो आप दयाराम वाला भेद मुझसे कदापि न छिपाते ।

दारोगा० । छिः छिः, आप के दिल से अभी तक यह भ्रम दूर नहीं होता ! न मालूम किस कम्बख्त ने आपसे कह दिया कि दयाराम अभी तक जीते हैं और मेरी कैद में हैं ! इस काम के कर्ता धर्ता तुम खुद होकर फिर ऐसी बात कहते हो !

गदा० । स्वयम् ध्यानसिंह ने यह बात मुझसे कही है और यह भी समझा दिया है कि दयाराम के विषय में मैं बिल्कुल ही निर्दोष हूं।

दारोगा० । वह झक मारता है जो ऐसा कहता है। आपके और हमारे बीच में लड़ाई लगा कर फायदा उठाया चाहता है !!

भूत० । शायद ऐसा ही हो, खैर देखा जायगा। अच्छा अब मैं अपना काम कर चुका, दुश्मनों की कारंवाई से आपको सचेत कर दिया, अब जाता हूं।

दारोगा० । वाह वाह अभी तो मैंने इस बारे में आपसे कुछ पूछा ही नहीं !

भूत० । (मुस्कुराते हुए) अच्छा पूछिये पूछिये, क्या पूछते हैं ?

दारोगा० । पहिले तो यह बताइये कि मेरा वह दुश्मन कौन है जिसने मेरे साथ ऐसी धूर्तता की, और जैपालसिंह का क्या हाल है, दुश्मनों के हाथ से किस तरह उसकी जान बचेगी, और इस मामले में आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं ?

भूत० । मैं आपके उस दुश्मन को अभी तक पहिचान न सका क्योंकि वह सदैव ही अपनी सूरत बदले रहता है, हां भैयाराजा और इन्द्रदेव वगैरह उसे जरूर जानते होंगे मगर उसका असल भेद वे लोग मुझसे कुछ भी नहीं कहते। मेघराज के नाम से वे लोग उसे सम्बोधन करते हैं बस इतना ही मुझे मालूम है। बड़ी मुश्किल से मैंने उसके स्थान का पता लगाया है मगर उस तक पहुँचाना अथवा उसको धोखा देना बड़ा ही कठिन है।

दारोगा० । तो इस समय जैपालसिंह भी उसी के कब्जे में होंगे ?

भूत० । जरूर ! जैपालसिंह को ले जाने के समय वह अपने कई ऐयारों को लेकर खुद यहां आया हुआ था बल्कि अब भी वह इसी जगह इर्द गिर्द घूम रहा है और आपके मकान में घुसा तथा आपको फंसाया चाहता है।

दारोगा० । (कुछ सोच कर) तो आपको इस मामले में जरूर मेरी मदद करनी पड़ेगी, मैं आपका बहुत कुछ भरोसा रखता हूं।

भूत० । बेशक मैं आपकी मदद करूंगा, मगर ....

दारोगा० । मगर की कसर अभी तक लगी हुई है !

भूत०। खैर, मैं आपसे कुछ देर के लिए एकान्त में बातें किया चाहता हूं, इसके बाद (नागर की तरफ देख कर) इनसे भी दो चार बातें एकान्त में करूंगा।

दारोगा०। (मुस्कुराता हुआ) इनसे तो आप सदैव ही एकान्त में बातें किया करते हैं और करेंगे, इन पर आपका हक है, मगर मैं अपने लिए अभी एकान्त कराए देता हूं।

इतना कह कर दारोगा ने हंसते हुए नागर की तरफ देखा। नागर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कमरे के बाहर चली गई कि 'ऐसी मुसीबत में भी दिल्लगी से बाज नहीं आते!'

करीब आधे घण्टे तक भूतनाथ और दारोगा में इस मामले की बात-चीत होती रही। दोनों ने तरह तरह के वादे किये, दोनों ने तरह तरह की कसमें खाईं, और अन्त में दोनों ने एक दूसरे को गले लगा कर अपनी अपनी मुहब्बत दिखलाई, इसके बाद भूतनाथ दारोगा से बिदा होकर कमरे के बाहर निकला जहां नागर चहलकदमी करती हुई उसके आने का इन्त-जार कर रही थी। नागर ने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली और अठखेलियों के साथ चलती हुई उसे एक दूसरे कमरे में ले गई।

नौवां बयान

दारोगा को तो भूतनाथ ने ठीक कर लिया और उसे अच्छी तरह धोखे में डाल कर उसका दोस्त भी बन बैठा, मगर जब वह दारोगा से बिदा होकर नागर के मकान से बाहर निकला तो उसका ध्यान रामेश्वरचन्द्र वाली दूकान की तरफ गया और वह सोचने लगा कि वहां मैं हरनामसिंह को कैद कर आया हूं और अपने को उस पर प्रगट भी कर चुका हूं, वह इस बात को जान चुका है कि उसे गदाधरसिंह ने कैद किया है, ऐसी अवस्था में मुझे उचित है कि मैं अपने को दारोगा का दोस्त बनाना चाहता हूं तो हरनामसिंह से भी दोस्ती का ढंग रचूं और उसके दिल से इस खयाल को दूर कर दूं कि उसे कैद करने वाला भूतनाथ है। अगर ऐसा न हुआ तो जब

कभी हरनामसिंह छूटेगा और दारोगा के पास पहुंचेगा तो मेरी चालबाजी प्रगट हो जायगी और दारोगा मुझे झूठा और दगाबाज समझ कर मुझसे खटक जायगा, अस्तु ऐसी तर्कीब करनी चाहिए कि हरनामसिंह के दिल में मेरी तरफ़ से दुश्मनी का खयाल न रहे और उसे विश्वास हो जाय कि मेरा कैद करने वाला भूतनाथ नहीं बल्कि कोई दूसरा ही है।

रास्ते में चलते ही चलते भूतनाथ ने इन बातों पर विचार किया और कोई तर्कीब सूझ जाने पर पीछे की तरफ लौट कर पुनः दारोगा से मुलाकात करने के लिए नागर के मकान में घुस गया।

आधे घण्टे के बाद जब भूतनाथ अपनी असली सूरत में नागर के मकान के बाहर निकला तो तेजी के साथ चल कर सीधा रामेश्वरचन्द्र वाली ऐयारी की दूकान में पहुंचा।

अबकी दफे भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र से मिलने के लिए एक परिचय का शब्द बना लिया था जिसमें किसी तरह का धोखा न हो, अस्तु सामना होने पर भूतनाथ रामेश्वरचन्द्र को एकान्त में ले गया और परिचय देने तथा लेने के बाद जो कुछ घटना हुई थी सब बयान करके अन्त में बोला, "इस समय मैं इसीलिये यहाँ आया हूं कि हरनामसिंह को कैद से छुड़ा कर अपना दोस्त बनाऊं। यद्यपि मैं अपने हाथ से उसे कैद कर चुका हूं परन्तु उसे धोखा देने के लिये अच्छा सामान भी अपने साथ लाया हूं। तुम जल्द ताला खोल कर मुझे उसके पास तहखाने में ले चलो। (कुछ सोच कर) नहीं, मैं अकेला ही उसके पास जाऊंगा।"

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना जो कुछ इरादा था और भविष्य में जो कुछ किया चाहता था पुनः रामेश्वरचन्द्र से बयान किया और इसके बाद तहखाने का ताला खोल कर हरनामसिंह के पास पहुँचा और बोला—

भूत०। वाह वाह हरनामसिंह ! तुम इतने बड़े ऐयार होकर इस तरह कैदखाने की हवा खा रहे हो ?

हर०। यह सब तुम्हारी ही बदौलत है ! यद्यपि मैं ऐयार हूं परन्तु तुम्हारा मुकाबला किसी तरह भी नहीं कर सकता।

भूत० । भला तुम इस विषय में मुझे क्यों बदनाम करते हो ? यद्यपि तुमने मेरे शागिर्द को धोखा देकर भैयाराजा के साथ ही साथ उसे भी कैद कर लिया था, परन्तु मैंने तुमसे उसका बदला कुछ भी नहीं लिया बल्कि इस समय तुम्हें इस कैद से छुड़ाने के लिये आया हूं।

हर० । यदि तुम वास्तव में गदाधरसिंह हो तो मैंने जो कुछ कहा है वह निःसन्देह सच है । परन्तु तुम्हारी बातों से मुझे आश्चर्य होता है । तुम खुद अपने हाथ से मुझे कैद कर गये हो और अब कहते हो कि मैं तुम्हें छुड़ाने के लिये आया हूं !

भूत० । बेशक तुम्हें आश्चर्य होता होगा । परन्तु मैं तुम्हारे इस आश्चर्य को अभी अभी दूर किये देता हूं । मेरी बातें सुनने से तुम्हें अच्छी तरह सन्तोष हो जायेगा । मैं कई दिनों के बाद इस दूकान में आया हूं । रामेश्वरचन्द्र से मुलाकात होने पर मुझे सब हाल मालूम हो गया । भैयाराजा और रामेश्वरचन्द्र को कैद से छुड़ाने और तुम्हें यहां कैद करने वाला वास्तव में भैयाराजा का दोस्त दलीपशाह था जिसने अपने को गदाधरसिंह बना कर तुम्हें धोखे में डाला और अपने मित्र भैयाराजा को छुड़ा कर ले गया । मेरे शागिर्द को इस कैद से छुड़ा कर उसने बेशक मुझ पर भी अहसान किया परन्तु तुम्हारे ऊपर मेरी शिकायत शुरू से बनी रही । इस समय मैं दारोगा साहब का काम कर रहा हूं इसीलिए तुम्हारे साथ भी दोस्ताना की बर्ताव करना पड़ता है । लो पहिले तुम इस चीठी को पढ़ो ।

इतना कह कर भूतनाथ ने हरनामसिंह के हाथ पैर खोल दिये और दारोगा साहब की लिखी हुई एक चीठी उसके हाथ में दी जिसे उसने चिराग की रोशनी के सामने ले जाकर अच्छी तरह पढ़ा ।

हरनाम० । इस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारा कहना ठीक है । निःसन्देह दारोगा साहब ने पूरा धोखा खाया, परन्तु यदि तुम बराबर उनका साथ दोगे तो उन पर किसी तरह की आंच न आ सकेगी और यह तुम्हारे तथा उनके दोनों ही के लिये सौभाग्य की बात होगी ।

भूत० । बेशक मैं उनकी मदद करूंगा और बराबर उनका दोस्त बन

कर रहूंगा । इस समय जैपालसिंह का पता लगाना बहुत जरूरी है, अस्तु अब तुम जल्द इस तहखाने के बाहर निकलो और मेरे साथ जैपाल को खोज में चलो । मुझे जैपालसिंह का कुछ पता लग भी चुका है अस्तु रास्ते में सब बातें होती रहेंगी और उधर जो कुछ घटना हो चुकी है वह सब मैं तुमसे बयान करूंगा ।

हर० । मैं हर तरह से तुम्हारा साथ देने के लिये तैयार हूं ।

भूत० । अच्छा तो आओ मेरे पीछे चले आओ ।

दसवां बयान

ऊपर लिखी घटना के दूसरे ही दिन जमानिया में बेढब कोहराम मच गया और सब तरफ उदासी छा जाने के साथ ही साथ सभों के चेहरे पर शोक के चिन्ह दिखाई देने लगे । सबब इसका यह था कि रात को एकाएक राजरानी अर्थात कुंअर गोपालसिंह की माता का देहान्त हो गया । आश्चर्य इस बात का था कि वे न तो कुछ बीमार थीं और न किसी कारण से किसी को उनके यकायक इस तरह मर जाने की आशंका ही थी ।

बेचारी रानी साहेबा बहुत ही नेक, रहमदिल और धर्मात्मा थीं । घर के लोग तो उन्हें जी जान से चाहते और मुहब्बत करते ही थे, उनकी रिआया भी उन्हें माता ही के समान मानती थी, क्योंकि समय समय पर उनकी तरफ से रिआया को अच्छी तरह मदद पहुंचा करती थी और यही सबब था कि उनके यकायक मर जाने का गम तमाम शहर में छा गया था, यहां तक कि छोटे छोटे लड़के और लड़कियों की भी सूरत उदास और आंखें नम दिखाई देती थीं ।

राजा साहब का दिल इस बात से एकदम टूट गया और कुंअर गोपालसिंह की उदासी का तो कहना ही क्या है, उनके लिये तो मानो आज उनके सुख और सौभाग्य का जहाज ही डूब गया ।

जाहिर में यह एक मामूली घटना थी और इस विषय में विस्तार के साथ लिखने की कुछ जरूरत भी नहीं है, मगर लिखने का कोई खास हेतु भी

तो केवल इतनी ही कि कुंअर गोपालसिंह ने बड़े दुःख के साथ उनकी क्रिया की, घर में और बाहर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही, कुंअर गोपालसिंह बहुत दिनों तक अपने कमरे से वाहर निकले ही नहीं और राजा साहब ने भी दारोगा पर भरोसा करके राज्य के काम से एक तरह पर दिल ही खैंच लिया जिससे कुछ दिनोंके लिए दारोगा का भाग्य उदय हो गया और उसे दौलत जमा कर लेने का अच्छा मौका हाथ लगा।

मातमपुर्सी के लिए बहुत से लोग जमानिया आये और गये, उन्हीं में एक भैयाराजा भी थे। यद्यपि वे इस घर से बहुत दुःखी होकर चले गये थे और पुनः आने की इच्छा नहीं थी, परन्तु इस मौके पर उन्होंने अपने भाई और भतीजे के पास आना बहुत जरूरी समझा और यही उनके लिए मुनासिब भी था। यद्यपि उनसे घर में रहने के लिए बहुत आग्रह किया गया मगर वे तीन दिन से ज्यादे न रहे और पुनः अपने गुप्त स्थान की तरफ चले गये।

मातमपुर्सी के लिए अपने मालिक की तरफ से भूतनाथ को भी जमानिया जाना पड़ा और इन्द्रदेव भी गये और कई दिनों तक रहे मगर प्रभाकरसिंह जमानिया नहीं गये और न राजा साहब या कुंअर गोपालसिंह ही से मुलाकात की, यद्यपि उनसे और राजा साहब से किसी तरह की रिश्तेदारी भी थी।

आगे चल कर हमारे किस्से को कदाचित इस घटना से कुछ सम्बन्ध पड़ जाय इसलिये हमने मुख्तसर में यहां पर इसका बयान कर दिया।

ग्यारहवां बयान

अब हम कुछ समय के लिए इन्द्रदेव की तिलिस्मी घाटी की तरफ चलते तथा अपने पाठकों को वहां की सैर कराते और दिखाते हैं कि वहां के रहने वाले इन्द्रदेव के नये मेहमान और रिश्तेदार लोग किस धुन में हैं और क्या कर रहे हैं।

पाठक महाशय भूले न होंगे कि उस तिलिस्मी घाटी में जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और दयाराम को हम लोग छोड़ आये हैं जो

कि वहां बड़ी ही बेफिक्री और स्वतन्त्रता के साथ रह कर उस मलामत को सुख के साबुन से धो रहे हैं जो कि बहुत दिनों तक मुसीबत झेलने और दुश्मनों के सताने से उनके दिलों पर बैठ गई थी, परन्तु अब देखना चाहिए कि वे लोग वहां बैठे क्या कर रहे हैं, अपने सुख के आगे दुनिया को बिल्कुल ही भूल गये हैं या उस घाटी के बाहर की भी कुछ फिक्र रखते हैं ?

इन सभों को उस घाटी में रहते बहुत दिन बीत गये और इस बीच में इन्द्रदेव की तालीम और उनकी सच्ची मदद ने उनका दिल ही मजबूत नहीं कर दिया बल्कि हिम्मत और उत्साह की दौलत से भी वे लोग मालामाल हो रहे। ऐयारी का भरोसा हो जाने के अतिरिक्त इन्द्रदेव ने उन सभों की सूरत भी कुछ ऐसी हिकमत से बदल दी है कि सूरत के लेहाज से कई दिनों तक साथ रहने पर भी कोई उनको पहिचान नहीं सकता और न कोई ऐयार ही उनकी सूरत धोकर उसके पक्के रंग की सफाई कर सकता है, अर्थात् उनकी सूरत शक्ल बल्कि तमाम बदन की हालत में ऐसा फर्क डाल दिया था कि अब अगर वे चाहें तो बिना कुछ ऐयारी का ढंग किए ही हर तरफ घूम फिर सकें और पहिचाने जाने का कुछ खौफ न रहे।

यह सूरत की तबदीली कुछ कच्चे ढंग की न थी बल्कि पक्के तौर से थी जो कि मुद्दत तक बिना दवा की मदद के कायम रह सकती थी और जिससे खूबसूरती और सुघड़ता में भी किसी तरह का फर्क नहीं आता था।

यद्यपि इन लोगों को इस घाटी से बाहर निकलने की कोई खास जरूरत न थी परन्तु प्रभाकरसिंह का एक बड़ा जरूरी काम रुका हुआ था जिसका पूरा होना भैयाराजा की मदद के भरोसे पर ही निर्भर था अर्थात् बिना भैयाराजा की मदद के वह काम हो नहीं सकता था और भैयाराजा आज कल स्वयं संकट में पड़े हुए थे, उन्हें स्वयं दूसरे की मदद की जरूरत थी, अतएव प्रभाकरसिंह को उस घाटी से बाहर निकलने की जरूरत थी और दयाराम भी दिलोजान से उनकी मदद किया चाहते थे।

पाठकों को याद होगा और वे भूले न होंगे कि प्रभाकरसिंह को एक महात्मा बाबाजी ने इस बात का भरोसा दिलाया था कि ईश्वर की कृपा

से तुम अपने माता पिता से मिल जाओगे* जिनके मिलने की प्रभाकरसिंह को कुछ भी आशा नहीं थी और जिन्हें वे पंचतत्व में मिल गया जानते थे। अस्तु इस समय प्रभाकरसिंह को यही धुन लगी हुई है कि किसी तरह भैयाराजा के इष्ट की सिद्धि हो और उनकी मदद से उन्हें अपने माता पिता के दर्शन हों।

सूर्य भगवान अस्त होने के लिए उतावली कर रहे हैं और अपनी लालिमा को अपने स्थान पर छोड़ जाने की इच्छा करते हैं परन्तु नहीं, वह लालिमा जो संध्या होनेके कुछ पहिले ही उनकी सेवामें उपस्थित हो जाती है उनका अनुकरण कर रही है और साथ छोड़ना नहीं चाहती। इस समय इन्द्रदेवकी उस तिलिस्मी घाटी की कुछ विचित्र ही शोभा हो रही है। पहाड़ी की चोटी पर लालिमा की एक सुनहरी लकीर इस प्रकार की खिंच गई है मानो सूर्य भगवान ने इस काले पहाड़ को सोने का यज्ञोपवीत पहिरा दिया है जिसे देख चारो तरफ के गुलबूटे बहुत ही प्रसन्न हो रहे हैं और यहां के रहने वाले जमना सरस्वती इन्दुमति दयाराम और प्रभाकरसिंह भी एक साफ सुथरे स्थान पर बैठे उस अपूर्व शोभा को देख रहे हैं तथा कुछ बातें करते जाते हैं। बातें सुनने लायक हैं और इनसे कई भेदों का पता लग जायगा।

प्रभा०। भैयाराजा मुझे विश्वास दिलाते हैं कि 'तुम अपने माता पिता से अवश्य मिलोगे, मैं अपने काम से निश्चिन्त होकर उनका पता लगा दूंगा जो कि निःसन्देह दारोगा के कब्जे में हैं।'

दया०। कोई बात मालूम हुई होगी तभी तो ऐसा कहते हैं, मुझे विश्वास नहीं होता कि वे किसी तरह पर झूठ बोल कर तुम्हारा दिल बहलावेंगे, वे ऐसे आदमी नहीं।

प्रभाकर०। बेशक मेरा भी यही खयाल है, अस्तु किसी तरह उनकी स्त्री का पता लग जाय और वह दारोगा के कब्जे से निकाल ली जांय तब भैयाराजा का दिल ठिकाने हो और वे हमारे लिए कुछ उद्योग करें।

दया०। आशा है कि यह काम बहुत जल्द हो जायगा। काम तो

* देखिए भूतनाथ तीसरा भाग, आठवां बयान।

परसों ही हो गया होता मगर कम्बख्त भूतनाथ ने हम लोगों से चिढ़ कर और दारोगा से मिल कर सब मेहनत बर्बाद करदी और भैयाराजा के काम में बाधक बन बैठा। खैर कोई चिन्ता नहीं, अबकी दफे (अपनी छाती ठोंक कर) मेघराज बिना कोई काम किये कदापि घर न आवेगा। कल सवेरे तुम भी तैयार होकर मेरे साथ चलो और देखो तो सही कि मैं क्या करता हूं।

प्रभा०। बेशक मैं तुम्हारे साथ चलूंगा, भैयाराजा बड़ी उत्कण्ठा के साथ हम लोगों का इन्तजार करेंगे, भूतनाथ के इस तरह पर फिसल जाने का उन्हें बड़ा ही दुःख है, इसके अतिरिक्त आशा है कि उनके दोस्त नन्दराम ने दारोगा के किसी आदमी को जरूर गिरफ्तार कर लिया होगा और स्वयं उसकी सूरत बन कर कोई काम करते होंगे।

दया०। आशा तो मुझे भी ऐसी ही है क्योंकि उनकी मदद पूरे तौर पर कर दी गई थी।

प्रभा०। इसके अतिरिक्त अब तो आपको उस तिलिस्म के अन्दर घूमने की ताकत भी हो गई है जिसमें भैयाराजा ने मेरी मदद की थी, अतएव आप वहां के कई स्थानों में घूम कर दारोगा के कैदियों को तलाश कर सकते हैं।

दया०। बेशक तलाश कर सकता हूं मगर दारोगा ऐसा उल्लू नहीं है जो अपने कैदियों को उस जगह में रक्खे जो तिलिस्म का बाहरी हिस्सा है और जहां हमारे तुम्हारे ऐसे बहुतसे आदमी जा आ सकते हैं। उसने अपने कैदियों के लिए जरूर कोई खास जगह मुकर्रर की होगी और इसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या होगा कि मुझ ऐसे कैदी को भी उसने कभी उस तिलिस्म में नहीं पहुंचाया और न निश्चिन्ती से कुछ दिन तक एक जगह रहने दिया, बराबर स्थान बदलता ही रहा, फिर भी जो कुछ हो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अबकी बिना कोई काम निकाले कभी घर लौट कर न आऊंगा।

प्रभा०। ईश्वर तुम्हारी मदद करे। इन्द्रदेवजी ने तुम्हें सब लायक बना दिया है और तुम जो चाहे कर सकते हो। जिस समय तुम मेघराज की सूरत में सज कर और तन कर खड़े हो जाते हो उस समय तुम्हारे ऊपर ऐसा

रोआब छा जाता है कि यकायक दुश्मन निगाह भर कर तुम्हारी तरफ देख नहीं सकता। उस दिन तुम्हें देख कर भूतनाथ कैसा चक्कर में आया !!

दया०। निःसन्देह मेरे चाचा (इन्द्रदेव) की मुझ पर बड़ी कृपा है और उनकी बदौलत आज मैं अपने दुश्मनों से अच्छी तरह बदला लेने लायक हो गया हूं, परन्तु सब कुछ कर सकने पर भी कोई काम ऐसा न करूंगा जिसमें उनके बंधे हुए मार्ग में किसी तरह का कांटा पैदा हो। हर तरह से अपने को और चाचाजी के प्रण को बचाता हुआ मैं तुम्हारा और भैयाराजा का काम करूंगा। भैयाराजा के कथन पर मुझे भी विश्वास होता है, अब जो मैं अपने कैद के जमाने को याद करता हुआ अपने साथी कैदियों की अवस्था सोचता हूं तो निश्चय होता है कि मेरे साथ तुम्हारे माता पिता भी अवश्य कम्बख्त दारोगा के यहां कैद थे।

प्रभाकर०। (आश्चर्य और उत्कण्ठा के साथ) क्या तुमने अपने साथ और भी किसी कैदी को देखा था जिस पर कि आज इस तरह का शक तुम्हें होता है ?

दया०। हां बेशक देखा था। अफसोस है कि मैं तुम्हारे माता पिता को नहीं पहिचानता था और न वे ही मुझे पहिचान सके, नहीं तो मैं उनके विषय में बहुत कुछ तुमसे कहता।

प्रभा०। तथापि उन कैदियों का हुलिया अथवा शिखनख यदि कुछ बयान करोगे तो मैं उस पर गौर करूंगा।

दया०। मेरे साथ ही साथ दारोगा के यहां चार कैदी और थे जिनमें एक स्त्री और तीन मर्द थे। उन मर्दों में एक का चेहरा वृद्धावस्था होते पर भी बहुत ही सुन्दर गम्भीर और रोबीला था। कैद की सख्तियां सहने पर भी उसकी हिम्मत ने उसका साथ नहीं छोड़ा था और जब कभी दारोगा का सामना होता तो वह उसे तुच्छ समझता था और उसकी धमकियों से उसका दिल नहीं टूटता था। उम्र उस आदमी की लगभग पैंसठ वर्ष के होगी, रंग यद्यपि गोरा था मगर मुद्दत तक अंधेरे कैदखाने में बन्द रहने के कारण पीला पड़ गया था। लम्बा कद और बदन की हड्डियां मजबूत

तथा मोटी मालूम पड़ती थीं। बदन के लेहाज से सर उसका बहुत बड़ा था और बाल बारीक और घुंघराले थे। यद्यपि कैद की अवस्था में हजामत न बनने के कारण उसके बाल बहुत बढ़ गये थे परन्तु उनमें ऐंठन इतना ज्यादे थी कि कभी भी कन्धे से नीचे लटकते हुए दिखाई न पड़े। बात चीत के समय बनिस्बत ऊपर के निचले दांत ज्यादे दिखाई देते थे और कुछ रुकता और हकलाता भी था। दाहिनी कनपटी में एक जख्म का निशान था जिसके बारे में उसने कहा था कि किसी समयमें नेजे की चोट लगी है। 'हर-हर' शब्द का उच्चारण वह बहुत किया करता था और कभी कभी यह भी कहता था कि 'हाय मन्नो पर न मालूम क्या गुजरी होगी!' कई दफे पूछने पर भी उसने अपना परिचय न दिया और न यही बताया कि मन्नो उसका कौन था। यद्यपि हम कैदी लोग अलग रक्खे गये थे मगर एक दफे चार पाँच महीने के लिए हम लोगों को एक साथ रहना पड़ा था इसी लिए उसके विषय में आज मैं इतना कह सका। अब बताओ कि उस कैदी के विषय में तुम क्या खयाल करते हो?

दयाराम की बातें सुनते सुनते प्रभाकरसिंह का जी उमड़ आया और उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। जब दयाराम की बातें खतम हुईं तब आखिरी जुमले के जवाब में प्रभाकरसिंह ने रूमाल से आंसू पोंछ कर कहा—

प्रभाकर०। निःसन्देह वे मेरे पिता ही थे। कनपटी का दाग और 'मन्नो' शब्द का उच्चारण किसी तरह का शक रहने नहीं देता। उनका मन्नो नामी कम्बख्त बेटा मैं ही हूं और मुझी को वे हद से ज्यादे प्यार करते थे। हाय, क्या मैं उनका दर्शन पा सकता हूं! मैं उन्हें मरा हुआ समझता था इस लिये निश्चिन्त था, बेफिक्र था, मगर अब इस समय मेरे दिल की क्या अवस्था हो रही है सो मेरे प्यारे भाई दयाराम, तुम खुद समझ सकते हो मैं क्या कहूं।

दया०। (बेचैनी से) क्या तुम्हें विश्वास होता है कि वे ही तुम्हारे पिता होंगे?

प्रभा० । इसमें किसी तरह का भी सन्देह मत समझो । अफसोस इन्द्रदेवजी को ये बातें मालूम न हुईं ! अगर होतीं तो कदाचित वे तुम्हारे साथ ही साथ उनको भी कैद से छुड़ा ही लाते ।

दया० । बेशक उन्हें ये बातें मालूम न होंगी मगर साथ ही इसके यह भी तो है कि इधर साल भर से वे मुझसे अलग हो रहे हैं अर्थात् दारोगा ने उन्हें किसी दूसरी जगह ले जाकर रख दिया है तथा और कैदी लोग भी वहां नहीं थे जहां मैं था ।

प्रभा० । बेशक इन्द्रदेवजी को भी मेरी तरह विश्वास था कि उनका देहान्त हो चुका है और भैयाराजा की बातों पर भी मुझे पूरा पूरा विश्वास न था जो उनसे कुछ कहता । इस समय मुझसे और तुमसे जो कुछ बातें हुई हैं उन्हें जब इन्द्रदेवजी सुनेंगे तो उन्हें भी विश्वास हो जायगा कि मेरे माता पिता अभी तक जीते हैं और दारोगा की कैद में हैं ।

दया० । बेशक उन्हें भी विश्वास हो जायगा और वे मदद करने के लिए तैयार हो जायेंगे । मेरा ख्याल है कि भैयाराजा को पहिले से इस बात की खबर नहीं थी, इन्हीं दिनों में उन्हें भी इस मामले की कुछ आहट लगी है ।

प्रभा० । मैं भी ऐसा ही समझता हूं ।

दया० । अच्छा तो अब रात भर में हम लोगों को हर तरह से तैयार हो जाना चाहिये, प्रातःकाल यहां से हम दोनों आदमी श्रीगणेशजी का ध्यान करके बिदा होंगे और बाबाजीसे सब हाल कह कर........देखो देखो, बाबाजी तो स्वयम् यहां चले आ रहे हैं, लक्षण अच्छे मालूम पड़ते हैं, हमारा काम जरूर सिद्ध होगा !

इन्द्रदेव को आते हुए देख सब कोई उठ खड़े हुए और इस्तकबाल के लिये उस तरफ बढ़े जिधर से वे आ रहे थे । पास पहुंचने पर सभों ने उन्हें दण्ड प्रणाम किया और बातचीत करते हुए सब कोई धीरे धीरे बंगले की तरफ रवाना हुए ।

बारहवां बयान

दोपहर की कड़ी धूप में भी भूतनाथ को चैन नहीं। देखिये किस तेजी के साथ सन्नाटे मैदान में सर पर कपड़ा रक्खे हुए चला जा रहा है। जमानिया को छः सात कोस पीछे छोड़ आया है और दक्खिन झुकता हुआ पश्चिम की तरफ चला जा रहा है। सामने कोस डेढ़ कोस की दूरी पर एक जंगल है जिसकी तरफ वह कभी कभी सर उठा कर देख लेता है और पुनः सर झुका तेजी के साथ रवाना होता है।

जंगल के पास पहुंच कर उसने अपनी चाल धीमी कर दी और चौकन्ना होकर इधर उधर देखता हुआ जंगल के भीतर जाने लगा। एक कोस से ज्यादे न गया होगा कि बहुत घने और भयानक जंगल में जा घूमता फिरता ऐसे ठिकाने पर पहुंचा जहां पानी का एक सुन्दर चश्मा बह रहा था और किनारे पर बड़े बड़े साखू और शीशम के पेड़ बहुतायत के साथ मौजूद थे जिनके नीचे पत्थर के बड़े बड़े चट्टान थे जो इस समय पेड़ों की सूखी पत्तियों से प्रायः ढंके से दिखाई दे रहे थे।

चारो तरफ अच्छी तरह निगाह दौड़ने के बाद भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और सर झुका कर कुछ सोचने तथा किसी के आने का इन्तजार करने लगा। थोड़ी थोड़ी देर में जब कभी पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज उसके कान में पड़ती तो वह सिर उठा कर उस तरफ देख लेता और जब किसी पर निगाह न पड़ती तो फिर सिर झुका कर कुछ सोचने लग जाता।

इसी तरह पर सर उठा कर देखते और सोचते हुए उसे डेढ़ घण्टे से ज्यादे बीत गया और तब वह घबड़ा कर इधर उधर घूमने के लिए उठा और यह कहता हुआ सामने की तरफ बढ़ा कि 'ओफ, उसके आने में बड़ी देर हो गई! कदाचित कोई विघ्न तो नहीं पड़ा!' इसी समय सामने से उसका एक शागिर्द आता हुआ दिखाई पड़ा जिसका चेहरा खून से रंगा हुआ था और कपड़े भी उसके खून से तरबतर हो रहे थे।

पास पहुंचने पर भूतनाथ ने ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखा और कहा, "पारस, यह क्या मामला है ? तुम इस तरह पर जख्मी क्यों हो रहे हो ?"

पारस०। आपकी आज्ञानुसार हम तीनों आदमी जैपालसिंह की गठड़ी बारी बारी से पीठ पर लादे हुए इस तरफ आ रहे थे। जब यहां से सिर्फ एक कोस की दूरी पर रह गए तब एक सवार ने वहां पहुंच कर हम लोगों का मुकाबला किया जो बहुत ही बहादुर और नौजवान जान पड़ता था तथा उसका घोड़ा भी बहुत ही अनमोल खूबसूरत और ताकतवर था। उसने हम लोगों से डपट कर पूछा, "तुम लोग कौन हो ?" परन्तु हम लोगों ने उसे किसी तरह का साफ और सच्चा जवाब न दिया, इस पर उसने रंज होकर हम लोगों पर चाबुक का वार किया। मैंने जैपालसिंह की गठड़ी जमीन पर रख दी और तीनों आदमी एक साथ उस पर टूट पड़े मगर उसका कुछ भी बिगाड़ न सके। उसने भी तलवार म्यान से निकाल ली और हम तीनों के हमले का अच्छी तरह जवाब दिया। हम तीनों उसके हाथ से जख्मी हुए मगर उसके करारेपन में कुछ भी फर्क न पड़ा, हम तीनों जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़े मगर वह ज्यों का त्यों बना रह कर हम लोगों के सामने खड़ा रहा और अन्त में बोला कि 'तुम लोग कौन हो इसे हम खूब जानते हैं।' इतना कह कर वह घोड़े से नीचे उतरा और जैपालसिंह की गठड़ी खोल कर उसने उसे अच्छी तरह देखा, तब अपनी जेब में से लख-लखे की डिबिया निकाल कर जैपालको सुंघाया और जब वह होशमें आया तो उससे कहा कि 'उठो और जल्दी से भाग जाओ। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि गदाधरसिंह ने तुम्हें कैद कर लिया और ये तीनों गदाधरसिंह के आदमी हैं जो तुम्हें कहीं लिए जा रहे हैं ? मैंने तुम्हें इस आफत से रिहाई दिलाई है, अब तुम जाकर दारोगा से कह दो कि गदाधरसिंह पर कदापि भरोसा न करे। उठो और जल्दी के साथ यहां से भागो !'

उस सवार की बातें सुन कर जैपालसिंह चैतन्य हो गया और बड़े गौर से हम लोगों को देख कर सवार से बोला, "मैं खूब अच्छी तरह से

पहिचान गया, बेशक ये लोग गदाधरसिंह के शागिर्द हैं। आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की कि इस आफत से मेरी जान बचाई। क्या आप अपना परिचय मुझको दे सकते हैं?" इसके जवाब में सवार ने कहा कि 'हम अपना परिचय तुम्हें नहीं दे सकते हां इस घोड़े पर अपने साथ सवार करा तुम्हें कुछ दुर तक पहुंचा दे सकते हैं जिसमें ये लोग तुम्हारा पीछा करके तुम्हें पुनः गिरफ्तार न कर सकें।'

हम लोगों में इतनी हिम्मत न थी कि उठ कर उस सवार का मुकाबला करते या उससे कुछ कहते। देखते ही देखते उस सवार ने जैपालसिंह को अपने घोड़े पर बैठा लिया और एक तरफ का रास्ता लिया। घण्टे भर बाद हम लोगों में उठने की ताकत हुई, मैं यहां आप के पास पहुँचा और मेरे साथी भी पीछे पीछे आ रहे हैं।

पारस की बातें सुन कर भूतनाथ ने उदासी के साथ कहा, "यह बहुत ही बुरा हुआ! हम जैपालसिंह के दिल में यह बात जमा दिया चाहते थे कि तुम्हें तुम्हारे एक दुश्मन मेघराज नामी ने गिरफ्तार कर लिया था और हमने उसके हाथ से तुम्हारी जान बचाई है, मगर अफ़सोस तुम लोगों के किए कुछ न हुआ।"

पारस०। आखिर हम लोग करते ही क्या?

भूत०। तुम लोग तीन ऐयार होकर एक आदमी का मुकाबला न कर सके तो अब क्या कहा जाय!

पारस०। दुश्मन ही ऐसा जबर्दस्त था, मगर आपका उसका मुकाबला हो जाता तो आपको भी मालूम हो जाता कि उसका मुकाबला......

भूत०। (चिढ़ कर) अजी रहने भी दो। अगर मेरा उसका मुकाबला हो जाता तो उसे मजा भी चखा देता और तुम लोगों को भी दिखा देता कि ऐयारी और बहादुरी किसे कहते हैं।

पारस०। शायद ऐसा ही हो। मगर आपकी बराबरी हम लोग क्योंकर कर सकते हैं। (घबराहट के साथ सामने की तरफ देखता हुआ) ईश्वर कुशल करे, लीजिये वह यहां भी आ ही पहुंचा। अब आप भी इसका मुकाबला

करके अपने दिल का हौसला मिटा लीजिये।

भूतनाथ ने चौकन्ने होकर उस तरफ देखा जिधर पारस ने इशारा किया था। एक खुशरू नौजवान और बहादुर शहसवार पर उसकी निगाह पड़ी जिसका घोड़ा भी बहुत खूबसूरत और ताकतवर मालूम होता था और अठखेलियाँ करता हुआ भूतनाथ की तरफ बढ़ा आता था।

उस सवार की पोशाक अमीराना थी और कई तरह के हरबों से वह अपने को सजाए हुए था। रंग गोरा, चेहरा साफ और सुडौल तथा बड़ी बड़ी आंखों से हिम्मत और मर्दानगी की झलक पाई जाती थी। पर उसकी सिकुड़ी हुई चौड़ी पेशानी की मददगार चढ़ी हुई भृकुटी की तरफ ध्यान देने से मालूम होता था कि इस समय वह बड़े ही क्रोध में है। यद्यपि ढाल तलवार खंजर नेजा कमान और तीर इत्यादि उसके पास सभी कुछ थे परन्तु हाथ में वह एक मजबूत कोड़ा ही लिए था जिसकी सुनहरी डन्डी पर नेहायत ही नफीस जड़ाऊ काम किया हुआ था और उसमें जड़े हुए कीमती हीरे दूर से ही अपनी चमक दमक दिखा रहे थे।

देखते ही देखते वह सवार भूतनाथ के पास आकर खड़ा हो गया और मीठी परन्तु गम्भीर आवाज में बोला, "तुम्हारे पास सिर्फ एक ही शागिर्द को देखता हूं। बाकी के दो कहां गये जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे?"

भूत०। (बड़े क्रोध के साथ सवार की तरफ देखता हुआ) यद्यपि तुम्हारे चेहरे पर नकाब नहीं है तथापि मैं तुम्हें पहिचान न सका। तुम कौन हो और मेरे साथ ऐसी बेअदबी करने का कारण क्या है?

सवार०। यद्यपि तुम मुझे पहिचानते नहीं मगर मेरा और तुम्हारा कई दफे सामना हो चुका है! मेरी और तुम्हारी दुश्मनी पुरानी है, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते! मैं तुम्हारा पुराना खैरख्वाह मगर अब बदख्वाह हूं, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते! मैंने तुम्हारा बहुत कुछ भला किया है और अब बुरा करने के लिए तैयार हूं यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते! तुम्हारी हर एक कार्रवाई को जानता हूं, तुम्हारी नियत को पहिचानता हूं, तुम्हारी चालबाजियों का हाल रोज ही सुना और समझा करता हूं,

यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! भैयाराजा के साथ जिस तरह पर दारोगा से मिल कर तुमने दुश्मनी की और पुनः भैयाराजा के कब्जे में फंस कर तथा उनकी कुदरत को जान कर उनके तावेदार बने और सदैव तावेदार बने रहने की कसम खाई वह भी मुझसे छिपा हुआ नहीं है, और अब जो तुम एक अदनी बात पर भैयाराजा से चिढ़ गये और दारोगा को अन्धा बना कर उसे धोखा देते हुए अपना काम सिद्ध किया चाहते हो उसे भी मैं देख सुन रहा हूं, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैंने ही तुम्हारे कब्जे से जैपाल को छुड़ा कर दारोगा के पास भेज दिया है और अब पुनः तुम्हारा सामना करने के लिए तैयार हूं, यद्यपि....

भूत० । (झुंझला कर) मगर इन बातों से तुम्हें मतलब ही क्या ? तुम कौन हो सो बताओ !

सवार० । मैं वही हूं जिसे तुम जानते हो मगर पहिचानते नहीं, मैं वही हूं जिसने तुम्हारी वह सब दौलत छीन ली जो किसी महात्मा ने तुम्हें दी थी, मैं वही हूं जिसने भोलासिंह बन कर तुम्हारी कैद से प्रभाकरसिंह को छुड़ाया, और मैं वही हूं जिसके आधीन वे तुम्हारे सब शागिर्द काम कर रहे हैं जिनके साथ तुमने उस खोह में बड़ी ही बेइज्जती का बर्ताव किया था ! मगर अफसोस, मैं तुम्हें अभी अपना नाम नहीं बता सकता ।

भूत० । (म्यान से तलवार खैंच कर) खैर तो मालूम हो गया कि मेरे सबसे बड़े दुश्मन तुम हो और तुमसे मुझे जरूर बदला लेना चाहिए।

इतना कह कर भूतनाथ ने उस सवार पर तलवार से हमला किया जिसे उसने बड़ी खूबी के साथ अपने चाबुक की डण्डी पर रोका और तब उसी से भूतनाथ की गर्दन पर एक ऐसा हाथ मारा कि भूतनाथ का सिर घूम गया और वह बेचैन होकर जमीन पर बैठ गया । सवार ने ललकारा और कहा, "बस सिर्फ एक ही चाबुक में तुम्हारा यह हाल है ! मैं तुमसे लड़ने और तुम्हारा हौसला देखने के लिए आया हूं। तुम्हारी बहादुरी की बड़ी तारीफ सुनता था, मगर अब जो देखता हूं तो मालूम होता है कि तुम्हारे लिए मुझे तलवार या खंजर निकालने की जरूरत न पड़ेगी और सिर्फ इस

चाबुक ही से मैं अच्छी तरह तुम्हारा मुकाबला कर सकूंगा !"

भूतनाथ फिर उछल कर उठ खड़ा हुआ और बोला, "खैर यह इत्तिफाक की बात थी कि तुम्हारी एक जरा सी लकड़ी से मैं चोट खा गया, आओ मैं अब अच्छी तरह तुमसे मुकाबला करने के लिए तैयार हूं।"

सवार०। मगर गदाधरसिंह, तुम इस बात का भी खयाल कर लेना कि इस समय मेरे पास वह तलवार भी मौजूद है जो तुमने धोखा देकर प्रभाकरसिंह की कमर से निकाल ली थी और जिसे तुम्हारे एक शागिर्द ने तुम्हें उल्लू बना कर तुम्हारे कब्जे से ले लिया था। (तलवार निकाल कर और दिखा कर) देखो यह वही तलवार है और इसके जोड़ की यह अंगूठी। मगर सम्भव है कि तुम्हारे लिए इसे काम में लाने की जरूरत न पड़े। लो उस तरफ देखो, तुम्हारे वे दोनों शागिर्द भी यहां आ पहुँचे जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे।

सवार की बातें सुन कर और उस अजीब तलवार की सूरत देख कर भूतनाथ का कलेजा कांप उठा और वह घबड़ा कर उस सवार का मुंह देखने लगा। सवार ने पुनः भूतनाथ से कहा, "तुम्हारा वह शागिर्द भी मेरे साथ है जिसने यह तलवार ले ली थी और जो चन्द्रशेखर के नाम से तुम्हारी खबर लिया करता है।"

भूत०। मेरे साथ तुम्हारे दुश्मनी करने का सबब क्या है ?

सवार०। यही कि मैं भैयाराजा और प्रभाकरसिंह का दोस्त हूं।

भूत०। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम है कि भैयाराजा और प्रभाकरसिंह से अच्छा बर्ताव रखने के लिये मैं कसम खा चुका हूं और भैयाराजा से प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि अब कदापि आप लोगों के साथ बुरा बर्ताव न करूंगा।

सवार०। हां मालूम है मगर अब जो तुम्हारी नीयत पुनः खराब हो गई है तो क्या किया जाय ?

भूत०। मेरी नीयत कुछ खराब नहीं है। आपको कोई भी बात ऐसी मालूम नहीं हुई होगी जो कि इन दिनों में मैंने उन लोगों को नुकसान पहुँचाने के खयाल से की हो।

सवार० । उस दिन मेघराज का परिचय न पाने के कारण जो तुम भैयाराजा से रूठ कर और तनक कर चले गये क्या वह मामूली बात थी! उसके बाद तुम जाकर दारोगा के दोस्त बन बैठे और हरनामसिंह को कैद से छुड़ाने के बाद जैपाल को जिसे तुमने खुद गिरफ्तार किया था दोस्त बना कर दारोगा के पास ले चले थे वह क्या ध्यान देने योग्य नहीं हैं?

भूत० । मगर तुम नहीं समझ सकते कि ये सब काम मैं किस नीयत से कर रहा हूँ।

सवार० । मैं खूब समझता हूं। तुम्हारी नीयत का हाल किसी से छिपा हुआ नहीं है। लालच बदनीयती और बेईमानी तो मानों तुम्हारे ही लिये बनाई गई है। अब हम लोग तुम्हारे धोखे में कभी नहीं आ सकते।

भूत० । खैर जब तुम्हारी ऐसी ही समझ हैं तो तुम्हारे साथ बहस करने की कोई जरूरत नहीं।

भूतनाथ ने इतना कहने को तो कह दिया मगर वास्तव में वह बहुत ही डरा हुआ था और आश्चर्य के साथ सोच रहा था कि यह सवार कौन है और मेरे भेद की बातें इसे कैसे मालूम हुई तथा अब देखा चाहिये कि यह मेरे साथ कैसा बर्ताव करता है।

इतने में भुतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी और उसने दो नकाबपोश सवारों को अपनी तरफ आते हुए देखा। उसे विश्वास हो गया कि वे दोनों नकाबपोश सवार भी जरूर इस सवार के साथी और मददगार ही होंगे। भूतनाथ को उत्कण्ठा के साथ मैदान की तरफ देखते पा उस सवार ने भी घूम कर देखा और कहा, "लो गदाधरसिंह, मेरे दोनों साथी भी यहां आ पहुंचे, अब तो तुम्हारी हिम्मत बिल्कुल ही टूट गई होगी!"

भूत० । अगर ईमानदारी और धर्म का मार्ग छोड़ा न जाय तो मेरी हिम्मत कभी टूट नहीं सकती।

सवार० । इसका क्या मतलब? ईमानदारी और धर्म की क्या बात है?

भूत० । इसका मतलब यह है कि अगर मुकाबिले की लड़ाई की जाय, एक पर दो टूट न पड़ें, पैदल के मुकाबले में सवार न लड़ें और मामूली हर्बे

के मुकाबिले में तिलिस्मी हर्बा न बर्ता जाय— तो मेरी हिम्मत कभी नहीं टूट सकती, यों तो आप तीनों सवारों के मुकाबले में मैं अभी से हार मानता हूं, हर्बा छोड़े देता हूं और हुक्म मानने के लिए तैयार हूं, परन्तु यदि आपको बहादुरी का घमन्ड है और मेरी बहादुरी भी देखा चाहते हैं तो उन दोनों सवारों को दूर खड़ा कीजिये, तिलिस्मी तलवार कमर में रखिये और घोड़े से नीचे उतर कर मुकाबिले में आइये।

सवार०। बेशक मैं ऐसा ही करूंगा।

इतने ही में वे दोनों सवार भी वहां आ पहुंचे। पहिले सवार ने उनसे अपनी खास भाषा में जिसे भूतनाथ समझ न सका कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और तब पहिला सवार तिलिस्मी तलवार कमर में रख कर घोड़ से नीचे उतर पड़ा और खंजर हाथ में लेकर भूतनाथ के सामने आया।

भूतनाथ०। हां अब आप मेरे हौसले को देख सकते हैं।

सवार०। खैर वार करो, मैं जवाब देने के लिए तैयार हूं।

भूतनाथ और सवार में लड़ाई होने लगी। यद्यपि वह सवार बहादुर और लड़ाका था परन्तु भूतनाथ ने भी उसका खूब ही मुकाबिला किया। पूरे घंटे भर तक लड़ाई हुई मगर कोई किसी को परास्त न कर सका, हां दोनों बहादुर कुछ कुछ जख्मी जरूर हुए मगर हताश न हुए।

लड़ते और पैतरा बदलते हुए भूतनाथ ने कई चक्कर काटे और मौका देखता हुआ सवार के घोड़े के पास जा पहुंचा जो बिना बंधे हुए चुपचाप खड़ा अपने टापों से जमीन खोद रहा था। फुर्ती के साथ छलांग मार कर भूतनाथ उस घोड़े पर सवार हो गया और एक तरफ को भाग निकला।

यह सवार जो भूतनाथ से लड़ रहा था पैदल होने के कारण भूतनाथ का पीछा न कर सका मगर उसके दोनों दोस्त नकाबपोश सवारों ने फौरन बड़ी तेजी के साथ भूतनाथ का पीछा किया।

वह घोड़ा बहुत ही उम्दा था जिस पर सवार होकर भूतनाथ भाग निकला था परन्तु इन दोनों नकाबपोशों के घोड़े भी उससे कम न थे

इसलिये बराबर भूतनाथ का पीछा किये चले गये, यद्यपि उसके पास नहीं पहुंच सके परन्तु उसके और अपने बीच में फासला भी न बढ़ने दिया। जब नकाबपोशों ने देखा कि भूतनाथ हम लोगों को अपने पास पहुंचने नहीं देता और सोचा कि अगर इसी तरह हम लोग पीछा किये चले जायंगे तो तीनों घोड़े बेकार हो जायंगे और अपने साथी से भी (जो भूतनाथ से लड़ा था) बहुत दूर निकल जायंगे, लौट कर पुनः उसके पास पहुंचना कठिन हो जायेगा, तब उन दोनों में से एक ने घोड़े की लगाम तो काठी के साथ अड़ा दी और तीर कमान निकाल कर वार करने के लिए तैयार हो गया। यह देख कर दूसरे नकाबपोश ने आवाज दी और कहा, "देखना मेघराज, गदाधरसिंह पर तीर मत चलाना।" इसके जवाब में मेघराज ने कहा, "नहीं गदाधरसिंह को नहीं मारूंगा बल्कि घोड़े को कुछ जख्मी करूंगा, यद्यपि वह अपना ही घोड़ा है मगर लाचारी है!" इतना कह कर मेघराज ने तीर चलाया जो कि भूतनाथ के घोड़े के पिछले पैर में लगा और जख्मी हो जाने के कारण उसकी चाल भी धीमी पड़ गई।

कुछ ही मौका मिलना इन दोनों पीछा करने वालों के लिए काफी था। बात की बात में ये दोनों भूतनाथ के पास जा पहुंचे और उसको ललकारा। जब भूतनाथ ने देखा कि अब भागना व्यर्थ है और घोड़ा भी जिस पर वह सवार था बेकार हो गया है तब वह खड़ा हो गया और न मालूम क्या क्या सोचता हुआ उन दोनों सवारों की तरफ देखने लगा।

मेघ०। क्यों जी गदाधरसिंह, तुम तो अपने को बहादुर कहते थे और एक पर एक लड़ने के लिये ललकारते थे, इस तरह धोखा देकर भागने की क्या जरूरत थी?

भूत०। जब मैंने देखा कि तुम तीनों आदमी नाहक मेरे पीछे पड़े हुए हो और इन्साफ पर कुछ भी ध्यान नहीं देते तब मुझे यही रास्ता अच्छा मालूम हुआ।

मेघ०। ईश्वर को धन्यवाद दो कि हम तीनों आदमी तुम्हारे दोस्त हैं, अगर इस समय हमारे बदले में कोई तुम्हारा दुश्मन होता तो जान से

तुम्हें मारे बिना न रहता।

भूत०। (हंस कर) क्या अच्छे दोस्तों से सामना पड़ा है! यद्यपि मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि आप लोग मेरे दुश्मन नहीं हैं परन्तु इस दोस्ती की बलिहारी है कि नाहक मेरे बने बनाये काम को आप लोगों ने बिगाड़ दया और मेरे प्यारे दोस्त और बहादुर भैयाराजा के पुनः कुछ दिनों तक संकट में पड़े रहने का सामान कर दिया।

मेघराज०। सो क्योंकर, कौन सा तुम्हारा काम हम लोगों ने बिगाड़ दिया?

भूत०। यही कि जैपालसिंह को मेरे कब्जे से बाहर कर दिया जिसकी बदौलत मैं आज ही किसी समय भैयाराजा की स्त्री को दारोगा के पंजे से रिहाई दिलाने वाला था।

मेघ०। मगर हम लोगों को कैसे विश्वास हो सकता है कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह सच है और तुम हम लोगों को धोखे में नहीं डाला चाहते!

भूत०। अब आप लोगों को विश्वास हो या न हो हमारा काम तो बिगड़ ही गया।

मेघ०। ऐसा तुम नहीं कह सकते, क्योंकि यद्यपि हमारे दोस्त ने जैपालसिंह को तुम्हारे कब्जे से बाहर निकाल दिया मगर अपने कब्जे से बाहर नहीं निकाला।

भूत०। (आश्चर्य और कुछ भरोसे के साथ) क्या वास्तव में जैपाल अभी आप लोगों के कब्जे में है?

मेघ०। बेशक!

भूत०। तब आप लोग अपना ठीक ठीक परिचय मुझे क्यों नहीं देते कि मैं भी अपना खुलासा हाल आप लोगों से बयान करूं? जैपाल का आपके कब्जे में बने रहना बेशक मेरे लिए खुशी की बात होगी यदि आप लोग वास्तव में मेरे विरुद्धी न होंगे।

इतना सुन कर मेघराज के साथी ने भूतनाथ से कहा, "और कोई चाहे अपना परिचय तुम्हें दे या न दे परन्तु मैं अपना परिचय तुम्हें जरूर

दूंगा। यद्यपि तुम बड़े बेमौके मुझसे रूठ कर भाग गये और मेरे बने बनाये काम में बाधा डाल कर तुमने मेरा मन मैला कर दिया तथापि मैं इसी समय अपना परिचय देता हूं।"

इतना कह कर उस सवार ने जो वास्तव में भैयाराजा थे अपने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार दी और भूतनाथ से कहा—"देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूं!"

भैयाराजा को पहिचान कर भूतनाथ हंसा और झुक कर सलाम करने के बाद बोला, "बस सिर्फ एक मौके पर रूठ कर मेरे चले जाने से आपका दिल इतना बदल गया! अच्छा अब इसके पहिले कि मैं आपसे कोई मौके की बात कहूं आप अपना निशान भी दीजिए, सिर्फ इस झिल्ली के उतर जाने से मेरा सन्तोष नहीं है।"

भैया०। क्या अब मैं शंखध्वनि करूं?

भूत०। नहीं कोई जरूरत नहीं, मुझे विश्वास हो गया। अब यह बताइये कि ये आपके साथी साहब कौन हैं?

भैया०। इन्हीं का परिचय न पाने से तुम रूठ गये थे, और इस समय भी तुम इनका परिचय नहीं पा सकते।

भैयाराजा की यह आखिरी बात सुन कर भूतनाथ बड़ा ही क्रोधित हुआ परन्तु अपने दिल के इस भाव को भी उसने खूब दबाया और कहा, "खैर इनका परिचय पाने की मुझे जरूरत भी नहीं, अब मैं इनके बारे में कभी भी कुछ न पूछूंगा, हां उन साहब के बारे में आप कुछ कहियेगा जिनसे लड़ता हुआ मैं भाग आया हूं?"

भैया०। नहीं, उनके बारे में भी मैं कुछ नहीं कह सकता जब तक कि वे खुद अपना परिचय देने के लिए तैयार न हो जांय।

भूत०। खैर उन्हें भी जाने दीजिये और यह बताइये कि मेरे साथ अब आप कैसा सलूक किया चाहते हैं।

भैया०। इसका जवाब देना तब तक मुश्किल है जब तक तुम्हारी नीयत का ठीक ठीक हाल न मालूम हो जाय। सच तो यों है कि मैं अभी

तक तुम पर भरोसा करता हूं और तुम्हारी कसमों पर विश्वास करता हूं मगर तुम्हारी करतूतों को देख कर मुझे लोगों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता है। लोग यही कहते हैं कि 'तुम्हारा गदाधरसिंह पर भरोसा करना परले सिरे की बेवकूफी है, तुम उसके हाथ से जरूर सताए जाओगे और धोखा उठाओगे।'

भूत०। बेशक लोग आपसे ऐसा कहते होंगे और मैं अपने ऊपर ध्यान देता हूं तो यही निश्चय होता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूं वह मेरी नादानी और बेवकूफी है। बैठे बैठाए नाहक जी जोड़ कर मेहनत करना और उसके बदले में बदनामी उठाना बस इसके सिवाय और कुछ भी नहीं होता। मेरे सिर पर जो पाप का टोकरा लदा हुआ है उसका बोझ दिनों दिन बढ़ता ही जाता है। दोस्तों के दिल में मैल बैठती जाती है और दुश्मनों की गिनती तरक्की कर रही है। जिसके साथ नेकी करो वही बदी करने के लिये तैयार हो जाता है, जिसकी खिदमत करो वही नालायक बनाता है और जिसका साथ करो वही घृणा करता है। ऐसी अवस्था में मैं नहीं समझता कि मेरे लिए अब क्या कर्तव्य है। यदि मैं सब झंझटों को छोड़ कर अपने घर बैठता हूं तो लोग आराम से बैठने भी नहीं देते। इसके अतिरिक्त पेशा ऐयारी का भी ऐसा खराब है कि बिना मालिक का या अपना काम किए चुपचाप बैठ ही नहीं सकता और जब काम करने के लिए निकलूंगा तो किसी से दोस्ती और किसी से दुश्मनी जरूर ही पैदा होगी। अस्तु क्योंकर कह सकता हूं कि मेरी जिन्दगी किसी तरह आराम से बीत सकती है। आप ही देखिए कि आपके लिए मैं कितनी मेहनत कर रहा हूं और अपनी मेहनत का अच्छा फल भी पा चुका हूं मगर इस समय आप ही को मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता और मेरी सचाई का आप सबूत खोजते हैं जिसका मुझे बड़ा ही दुःख है। मैं खूब समझता हूं कि जिस तरह आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते उसी तरह मेरी कसमों पर भी विश्वास न करेंगे परन्तु कोई चिन्ता नहीं, मैं बहुत अच्छा सबूत देकर आपको अपनी बातों पर विश्वास दिलाऊंगा और फिर इसके बाद ही से दुनिया के सब मामलों से हाथ धो बैठूंगा।

आज से आप गदाधरसिंह को किसी काम में हाथ डालते न देखेंगे। अच्छा आप लोग घोड़ों के नीचे उतरें और मैं जो कुछ अपनी सचाई का सबूत दिखाता हूं उसे देखें।

भैया०। (मुस्कुराते हुए) इस समय तो तुम बड़े ज्ञानी मालूम पड़ते हो! ईश्वर करे तुम्हारा यह ज्ञान बराबर बना रहे और तुम्हारे सिर पर पाप का बोझ बढ़ने न पावे! अगर इस समय तुमने कोई वाजिब सबूत देकर अपने को सच्चा साबित कर दिया तो बेशक मैं तुमको अपना दोस्त मानूंगा और तुम्हारी तरफ से जो कुछ मैल मेरे दिल में बैठ गई है उसे साफ कर दूंगा!

इतना कह कर भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े। भूतनाथ और मेघराज भी घोड़े से नीचे उतरे और तीनों आदमी घोड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद एक सायेदार पेड़ के नीचे बैठ कर पुनः बातचीत करने लगे।

भूत०। बेशक मैं अपनी सचाई के लिये जो कुछ सबूत दूंगा उसे आप किसी तरह भी रद्द न कर सकेंगे। आप लोगों के खयाल से मैं दारोगा का दोस्त बना हूं यह सही है मगर मेरे दिए सबूत को देखकर आपका यह खयाल भी बदल जायगा और आपको विश्वास हो जायगा कि जो कुछ मैं कर रहा हूं वह केवल आपकी स्त्री को उस दुष्ट के पंजे से छुड़ाने के लिए, बस अब मेरे लिए इस दुनिया में इतना ही काम बाकी है। फिर मैं किसी का मुंह न देखूंगा और न मेरा ही मुंह कोई देख सकेगा। सबूत ढूंढ़ने के लिए भी मुझे कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है, सब इसी जगह मेरे बटुए के अन्दर मौजूद है।

इतना कह कर भूतनाथ अपने ऐयारी के बटुए को खोल कर उसकी हर एक चीज देखने जांचने और इधर उधर करने लगा साथ ही साथ बात भी करता जाता था।

भूत०। सबसे पहिले मुझे इस बात का बन्दोबस्त करना है कि आप का शक दूर कर देने के बाद फिर मुझे कोई काम न करना पड़े। (अपने बटुए में से कोई दवा निकाल कर और अपने मुंह में रख कर) मेरे और दारोगा के बीच जो एकरारनामा हुआ है वह इसी बटुए में मौजूद है।

जैपालसिंह ने आपकी स्त्री का पता जिस चीठी में लिख कर मेरे पास भेजा था वह भी इस बटुए के अन्दर है और उस अजायबघर में जिसमें आपकी स्त्री कैद है मुझे किस तरह पहुंच कर उसे छुड़ाना चाहिए यह भी एक कागज पर लिखा हुआ इसी बटुए में रक्खा है जिसे आप स्वयं निकाल कर देख सकते हैं।

इतना कहते हुए भूतनाथ ने दवा की एक शीशी जिसमें किसी तरह का अर्क भरा हुआ था और जो उसी बटुए में थी, खोल कर उसकी सब दवा उसी बटुए के अन्दर लुढ़का दी और इसके बाद एक चीठी निकाल कर भैयाराजा के हाथ में देते हुए कहा, "लीजिये इस चीठी को पढ़िये, आप तो दारोगा के अक्षर अच्छी तरह पहिचानते हैं, देखिये उसी के हाथ का लिखा हुआ है या नहीं?"

भैया०। (चीठी देख कर) बेशक यह उसी कम्बख्त के हाथ का लिखा हुआ है।

इतना कह कर भैयाराजा ने वह चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"मेरे प्यारे गदाधरसिंह,

देखो, मैं तुम्हारी बात नहीं टालता, मगर तुम्हें भी हमारी इज्जत का ख्याल रखना चाहिए। परसों शाम को तुम मुझसे मिलो, मैं भैयाराजा की स्त्री को तुम्हारे हवाले कर दूंगा, मगर खूब होशियार। शिकार खराब न जाय।

वही—दा०"

भैया०। यह चीठी तुम्हें कब मिली थी?

भूत०। परसों।

भैया०। तो आज तुम उसे लेने के लिये दारोगा के पास जाओगे?

भूत०। हां मैं जरूर जाने वाला था।

भैया०। अब क्या हुआ?

भूत०। अब तो जो होना था हो गया। आपने देखा नहीं कि मैंने इस बटुए में से एक दवा निकाल कर खा ली है। वह जहर कातिल है जो कि

मेरा प्राण लिये बिना कभी न रहेगा। एक दवा और इसी बटुए में थी जिससे उस जहर का असर दूर हो सकता था, मैंने वह दवा इसी बटुए में उडेल कर बर्बाद कर दी, इस खयाल से कि कहीं आप लोग जहर उतारने के लिये मुझे जबर्दस्ती वह दवा पिला न दें क्योंकि मैं अब इस दुनिया में रहना नहीं चाहता। (बटुए में खाली शीशी निकाल और भैयाराजा को दिखा कर) देखिये यह शीशी खाली हो गई। इस पर लिखा हुआ है, "यह दवा सब तरह के जहरों को दूर करती है। अब यह दवा भी इस दुनिया से उठ गई, सिर्फ इसकी गमक थोड़ी देर के लिये रहेगी। इसी बटुए में और भी कई चीठियां हैं।

भैया०। (बात काट कर) भला यह दवा तुमने बटुए के अन्दर क्यों उंडेल दी ?

भूत०। अगर मैं बाहर फेंकता तो शायद आप लोग मेरा हाथ पकड़ लेते और शीशी में कुछ दवा बच रहती तो ताज्जुब नहीं कि आप लोग मुझे बचा लेते। जो हो अब मैं जीते रहना नहीं चाहता........

भैया०। गदाधरसिंह, यह तुमने बहुत ही बुरा किया कि.......

भूत०। खैर बुरा तो जोकुछ होना था हो गया। (भयानक चेहरा बना कर) ओफ ! अब मुझे तकलीफ हो रही है ! मेरी थोड़ी बातें और सुन लीजिये, शायद थोड़ी देर बाद मैं कुछ भी न बोल सकूं। मेरे इस बटुए में बहुत सी चीठियां हैं जो दारोगा और जैपाल के हाथ की लिखी हुई हैं कोई खुली है, कोई डिबिया में हैं, कोई कपड़े में बंधा हुई है, जिनके देखने से आपको मालूम हो जायगा कि मैंने दारोगा के साथ मिल कर आपका नुकसान किया था या........ओफ ! अब मेरा हाथ नहीं चलता, आप लोग स्वयं इस बटुए में.......आह !

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया और सर पर हाथ रख कर आंखें बन्द कर लीं, परन्तु यह अवस्था भी उसकी ज्यादे देर तक न रही और कुछ ही देर में वह जमीन पर लेट कर लम्बी सांसें लेने लगा।

मेघराज (जो वास्तव में दयाराम थे) और भैयाराजा को उसकी इस

अवस्था पर बहुत दुःख हुआ और दोनों आदमी उसके बटुए की इस खयाल से तलाशी लेने लगे कि शायद कोई चीज ऐसी निकल आये जिससे गदाधरसिंह की हालत कुछ सुधर जाय। थोड़ी देर बाद जब उन्होंने गौर किया तो मालूम हुआ कि गदाधरसिंह बिल्कुल ही बेहोश है, ताज्जुब नहीं कि थोड़ी ही देर म उसका दम निकल जाय।

यह सब कुछ तो हुआ मगर मेघराज और भैयाराजा की अवस्था भी अच्छी न रही। भूतनाथ ने जो दवा बटुए के अन्दर उंडेल दी थी उसकी तेज महक ने इन दोनों का दिमाग फिरा दिया और भूतनाथ के बटुए की तलाशी लेते लेते ये दोनों भी बेहोश होकर जमीन पर लेट गये। उस समय भूतनाथ मुस्कुराता हुआ उठ बैठा और खड़े होकर मूंछों पर ताव देता हुआ बोला, "वह मारा! कैसा छकाया है बच्चाजी को, अपने को बड़ा होशियार लगाते थे।"

तेरहवां बयान

बेशक भूतनाथ ने मेघराज और भैयाराजा को बुरा धोखा दिया। उसे इस बात की प्रबल इच्छा थी कि किसी तरह मेघराज और उसके साथी का परिचय मिले परन्तु यह बात इस समय भी असम्भव जान पड़ती है।

भूतनाथ ने पहिले चाहा कि भैयाराजा के चेहरे पर से झिल्ली ले ले परन्तु फिर यह सोच कर छोड़ दिया कि ऐसी झिल्ली तो मेरे पास मौजूद ही है, फिर भैयाराजा से बुराई लेने की जरूरत ही क्या है। अस्तु वह भैयाराजा को छोड़ कर मेघराज की तरफ झुका और चाहा कि किसी तरह उन्हें पहिचाने परन्तु इस बात का विश्वास हो जाने पर कि उनके चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली नहीं है वह रुका और इधर उधर देख कर धीरे से बोला, "यहां तो नजदीक में कोई कूआं भी नहीं है कि मैं जल भर कर लाऊं और इसका चेहरा धोकर पहिचानने का उद्योग करूं! खैर जाने दो, इन दोनों को यहीं पड़ा रहने दो और पहिले उस दुष्ट पर कब्जा करो जो मुझे नीचा दिखा चुका है और जिसे अपने साथियों के साथ छोड़ कर मैं यहां

भाग आया हूं। ये दोनों अभी कई घण्टे तक होश में न आवेंगे और न यहां कोई मुसाफिर ही पहुंच कर इन दोनों की मदद कर सकेगा।

भूतनाथ ने अपने बटुए में से आग पैदा करने वाला सामान निकाला और सूखे पत्ते बटोर कर आग सुलगाने के बाद उस पर अपने ऐयारी के बटुए को सेंक कर सुखाया तथा उस बेहोशी वाली दवा के असर को दूर किया और उस बटुए का सामान भी जो बहुत छितर बितर हो गया था अपने कायदे के साथ ठीक करके पुनः सोचने लगा कि क्या करना चाहिये। एक दफे उसका ध्यान पुनः अपने शागिर्दों और उस दुश्मन की तरफ गया जिससे लड़ता हुआ हार कर वह इस तरह भाग आया था और वह उस पर कब्जा करने का ढंग सोचने लगा मगर फिर विचार किया कि कदाचित इस समय वह मेरे ढंग पर न चढ़ा या पुनः मुझ ही को नीचा देखना पड़ा तो इधर की मेहनत बिल्कुल बर्बाद हो जायगी और अगर ये होश में आकर चले जायेंगे तो भैयाराजा से गहरी दुश्मनी पैदा हो जायगी और मेघराज पर भी पुनः कब्जा करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव हो जायगा। मुझे इस बात का पता लगाना बहुत ही जरूरी है कि यह मेघराज वास्तव में कौन है और भैयाराजा से इसका क्या सम्बन्ध है। साथ ही इसके भैयाराजा को भी मैं किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाया चाहता, मेघराज को पहिचान लेने के बाद मैं भैयाराजा से माफी मांग लूंगा और यदि वे मुझे माफी न देंगे तो मैं उनकी खिदमत करके उन्हें खुश कर लूंगा। मगर क्या मेरे शागिर्द उस जगह फंसे ही रह जायेंगे और वह दुश्मन इस समय मेरे कब्जे में न आवेगा? मेरे पास और भी कई तरह की दवाइयां हैं जिनसे मैं इन दोनों को कई दिनों तक बेहोश रख सकता हूं। तो इनकी बेहोशी बढ़ा कर और इन्हें इसी जगह छोड़ कर उस दुश्मन की तरफ मेरा इस समय जाना उचित होगा? नहीं, अब दिन बहुत कम रह गया है, थोड़ी ही देर में अंधकार अपना दखल जमा लेगा, इतने थोड़े ही समय में वह काम नहीं हो सकता, इन दोनों का भी इस जगह पड़े रहने देना ठीक न होगा अस्तु भैयाराजा को तो उनकी बेहोशी कम करके इसी जगह छोड़ दिया जाय जिसमें घण्टे भर के अन्दर ही वे होश

में आकर जहां जी चाहे चले जांय और इस मेघराज को घोड़े पर लाद कर अपने अड्डे पर ले चलें, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

इस तरह की बातें कुछ देर तक भूतनाथ सोचता रहा, अन्त में वह मेघराज के पास गया और गौर से उनकी सूरत देख कर आप ही आप बोला, "मगर पानी का यहां बिलकुल ही अभाव है। खैर अपने डेरे पर ही चल कर इनका चेहरा साफ करें। अब इन्हें घोड़े पर लादना चाहिए!" इतना सोच कर भूतनाथ एक घोड़ा खोल लाया और उस पर मेघराज को लादने की फिक्र करने लगा मगर अफसोस, भूतनाथ का इरादा पूरा नहीं हुआ। जैसे ही भूतनाथ ने मेघराज के बदन पर हाथ रक्खा वैसे ही उसके बदन में एक बिजली सी दौड़ गई। उसका तमाम शरीर कांप गया और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

भूतनाथ की यह बेहोशी बहुत देर तक कायम नहीं रही। आधी घड़ी के अन्दर ही वह होश में आ गया और उठ कर बड़े गौर और आश्चर्य से मेघराज को देखने लगा। उसने देखा कि मेघराज ने सिर से पैर तक एक अजीब किस्म का कपड़ा पहिरा हुआ है जो कि बहुत ही बारीक तार का बुना हुआ है और वह सुनहरा तार इतना पतला और मुलायम है कि सूत की तरह से उसका कपड़ा बुना गया है। उस कपड़े के ऊपर से सूत का एक बारीक कपड़ा मेघराज पहिरे हुए हैं जिसके अन्दर से उस तार के कपड़े की चमक छन कर बाहर निकलती और बहुत ही भली मालूम होती है। आश्चर्य के साथ भूतनाथ ने कुछ देर तक उस कपड़े को देखा और पुनः उसे छूआ। छूने के साथ ही वह फिर बेहोश हो गया और आधी घड़ी तक बेहोश रहा।

जब भूतनाथ होश में आकर उठा तो धीरे से बोला, "अफसोस मैं इसे किसी तरह भी अपने कब्जे में नहीं कर सकता। मेरी तमाम मेहनत ही व्यर्थ हो गई। अब मुझे भैयाराजा और इन्द्रदेव के सामने भी शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। तो क्या मैं भैयाराजा और इस मेघराज दोनों ही को इस दुनिया से उठा दूं? इन्द्रदेव को क्या मालूम हो सकता है कि मैंने इन दोनों

को मार डाला !!"

इतने ही में भूतनाथ ने सामने से अपने उस दुश्मन को आते हुए देखा जिससे लड़ कर और भाग कर वह यहाँ तक चला आया था।

चौदहवां बयान

अब हम अपने पाठकों को एक कैदखाने के अन्दर ले चल कर थोड़ी देर के लिए वहां का दृश्य दिखाया चाहते हैं। इस कैदखाने में इस समय केवल जैपालसिंह ही कैद है जिसे इस बात की कुछ भी खबर नहीं कि यह कैदखाना किस शहर में है, इसका मालिक कौन है, तथा उसे किसने गिरफ्तार करके कैद रक्खा है।

उसके हाथों में हथकड़ी और पैर में बेड़ी पड़ी हुई है। कपड़े बिलकुल ही मामूली दर्जे के हैं। एक कम्बल बिछाने के लिए तथा दूसरा ओढ़ने के लिए उसे दिया गया है। उससे सिर्फ चार पांच हाथ की दूरी पर पानी से भरा हुआ एक मिट्टी का घड़ा तथा पीतल का एक गिलास दिखाई दे रहा है। बस इसके अतिरिक्त उस कैदखाने में कुछ भी नहीं है। हां, एक तरफ चिराग जरूर जल रहा है जिसकी रोशनी इस कैदखाने के अंधकार को दूर कर रही है।

कैदखाने की यह कोठरी लगभग पांच हाथ चौड़ी और आठ या दस हाथ लम्बी होगी। तीन तरफ संगीन दीवार और चौथी तरफ लोहे का जंगला है और उसी जंगले में आने के लिए छोटा सा एक दर्वाजा भी बना हुआ है।

जंगले के आगे एक मुख्तसर सा दालान, मारी और दोनों तरफ दो कोठड़ियां हैं तथा कोने में ऊपर चढ़ जाने के लिए छोटी छोटी सीढ़ियां भी दिखाई दे रही हैं जिससे मालूम होता है कि यह कैदखाना किसी मकान के निचले हिस्से में बना हुआ है।

जैपालसिंह कदाचित् इस बात को जानता है कि यह समय रात का है और कुछ ही समय बाद उसकी दुर्दशा होने वाली है। वह सर झुकाए हुए

किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न है मगर थोड़ी थोड़ी देर में उन सीढ़ियों की तरफ देख लेता है जो बाहर दालान में ऊपर चढ़ जाने के लिए बनी हुई थीं।

कैदखाने के ऊपर वाली छत पर कुछ धमधमाहट की आवाज हुई और जैपाल ने पुनः सर उठा कर सीढ़ियों की तरफ देखा। एक औरत कोड़ा लिए हुए नीचे उतरी तथा उसके बाद दूसरी और फिर तीसरी औरत भी नीचे उतरी जिनके हाथों में नंगी तलवारें थीं। इन्हें देख कर एक दफे जैपाल थर्रा उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। हम नहीं कह सकते कि उन औरतों को वह पहिचानता था या नहीं।

उन औरतों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और उनका तमाम बदन स्याह लबादों से ढका हुआ था। तीनों औरतें दरवाजा खोल कर कैदखाने के अन्दर आ गईं। जिस औरत के हाथ में कोड़ा था वह आगे बढ़ी और जैपाल के पास खड़ी होकर बोली, "कहिये आपने अपने सोच विचार का क्या नतीजा निकाला ? मेरी बातों का ठीक ठीक जवाब दोगे या नहीं ?"

जैपाल०। हां जो कुछ मैं जानता हूं वह जरूर कह दूंगा, मगर जिन बातों का मुझे गुमान भी नहीं है उनके विषय में मैं क्या कह सकता हूं।

औरत०। मैं खूब जानती हूं कि तुम्हें क्या क्या भेद मालूम हैं, इस-लिए मैं वही बात पूछूंगी जिसका जवाब तुम दे सकते हो। यह बात हम लोगों से छिपी हुई नहीं है कि तुम दारोगा के कैसे दोस्त हो, दारोगा तुम्हें कितना मानता है और अपने पापकर्म तथा भेदों में तुम्हें कहां तक साथी बनाता है।

जैपाल०। दुनिया में गप्पें बहुत उड़ा करती हैं मगर उनमें सार कुछ भी नहीं होता या बहुत ही कम होता है। दारोगा साहब का दोस्त बनने के लिए जितनी हैसियत, ताकत, होशियारी, बुद्धिमानी और ऐयारी की जरूरत है उसका सौवां हिस्सा भी मुझमें नहीं है, ऐसी अवस्था में वे क्योंकर मुझे अपना सच्चा हितैषी या दोस्त मान सकते हैं ? मगर हाँ गप्प उड़ाने वालों की जुबान रोकी नहीं जा सकती और न उसमें से असल तत्व को छांट कर कोई अपनी दिलजमयी कर सकता है।

औरत० । बुरे और दुष्ट तथा दुराचारी लोगों के दोस्त बनने में पंडित होने की कोई आवश्यकता नहीं, कोई विद्वान बुद्धिमान होशियार और सच्चा ऐयार दारोगा जैसे पतित और दुष्ट प्रकृति के आदमी का दोस्त नहीं बन सकता । जो तुम्हारे ऐसे अदूरदर्शी और नालायक हैं वे ही उसके साथी बन सकते हैं । इसी तरह गप्पें भी बेबुनियाद नहीं हुआ करतीं, बिना एक-वचन के बहुवचन का होना असम्भव है । किसी विद्वान का कथन है कि 'जब तक कोई एक चीज नहीं होती तब तक लोग उसे बहुत चीजें कह कर मशहूर नहीं कर सकते ।' अस्तु तेरी ही कही बातों की पुष्टि करके मैं कहती हूं कि तुझमें किसी तरह की हैसियत, ताकत, होशियारी और बुद्धिमानी नहीं और न तू सच्चा ऐयार ही है इसीलिए दारोगा से पटती है और तुझे वह उल्लू समझ कर अपने पाप का साथी और भागी बनाए हुए है और वास्तव में तू उसी के योग्य है भी । इसके अतिरिक्त जिस बात को हम लोग जानते हैं उसके छिपाने की कोशिश करना भी तेरा व्यर्थ है ।

जैपाल० । (कुछ सोच कर) मैं भी आप लोगों से बहस करना नहीं चहता, जो कुछ जानता हूं उसे सच सच कह दूंगा क्योंकि आपके हाथ का कोड़ा मुझे किसी तरह पर भी बहाना नहीं करने देगा यह मैं खूब समझता हूं, मगर आप लोग भी व्यर्थ अन्याय करके मुझे दुःख नहीं देंगी इसका भरोसा है ।

औरत० । अच्छा पहिले यह बता कि दयारामजी कितने दिनों तक दारोगा के कैदखाने में रहे और इन दिनों वे कहां हैं ?

जैपाल० । इन दिनों वे कहां हैं सो तो मैं नहीं जानता मगर यह कह सकता हूं कि दारोगा के कैदखाने में वे चार पांच वर्ष से ज्यादे ही दिनों तक रहे, अभी हाल में उनका कोई दोस्त उन्हें छुड़ा ले गया ।

औरत० । बेशक यह बात तूने सच कही, अच्छा यह तो बता कि आज कल उसके कैदखाने में कौन कौन है ?

जैपाल० । मेरी जानकारी में तो इन दिनों उसके यहां कोई भी कैद नहीं है ।

औरत०। (बिगड़ कर) कैद है और जरूर है! तू इस बात को खूब जानता है और कैदियों को अच्छी तरह पहिचानता भी है।

जैपाल०। नहीं नहीं मैं सच कहता हूं कि और किसी कैदी के विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता, हां भैयाराजा की स्त्री जरूर उनके कब्जे में है!

औरत०। उन्हें उसने कहाँ पर रक्खा है?

जैपाल०। सो मैं नहीं जानता।

औरत०। (सिर हिला कर) बेशक तू नहीं जानता, क्योंकि कल की मार तुझे नहीं याद है। खैर कोई चिन्ता नहीं, मेरे हाथ का यह कोड़ा पता लगा लेगा कि कम्बख्त दारोगा ने उन्हें कहां पर कैद रक्खा है, मगर पहिले तुझे यह बताना पड़ेगा कि और कितने आदमियों को दारोगा ने कैद कर रक्खा है और वे इस समय कहां हैं! इस विषय में बहाना करना तेरे हक में अच्छा नहीं है। कैदियों का हाल ठीक ठीक बता देने ही से मैं तुझे छोड़ दूंगी, नहीं तो समझ रख कि इसी कैदखाने में तेरी जिन्दगी समाप्त हो जायगी और इस कोड़े से हर रोज तेरी खातिर की जायगी।

जैपाल०। (कुछ देर तक सोच कर) मैं नहीं कह सकता कि मेरी बातों पर किस तरह आपको विश्वास होगा तथापि जो कुछ मैं जानता हूं वह साफ साफ कहे देता हूं। दारोगा साहब के यहां अब भी चार पांच कैदी हैं मगर सिवाय भैयाराजा की स्त्री के और किसी को भी मैं नहीं पहिचानता। पहिले तो वे कैदी उनके घर ही में किसी तहखाने के अन्दर कैद थे परन्तु जब से दयाराम को कोई छुड़ा कर ले गया है तब से अपने मकान में वे किसी कैदी को नहीं रखते। महाराज से उन्होंने अजायबघर की ताली ले ली है और सब कैदियोंको उसी अजायबघर में पहुंचा दिया है।

औरत०। मैंने भी ऐसा ही सुना है परन्तु तेरी इस बात को मैं आजमाऊंगी, अगर तू सच्चा निकला तो जरूर तुझे छोड़ दूंगी!

जैपाल०। क्या उस अजायबघर को तुम जानती हो?

औरत०। मैं खूब जानती हूं।

जैपाल०। मगर उसके अन्दर जाना बिल्कुल ही असम्भव है।

औरत० । कदाचित् ऐसा ही हो मगर तुझे इस से कोई मतलब नहीं, तेरा कहना ठीक होवे से मैं तुझे छोड़ दूंगी ।

जैपाल० । जब कि वहां तक तुम पहुँच ही नहीं सकती हो बल्कि और भी किसी का पहुंचना असम्भव है तब मेरी बातों की सचाई का हाल तुम्हें जल्द कैसे मालूम हो सकता है ! ऐसी अवस्था में सच कह देने पर भी मैं व्यर्थ कैद की मुसीबत झेलता रहूंगा ।

औरत० । नहीं ऐसा नहीं होगा, मैं वहां पहुँचने का बन्दोबस्त कर लूंगी और तुझे ज्यादे दिनों तक यहां सड़ना न पड़ेगा ।

जैपाल० । अगर मुझे अपने साथ ले चलो तो मैं इस काम में तुम्हारी मदद भी कर सकूंगा ।

औरत० । (हंस कर) तेरी मदद की मुझे कोई जरूरत नहीं तथापि मैं सोच कर कल इस बात का जवाब तुझको दूंगी ।

इतना कह कर वह औरत वहां से हट गई । कैदखाने का दर्वाजा बन्द कर दिया गया और तीनों औरतें जिस राह से आई थीं ऊपर चली गईं । ये तीनों औरतें जमना सरस्वती और इन्दुमति थीं जो कि आज कल इन्द्रदेव के कैलाश-भवन में दिखाई दे रही हैं और जैपाल कैलाश-भवन ही के एक कैदखाने में बन्द है जिसे दयाराम भैयाराजा और प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ के कब्जे से निकाल कर यहां भेज दिया था तथा जिसका कुछ हाल ऊपर बयान हो चुका है और होगा ।

उस समय दो ढाई घण्टे रात जा चुकी थी, कैदखाने से निकल कर ये तीनों इन्द्रदेव के पास पहुँचीं जो कि इस समय अपने पूजा वाले कमरे में संगमर्मर की एक चौकी पर बैठे श्री भगवद्गीता का पाठ करते हुए उसकी गुत्थियों को सुलझाने का उद्योग कर रहे थे ।

जमना सरस्वती और इन्दुमति उनके पास जाकर चौकी के नीचे दाहिनी तरफ बैठ गईं । इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए उनकी तरफ देखा और पूछा, "कहो तुम तीनों जैपाल से मिल आईं ?"

जमना० । जी हां, वह तो बड़ा ही डरपोक है, उसमें इतनी हिम्मत

कहां कि अपने मित्रों के भेदों को छिपाने के लिए जान समर्पण करे या कष्ट उठावे !

इन्द्र० । दुनिया में जितने लोभी लालची और खुदगर्ज आदमी हैं उन सभों का यही हाल है ! अच्छा कुछ हाल उसकी जुबानी मालूम हुआ ?

जमना० । जी हां, यह भी उसी बात को पुष्टि करता है अर्थात् कहता है कि 'दारोगा ने अपने सब कैदियों को अजायबघर में ले जाकर बन्द कर दिया है।'

इन्द्र० । वास्तव में यही बात ठीक है। जिस दिन मुझे यह खबर लगी कि दारोगा ने अजायबघर की ताली राजा साहब से ले ली है उसी दिन मैं समझ गया कि अब वह अपने कैदियों को वहां ही ले जाकर रक्खेगा। पर कोई चिन्ता नहीं। दयाराम प्रभाकरसिंह और भैयाराजा जिस उत्साह के साथ गये हैं आशा है कि अपने काम में अवश्य सफल मनोरथ होंगे ! यद्यपि वे तीनों बहुत कुछ कर गुजरने के योग्य हैं तथापि मुझे सन्तोष नहीं हुआ, आज सवेरे मैंने अपने दो योग्य शिष्यों को भी उनकी मदद के लिए भेज दिया है ?

जमना० । तो क्या मेरा मनोरथ सिद्ध न होगा ?

इन्द्र० । तुम तो व्यर्थ ही इस मामले में पड़ा चाहती हो। बहुत दिनों तक दुःख भोगने के बाद ईश्वर ने तुम्हारे लिए अपूर्व सुख का सामान कर दिया है तो अब तुम पुन दुःख भोगने का बन्दोबस्त करती हो ! भला दारोगा और गदाधरसिंह का मुकाबला करना और उस अजायबघर के अन्दर जाना तुम औरतों का काम है ? मैंने तुम दोनों के वास्ते गदाधरसिंह का मुकाबला करने के लिए कितना बड़ा सामान पैदा कर दिया था और उस समय भूतनाथ को इस बात का गुमान भी नहीं था कि तुम इस दुनिया में हो तब तो तुम लोगों के किये कुछ हुआ ही नहीं ! आज गदाधरसिंह हर तरह से होशियार और जानकार हो रहा है तब तुम भला इस समय क्या कर सकती हो ? मैं तुम्हारे इस इरादे को कदापि पसन्द नहीं करता।

जमना० । (हाथ जोड़ कर) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं उसी

शर्मिन्दगी को मिटाने के लिए इस समय आपसे प्रार्थना कर रही हूं और दारोगा तथा गदाधरसिंह ने जो कुछ मुझे दुःख दिया है उसका बदला अपने हाथ से लिया चाहती हूं। अगर मैं ऐसा न कर सकी तो सब तरह का सुख पाने पर भी जिन्दगी भर मेरे दिल में यह दाग बना ही रहेगा। उस समय यदि हम लोगों से भूल हो गई तो क्या सदैव ही भूल हुआ करेगी? इसके अतिरिक्त जमाने का दुःख सुख भोग कर पहिले की बनिस्वत आज हम लोग होशियार हो रही हैं तथा हर तरह का तजुर्बा भी हो गया और सबसे बढ़ कर यह कि आपका भरोसा हम लोगों के साथ है।

इन्द्र०। बेशक पहिले की बनिस्बत आज तुम लोगों को शक्ति बढ़ी हुई है मगर गदाधरसिंह भी पहिले की अपेक्षा आज चैतन्य है और दारोगा जैसे दुष्ट को अपना साथी बनाये हुए है। क्या दारोगा की होशियारी मक्कारी और शैतानी गदाधरसिंह से कम है?

जमना०। यह सब कुछ सच है परन्तु यदि मेरे दिल की अभिलाषा पूरी न हुई तो इस दुनिया में मेरी जिन्दगी व्यर्थ है, तब तो मुझमें और एक निःसहाय कंगाल अबला में कुछ भी भेद न रहा।

जमना और सरस्वती की आंखों से आंसुओं की धारा बह चली।

इन्द्र०। उन दोनों ने जो कुछ तकलीफें तुम्हें दी हैं उसका बदला यदि तुम्हारे पति अपने हाथ से लेंगे तो क्या इससे तुम दोनों की सन्तुष्टि न होगी।

जमना०। नहीं, कुछ भी नहीं। इसके अतिरिक्त उनका भी दिल और दिमाग कुछ आप ही सा है, वे गदाधरसिंह को कभी भी दुःख न देंगे।

इन्द्र०। मैं तो अजब संकट में पड़ रहा हूं, सभी जिद्दियों से वास्ता पड़ा है।

जमना०। नहीं नहीं, यदि आपको संकट है तो मैं जिद न करूंगी और अब इस विषय में कुछ भी न कहूंगी।

इसके बाद कई पल तक सन्नाटा रहा और तब पुनः इन्द्रदेव ने कहा—

इन्द्र०। अच्छा तुम दोनों जाओ और अपना होसला निकालो परन्तु और हर तरह का बन्दोबस्त करने के अतिरिक्त मैं अपना एक आदमी तुम्हारे साथ कर दूंगा।

जमना० । (प्रसन्नता के साथ) कौन मेरे साथ रहेगा ?

इन्द्र० । उसे तुम नहीं पहिचानतीं और न पहिचान सकोगी ।

जमना० । तो फिर किस तरह उस हम पर लोगों को विश्वास होगा ?

इन्द्र० । जिस आदमी को मैं तुम दोनों के साथ करूंगा उस पर अविश्वास करने की कोई जरूरत नहीं । मैं स्वयं उस आदमी को तुम्हारे सुपुर्द कर देता परन्तु इस समय वह यहां है नहीं और मैं घण्टे दो घण्टे में किसी काम के लिये बाहर जाने वाला हूं, अस्तु मैं उसके घर पर से होता हुआ जाऊंगा और सब बातें उसे समझा दूंगा। प्रातःकाल जब घण्टा भर रात रहते ही तुम दोनों यहां से बाहर निकलोगी तो दर्वाजे ही पर वह आदमी तुम्हें मिलेगा । 'दत्त' के नाम से वह तुमको अपना परिचय देगा और दो अदद तिलिस्मी खंजर भी तुम दोनों को देगा जिसका गुण वह स्वयं तुम्हें बतावेगा । उस आदमी को अपने साथ ले लेना और उसकी राय के खिलाफ कभी कोई काम मत करना !

जमना० । (प्रसन्नता से हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा !

कुछ देर तक और उन लोगों में बातें होती रही, इसके बाद इन्द्रदेव की आज्ञानुसार वे सब उठ कर अपने ठिकाने चली गईं और सफर का इन्तजाम करने लगीं ।

पन्द्रहवां बयान

हम नहीं कह सकते कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती को इतने बड़े कठिन और साहस का काम करने के लिये इजाजत क्योंकर दे दी । जब तक दयाराम मरे हुए समझे जाते थे और जमना तथा सरस्वती बिल्कुल इन्द्रदेव के आधीन थीं तब तक जो कुछ इन्द्रदेव ने मुनासिब समझा किया और कर सकते थे परन्तु ऐसी अवस्था में जब कि दयाराम प्रगट हो गये और वे दोनों अपने पति के पास पहुँचा दी गईं तब उन पर सिवाय दयाराम के और किसी का अधिकार न रह गया, अस्तु न जमना और सरस्वती ही को दयाराम की आज्ञा के बिना घर से बाहर निकलने

और ऐसे काम में हाथ डालना उचित था और न इन्द्रदेव ही को ऐसी आज्ञा देने और उनका उत्साह बढ़ाने की जरूरत थी। सम्भव है कि इसमें इन्द्रदेव ने किसी तरह का फायदा समझ लिया हो, अस्तु।

सुबह की सुफेदी आसमान पर कुछ कुछ फैल चुकी थी जब जमना और सरस्वती अपने सामान से हर तरह से दुरुस्त हो मरदाने भेष में तिलिस्मी झिल्ली चेहरे पर लगाये हुए घर से बाहर निकली। मकान में सदर फाटक पर दो कसे कसाये घोड़े लिए साईस तैयार था, तथा और भी एक आदमी घोड़े पर सवार इन दोनों के आने का इन्तजार कर रहा था। जमना और सरस्वती दोनों घोड़ों पर सवार हो गईं और मैदान की तरफ़ चल निकलीं, वह आदमी भी पूछने पर 'दत्त' के नाम का परिचय देकर दोनों के साथ हो गया। दो तीन जगह ठहर कर दिन भर बल्कि आधी रात तक सफर करने के बाद ये तीनों आदमी उस जंगल में जा पहुँचे जिसमें कि अजायबघर की इमारत थी।

इस अजायबघर का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पूरा पूरा लिखा जा चुका है, आशा है उसे हमारे पाठक भूले न होंगे, इसलिये यहां दोहरा कर उसके लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती।

जब ये तीनों उस अजायबघर के पास पहुँचे तो कुछ दूर पहिले ही घोड़ों पर से नीचे उतर पड़े और घोड़ों को पेड़ के साथ बांध कर पैदल अजायबघर की तरफ चल पड़े। जब उस चश्मे के पास पहुंचे जो अजायबघर के नीचे से होकर बहता था तब इन तीनों को अजायबघर के बँगले के बाहर निकलती हुई एक रोशनी दिखाई दी। यह लोग अटक कर बड़े गौर से उस रोशनी की तरफ देखने लगे। यद्यपि ये लोग पास पहुंच चुके थे मगर पेड़ों के ऐसे झुरमुट में खड़े थे कि इस अंधेरी रात के समय किसी के देख लेने का इन लोगों को बिल्कुल ही डर न था अस्तु बड़ी बेफिक्री के साथ ये लोग उस रोशनी की तरफ देखने लगे। कुछ ही क्षण में भूतनाथ पर इन लोगों की निगाह पड़ी जो कि अपने हाथ में रोशनी लिए हुए अजायबघर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। उसके पीछे पीछे चलते

हुए जमानिया के दारोगा साहब भी दिखाई पड़े। ये दोनों अभी सीढ़ियों के नीचे नहीं उतरे थे कि तीन लाशों को लिए हुए और भी छः आदमी मकान के अन्दर से निकल कर इनके पीछे पीछे आते दिखाई पड़े।

इन सभों को देख कर जमना सरस्वती और दत्त तीनों घबड़ा उठे और उनके दिल में तरह तरह के सोच विचार पैदा और नष्ट होवे लगे। जमना ने दत्त की तरफ घूम कर कहा—

जमना०। क्या यह सम्भव है कि यह सब उन्हीं लोगों को निकाल कर लिये जाते हों जिनको छुड़ावे के लिये हम लोग यहां आये हैं।

दत्त०। मुझे तो यही विश्वास होता है, क्योंकि जैपालसिंह का गिरफ्तार होकर तुम लोगों के कब्जे में पहुंचना ही इस बात की पुष्टि करता है कि भैयाराजा प्रभाकरसिंह और दयाराम ने भूतनाथ के कब्जे से जैपालसिंह को छुड़ा कर इन्द्रदेव के यहां भेज दिया और भूतनाथ को छोड़ दिया। तो ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ ने दारोगा से मिल कर यह सब हाल नमक मिर्च लगा कर बयान किया हो और दारोगा यह खयाल करके कि शायद जैपालसिंह की जुबानी किसी तरह वे लोग हमारे कैदियों का पता लगा लें और हमारे कैदियों को छुड़ा कर ले जांय, अपने कैदियों को दूसरी जगह रखने के लिये यहाँ से निकाल कर लिये जाता हो।

जमना०। बेशक यही बात है, वह देखो बंगले के अन्दर से एक आदमी और निकला, इसके हाथ में नंगी तलवार भी है।

दत्त०। यह आदमी बहादुर मालूम पड़ता है और जान पड़ता है कि इन सभों का निगहबान है।

जमना०। ऐसी हालत में जिस तरह बन पड़े इन लोगों को रोकना और कैदियों को इनके कब्जे से छुड़ाना चाहिये नहीं तो हम लोगों की मेहनत बिल्कुल बर्बाद जायगी और पुनः कैदियों का पता लगाना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

दत्त०। यह तो ठीक है मगर इतने आदमियों के कब्जे से इन कैदियों को छुड़ा लेना मुझ अकेले के लिये बहुत ही कठिन है। भूतनाथ साधारण

ऐयार नहीं है, दारोगा भी लड़े बिना रह नहीं सकता और इसके पीछे पीछे जो आदमी चला जा रहा है यह भी मुझे उन दोनों से बढ़ कर ताकतवर और बहादुर जान पड़ता है। इसके अतिरिक्त जो लोग तीनों कैदियों को उठा कर लिये जा रहे हैं वे भी मुकाबला करने से बाज न आयंगे।

जमना०। आप अकेले क्यों हैं? हम दोनों भी तो आपका साथ दे सकती हैं! यद्यपि हम दोनों औरतें हैं मगर जो तिलिस्मी खंजर इन्द्रदेवजी ने हम लोगों को दे रक्खा है उसका मुकाबला करना इन सभों के लिये कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

दत्त०। हां ठीक है, मुझे भी इन्द्रदेवजी ने एक ऐसे ही गुण की तिलिस्मी तलवार दी है जिसके भरोसे पर मैं अकेला ही इन सभों का मुकाबला कर सकता हूं यदि इन लोगों के पास कोई उसके मुकाबले का हरबा न हो तो।

जमना०। इन लोगों के पास भला इसके मुकाबले का हरबा कहाँ से आयेगा!

दत्त०। नहीं की हालत में तो कोई बात ही नहीं है, हम लोग जरूर फतह पावेंगे, परन्तु यदि कोई हरबा इसके जोड़ का इन लोगों के पास हुआ तो बड़ी ही मुश्किल होगी, हम लोग बिना गिरफ्तार हुए बाकी न रहेंगे। (कुछ रुक कर) अच्छा देखो मैं इनका मुकाबला करता हूं, जरा इन लोगों को और आगे बढ़ लेने दो। तुम दोनों मेरी मदद के लिए तैयार रहना मगर दूर रहना, अगर देखना कि ये भी ऐसे ही तिलिस्मी हरबे से मेरा मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये हैं तो तुम दोनों जरूर यहां से भाग जाना, मेरे लिए किसी तरह की चिन्ता न करना।

जमना०। भला मैं आपको ऐसे संकट में अकेले छोड़ कर... ...

दत्त०। नहीं नहीं, मैं जो कहता हूं कि तुम दोनों किसी बात का बिचार न करके एकदम यहां से भाग जाना, मैं अपने को किसी न किसी तरह बचा ही लूंगा।

जमना०। खैर, जैसा आप कहते हैं मैं वैसा ही करूंगी।

भूतनाथ और दारोगा वगैरह कैदियों को लिए हुए लगभग दो ढाई सौ

कदम के आगे न बढ़े होंगे कि दत्त तेजी के साथ आगे बढ़ा और भूतनाथ का रास्ता रोक सामने खड़ा होकर बोला, "बस खबरदार, कदम रोक लो, बिना मेरी बात का जवाब दिये आगे मत बढ़ना नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।"

भूत०। (रुक कर और मशाल की रोशनी में अच्छी तरह दत्त का चेहरा देख कर) तुम कौन हो जो इस तरह से आकर मेरा रास्ता रोकते हो? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूं और मेरे पास इस समय कितने आदमी हैं?

दत्त०। मैं तुम्हें खूब जानता हूं और तुम्हारे साथियों को भी देख रहा हूं।

भूत०। तो क्या तुम हमलोगों का मुकाबला करने के लिए तैयार हो?

दत्त०। बेशक! अगर तुम मेरी बातों का साफ साफ जवाब न दोगे तो मैं अकेला तुम सबका मुकाबला करूंगा!

भूत०। तुम क्या पूछना चाहते हो?

दत्त०। सिर्फ इतना जानना चाहता हूं कि तुम लोग किस किस को उठा कर कहां लिए जा रहे हो?

भूत०। इसका जवाब तुम कदापि नहीं पा सकते।

दत्त०। तो मैं तुम लोगों को जीता छोड़ भी नहीं सकता।

इतना कह कर दत्त ने म्यान से तलवार निकाल ली और मुकाबला करने के लिये भूतनाथ को ललकारा। भूतनाथ ने घूम कर दारोगा की तरफ देख कर कुछ इशारा किया और तब पीछे की तरफ हट मशाल ऊंची करके अपनी खास बोली में कुछ कहा। दारोगा ने म्यान से तलवार निकाल ली और दत्त के मुकाबले में आ खड़ा हुआ। भूतनाथ की आवाज सुन कर वह आदमी भी आगे बढ़ आया जो सबके पीछे पीछे आ रहा था, इसके अतिरिक्त वे लोग भी जो तीनों लाशों को उठाये हुए थे अपना बोझ जमीन पर रख कर आगे बढ़ आये और दत्त को पकड़ने के लिये तैयार हो गए। दारोगा ने दत्त पर तलवार का वार किया मगर उसका कोई नतीजा न निकला। दत्त ने हंस कर दारोगा से कहा, "दारोगा साहब, क्या आप भी अपना नाम बहादुरों में लिखवाया चाहते हैं?"

दारोगा०। क्या मैं मर्द नहीं हूं?

दत्त० । आज तक तो कोई काम मर्दानेपन का आपने नहीं किया।

दारोगा० । खैर बहस की कोई जरूरत नहीं, तुम जो कुछ किया चाहते हो करो और समझ रक्खो कि (हाथ के इशारे से बता कर) इतने आदमियों का तुम कदापि मुकाबला नहीं कर सकते ।

इतना कह कर दारोगा ने पुनः दत्त पर तलवार से वार किया और दत्त ने भी उसका जवाब तलवार से ही दिया । दत्त समझता था कि ये लोग सब बेईमान हैं, जरूर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे मगर ऐसा न हुआ, सब अलग खड़े तमाशा देखने लगे और दत्त तथा दारोगा साहब में लड़ाई होने लगी ।

दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब दारोगा साहब ने बड़ी मर्दानगी और दिलावरी के साथ उसका मुकाबला किया क्योंकि दत्त यही जानता था कि दारोगा साहब अपने घर के अन्दर ही के बहादुर हैं, किसी वीर के साथ वीरता प्रगट नहीं कर सकते ।

लगभग आधे घण्टे के लड़ाई होती रही मगर दारोगा साहब को दत्त किसी तरह से नीचा दिखा न सका, लाचार होकर दत्त ने कमर से तिलिस्मी तलवार निकाली और उससे दारोगा पर वार किया जिससे दारोगा के बदन पर एक छोटा सा जख्म तो लगा मगर वह बेहोश नहीं हुआ ।

यह तिलिस्मी तलवार वैसी ही थी जैसी कि प्रभाकरसिंह के पास थी और जो कुछ दिनों के लिये भूतनाथ के पास भी चली गई थी । इस समय दारोगा के पास भी वैसी ही तलवार और उसके जोड़ की अंगूठी मौजूद थी और यही सबब था कि दारोगा साहब जख्म खाकर भी बेहोश नहीं हुए मगर यह जान गये कि यह तलवार तिलिस्मी है और दत्त को भी बिश्वास हो गया कि इसके पास कोई तिलिस्मी हर्बा जरूर है ।

मजबूर होकर दत्त ने यह तलवार भी म्यान के अन्दर रख ली और मुकाबला करने के लिये तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला ।

यह खंजर वैसा ही था जैसा कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को कमलिनी ने दिया था और जिसका खुलासा बयान चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अर्थात् जिसका कब्जा दबाने से बिजली की तरह

रोशनी पैदा होती थी और दुश्मनों की आंखें झिप जाती थीं अथवा बदन के साथ लगाने से आदमी बेहोश हो सकता था।

दत्त ने खंजर का कब्जा दबाया और इसमें से बिजली की तरह रोशनी पैदा हुई जिससे दारोगा और भूतनाथ वगैरह सभों की आंखें बन्द हो गईं। मगर उस आदमी पर जो इन सभों के पीछे आया था और अब आगे बढ़ कर दत्त के पास पहुंच चुका था इस रोशनी का कुछ असर न हुआ। थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम भीम रख देते हैं क्योंकि इस जगह पर कह नहीं सकते कि वास्तव में उसका क्या नाम था।

दत्त के खंजर की अवस्था देख कर भीम आगे आया और दत्त के मुकाबले में खड़ा होकर बोला, "तुम्हारे इस खंजर का जवाब मैं दूंगा और साबित कर दूंगा कि तुम इससे भी हम लोगों पर फतह नहीं पा सकते।" क्यों व्यर्थ अपनी जान के दुश्मन बनते हो और हमारा हर्ज कर रहे हो!"

भीम ने वैसा ही तिलिस्मी खजर कमर से निकाला और दत्त का मुकाबला किया अर्थात् दत्त और भीम में तिलिस्मी खंजर से लड़ाई होने लगी। खंजरबाजीमें दोनों ही निपुण और होशियार मालूम पड़ते थे। लगभग आध घंटे के दोनों में लड़ाई होती रही मगर दोनों में से कोई एक दूसरे पर फतह न पा सका। भीम अथवा दारोगा के साथियों में से कोई भी इस बहादुराना और अजीब लड़ाई का लुत्फ देख न सका क्योंकि खजरों की चमक से उन सभों की बल्कि दारोगा तक की आंखें बन्द हो जाती थीं। हां जमना और सरस्वती जरूर उन दोनों की लड़ाई ताज्जुब के साथ देख रही थीं जो कि उन सभों से थोड़ा ही दूर झुरमुट में छिपा हुई खड़ी थी।

जब खंजरों की लड़ाई का कुछ भी नतीजा न निकला तब दत्त और भीम दोनों एक दूसरे का मुकाबला छोड़ कर खड़े हो गये और खंजरों की चमक में एक दूसरे का मुंह देखने लगे। भीम ने धीरे से दत्त से कहा, "मालूम होता है कि बादलों में अब बरसने की ताकत नहीं रही।"

दत्त०। बेशक ऐसा ही है क्योंकि हवा पानी और धूएं का अच्छा जमावड़ा नहीं हो सका।

दत्त का जवाब सुनते ही भीम उसके पैरों पर गिर पड़ा और दत्त के

उसे उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद वे दोनों आदमी वहां से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और आपुस में धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे। इस मामले को सभों ने आश्चर्य और खेद के साथ देखा तथा जमना और सरस्वती को उन दोनों का ऐसा करना बहुत ही बुरा मालूम हुआ। केवल इतना ही नहीं बल्कि उन दोनों को दत्त पर एक तरफ का शक पैदा हो गया।

सरस्वती ने जमना से कहा, "यद्यपि हम लोगों ने उन दोनों की बातें नहीं सुनीं मगर उनके ढंग से मालूम होता है कि दत्त ने अपने को कमजोर पाकर गिरफ्तार हो जाने के डर से दुश्मन को दोस्त बना लिया।"

जमना०। मेरा भी यही खयाल है, अगर यह बात सच है तो हम दोनों के लिए भी खैरियत नहीं है।

सरस्वती०। बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहां से हट जांय और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें, जिसमें दत्त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहां आवे तो यकायक हम दोनों को पा न सके।

जमना०। हां ऐसा ही करो।

इतना कह वे दोनों वहां से हट गईं और बहुत धीरे धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं।

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब वे दोनों पुनः उसी जगह पहुँचे जहां भीम के साथी लोग खड़े थे। भीम ने भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा—"आओ आओ। जरा जमना और सरस्वती से मुलाकात करो। वे दोनों भी तुम लोगों को गिरफ्तार करने के लिये इसी जगह आई हुई हैं!"

दत्त भीम दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए जहां जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था, मगर ठिकाने पहुंच कर जब जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खंजर की अद्भुत रोशनी में घूम घूम कर जमना और सरस्वती को ढूंढ़ने लगा। उसी समय बहुत से आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिये हुए वहां आ पहुँचे जिन्होंने उस सारी जमीन को घेर लिया जहां दत्त भीम दारोगा भूतनाथ और उनके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देख कर

जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं।

सोलहवां बयान

भूतनाथ अपने दुश्मन को सामने से आते हुए देख कर एक दफे तो घबड़ा उठा मगर तुरन्त ही उसकी हिम्मत और दिलेरी ने उसकी पीठ ठोंकी और वह बड़ी दिलावरी के साथ मुस्कुराता हुआ दुश्मन के पास आ जाने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर में उसका दुश्मन उसके सामने आकर खड़ा हो गया और आश्चर्य तथा जांच की निगाह से भूतनाथ भैयाराजा और मेघराज की तरफ देखने लगा।

भूतनाथ को यह निश्चय हो गया कि मेरा यह दुश्मन जरूर प्रभाकरसिंह ही है क्योंकि वह भैयाराजा का साथी है, भैयाराजा ने उसकी बहुत मदद की थी, और इन दोनों में इस समय बहुत गहरी मित्रता हो रही है।

वास्तव में बात भी यही थी। इस समय प्रभाकरसिंह भूतनाथ के सामने पहुंच कर ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि क्योंकर गदाधरसिंह ने मेघराज और भैयाराजा पर कब्जा कर लिया जो कि हर हालत में भूतनाथ को दबा सकते थे। भूतनाथ ने मुस्कुरा कर प्रभाकरसिंह से कहा—

भूत०। आप जरूर ताज्जुब करते होंगे कि इन दोनों को मैंने क्योंकर बेहोश कर दिया!

प्रभा०। बेशक यही बात है क्योंकि इन दोनों से तुम किसी तरह भी जीत नहीं सकते थे।

भूत०। अब भी मैं यही कहूंगा कि इन दोनों को जीतने की ताकत मुझमें नहीं है मगर अपनी चालाकी और ऐयारी का नमूना दिखा देने की इच्छा प्रबल होने ही से मैंने वह कार्रवाई की।

प्रभा०। अस्तु इन दोनों को बेहोश कर देने के बाद तुम यहां से भाग क्यों नहीं गये?

भूत०। भागने की तो मुझे कोई जरूरत नहीं थी। आप लोग चाहे मुझे जिस निगाह से देखें मगर मैं आप लोगों से अब दुश्मनी का बर्ताव नहीं रखता और मुझे विश्वास है कि आप लोग मेरे साथ कदापि बुराई नहीं

करेंगे, इसी से इन दोनों को बेहोश करने के बाद भी मैं बेफिक्री के साथ यहां खड़ा आपके आने का इन्तजार कर रहा था।

प्रभा०। तुम हम लोगों को जानते पहिचानते भी हो या यों ही दोस्त मान बैठे हो?

भूत०। हां, इन मेघराज को तो मैं नहीं जान सका कि कौन हैं मगर आपको प्रभाकरसिंह और (हाथ का इशारा करके) इनको भैयाराजा समझ लेने में मैं किसी तरह की भूल नहीं करता।

प्रभा०। तुम्हारी धूर्तता और चालाकी की मैं जरूर तारीफ कर सकता हूं मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है।

भूत०। यही शक तो आप लोगों का नुकसान कर रहा है, नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता।

प्रभा०। खैर मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूंगा जब तक कि ये दोनों होश में न आ जायंगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा।

भूत०। आशा है कि बहुत जल्दी ये दोनों होश में आ जायंगे।

प्रभा०। तो तुम लखलखा सुंघा कर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर कर देते।

भूत०। बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह काम कीजिए।

प्रभा०। (मुस्कुरा कर) मालूम होता है कि मेघराज के बदन पर हाथ लगा कर तुम धोखा खा चुके हो इसी से ऐसा कहते हो। खैर कोई चिन्ता नहीं मैं खुद इन दोनों की बेहोशी दूर करने की कोशिश करता हूं।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के सामान में से निहायत उम्दा लखलखा निकाल कर भैयाराजा और मेघराज को सुंघाया जिससे बात की बात में दोनों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य के साथ अपने चारो तरफ निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

२७ वां संस्करण] १९७३ ई० [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।